SAHABA KA ISHQE RASOOL (HINDI)

तख़रीज शुदा

सहाबए किराम رضی اللہ عنہم का इश्क़े रसूल صلی اللہ علیہ وسلم

- अ़लामाते महब्बत
- शौक़े दीदार
- ह़ज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رضی اللہ عنہ का इश्क़
- ह़ज़रते ख़ब्बाब رضی اللہ عنہ की जली हुई पीठ
- इश्क़ो वफ़ा का अ़जीब मन्ज़र
- ह़ज़रते फ़ारूक़े आ'ज़म رضی اللہ عنہ का फ़ैसला
- ग़सीलुल मलाइका
- शौक़े शहादत
- रसूलुल्लाह صلی اللہ علیہ وسلم सहाबए किराम رضی اللہ عنہم की नज़र में

MAKTABATUL MADINA
421, URDU MARKET, MATYA MAHAL, JAMA MASJID
DELHI - 110006, PH : 011-23284560

المدینۃ العلمیۃ (دعوتِ اسلامی)

® مکتبۃ المدینہ
SC 1286

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

किताब पढ़ने की दुआ

अज़ : शैखे़ त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी र-ज़वी** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه

दीनी किताब या इस्लामी सबक़ पढ़ने से पहले ज़ैल में दी हुई दुआ़ पढ़ लीजिये اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ जो कुछ पढ़ेंगे याद रहेगा। दुआ़ येह है :

اَللّٰهُمَّ افْتَحْ عَلَيْنَا حِكْمَتَكَ وَانْشُرْ عَلَيْنَا رَحْمَتَكَ يَا ذَاالْجَلَالِ وَالْاِكْرَام

तर्जमा : ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! हम पर इल्मो ह़िक्मत के दरवाज़े खोल दे और हम पर अपनी रह़मत नाज़िल फ़रमा ! ऐ अ़ज़मत और बुज़ुर्गी वाले।

(اَلْمُسْتَطْرَف ج ١ ص ٤٠ دارالفكر بيروت)

नोट : अव्वल आखि़र एक एक बार दुरूद शरीफ़ पढ़ लीजिये।

त़ालिबे ग़मे मदीना
बक़ीअ़
व मग़फ़िरत

13 शव्वालुल मुकर्रम 1428 हि.

क़ियामत के रोज़ ह़सरत

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم : सब से ज़ियादा ह़सरत क़ियामत के दिन उस को होगी जिसे दुन्या में इल्म ह़ासिल करने का मौक़अ़ मिला मगर उस ने ह़ासिल न किया और उस शख़्स को होगी जिस ने इल्म ह़ासिल किया और दूसरों ने तो उस से सुन कर नफ़्अ़ उठाया लेकिन उस ने न उठाया (या'नी उस इल्म पर अ़मल न किया)

(تاريخِ دمشق لابن عساكر، ج ٥١ ص ١٣٨ دار الفكر بيروت)

किताब के ख़रीदार मुतवज्जेह हों

किताब की त़बाअ़त में नुमायां ख़राबी हो या सफ़ह़ात कम हों या बाइन्डिंग में आगे पीछे हो गए हों तो **मक्तबतुल मदीना** से रुजूअ़ फ़रमाइये।

मजलिसे तराजिम (हिन्दी–गुजराती) दा'वते इस्लामी

اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ عَزَّوَجَلَّ तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक **दा'वते इस्लामी** की मजलिस "**अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या**" ने येह किताब "**सह़ाबए किराम ﷺ का इ़श्क़े रसूल ﷺ**" उर्दू ज़बान में पेश की है।

मजलिसे तराजिम, बरोडा (हिन्दी–गुजराती) ने इस किताब को हिन्द (INDIA) की **राष्ट्रिय भाषा "हिन्दी"** में रस्मुल ख़त़ (लीपियांतर) करने की सआ़दत ह़ासिल की है [**भाषांतर** नहीं बल्कि सिर्फ़ **लीपियांतर** या'नी ज़बान (बोली) तो उर्दू ही है जब कि लीपि (लिखाई) हिन्दी रखी है] और **मक्तबतुल मदीना** से **शाएअ़** करवाया है।

इस किताब का **हिन्दी रस्मुल ख़त़** करते हुवे दर्जे ज़ैल मुआ़मलात को पेशे नज़र रखने की कोशिश की गई है :–

﴾1﴿ कमो बेश दस(10) मराह़िल सर अन्जाम दिये गए हैं, जो येह हैं :–
(1) कम्पोज़िंग (2) सेटिंग (3) कम्प्यूटर तक़ाबुल (4) तक़ाबुल बिल किताब (5) सिंगल रीडिंग (6) कम्प्यूटर करेक्शन (7) करेक्शन चेकिंग (8) फ़ाइनल रीडिंग (9) फ़ाइनल करेक्शन (10) फ़ाइनल करेक्शन चेकिंग।

﴾2﴿ क़रीबुस्सौत़ (या'नी मिलती झुलती आवाज़ वाले) ह़ुरूफ़ के आपसी इमतियाज़ (या'नी फ़र्क़) को वाज़ेह़ करने के लिये हिन्दी के चन्द मख़्सूस ह़ुरूफ़ के नीचे डोट (़) लगाने का ख़ुसूसी एहतिमाम किया गया है जिस की तफ़्सीली मा'लूमात के लिये **तराजिम चार्ट** का बग़ौर मुत़ालआ़ फ़रमाइयें।

﴾3﴿ हिन्दी पढ़ने वालों को सह़ीह़ उर्दू तलफ़्फ़ुज़ भी हिन्दी पढ़ने ही में ह़ासिल हो जाएं इस लिये आसान मगर **अस्ल उर्दू लुग़त के तलफ़्फ़ुज़** के ऐन मुताबिक़ ही **हिन्दी–जोडणी** रखी गई है और बत़ौरे ज़रूरत ब्रेकेट में उर्दू लफ़्ज़ हिज्जे के साथ ऐ'राब लगा कर रखा गया है। नीज़ उर्दू के मफ़्तूह़ (ज़बर वाले) ह़र्फ़ को वाज़ेह़ करने के लिये हिन्दी के अक्षर (ह़र्फ़) के पहले डेश (–) और साकिन (जज़्म वाले) ह़र्फ़ को वाज़ेह़ करने के लिये हिन्दी के अक्षर (ह़र्फ़) के नीचे खोड़ा (्) इस्ति'माल किया गया है। मषलन **उ़–लमा** (عُلَمَاء) में "**–ल**" मफ़्तूह़ और **रह्म** (رَحْم) में "**ह्**" साकिन है।

﴾4﴿ उर्दू में लफ़्ज़ के बीच में जहां कहीं ऐ़न साकिन (عْ) आता है उस की जगह पर हिन्दी में सिंगल इन्वर्टेड कोमा (’) इस्ति’माल किया गया है। जैसे : **दा’वत** (دَعْوَت)

﴾5﴿ अ़रबी-फ़ारसी मतन के साथ साथ अ़रबी किताबों के ह़वालाजात भी अ़रबी ही रखे गए हैं जब कि "عَزَّوَجَلَّ", "صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم" और "رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهُ" वग़ैरा को भी अ़रबी ही में रखा गया है।

इस किताब में अगर किसी जगह **कमी-बेशी** या **ग़-लत़ी** पाएं तो **मजलिसे तराजिम** को (ब ज़रीअ़ए मक्तूब, e-mail या sms) **मुत्त़लअ़** फ़रमा कर षवाब कमाइये।

उर्दू से हिन्दी (रस्मुल ख़त़) का तराजिम चार्ट

त = ت	फ = پھ	प = پ	भ = بھ	ब = ب	अ = ا	
झ = جھ	ज = ج	ष = ث	ठ = ٹھ	ट = ٹ	थ = تھ	
ढ = ڈھ	ध = دھ	ड = ڈ	द = د	ख़ = خ	ह़ = ح	
ज़ = ژ	ज़ = ز	ढ़ = ڑھ	ड़ = ڑ	र = ر	ज़ = ذ	
अ़ = ع	ज़ = ظ	त़ = ط	ज़ = ض	स़ = ص	श = ش	स = س
ग = گ	ख = کھ	क = ک	क़ = ق	फ़ = ف	ग़ = غ	’ = عْ
य = ی	ह = ہ	व = و	न = ن	म = م	ल = ل	घ = گھ
् = ْ	ु = ُ	ि = ِ	- = َ	ी = یٖ	ू = وُ	ा = آ

-: राबित़ा :-

मजलिसे तराजिम, मक्तबतुल मदीना (दा’वते इस्लामी)

मदनी मर्कज़, क़ासिम हाला मस्जिद, सेकन्ड फ़्लोर,

नागर वाड़ा मेन रोड, बरोडा, गुजरात, अल हिन्द

Mo. + 91 9327776311

E-mail : translation.baroda@dawateislami.net

सहाबए किराम رضی اللہ تعالٰی عنہم के इ़श्क़े रसूल के वाकिआ़त पर मुश्तमिल तालीफ़

सहाबए किराम का इ़श्क़े रसूल

-: मुअल्लिफ़ :-

मौलाना मुह़म्मद अकरम रज़वी

-: पेशकश :-

मजलिसे अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या (दा'वते इस्लामी)
(शो'बए तख़रीज)

-: नाशिर :-

मक्तबतुल मदीना (दा'वते इस्लामी)
421, उर्दू मार्केट, मटया मह़ल, जामेअ़ मस्जिद, देहली-110006, फ़ोन : 011-23284560
e-mail : maktabadelhi@gmail.com

اَلصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلَیْکَ یَا رَسُوْلَ اللہ وَعَلٰی اٰلِکَ وَاَصْحٰبِکَ یَا حَبِیْبَ اللہ

नाम किताब : सहाबए किराम ﷺ का इश्क़े रसूल ﷺ
मुसन्निफ़ : मौलाना मुह़म्मद अकरम रज़वी
पेशकश : शो'बए तख़रीज (मजलिसे अल मदीनतुल इल्मिय्या)
सिने त़बाअ़त : जमादिल अव्वल, सि. 1435 हि.
नाशिर : मक्तबतुल मदीना, देहली - 6

-: मक्तबतुल मदीना की मुख़्तलिफ़ शाख़ें :-

...देहली : 421, उर्दू मार्केट, मटया मह़ल, जामेअ़ मस्जिद, देहली-110006 फ़ोन : 011-23284560

...मुम्बई :19-20, मुह़म्मद अ़ली रोड, मांडवी पोस्ट ऑफ़िस के सामने, मुम्बई, फ़ोन : 022-23454429

...नागपूर : सैफ़ी नगर रोड, ग़रीब नवाज़ मस्जिद के सामने, मोमिन पूरा, नागपूर, फ़ोन : 9326310099

...अजमेर : 19/216 फ़लाहे दारैन मस्जिद के क़रीब, नला बाज़ार स्टेशन रोड, राजस्थान, फ़ोन : (0145) 2629385

...हुबली : A.J मुधल कोम्पलेक्स, A.J मुधल रोड, ओल्ड हुबली, कर्नाटक - फ़ोन : 08363244860

...हैदराबाद : मक्तबतुल मदीना, मुग़ल पूरा, पानी की टंकी, हैदराबाद, आंध्र प्रदेश, फ़ोन : (040) 2 45 72 786

E.mail : ilmiapak@dawateislami.net

www.dawateislami.net

मदनी इल्तिजा : कसी और को येह (तख़रीज शुदा) किताब छापने की इजाज़त नहीं

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَ الصَّلٰوةُ وَ السَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या

अज़ : *बानिये दा'वते इस्लामी, आ़शिके़ आ'ला ह़ज़रत, शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी रज़वी ज़ियाई* دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ عَلٰى اِحْسَانِهٖ وَبِفَضْلِ رَسُوْلِهٖ صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

तबलीग़े कु़रआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक "**दा'वते इस्लामी**" नेकी की दा'वत, एह़याए सुन्नत और इशाअ़ते इ़ल्मे शरीअ़त को दुन्या भर में आ़म करने का अ़ज़्मे मुसम्मम रखती है, इन तमाम उमूर को ब हुस्ने ख़ूबी सर अन्जाम देने के लिये मुतअ़द्दद मजालिस का कि़याम अ़मल में लाया गया है जिन में से एक मजलिस "**अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या**" भी है जो **दा'वते इस्लामी** के **उ़-लमा व मुफ़्तियाने किराम** كَثَّرَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰى पर मुश्तमिल है, जिस ने ख़ालिस इ़ल्मी, तह़क़ीक़ी और इशाअ़ती काम का बीड़ा उठाया है। इस के मुन्दरिजए ज़ैल **छे शो'बे** हैं :

﴿1﴾ शो'बए कुतुबे आ'ला ह़ज़रत ﴿2﴾ शो'बए दर्सी कुतुब
﴿3﴾ शो'बए इस्लाह़ी कुतुब ﴿4﴾ शो'बए तख़रीज
﴿5﴾ शो'बए तफ़्तीशे कुतुब ﴿6﴾ शो'बए तराजुमे कुतुब

"**अल मदीनतुल इल्मिय्या**" की अव्वलीन तरजीह सरकारे आ'ला हज़रत, इमामे अहले सुन्नत, अज़ीमुल बरकत, अज़ीमुल मर्तबत, परवानए शम्ए रिसालत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत, हामिये सुन्नत, माहिये बिदअ़त, आ़लिमे शरीअ़त, पीरे तरीक़त, बाइषे खै़रो बरकत, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अलहा़ज अल हाफ़िज़ अल क़ारी अश्शाह **इमाम अह़मद रज़ा ख़ान** عَلَيۡهِ رَحۡمَةُ الرَّحۡمٰن की गिरां मायह तसानीफ़ को अ़सरे हाज़िर के तक़ाज़ों के मुता़बिक़ ह़त्तल वुस्अ़ सहल उस्लूब में पेश करना है। तमाम इस्लामी भाई और इस्लामी बहनें इस इल्मी, तह़क़ीक़ी और इशाअ़ती **मदनी काम** में हर मुमकिन तआ़वुन फ़रमाएं और **मजलिस** की त़रफ़ से शाएअ़ होने वाली कुतुब का खुद भी मुता़लआ़ फ़रमाएं और दूसरों को भी इस की तरग़ीब दिलाएं।

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ "**दा'वते इस्लामी**" की तमाम मजालिस ब शुमूल "**अल मदीनतुल इल्मिय्या**" को **दिन ग्यारहवीं** और **रात बारहवीं** तरक़्क़ी अ़ता़ फ़रमाए और हमारे हर अ़मले खै़र को ज़ेवरे इख़्लास से आरास्ता फ़रमा कर **दोनों जहां की भलाई** का सबब बनाए। हमें ज़ेरे गुम्बदे ख़ज़रा शहादत, जन्नतुल बक़ीअ़ में मदफ़न और **जन्नतुल फ़िरदौस** में **जगह** नसीब फ़रमाए।

اٰمین بِجاہِ النَّبِیِّ الۡاَمین صَلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

रमज़ानुल मुबारक, 1425 हि.

पेशे लफ़्ज़

हर नबी और रसूल عَلَیْهِ السَّلَام के जां निषारों और ह़वारियों ने अपनी मह़ब्बत व वफ़ादारी का षुबूत देते हुवे अपने नबी की इत़ाअ़त व फ़रमां बरदारी में कोई दक़ीक़ा फ़िरोग्ज़ाश्त न छोड़ा। लेकिन तारीख़ गवाह है कि रसूले अकरम, नबिय्ये मोह़तरम, सरवरे दो आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के सह़ाबा عَلَیْهِمُ الرِّضْوَان ने अपने वालिहाना इश्क़ो मह़ब्बत से सरशार हो कर जिस शानदार अन्दाज़ में अपने आक़ा व मौला صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से अपनी अ़क़ीदत का इज़्हार किया उस की नज़ीर नहीं मिल सकती।

जंगे बद्र के मौक़अ़ पर हुज़ूरे अक़्दस, रह़मते आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने सह़ाबए किराम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْهُم के साथ मश्वरा फ़रमाया और लश्करे कुफ़्फ़ार के मुक़ाबले में जंग व क़िताल के मुतअ़ल्लिक़ उन की राए त़लब फ़रमाई तो ह़ज़रते सा'द बिन उ़बादा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْه ने अ़र्ज़ किया कि या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! ख़ुदा की क़सम आप हमें अ़दन तक ले जाएंगे तो हम अन्सार में से कोई एक शख़्स भी आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के हुक्म की ख़िलाफ़ वर्ज़ी नहीं करेगा।

ह़ज़रते मिक़्दाद बिन अ़म्र رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْه ने यूं अ़र्ज़ किया कि या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! हम आप के साथ हैं आप जहां चाहें हमें ले जाएं हम कभी भी वोह बात अपने मुंह से न निकालेंगे जो बनी इस्राईल ने ह़ज़रते मूसा عَلَیْهِ السَّلَام से कही थी कि

فَاذْهَبْ اَنْتَ وَرَبُّكَ فَقَاتِلَاۤ اِنَّا هٰهُنَا قٰعِدُوْنَ ۝۲۴ (پ ۶، المائدہ: ۲۴)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *तो आप जाइये और आप का रब तुम दोनों लड़ो हम यहां बैठे हैं।*

क़सम है उस ज़ात की जिस ने आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को ह़क़ के साथ भेजा हम आप के साथ जाएंगे और जहां आप जाएंगे आप के साथ मिल कर मर्दाना वार लड़ेंगे।

(مدارج النبوت،قسم سوم،باب دوم، مذکور جنگ بدر، ج۲، ص۸۳)

इश्क़े रसूल صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم, सह़ाबए किराम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُم के दिलों की धड़कन बन चुका था अपने मह़बूब आक़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की मह़ब्बत व ग़ुलामी में इतने मुन्हमिक और मुस्तग़रक़ हो चुके थे कि उन्हें दुन्या की किसी चीज़ और किसी निस्बत से कोई ग़रज़ न थी। वोह सब कुछ बरदाश्त कर सकते थे लेकिन उन्हें कभी येह गवारा न था कि कोई उन के दिलों के चैन, रह़मते कौनैन صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की शाने अक़्दस में अदना सी बे अदबी की जुरअत करे चुनान्चे

उ़रवह बिन मसऊ़द (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ) कहते हैं कि जब क़ुरैश ने उन्हें (ईमान लाने से पहले) सुल्ह़े हुदैबिय्या के साल, नबिय्ये अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में भेजा, उन्हों ने सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان से नबिय्ये अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की बे पनाह ता'ज़ीम देखी, उन्हों ने देखा कि नबिय्ये अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم जब भी वुज़ू फ़रमाते तो सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان वुज़ू का पानी ह़ासिल करने के लिये बेह़द कोशिश करते ह़त्ता कि क़रीब था कि वुज़ू का पानी न मिलने के सबब लड़ पड़ें। उन्हों ने देखा कि नबिय्ये अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم दहने मुबारक या बीनी मुबारक का पानी डालते तो सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان उसे हाथों में लेते, अपने चेहरे और जिस्म पर मलते और आबरू पाते, आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का कोई बाल जसदे अत़्हर से जुदा नहीं होता था मगर उस के ह़ुसूल के लिये जल्दी करते,

जब आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم उन्हें कोई हुक्म देते तो फ़ौरन ता'मील करते और जब नबिय्ये अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم गुफ़्तगू फ़रमाते तो आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के सामने ख़ामोश रहते और अज़ राहे ता'ज़ीम आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की त़रफ़ आंख उठा कर न देखते। (الشفاء، الباب الثالث، ج۲، ص۶۹)

जब उ़रवह बिन मसऊ़द मुश्रिकों के गुरौह में वापस गए तो उन्हें कहा कि ऐ गुरौहे क़ुरैश ! मैं बड़े बड़े मुतकब्बिर व मग़रूर सलात़ीन व बादशाहों की मजलिसों में रहा हूं और उन की सोह़बतें उठाई हैं। मैं क़ैसरो किस्रा और नज्जाशी के दरबारों में गया हूं और रहा हूं लेकिन मैं ने इन में से किसी भी बादशाह के किसी भी ख़िदमत गार को ऐसा अदबो एह़तिराम करते नहीं देखा जैसा कि मुह़म्मद (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) के अस्ह़ाब उन का अदबो एह़तिराम करते हैं। जब वोह अपने दहने मुबारक से लुआ़ब शरीफ़ निकालते हैं तो सह़ाबा (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُم) उसे अपने हाथों में ले कर अपने रुख़्सारों पर मलते हैं, जब किसी अदना और मा'मूली काम का हुक्म देते हैं तो उस की ता'मील के लिये बुज़ुर्ग तरीन सह़ाबा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُم भी सबक़त करते हैं, जब उन के हु़ज़ूर कोई बात करता है तो वोह आवाज़ को पस्त कर के बात करता है और जब वोह गुफ़्तगू फ़रमाते हैं तो तमाम लोग इन्तिहाई अदबो एह़तिराम के साथ सुनते हैं और निगाह मिला कर बात नहीं करते, उन के रूए मुबारक पर कोई निगाह नहीं जमा सकता, जब वुज़ू करते हैं तो वुज़ू का पानी ज़मीन पर नहीं गिरता बल्कि सह़ाबा (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُم) लपक लपक कर उसे भी अपने हाथों पर ले लेते हैं, जब दाढ़ी शरीफ़ में और सरे अक़्दस में कंघी फ़रमाते हैं और कोई मुए मुबारक जिस्म शरीफ़ से अलग होता है तो उस बाल शरीफ़ को इ़ज़्ज़तो एह़तिराम के साथ

तबर्रुक जान कर ले लेते हैं और उस तबर्रुक की हिफ़ाज़त करते हैं। येह वोह हालात हैं जिन का मैं ने मुशाहदा किया है।

उरवह बिन मसऊद ने मज़्कूरा बाला बातें कहने के बा'द क़ौमे क़ुरैश के सामने सहाबए किराम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُم की शुजाअत, मर्दानगी, यक जेहती, जज़्बए जिहाद, शौक़े शहादत, आपस में एक दूसरे के साथ ईषार व महब्बत का जज़्बा वग़ैरा का ज़िक्र करते हुवे अपनी क़ौम से कहा कि ख़ुदा की क़सम ! मैं ने ऐसा लश्कर देखा है जो तुम से कभी मुंह न मोड़ेगा, मैदाने जंग में येह तुम सब को मार डालेंगे और तुम पर ग़ालिब आ जाएंगे।

(مدارج النبوت،قسم سوم،باب ششم،ج ۲،ص ۲۰۷،ملخصاً)

इन वाक़िआत से सहाबए किराम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُم के इश्क़े रसूल صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का जज़्बए सादिक़ इयां हो जाता है। सहाबए किराम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُم ने अपने महबूब आक़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के साथ अपने क़ल्बी लगाव और वालिहाना इश्क़ के आदाब की तक्मील में ईषार व क़ुरबानी की जो मिषालें पेश कीं वोह हमारे लिये मश्अ़ले राह हैं, आज भी अगर हम उन की पैरवी करें तो सीनों में इश्क़े रसूल की शम्अ़ फ़रूज़ां हो सकती है।

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से दुआ है कि वोह हमें ह़क़ीक़ी मा'नों में सहाबए किराम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُم की पैरवी करने की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमाए और इश्क़े रसूल صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ला ज़वाल दौलत से मालामाल फ़रमाए। आमीन।

ज़ेरे नज़र किताब "**सहाबए किराम** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُم **का इश्क़े रसूल** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم" में सहाबए किराम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُم के उस्वए ह़सना के वोह दरख़्शां वाक़िआत पेश करने की कोशिश की गई है जिन में सरकारे दो आलम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की बारगाहे इज़्ज़त

मआब में हाज़िरी का त़रीक़ा, उन की बारगाह का अदब, फ़रामीने मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की बजा आवरी में पेश क़दमी और जां निषारी की ह़सीन व दिलकश अदाएं बयान की गई हैं और आख़िर में सहाबए किराम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُم का बारगाहे रिसालत में "ख़िराजे अ़क़ीदत" पेश किया गया है कि किस त़रह़ उन्हों ने सरकारे दो आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की मद्ह़ बयान फ़रमाई है।

इन्हीं ख़ूबियों के पेशे नज़र "**मजलिसे अल मदीनतुल इल्मिय्या**" ने इश्क़े रसूल صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के मौज़ूअ़ पर इस किताब का इन्तिख़ाब किया और त़बाअ़ते जदीदा के लिये इन उमूर का एहतिमाम किया : ★ किताब की नई कम्पोज़िंग ★ मुकर्रर प्रूफ़ रीडिंग ★ दीगर नुस्ख़ों से मुक़ाबला ★ ह़वाला जात की तख़्रीज ★ अ़रबी व फ़ारसी इबारात की दुरुस्तगी ★ पैरा बन्दी ★ आयात का तर्जमा कन्ज़ुल ईमान के मुत़ाबिक़ और आख़िर में माख़ज़ो मराजेअ़ की फ़ेहरिस्त भी शामिल की गई है।

इन तमाम उमूर को मुमकिन बनाने के लिये "**मजलिसे अल मदीनतुल इल्मिय्या**" के मदनी उ़-लमा ने बड़ी मेह़नत व लगन से काम किया और ह़त्तल मक्दूर इस किताब को अह़सन अन्दाज़ में पेश करने की सअ़्य की। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इन की येह मेह़नत और सअ़्य क़बूल फ़रमाए, इन्हें जज़ाए जज़ील अ़त़ा फ़रमाए और इख़्लास व इस्तिक़ामत के साथ दीन की ख़िदमत की तौफ़ीक़ मर्ह़मत फ़रमाए। اٰمِین بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِین صَلَّی اللّٰہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلّم

शो'बए तख़्रीज

(मजलिसे अल मदीनतुल इल्मिय्या)

(दा'वते इस्लामी)

फ़ेहरिस

नम्बर	उनवान	सफ़हा
1	पेशे लफ़्ज़	5
2	कलिमए आग़ाज़	16
3	मुक़द्दमा	22
4	ता'ज़ीमे रसूल صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم और सहाबए किराम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُم	27
	ता'ज़ीमो अदब	42
5	अ़लामाते मह़ब्बत	43
6	ता'ज़ीम	43
7	नबिय्ये अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की बे अदबी कुफ़्र है	45
8	इमाम मालिक رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ का अबू जा'फ़र मन्सूर से मुकालमा	46
9	सहाबए किराम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُم और ता'ज़ीमे रसूल صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم	47
10	ताबेईन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُم और ता'ज़ीमे मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم	50
11	वाक़िआ़ते ता'ज़ीम	51
12	बे नज़ीर ज़ियाफ़त	53
13	शाहकारे ता'ज़ीम	54
14	अदबे सरकार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم	56
15	इ़ज़्ज़ते रसूल صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के लिये मर मिटने का जज़्बा	57
16	गुस्ताख़ी की सज़ा	58
17	ता'ज़ीमे इर्शादे रसूल صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم	60

18	शौके़ मुवाफ़क़त	67
19	ता'ज़ीमे तबर्रुकात	67
20	मोहरे नबुव्वत चूम ली	67
21	मूए मुबारक	69
22	लुआ़बे मुबारक	69
23	पसीनए मुबारक	70
24	अदब व बरकत अन्दोज़ी	71
25	मस्हे़ दस्त का कमाल	72
26	क़त्अ़ए पैराहन की ताषीर	72
27	अ़साए मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की बरकात	73
	इश्क़ो मह़ब्बत	75
28	لَا يُؤْمِنُ اَحَدُ كُمْ	76
29	रिज़ाए रसूल صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के लिये जज़्बए ईषार	81
30	ह़ज़रते अबू ज़र رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ का जज़्बए जां निषारी	82
31	हु़ज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के बा'द दुन्या क़ाबिले दीद न रही	83
32	इज़्तिराबे इश्क़	83
33	अल्लाह عَزَّوَجَلَّ और उस का रसूल صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم	84
34	ह़ज़रते ज़ाहिर رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ	87
35	ह़ज़रते ज़ैद बिन ह़ारिषा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ का इश्क़े रसूल صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم	88
36	ह़ज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ और बारगाहे मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم	91

37	शौके रफ़ाक़त	92
38	अल्लाह عَزَّوَجَلَّ और रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की महब्बत	93
39	शौके दीदार	95
40	महब्बत और फ़िदाइय्यत	97
41	हज़रते हुज़ैफ़ा رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ की महब्बत और फ़िदाइय्यत	103
42	सहाबए किराम رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُم इश्क़ो वफ़ा की इम्तिहान गाह में	106
43	हज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ का हाल	106
44	हज़रते अबू ज़र गिफ़ारी رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ का जज़्बए इस्लाम	109
45	हज़रते अम्मारा और उन के वालिदैन رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُم	112
46	हज़रते सुहैब رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ का इस्लाम	113
47	हज़रते उमर رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ के बहनोई और बहन (رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُمَا)	115
48	हज़रते ज़ैनब बिन्ते रसूलिल्लाह (رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهَا) की हिजरत और वफ़ात	117
49	हज़रते ख़ब्बाब رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ की जली हुई पीठ	119
50	हज़रते अम्मार رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ आग के कोएलों पर	120
51	हिजरते हबशा और शअ्बे अबी तालिब	120
52	हज़रते अबू सलमह رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ के ज़न व फ़रज़न्द	125
53	इश्क़ो वफ़ा का अजीब मन्ज़र	127
54	हज़रते ख़ुबैब رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ तख़्तए दार पर	131
55	हज़रते बिलाल رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ का इश्के रिसालत	132
56	सरकार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के कमसिन जांबाज़	134
57	मुजाहिदाना जवाब	137

58	ह़ज़रते का'ब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की दर्दनाक कहानी	138
59	फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का फ़ैसला	145
60	शमशीरे ड़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ और मामूं का सर	146
61	बेटे की तलवार बाप का सर	147
62	बाप नापाक, बिस्तर पाक	149
63	मा'रिकए उहुद में सहाबा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُم की जां निषारी	150
64	ह़ज़रते अ़ली رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ	150
65	ग़सीलुल मलाइका رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ	151
66	शौक़े शहादत	152
67	क़दमे रसूल صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم पर शहादत	153
68	अस्सी ज़ख़्म	153
69	ह़ज़रते वह्ब बिन क़ाबस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का कारनामा	154
70	ह़ज़रते उम्मे अ़म्मारा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا	155
71	पयामे सा'द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ	157
72	ह़ज़रते जाबिर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का शौक़ व वारफ़्तगी	157
73	सहाबए किराम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُم और बारगाहे रिसालत मआब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم	160
74	बरकत अन्दोज़ी	160
75	मुह़ाफ़ज़ते यादगारे रसूल صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم	163
76	अदबे रसूल صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم	169
77	जां निषारी	179
78	ख़िदमते रसूल صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم	186

79	मह़ब्बते रसूल صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم	190
80	क़राबते रसूल صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की इ़ज़्ज़त व मह़ब्बत	199
81	रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की इ़ज़्ज़त व मह़ब्बत	203
82	शौक़े ज़ियारते रसूल صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم	205
83	शौक़े दीदारे रसूल صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم	207
84	शौक़े सोह़बते रसूल صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم	208
85	रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की सोह़बत का अषर	209
86	इस्तिक़्बाले रसूल صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم	211
87	ज़ियाफ़ते रसूल صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم	213
88	ना'ते रसूल صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم	216
89	रिज़ाए रसूल صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم	217
90	ग़मे हिज्रे रसूल صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم	222
91	تَفْوِيْض اِلَى الرَّسُوْل صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم	224
92	हैबते रसूल صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم	225
93	इत़ाअ़ते रसूल صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم	227
94	पाबन्दिये अह़कामे रसूल صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم	229
95	अदबे ह़रमे रसूल صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم	234
	हुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के विसाल का सह़ाबा عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان पर रद्दे अ़मल	236
96	ह़ालते तह़य्युर	236
97	इन्किशाफ़े ह़क़ीक़त	236
98	ग़म व अलम के बादलों का छा जाना	237

99	फ़िराके़ रसूल صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर ह़ज़रते उ़मर رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه के तअष्षुरात	240
100	ग़मे हिज्र	245
101	रौज़ए रसूल صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर	248
102	रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان की नज़र में	248
	बारगाहे रिसालत में सह़ाबा عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان का ख़िराजे अ़क़ीदत	253
103	ह़ज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه	253
104	ह़ज़रते उ़मर बिन ख़त्ताब رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه	253
105	ह़ज़रते उ़षमान رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه	254
106	ह़ज़रते अ़ली رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه	255
107	ह़ज़रते ह़म्ज़ा बिन अ़ब्दुल मुत्तलिब رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه	255
108	ह़ज़रते ह़स्सान बिन षाबित अन्सारी رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه	256
109	ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन रवाह़ा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه	259
110	ह़ज़रते का'ब बिन ज़ुहैर رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه	260
111	ह़ज़रते अ़ब्बास बिन मिरदास رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه	260
112	ह़ज़रते मालिक बिन औ़फ़ رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه	261
113	ह़ज़रते अबू सुफ़्यान बिन ह़ारिष رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه	261
114	आ'राबी	262
115	ह़ज़रते आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا	263
116	ह़ज़रते फ़ाति़मा ज़हरा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا	23
117	ह़ज़रते सफ़िय्या बिन्ते अ़ब्दुल मुत्तलिब (رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا)	264
118	बनाते मदीना رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُنَّ	264

कलिमए आग़ाज़

باسمہٖ وحمدہٖ والصلوٰۃ والسلام علٰی نبیّہٖ وجنودہٖ

ہر کہ عشق مصطفی سامان اوست
بحر و بر درگوشہ دامان اوست

इश्क़ की तासीर बड़ी हैरत अंगेज़ है। इश्क़ ने बड़ी बड़ी मुश्किलात में अ़क़्ले इन्सानी की रहनुमाई की है। इश्क़ ने बहुत सी ला इलाज बीमारियों का कामयाब इलाज किया है। इश्क़ के कारनामे आबे ज़र से लिखने के क़ाबिल हैं।

मदीने के पुर आशोब माह़ोल में जब कि पैग़म्बरे इस्लाम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का विसाल हो चुका है। अत़राफ़े मदीना के बहुत से लोग दीने इस्लाम से फिर गए। दुश्मनों ने शहरे रसूल صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم पर ह़म्ले की तय्यारियां मुकम्मल कर लीं। इस्लामी लश्कर को ह़ज़रते उसामा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की सर कर्दगी में रूम के मुक़ाबले पर ख़ुद रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم मरज़े वफ़ात में भेज चुके थे। सियासी ह़ालात ने संगीन रुख़ इख़्तियार कर लिया है। सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان की राए थी कि लश्कर को वापस बुला लिया जाए। लेकिन वोह इश्क़ ही था जिस ने सब के बर ख़िलाफ़ पुकार कर कहा : क़सम उस ज़ात की जिस के सिवा कोई मा'बूद नहीं, अबू क़ह़ाफ़ा के बेटे (अबू बक्र) से हरगिज़ येह नहीं हो सकता कि उस लश्कर को पीछे लौटाए जिसे **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के रसूल صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने आगे भेजा है। ख़्वाह कुत्ते हमारी टांगें खींच ले जाएं मगर रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का भेजा हुवा लश्कर मैं वापस नहीं बुला सकता और अपने आक़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का बांधा हुवा परचम खोल नहीं सकता।

इ़श्क़ का फ़ैसला अ़क़्ल के फ़ैसले से बिल्कुल मुतसादिम था। लेकिन दुन्या ने देखा कि जब इ़श्क़ का फ़ैसला नाफ़िज़ हो गया तो सारी साज़िशें ख़ुद ब ख़ुद दम तोड़ गईं। दुश्मनों के ह़ौसले शिकस्त ख़ूरदा हो गए और सियासी ह़ालात की काया पलट गई।

مرحبا اے عشق خوش سودائے ما

اے دوائے جملہ علتہائے ما

इ़श्क़े रसूल صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم अगर पूरे त़ौर पर दिल में जा गुज़ीं हो तो इत्तिबाए़ रसूल صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का ज़ुहूर ना गुज़ीर बन जाता है। अह़कामे इलाही की ता'मील और सीरते नबवी की पैरवी आ़शिक़ के रगो रेशे में समा जाती है। दिलो दिमाग़ और जिस्म व रूह़ पर किताबो सुन्नत की ह़ुकूमत क़ाइम हो जाती है। मुसलमान की मुआ़शरत संवर जाती है। आख़िरत निखरती है, तहज़ीब व षक़ाफ़त के जल्वे बिखरते हैं और बे मायह इन्सान में वोह क़ुव्वत रूनुमा होती है जिस से जहां बीनी व जहां बानी के जौहर खुलते हैं।

की मुह़म्मद से वफ़ा तूने तो हम तेरे हैं
येह जहां चीज़ है क्या लौह़ो क़लम तेरे हैं

इसी इ़श्क़े कामिल के तुफ़ैल सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان को दुन्या में इख़्तियार व इक़्तिदार और आख़िरत में इ़ज़्ज़त व वक़ार मिला। येह उन के इ़श्क़ का कमाल था कि मुश्किल से मुश्किल घड़ी, और कठिन से कठिन वक़्त में भी उन्हें इत्तिबाए़ रसूल صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से इन्ह़िराफ़ गवारा न था। वोह हर मरह़ले में अपने मह़बूब आक़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का नक़्शे पा ढूंडते और इसी को मश्अ़ले राह बना कर जादह पैमा रहते। यहां तक कि

लह़द में इ़श्क़े रुख़े शह का दाग़ ले के चले
अंधेरी रात सुनी थी चराग़ ले के चले

(ह़दाइक़े बख़्शिश)

सहाबा से ताबेईन رِضْوَانُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْهِمْ اَجْمَعِيْن ने येह गिरां बहा दौलत हासिल की। उन्हों ने सहाबा رِضْوَانُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْهِمْ اَجْمَعِيْن की रफ़ाक़त व सोहबत में रह कर इश्के रसूल صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم सीखा, दिल में बसाया, सीरत में उतारा, रज़्म व बज़्म में निखारा, और अपनी दुन्या व आख़िरत को संवारा।

आज इश्क़ की येह लौ मध्धम होती जा रही है, और नई नस्ल जाने आलम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के बजाए कहीं और दिल लगाए बैठी है, जैसे इसे ख़बर ही न हो कि हम क्या हैं और हमारा मर्कज़े इश्क़ो अक़ीदत कहां है? अक़्ले बे मायह, इल्मे बे अमल, जहले बे षमर और लहवे बे हुनर ने हमारा कारवाने ज़फ़र ताराज कर रखा है। और अपनी बे बसी व बे कसी का हल भी नज़र नहीं आता।

ज़रूरत है कि हम सहाबा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهُم की महफ़िल में चलें, फ़त्हो ज़फ़र जिन के क़दम चूमती थी, इश्के रसूल صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم जिन की मताए ज़िन्दगी, इत्तिबाए रसूल صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم जिन का सरमायए हयात, और जहांबानी जिन की तक़्दीर बन चुकी थी। हम उन्हें देखें कि ज़ाते रसूल صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से उन का कैसा वालिहाना तअ़ल्लुक़ था। उन की बारगाह में पहुंच कर उन से दर्से महब्बत हासिल करें।

मगर अब वोह महफ़िलें, वोह रफ़ाक़तें, वोह सआदतें कहां नसीब? वोह बे बहा दौलत वोह जहां आरा महब्बत, वोह हश्रे बद अमां शरारे इश्क़ हमारी ख़ाकिस्तर में आए तो क्यूं कर आए?

मैं कहता हूं हम अपनी निगाहे बसीरत तेज़ करें और सहाबए किराम رِضْوَانُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْهِمْ اَجْمَعِيْن के वाक़िआत में उन की चलती फिरती ज़िन्दगी देखें, बारगाहे रसूल صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم में

उन की मुक़द्दस व बा अ़ज़्मत अदाओं का मुशाहदा करें। चश्मे तसव्वुर से लौहे दिल पर उन के पाकीज़ा इश्क़ का नक़्शा उतारें। इस त़रह गोया हम भी सहाबए रसूल رِضْوَانُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْهِمْ اَجْمَعِيْن की महफ़िल में होंगे और उन का फ़ैज़ाने इश्क़ कुछ हमारे ऊपर भी जल्वाबार होगा।

"اصحابی کالنجوم فبایھم اقتدیتم اھتدیتم"

(कश्फ़ुल ख़िफ़ा, अल ह़दीष : **381**, जि. **1**, स. **118**)

या'नी मेरे सहाबा رِضْوَانُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْهِمْ اَجْمَعِيْن *सितारों की मानिन्द हैं इन में से जिस की भी इक़्तिदा करोगे हिदायत पा जाओगे,*

का मुज़्दए जांफ़िज़ा हमारी ख़ाकिस्तर में भी कुछ शो'ले फ़रूज़ां करेगा। इश्क़ और इश्क़ की हैरत अंगेज़ ताषीर हमारे क़ाफ़िलए ह़यात को भी इल्मो हुनर, जोहदो अ़मल और फ़लाहो ज़फ़र से आशना करेगी।

नहीं मायूस है इक़्बाल अपनी किश्ते वीरां से
ज़रा नम हो तो येह मिट्टी बहुत ज़रख़ैज़ है साक़ी

येही तख़य्युल इस किताब की तरतीब का मुहर्रिक बना। मौजूदा नस्ल के सीने में इश्के़ रसूल صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की अमानत मुन्तक़िल करने के लिये क़लम ने रसूले गिरामिये वक़ार صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के मुक़द्दस सह़ाबा عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان की महफ़िल सजाई। उन की रफ़ाक़तों और सोह़बतों के ताबिन्दा नुक़ूश ढूंडे और अपनी दौर उफ़्तादा नस्ल को सहाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان की सोह़बत का यक गोना ह़ज़ उठाने की राह पैदा की, बारगाहे रसूल صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم में सहाबए किराम رِضْوَانُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْهِمْ اَجْمَعِيْن की महब्बत व फ़िदाइय्यत और एह़तिराम व अ़क़ीदत के मो'तबर वाक़िआत का एक शानदार गुलदस्ता तय्यार किया और इस

तवक्क़ोअ़ के साथ मुसलमानाने आ़लम की ख़िदमत में पेश कर दिया कि वोह अपनी शौकते रफ़्ता को इस दौलते गुम गुश्ता या कम गुश्ता की फ़िरावानी व अफ़्ज़ूनी के ज़रीए़ तलाश करें। इन का ह़ाल व माल दरख़्शन्दा व ताबनाक ज़रूर होगा।

ब मुस्त़फ़ा बरसां ख़्वेश रा कि दीं हम ओस्त
व गर बआन नरसीदी तमाम बू ल-हबीस्त
नज़्र हो ख़्वाजए कौनो मकां पर गर निषार अब भी
तो हो सकती है नाज़िल रह़मते परवर दगार अब भी
फ़ज़ाए बद्र पैदा कर फ़िरिश्ते तेरी नुस्रत को
उतर सकते हैं ज़मीन पर क़ित़ार अन्दर क़ित़ार अब भी

इस मजमूए़ में मुख़्तलिफ़ किताबों से ज़ियादा तर ह़ालात व वाक़िआ़त के नक़्ल व इक़्तिबास पर इक्तिफ़ा किया गया है और बिल उ़मूम अपनी त़रफ़ से किसी तब्सरे की ह़ाजत मह़सूस न की गई कि सह़ाबए किराम عَلَيۡهِمُ الرِّضۡوَان की ज़िन्दगी के ह़सीन नुक़ूश अषर आफ़रीनी व किरदार साज़ी के लिये ख़ुद ही काफ़ी हैं।

बड़ी नासपासी होगी अगर इस मौक़अ़ पर अपने उन अह़बाब का तज़्किरा न करूं जिन का करम मवाद की फ़राहमी, किताब की तरतीब, मुसव्वदे पर नज़रे षानी, मुक़द्दमे की निगारिश, फिर किताबत व तस्ह़ीह़ और त़बाअ़त व इशाअ़त के तमाम मराह़िल में मेरे हमदम व ग़म गुसार षाबित हुवे। और उन की इ़नायतों के तुफ़ैल येह किताब जल्द आप के हाथों में पहुंच सकी।

उन अह़बाब से मेरी मुराद है : मौलाना इफ़्तिख़ार अह़मद क़ादिरी, मौलाना यासीन अख़्तर आ'ज़मी, मौलाना मुह़म्मद अह़मद मिस्बाह़ी, मौलाना अ़ब्दुल मुबीन नो'मानी, मौलाना नसरुल्लाह रज़वी

جزاهم الله احسن الجزاء وخصّهم بعظيم نعمه وجليل كرمه فى الدين و الدنيا و الاخرة۔

येह दा'वा नहीं कि ज़ेरे नज़र किताब इस मौज़ूअ़ पर हर्फ़े आख़िर है बल्कि अभी इज़ाफ़े की बहुत गुन्जाइश बाक़ी है। लेकिन क़वी उम्मीद है कि जिस नेक जज़्बे और अहम मक़्सद के पेशे नज़र येह मज्मूआ़ मा'रिज़े वुजूद में आया है वोह ان شاء الله المولى القدير बड़ी ह़द तक इस से ह़ासिल होगा।

रब्बे करीम عَزَّوَجَلَّ मुसलमानों के सीने इश्क़े रसूल صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के बह़रे बेकरां से भर दे और उन्हें इत्तिबाए़ ह़बीब व इत्तिबाए़ फ़िदायाने ह़बीब से दोनों जहां में सरफ़राज़ी व सुरख़ुरूई नसीब करे। उन्हें जीने और मरने का सलीक़ा अ़ता करे और ग़ैरों के बजाए रसूले अकरम, रह़मतुल्लिल आ़लमीन, ख़ा़तमुन्नबिय्यीन صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की बारगाहे उम्मत नवाज़ से हर लम्ह़ा व हर आन वाबस्ता रहने की तौफ़ीक़ मर्ह़मत फ़रमाए। आमीन।

फिर के गली गली तबाह ठोकरें सब की खाए क्यूं
दिल को जो अ़क़्ल दे ख़ुदा तेरी गली से जाए क्यूं ?
जान है इश्क़े मुस्त़फ़ा रोज़ फ़ुज़ूं करे ख़ुदा
जिस को हो दर्द का मज़ा नाज़े दवा उठाए क्यूं ?
संगे दरे हुज़ूर से हम को ख़ुदा न सब्र दे
जाना है सर को जा चुके दिल को क़रार आए क्यूं ?

मुह़म्मद अकरम रज़वी

जुमुआ़ यकुम जुमादिल आख़िरा

सि. 1405 हि. ब मुत़ाबिक़ 22 फ़रवरी सि. 1985 ई.

मुक़द्दमा

نحمده ونصلى على رسوله الكريم وعلى اله وصحابه اجمعين

मुह़म्मद की मह़ब्बत दीने ह़क़ की शर्ते़ अव्वल है
इसी में हो अगर ख़ामी तो सब कुछ ना मुकम्मल है
मुह़म्मद की मह़ब्बत है सनद आज़ाद होने की
ख़ुदा के दामने तौह़ीद में आबाद होने की

क़ुरआन नाति़क़ है :

قُلْ اِنْ كَانَ اٰبَآؤُكُمْ وَاَبْنَآؤُكُمْ وَاِخْوَانُكُمْ وَاَزْوَاجُكُمْ وَ عَشِيْرَتُكُمْ وَاَمْوَالُ ۣ اقْتَرَفْتُمُوْهَا وَتِجَارَةٌ تَخْشَوْنَ كَسَادَهَا وَ مَسٰكِنُ تَرْضَوْنَهَآ اَحَبَّ اِلَيْكُمْ مِّنَ اللّٰهِ وَرَسُوْلِهٖ وَجِهَادٍ فِىْ سَبِيْلِهٖ فَتَرَبَّصُوْا حَتّٰى يَاْتِىَ اللّٰهُ بِاَمْرِهٖ ؕ وَاللّٰهُ لَا يَهْدِى الْقَوْمَ الْفٰسِقِيْنَ (پ ۱۰،التوبة:٢٤)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : तुम फ़रमाओ अगर तुम्हारे बाप और तुम्हारे बेटे और तुम्हारे भाई और तुम्हारी औ़रतें और तुम्हारा कुम्बा और तुम्हारी कमाई के माल और वोह सौदा जिस के नुक़्सान का तुम्हें डर है, और तुम्हारे पसन्द के मकान येह चीज़ें **अल्लाह** और उस के रसूल और उस की राह में लड़ने से ज़ियादा प्यारी हों तो रास्ता देखो यहां तक कि **अल्लाह** अपना हुक्म लाए और **अल्लाह** फ़ासिक़ों को राह नहीं देता।

इन्सान के अन्दर वालिदैन, अवलाद, भाई, बीवी, ख़ानदान और माल, तिजारत और मकान इन सब चीज़ों से मह़ब्बत फ़ित़री चीज़ है, लेकिन रब तआ़ला अपने बन्दों को आगाह फ़रमाता है कि

अगर तुम्हारे अन्दर इन सब चीज़ों की महब्बत मेरी और मेरे महबूब صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की महब्बत से बढ़ जाए तो तुम गोया ख़तरे की हद में दाख़िल हो चुके हो और बहुत जल्द तुम को मेरा ग़ज़ब व अज़ाब अपनी लपेट में ले लेगा। इस से पता चलता है कि एक मोमिन के लिये रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से महब्बत न सिर्फ़ येह कि फ़र्ज़ है बल्कि सब से क़रीबी रिश्तेदारों और सब से क़ीमती मताअ़ पर मुक़द्दम है। ख़ुद रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم इर्शाद फ़रमाते हैं :

لَا يُؤْمِنُ اَحَدُكُمْ حَتّٰى اَكُوْنَ اَحَبَّ اِلَيْهِ مِنْ وَّالِدِهٖ وَوَلَدِهٖ وَالنَّاسِ اَجْمَعِيْنَ۔

(صحیح البخاری، کتاب الایمان، باب حب الرسول.....الخ،الحدیث:١٥،ج١،ص١٧)

या'नी तुम में का कोई उस वक़्त तक मोमिन नहीं हो सकता जब तक कि मैं उस के नज़्दीक उस के वालिद, अवलाद और तमाम लोगों से महबूब न हो जाऊं।

एक रोज़ हज़रते उ़मर رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه ने रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से अ़र्ज़ किया या रसूलल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم आप मेरी जान के इ़लावा हर चीज़ से ज़ियादा महबूब हैं। तो नबिय्ये पाक صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "उस की क़सम ! जिस के क़ब्ज़ए क़ुदरत में मेरी जान है तुम में से कोई (कामिल) मोमिन नहीं हो सकता जब तक मैं उस के नज़्दीक उस की जान से भी ज़ियादा महबूब न हो जाऊं।" येह सुन कर हज़रते उ़मर رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه ने अ़र्ज़ किया उस ज़ात की क़सम ! जिस ने आप पर किताब नाज़िल फ़रमाई आप मेरी जान से भी ज़ियादा महबूब हैं। इस पर हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : हां अब ! ऐ उ़मर !

(صحیح البخاری، کتاب الایمان والنذور، باب کیف کانت.....الخ، الحدیث: ٦٦٣٢،ج٤،ص٢٨٣)

जंगे उहुद में एक सहाबिया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا के बाप, भाई और शोहर परवाना वार लड़ते लड़ते शहीद हो गए। उन्हें जब येह मा'लूम हुवा तो इस का कुछ ग़म न किया बस येह पूछा कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم कैसे हैं ? जब उन को बताया गया कि हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم बख़ैरो सलामत हैं तो बोलीं कि मुझे हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को दिखा दो, आप को देख कर (और एक रिवायत में है कि बे ताबाना आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का कपड़ा पकड़ कर) कहने लगीं : "كُلُّ مُصِيبَةٍ بَعْدَكَ جَلَلٌ" या'नी आप के होते हुवे हर मुसीबत हेच है।

(السيرة النبوية لابن هشام، غزوة احد،شأن المرأة الدينارية،ج٣،ص٨٦)

येह था महृब्बते रसूल صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का जज़्बए सादिक़ ! क्या इस की नज़ीर मिल सकती है ?

हज़रते आइशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا बयान फ़रमाती हैं कि एक शख़्स ने रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में हाज़िर हो कर अ़र्ज़ किया : या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم आप यक़ीनन मेरे नज़्दीक मेरी जान और मेरी अवलाद से भी ज़ियादा महृबूब हैं, लेकिन जिस वक़्त आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم याद आ जाते हैं तो जब तक आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में हाज़िर हो कर आप को देख न लूं क़रार नहीं आता, लेकिन इस दुन्या से रुख़्सत होने के बा'द जन्नत में दाख़िल हो कर आप अम्बियाए किराम عَلَیْہِمُ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام के साथ बुलन्द मक़ाम में होंगे और मैं नीचे दरजे में होने के सबब अन्देशा करता हूं कि कहीं आप को न देख सकूं। येह सुन कर हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ख़ामोश रहे, इतने में हज़रते जिब्रईल عَلَیْہِ السَّلَام येह आयत ले कर हाज़िर हुवे :

وَمَنْ يُّطِعِ اللّٰهَ وَالرَّسُوْلَ فَاُولٰٓئِكَ مَعَ الَّذِيْنَ اَنْعَمَ اللّٰهُ عَلَيْهِمْ مِّنَ النَّبِيّٖنَ وَالصِّدِّيْقِيْنَ وَالشُّهَدَآءِ وَالصّٰلِحِيْنَ ج وَحَسُنَ اُولٰٓئِكَ رَفِيْقًا ۝ (پ ٥، النساء: ٦٩)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और जो अल्लाह और उस के रसूल का हुक्म माने तो उसे उन का साथ मिलेगा जिन पर अल्लाह ने फ़ज़्ल किया या'नी अम्बिया और सिद्दीक़ और शहीद और नेक लोग येह क्या ही अच्छे साथी हैं।

(حلية الاولياء، الحديث: ١٦ ٥٥، ج ٤، ص ٢٦٧)

इसी लिये सहाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان एक लम्हे के लिये भी हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को बेचैन देखना गवारा न करते। फ़त्हे मक्का से पहले मश्हूर सहाबी हज़रते ज़ैद رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه दुश्मनाने इस्लाम के नरग़े में आ गए, सफ़्वान बिन उमय्या ने उन को क़त्ल करने के लिये अपने गुलाम निस्तास के साथ तन्ईम भेजा। हज़रते ज़ैद رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه को हुदूदे हरम से बाहर ले जाया गया, तो अबू सुफ़्यान ने (जो अभी इस्लाम न लाए थे) उन से पूछा : ज़ैद ! मैं तुम को खुदा की क़सम दे कर पूछता हूं क्या तुम पसन्द कर सकते हो कि इस वक़्त हमारे पास तुम्हारी जगह मुहम्मद (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) हों और हम उन को क़त्ल करें और तुम आराम व सुकून से अपने अहल में रहो। हज़रते ज़ैद رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه ने जवाब दिया, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! मैं तो येह भी पसन्द नहीं करता कि इस वक़्त मेरे हुज़ूर जहां कहीं भी हों उन को एक कांटा भी चुभे और मैं आराम व सुकून से अपने अहल में रहूं। येह सुन कर अबू सुफ़्यान ने कहा : मैं ने ऐसा कहीं नहीं देखा कि किसी से ऐसी महब्बत की जाती हो, जैसी महब्बत मुहम्मद (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) से उन के अस्हाब करते हैं। इस के बा'द हज़रते ज़ैद رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه को शहीद कर दिया गया। (شرح الشفاء للقاضي عياض، باب الثاني، فصل فيما روى عن السلف، ج ٢، ص ٤٤)

ह़ज़रते बिलाल رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने हु़ज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की सोह़बत में पहुंचने के बा'द आप के लिये अपना चैन, चैन न समझा अपनी राह़त, राह़त न समझी अपनी जान, जान न समझी, बल्कि येह सब कुछ आप ने हु़ज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم पर कुरबान कर दिया था। हु़ज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم सफ़र में होते तो ह़ज़रते बिलाल رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ आप को हर त़रह़ का आराम पहुंचाने में कोई दक़ीक़ा फ़िरोगज़ाश्त न करते। धूप का वक़्त होता तो हु़ज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के लिये साए का इन्तिज़ाम करते, पड़ाव डाला जाता तो ख़ैमा नस्ब करते, मा'रिकों में होते तो येह हु़ज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के मुह़ाफ़िज़ होते। जब ह़ज़रते बिलाल رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के इन्तिक़ाल का वक़्त आ गया तो उन की ज़ौजा ने कहा وَاحُزْنَاہُ (हाए ग़म)। ह़ज़रते बिलाल رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने कहा : नहीं बल्कि "وَاطَرَبَاہُ اَلْقٰی غَدًا الْاَحِبَّہ مُحَمَّدًا وَّ صَحْبَہ"

(شرح الشفاء للقاضی عیاض،باب الثانی ، فصل فیما روی عن السلف،ج۲،ص۴۳)

वाह ख़ुशी ! कल हम मुह़म्मद और उन के अस्ह़ाब से मिलेंगे और जिस से मह़ब्बत होती है उस की हर चीज़ से मह़ब्बत होती है उस की हर अदा से मह़ब्बत, उस की रफ़्तार से मह़ब्बत, उस की गुफ़्तार से मह़ब्बत, उस के लिबास व त़आ़म से मह़ब्बत, ग़रज़ उस की हर चीज़ से मह़ब्बत होती है।

ह़ज़रते उ़बैद बिन जुरैज ने ह़ज़रते इब्ने उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से कहा : मैं ने देखा आप बैल के दबाग़त किये हुवे चमड़े का बे बाल जूता पहनते हैं। ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह इब्ने उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : मैं ने रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को देखा कि आप ऐसा ही जूता पहना करते थे जिस में बाल न हों इसी लिये मैं भी ऐसा ही जूता पहनना पसन्द करता हूं।

(صحیح البخاری، کتاب الوضوء، باب غسل الرجلین.....الخ،الحدیث ۱۶۶، ج۱،ص۸۰)

हज़रते अनस رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ बयान फ़रमाते हैं कि एक दर्ज़ी ने रसूलुल्लाह صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की खाने की दा'वत की, मैं भी हुज़ूर صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के साथ गया, जव की रोटी और शोरबा हुज़ूर صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के सामने लाया गया जिस में कद्दू और खुश्क किया हुवा नमकीन गोश्त था, खाने के दौरान मैं ने हुज़ूर صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को देखा कि पियाले के किनारों से कद्दू की क़ाशें तलाश कर रहे हैं, इसी लिये मैं उस दिन से कद्दू पसन्द करने लगा।

(صحیح البخاری ، کتاب الاطعمة، باب الدباء، الحدیث۵۴۳۳، ج۳،ص۵۳۶)

इमाम अबू यूसुफ़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ (शागिर्दे इमामे आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ) के सामने इस रिवायत का ज़िक्र आया कि हुज़ूर صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم कद्दू पसन्द फ़रमाते थे, मजलिस के एक शख़्स ने कहा : लेकिन मुझे पसन्द नहीं। येह सुन कर इमाम अबू यूसुफ़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने तल्वार खींच ली और फ़रमाया : جَدِّدِ الْاِیْمَانَ وَ اِلَّا لَاَقْتُلَنَّکَ तजदीदे इमान कर, वरना तुझ को क़त्ल किये बिग़ैर न छोड़ूंगा।

(الشفاللقاضی، باب الثانی،فصل فی علامة صحبتہٖ صلی اللہ علیہ وسلم ، ج۲،ص۵۱)

ता'ज़ीमे रसूल صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم और सहाबए किराम رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُم

जिस बड़े से मह़ब्बत होती है उस की अ़ज़मत दिलो दिमाग़ पर छा जाती है, फिर येह चाहने वाला अपने मह़बूब की ता'ज़ीम और उस की अ़ज़मत का कलिमा पढ़ने लगता है, इस्लाम ने तो हर बड़े की ता'ज़ीम का दर्स दिया है।

مَنْ لَّمْ یَرْحَمْ صَغِیْرَنَا وَلَمْ یُوَقِّرْ کَبِیْرَ نَا فَلَیْسَ مِنَّا

(سنن الترمذی، کتاب البر والصلة، باب ماجاء فی رحمة الصبیان، الحدیث۱۹۲۶، ج۳،ص۳۶۹)

जो हमारे छोटे पर शफ़्क़त न करे और हमारे बड़े की ता'ज़ीम न करे तो वोह हम में से नहीं।

और नबिय्ये आख़िरुज़्ज़मां मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم तो सारे बड़ों में सब से बड़े हैं और इतने बड़े हैं कि आज तक इतना बड़ा पैदा न हुवा और न ही पैदा होगा, इस लिये आप की ता'ज़ीम भी सब से बढ़ कर होनी चाहिये। कुरआन नातिक़ है।

اِنَّاۤ اَرۡسَلۡنٰکَ شَاهِدًا وَّمُبَشِّرًا وَّنَذِيۡرًا ۙ لِّتُؤۡمِنُوۡا بِاللّٰهِ وَرَسُوۡلِهٖ وَتُعَزِّرُوۡهُ وَتُوَقِّرُوۡهُ ؕ وَتُسَبِّحُوۡهُ بُكۡرَةً وَّاَصِيۡلًا ۝ (پ۲۶،الفتح:۸،۹)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *बेशक हम ने तुम्हें भेजा हाज़िर व नाज़िर और ख़ुशी और डर सुनाता ताकि ऐ लोगो तुम* ***अल्लाह*** *और उस के रसूल पर ईमान लाओ और रसूल की ता'ज़ीम व तौक़ीर करो और सुब्ह़ो शाम* ***अल्लाह*** *की पाकी बोलो।*

आप ग़ौर करें इस आयत में पहले ईमान बिल्लाह और ईमान बिर्रसूल का मुतालबा किया गया है, और इस के मअ़न बा'द रसूले मुअ़ज़्ज़म व मुकर्रम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ता'ज़ीम व तौक़ीर का हुक्म दिया गया है और फिर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने अपनी तस्बीह़ का हुक्म इर्शाद फ़रमाया है। रब तआ़ला ने अपनी तस्बीह़ पर अपने रसूल صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ता'ज़ीम व तौक़ीर को मुक़द्दम कर के ता'ज़ीमे ह़बीब की अहम्मिय्यत व अ़ज़मत में किस क़दर इज़ाफ़ा कर दिया है। गोया आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को शाहिदो मुबश्शिर और नज़ीर बना कर इसी लिये भेजा गया है कि लोग **अल्लाह** और उस के रसूल صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर ईमान लाएं, और रसूल صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ता'ज़ीम करें और फिर रब عَزَّوَجَلَّ की तस्बीह़ करें। एक मक़ाम पर कुरआने ह़कीम नबिय्ये अकरम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ता'ज़ीम करने वालों की कामरानी का इस तरह़ ए'लान कर रहा है :

فَالَّذِیۡنَ اٰمَنُوۡا بِہٖ وَعَزَّرُوۡہُ وَ نَصَرُوۡہُ وَاتَّبَعُوا النُّوۡرَ الَّذِیۡۤ اُنۡزِلَ مَعَہٗۤ ۙ اُولٰٓئِکَ ہُمُ الۡمُفۡلِحُوۡنَ ﴿۱۵۷﴾

(پ۹،الاعراف: ۱۵۷)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *तो वोह जो उस पर ईमान लाएं और उस की ता'ज़ीम करें और उसे मदद दें और उस नूर की पैरवी करें जो उस के साथ उतरा वोही बा मुराद हुवे।*

इस आयते करीमा में भी रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ता'ज़ीम व नुस्रत करने वालों को कामयाबी की ज़मानत दी गई है।

येह इर्शादाते रब्बानी सहाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان के पेशे नज़र थे, इस लिये उन्हों ने अपने सरकार صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ऐसी ता'ज़ीम की, कि दुन्या के किसी शहनशाह की भी इस तरह ता'ज़ीम न की जा सकी। सहाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان की ता'ज़ीम व तौक़ीर का हाल देख कर सुल्हे हुदैबिया के मौक़अ़ पर कुरैश के नुमाइन्दे उ़रवा बिन मसऊ़द ने जो अभी ईमान न लाए थे, येह तअष्षुर पेश किया था, गोया येह अपने का नहीं ग़ैर का तअष्षुर है। आप ने कहा :

"ऐ लोगो ! खुदा की क़सम ! मैं बादशाहों के दरबारों में भी पहुंचा हूं। क़ैसरो किस्रा और नज्जाशी की डेवढ़ियों पर भी हाज़िरी दे चुका हूं। खुदा की क़सम ! किसी बादशाह की इतनी ता'ज़ीम होते नहीं देखी, जितनी ता'ज़ीम मुह़म्मद (صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) की उन के असह़ाब عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان करते हैं। जब कभी भी उन के दहने अक्दस से लुआ़बे मुबारक निकला वोह किसी न किसी शैदाई के हाथ में पड़ा जिसे उस ने अपने चेहरे और जिस्म पर मल लिया, और जब वोह अपने अस्ह़ाब को किसी बात का हुक्म देते हैं तो वोह उस की ता'मील में दौड़ पड़ते हैं, और जब वोह वुज़ू करते हैं तो वुज़ू के पानी के लिये एक दूसरे पर पेश क़दमी करते हैं और जब

वोह गुफ़्त्गू फ़रमाते हैं तो वोह लोग ख़ामोश और पुर सुकून रहते हैं और ता'ज़ीम व तौक़ीर में उन की त़रफ़ नज़र भर कर देखते तक नहीं।" (السيرة النبوية لابن هشام، ج٣، ص٢٦٨)

येह था सह़ाबए किराम عَلَيۡهِمُ الرِّضۡوَان का अन्दाज़े ता'ज़ीम व तौक़ीर का इजमाली ख़ाका जिसे रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيۡهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के एक बेगाने ने पेश किया था, ख़ुद सह़ाबए किराम عَلَيۡهِمُ الرِّضۡوَان ने वाक़ेआ़त की दुन्या में ता'ज़ीम व तौक़ीरे रसूल صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيۡهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की कैसी कैसी मिषालें पेश की हैं उन्हें तो आप अस्ल किताब में मुलाह़ज़ा करेंगे, यहां पर बस बा'ज़ मिषालों पर इक्तिफ़ा किया जाएगा।

﴾1﴿ ग़ज़्वए ख़ैबर की वापसी में मक़ामे सहबा पर नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيۡهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने नमाज़े अ़स्र पढ़ कर ह़ज़रते अ़ली كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰى وَجۡهَهُ الۡكَرِيۡم के ज़ानू पर सर मुबारक रख कर आराम फ़रमाया, ह़ज़रते अ़ली ने नमाज़े अ़स्र न पढ़ी थी, अपनी आंख से देख रहे थे कि वक़्त जा रहा है मगर इस ख़याल से कि ज़ानू सरकाता हूं तो मबादा हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيۡهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के ख़्वाब मुबारक में ख़लल आ जाए, ज़ानू न हटाया यहां तक कि आफ़्ताब ग़ुरूब हो गया। जब चश्मे मुबारक खुली तो ह़ज़रते अ़ली كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰى وَجۡهَهُ الۡكَرِيۡم ने अपनी नमाज़ का ह़ाल अ़र्ज़ किया। हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيۡهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने दुआ़ फ़रमाई तो आफ़्ताब पलट आया, ह़ज़रते अ़ली كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰى وَجۡهَهُ الۡكَرِيۡم ने नमाज़े अ़स्र अदा की फिर सूरज डूब गया।

(الشفاء، ج١، ص٥٩٤، شواهد النبوة، ركن سادس، ص٢٢٠)

ता'ज़ीमे रसूल صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيۡهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ख़ात़िर अफ़्ज़लुल इ़बादात नमाज़ और वोह भी सलातुल वुस्त़ा (नमाज़े अ़स्र) मौला अ़ली كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰى وَجۡهَهُ الۡكَرِيۡم ने क़ुरबान कर दी। चश्मे फ़लक ने ऐसा मन्ज़र कभी न देखा होगा रब तआ़ला के एक बन्दे की दरख़्वास्त पर उस के एक फ़िदाई के लिये सूरज को पलटाया गया हो, और

एक फ़िदाई ने महज़ ता'ज़ीम व तौक़ीरे रसूल صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के पेशे नज़र इतनी अ़ज़ीम कुरबानी दी हो। इसी को इमामे अहले सुन्नत قُدِّسَ سِرُّهٗ इस त़रह़ बयान फ़रमाते हैं :

मौला अ़ली ने वारी तेरी नींद पर नमाज़
और वोह भी अ़स्र सब से जो आ'ला ख़त़र की है

﴾2﴿ हिजरत के मौक़अ़ पर यारे ग़ार ह़ज़रते अबू बक्र सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه ने जो जां निषारी की मिषाल क़ाइम की है वोह भी अपनी जगह बे मिषाल है कि जब हुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم और सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه दोनों ग़ार के क़रीब पहुंचे तो पहले सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه उतरे, सफ़ाई की, ग़ार के तमाम सूराख़ों को बन्द किया, एक सूराख़ को बन्द करने के लिये कोई चीज़ न मिली तो आप ने अपने पाउं का अंगूठा डाल कर उस को बन्द किया, फिर हुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को बुलाया और हुज़ूर तशरीफ़ ले गए और ह़ज़रते सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه के ज़ानू पर सर रख कर आराम फ़रमाने लगे इतने में सांप ने सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه के पाउं को काट लिया, मगर सिद्दीक़े अक्बर, शिद्दते अलम के बा वुजूद महज़ इस ख़याल से कि हुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के आराम में ख़लल न वाक़ेअ़ हो, ब दस्तूर साकिन व सामित रहे, आख़िर जब पैमानए सब्र लबरेज़ हो गया तो आंखों से आंसू जारी हो गए, जब आंसू के क़त़रे चेहरए अक़्दस पर गिरे तो हुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم बेदार हुवे, अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه ने वाक़ेआ़ अ़र्ज़ किया, हुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने डसे हुवे ह़िस्से पर अपना लुआ़बे दहन लगा दिया फ़ौरन आराम मिल गया। एक रिवायत में है कि सांप का येह ज़ह्र हर साल औद करता, बारह साल तक ह़ज़रते सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه इस में मुबतला रहे फिर आख़िर इस ज़ह्र के अषर से आप رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه की शहादत हुई। (مدارج النبوت، ج٢،ص٥٨)

﴿3﴾ रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ज़ुल क़'दा सि. 6 हि. में सहाबा के साथ उमरह के इरादे से मक्कए मुकर्रमा के लिये रवाना हुवे। जब आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم हुदैबिया पहुंचे तो कुरैश पर ख़ौफ़ो हिरास तारी हुवा इस लिये आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने हज़रते उषमाने ग़नी رَضِيَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه को मक्का भेजा और उन को येह हिदायात दीं कि तुम कुरैश को येह बताना कि हम जंग के लिये नहीं उमरह की अदाएगी के लिये आए हैं और उन को इस्लाम की दा'वत भी देना और वोह मुसलमान मर्द व औरत जो मक्का में है उन को फ़त्ह की खुश ख़बरी सुनाना। हज़रते उषमान رَضِيَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه मक्का की तरफ़ बढ़ रहे थे कि उन से हज़रते अबान बिन सअ़द उमवी मिले जो अभी ईमान न लाए थे उन्हों ने हज़रते उषमाने ग़नी رَضِيَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه को अपनी पनाह व ज़मानत दी और अपने घोड़े पर सुवार कर के उन को मक्कए मुकर्रमा लाए। हज़रते उषमाने ग़नी رَضِيَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه ने लोगों तक रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का पैग़ाम पहुंचाया। उधर हुदैबिया में सहाबा عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان कहने लगे कि उषमान खुश नसीब हैं कि उन को तवाफ़े बैतुल्लाह नसीब हो चुका होगा। येह सुन कर रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : मेरा ख़याल है कि उषमान (رَضِيَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه) मेरे बिग़ैर तवाफ़ न करेंगे। इस दौरान येह अफ़्वाह उड़ गई कि हज़रते उषमाने ग़नी رَضِيَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه मक्के में क़त्ल कर दिये गए, इस लिये रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने सहाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان से बैअ़त ली, जो बैअ़ते रिज़वान के नाम से मशहूर है। हज़रते उषमाने ग़नी رَضِيَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه चूंकि उस वक़्त मक्के में थे इस लिये हुज़ूरे अक़्दस صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने खुद अपना दायां हाथ बाएं हाथ पर रख कर उन को बैअ़त के शरफ़ में दाख़िल किया। इस तरह रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का हाथ हज़रते उषमान رَضِيَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه का हाथ क़रार पाया।

बैअ़ते रिज़्वान के बा'द जब ह़ज़रते उ़षमाने ग़नी رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ वापस तशरीफ़ लाए तो मुसलमानों ने उन से कहा आप खुश नसीब हैं कि आप ने त़वाफ़े बैतुल्लाह कर लिया। आप ने जवाब दिया, तुम ने येह मेरे बारे में दुरुस्त अन्दाज़ा न लगाया, उस की क़सम जिस के क़ब्ज़ए कुदरत में मेरी जान है अगर मैं मक्का में एक साल तक भी पड़ा रहता और हुज़ूर صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم हुदैबिया में होते तब भी मैं आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के बिग़ैर त़वाफ़ न करता। कुरैश ने मुझ से त़वाफ़ करने के लिये कहा था मगर मैं ने इन्कार कर दिया।

(مدارج النبوت،ذکر سال ششم آنحضرت صلی اللہ علیہ وسلم،فرضیت حج،ج۲،ص۲۰۹)

ह़ज़रते उ़षमाने ग़नी رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ के अन्दर रसूलुल्लाह صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ता'ज़ीम व अदब का येह पास क़ाबिले मुलाह़ज़ा है कि कुफ़्फ़ार आप से पेशकश कर रहे हैं कि त़वाफ़ तन्हा कर लो मगर आप जवाब देते हैं मुझ से ऐसा हरगिज़ नहीं हो सकता कि मैं अपने आक़ा صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के बिग़ैर त़वाफ़ कर लूं। इधर मुसलमानों का येह तअष्षुर कि ह़ज़रते उ़षमान رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ खुश नसीब हैं कि उन को त़वाफ़े का'बा नसीब हो गया। हुज़ूर صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने सुन कर फ़रमाया : "उ़षमान हमारे बिग़ैर ऐसा नहीं कर सकते।" गोया हुज़ूर صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को भी अपने फ़िदाई पर पूरा ए'तिमाद था। आक़ा हो तो ऐसा और ग़ुलाम हो तो ऐसा।

रसूले अकरम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की इस क़िस्म की ता'ज़ीम और इस त़रह़ का अदब सहाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان का अपना कोई ईजाद कर्दा या इख़्तिराई न था बल्कि **अल्लाह** तआ़ला ने अपने मह़बूब रसूल صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ता'ज़ीम और मजलिस के आदाब खुद बयान फ़रमाए हैं। दुन्या का शहनशाह आता है तो अपने दरबार के आदाब खुद बनाता है और जब जाता है तो अपने निज़ामे आदाब को भी ले जाता है। मगर शहनशाहे इस्लाम हुज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के दरबार का आ़लम ही निराला है, जब

आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم तशरीफ़ लाते हैं तो ख़ालिक़े काइनात عَزَّوَجَلَّ आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के दरबार का अदब नाज़िल फ़रमाता है और किसी ख़ास वक़्त तक के लिये नहीं बल्कि हमेशा हमेशा के लिये अदब के क़वानीन मुक़र्रर फ़रमाता है। इर्शाद होता है :

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تُقَدِّمُوْا بَيْنَ يَدَيِ اللّٰهِ وَرَسُوْلِهٖ وَاتَّقُوا اللّٰهَ ؕ اِنَّ اللّٰهَ سَمِيْعٌ عَلِيْمٌ (پ۲۶،الحجرات:۱)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *ऐ ईमान वालो ! अल्लाह और उस के रसूल से आगे न बढ़ो, और अल्लाह से डरो, बेशक अल्लाह सुनता जानता है।*

बा'ज़ सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان ने बक़र ईद से पहले ही कुरबानी कर ली थी या कुछ ह़ज़राते सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان ने रमज़ानुल मुबारक के रोज़े एक दिन पहले ही से शुरूअ़ कर दिये उन को हिदायत की गई कि ऐसा न करें, रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से आगे बढ़ने की कोशिश न करें, ऐसा करना ख़त़रनाक है। आयत पर ग़ौर करने से एक बात येह भी निकलती है कि रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की बे अदबी अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की बे अदबी है, जिन लोगों ने पेश क़दमी की थी उन्हों ने रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर की थी, लेकिन हुक्म उतरा तो येह कि तुम अल्लाह और उस के रसूल صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर पेश क़दमी न करो। दूसरे येह कि किसी क़ौल, किसी फ़े'ल में पेश क़दमी मन्अ़ है क्यूंकि आयत में येह हुक्म बिला क़ैद है। इसी त़रह़ जब रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم किसी जगह के लिये तशरीफ़ ले जाएं तो बिग़ैर किसी ख़ास मस्लह़त के आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से आगे चलना भी मन्अ़ है। अगर कोई हुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की मजलिस में सुवाल करे तो हुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से पहले किसी और को उस का जवाब भी न देना चाहिये, इसी त़रह़ जब खाना ह़ाज़िर हो तो हुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से पहले खाना शुरूअ़ न किया जाए।

फिर येह भी देखिये कि जिन सहाबए किराम رِضْوَانُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْهِمْ اَجْمَعِيْن ने पेश क़दमी की थी अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की इ़बादत में की थी, रोज़े रखने या कु़रबानी करने में की थी, ऐसा करना ब ज़ाहिर कोई जुर्म नहीं मा'लूम होता, मगर आस्मान से तम्बीह उतर रही है कि ऐ ईमान वालो ! जलीलुल क़द्र इ़बादतों में भी तुम मेरे नबी से आगे न बढ़ना, और इस मुआ़मले में अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से डरते रहना यक़ीनन अल्लाह عَزَّوَجَلَّ तुम्हारी हर नक़्लो ह़रकत और निशस्तो बरख़ास्त को सुनता जानता है। इसी सूरह में आगे अल्लाह عَزَّوَجَلَّ इस त़रह़ अपने नबी की ता'ज़ीम की ता'लीम दे रहा है :

اَصْوَاتَكُمْ فَوْقَ صَوْتِ النَّبِيِّ وَلَا تَجْهَرُوْا لَهٗ بِالْقَوْلِ كَجَهْرِ بَعْضِكُمْ لِبَعْضٍ اَنْ تَحْبَطَ اَعْمَالُكُمْ وَاَنْتُمْ لَا تَشْعُرُوْنَ۝ (پ۲۶،الحجرات:۲)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *ऐ ईमान वालो ! अपनी आवाज़ें ऊंची न करो उस ग़ैब बताने वाले (नबी) की आवाज़ से और उन के हुज़ूर बात चिल्ला कर न कहो जैसे आपस में एक दूसरे के सामने चिल्लाते हो कि कहीं तुम्हारे अ़मल अकारत न हो जाएं और तुम्हें ख़बर न हो।*

इस आयते करीमा में भी अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने अहले ईमान को अपने मह़बूब صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का एक अ़ज़ीम अदब सिखाया है कि तुम मेरे मह़बूब صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के सामने बोलने में भी बा अदब रहो, उन के हुज़ूर हल्की आवाज़ में बातें करो, अगर तुम ने ज़ोर ज़ोर से चीख़ कर उन के हुज़ूर बात की तो तुम्हारे अ़मल राएगां कर दिये जाएंगे। ग़ौर करें बड़े से बड़े जुर्म का इर्तिकाब इन्दल्लाह मुआ़फ़ हो सकता है मगर रब तआ़ला अपने मह़बूब صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की बे अदबी और गुस्ताख़ी मुआ़फ़ न फ़रमाएगा।

ادب گاہیست زیر آسماں از عرش نازک تر
نفس گم کردہ می آید جنید وبا یزید ایں جا

हज़रते षाबित बिन क़ैस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ बुलन्द आवाज़ थे इस आयत के बा'द उन्हें हुक्म हुवा कि इस बारगाह में अपनी आवाज़ पस्त करें वोह इन्तिहाई अदब और ख़ौफ़ की वजह से ख़ाना नशीन हो गए, बारगाहे नबवी में जब हाज़िर न हुवे तो हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने उन की ग़ैर हाज़िरी का सबब हज़रते सा'द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से दरयाफ़्त किया, येह हज़रते षाबित رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के पडोसी थे उन्हों ने जा कर हज़रते षाबित رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से पूछा तो कहा : मैं तो दोज़ख़ी हो गया मेरी ही आवाज़ रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के सामने सब से ज़ियादा बुलन्द होती थी। हज़रते सा'द ने रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के सामने षाबित رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का क़ौल नक़्ल कर दिया, हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : नहीं, उन से कह दो वोह जन्नती हैं।

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उन लोगों को सराह रहा है जो रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के सामने अपनी आवाज़ें पस्त रखते हैं।

اِنَّ الَّذِیْنَ یَغُضُّوْنَ اَصْوَاتَهُمْ عِنْدَ رَسُوْلِ اللّٰهِ اُولٰٓىٕكَ الَّذِیْنَ امْتَحَنَ اللّٰهُ قُلُوْبَهُمْ لِلتَّقْوٰىؕ لَهُمْ مَّغْفِرَةٌ وَّ اَجْرٌ عَظِیْمٌ ۝

(پ۲۶،الحجرات:۳)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *बेशक वोह जो अपनी आवाज़ें पस्त करते हैं रसूलुल्लाह के पास वोह हैं जिन का दिल **अल्लाह** ने परहेज़गारी के लिये परख लिया है उन के लिये बख़्शिश और बड़ा षवाब है।*

आयते करीमा "لَا تَرْفَعُوْٓا اَصْوَاتَكُمْ" के नाज़िल होने के बा'द हज़रते फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ और दूसरे सहाबए किराम عَلَیْهِمُ الرِّضْوَان इस क़दर धीमी आवाज़ से बातें करते कि हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को दोबारा दरयाफ़्त करने की ज़रूरत पेश आती।

ह़ज़रते सिद्दीके़ अक्बर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने तो क़सम खा ली थी कि मैं रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से इस त़रह़ बातें करूंगा जैसे सरगोशी की जाती है। इन ह़ज़रात के बारे में येह आयते करीमा नाज़िल हुई और उन को सराहा गया जो बा अदब हैं और रसूल صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की बारगाह में आवाज़ें पस्त रखते हैं।

सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की जनाबे पाक में किस क़दर बा अदब रहते थे। ह़ज़रते मौला अ़ली رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ इस का नक़्शा खींचते हुवे फ़रमाते हैं : जिस वक़्त आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم गुफ़्त्गू शुरूअ़ फ़रमाते आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के अस्ह़ाब इस त़रह़ सर झुका लेते जैसे उन के सरों पर परन्दे हों।

रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को **"या मुह़म्मद ! या मुह़म्मद !"** कह कर पुकारने वालों की रब तआ़ला मज़म्मत करते हुवे फ़रमाता है :

اِنَّ الَّذِیْنَ یُنَادُوْنَکَ مِنْ وَّرَآءِ الْحُجُرٰتِ اَکْثَرُھُمْ لَا یَعْقِلُوْنَ ۝ وَلَوْ اَنَّھُمْ صَبَرُوْا حَتّٰی تَخْرُجَ اِلَیْھِمْ لَکَانَ خَیْرًا لَّھُمْ ؕ وَاللّٰہُ غَفُوْرٌ رَّحِیْمٌ ۝ (پ۲۶، الحجرات:۵)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *बेशक वोह जो तुम्हें हुजरों के बाहर से पुकारते हैं उन में अकषर बे अ़क़्ल हैं और अगर वोह सब्र करते यहां तक कि तुम आप उन के पास तशरीफ़ लाते तो येह उन के लिये बेहतर था और **अल्लाह** बख़्शने वाला मेहरबान है।*

क़बीलए बनी तमीम का एक वफ़्द ऐन दोपहर के वक़्त रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से मिलने पहुंचा, आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم मकान शरीफ़ के अन्दर आराम फ़रमा रहे थे, उन्हों ने हुजरों के बाहर से **"या मुह़म्मद ! या मुह़म्मद !"** कह कर पुकारना शुरूअ़ कर दिया।

हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم बाहर तशरीफ़ लाए। मगर ख़ुदाए तआ़ला ने अपने मह़बूब की ऐसी बे अदबी गवारा न फ़रमाई और ऐसा सख़्त हुक्म नाज़िल फ़रमाया कि "ऐसा करने वाले बे अ़क़्ल हैं" और फिर अदब की ता'लीम दी कि जब लोग दरे दौलत पर पहुंचे तो आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को आवाज़ न दें, और आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के बाहर तशरीफ़ लाने का इन्तिज़ार करें।

रब तआ़ला एक मक़ाम पर अपने मह़बूब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का अदब इस त़रह़ इर्शाद फ़रमा रहा है :

لَا تَجْعَلُوْا دُعَآءَ الرَّسُوْلِ بَیْنَكُمْ كَدُعَآءِ بَعْضِكُمْ بَعْضًا (پ۱۸،النور:۶۳)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *रसूल के पुकारने को आपस में ऐसा न ठहरा लो जैसा तुम में एक दूसरे को पुकारता है।*

इस आयते करीमा के दो पहलू हैं एक तो येह कि जब रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم तुम को बुलाएं तो उन के बुलाने को कोई मा'मूली बुलाना न समझ बैठना बल्कि मेरे रसूल صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के बुलाने की शान तो येह है कि अगर वोह किसी को ऐ़न नमाज़ में भी आवाज़ दें फ़ौरन नमाज़ ही की ह़ालत में ह़ाज़िर होना फ़र्ज़ है जैसा कि बुख़ारी शरीफ़ की ह़दीष में है कि ह़ज़रते अबू सईद बिन मुअ़ल्ला رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने कहा : मैं मस्जिद में नमाज़ पढ़ रहा था कि मुझे रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने आवाज़ दी। मैं चूंकि नमाज़ पढ़ रहा था इस लिये जवाब न दिया फिर नमाज़ से फ़ारिग़ हो कर हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में आ कर अ़र्ज़ किया या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم मैं नमाज़ पढ़ रहा था (इस लिये ह़ाज़िर न हो सका) हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, क्या अल्लाह तआ़ला का येह हुक्म नहीं सुना है !

يَاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اسْتَجِيْبُوْا لِلّٰهِ وَلِلرَّسُوْلِ اِذَا دَعَاكُمْ لِمَا يُحْيِيْكُمْ (پ۹،الانفال:۲٤)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : ऐ ईमान वालो ! अल्लाह और रसूल के बुलाने पर हाज़िर हो जब रसूल तुम्हें उस चीज़ के लिये बुलाएं जो तुम्हें ज़िन्दगी बख़्शेगी।

इस क़िस्म का वाक़िआ़ ह़ज़रते अबी बिन क़अ़्ब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के बारे में भी मरवी है। येह है रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के बुलाने की अ़ज़मत कि नमाज़ जैसा अ़ज़ीम फ़रीज़ा भी तर्क कर के ता'मीले हुक्म को पहुंचना फ़र्ज़ क़रार दिया गया।

आयत की दूसरी तफ़्सीर येह है कि तुम रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को इस त़रह़ न पुकारना जिस त़रह़ बाहम एक दूसरे को नाम ले कर पुकारते हो। इन को या रसूलल्लाह, या नबिय्यल्लाह, या ख़ैर ख़ल्क़िल्लाह वग़ैरा सिफ़ाती नामों से पुकार सकते हो। अल्लाह عَزَّوَجَلَّ अहले ईमान को ऐसा हुक्म क्यूं न देता कि उस ने ख़ुद अपने पूरे कलामे अ़ज़ीम में कहीं भी या मुह़म्मद कह कर नहीं पुकारा है जब कि दूसरे अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام को उन के ज़ाती नामों से ख़िताब फ़रमाया है।

सहाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان के पेशे नज़र रब्बुल आ़लमीन عَزَّوَجَلَّ के मज़्कूरा बाला इर्शादात व फ़रामीन थे। उन्हों ने इन अह़काम को ख़ूब समझ लिया था और इधर रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की शख़्सिय्यत को अपने सर की आंखों से और बहुत क़रीब से देखा था, इस लिये हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की अ़ज़मत व जलालत फ़ित़री त़ौर पर उन के क़ुलूब व अज़्हान में रच बस गई थी इस लिये उन्हों ने अ़क़ीदत व मह़ब्बत और एह़तिराम व अदब के ऐसे ऐसे नुमूने पेश किये जिन की मिषाल मिलनी मुश्किल है। आप इस किताब में इस क़िस्म के वाक़ेआ़त पढ़ेंगे जिन से रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم

की बारगाह में सहाबए किराम عَلَيۡهِمُ الرِّضۡوَان का गायत दरजा एह्तिराम व अदब वाज़ेह होगा और फिर आप के क़ुलूब भी महब्बते रसूल صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيۡهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से महज़ूज़ हुवे बिग़ैर न रहेंगे और येही इस किताब का मक्सदे अस्ली है।

मुअल्लिफ़ साहिब मुतअ़द्दद इन्फ़िरादी ख़ुसूसिय्यात व इम्तियाज़ात के मालिक हैं। उन के ऊपर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का फ़ज़्ले अ़ज़ीम है। दीनी और दुन्यवी दोनों क़िस्म की ता'लीम से बहरा वर हैं। पंजाबी इन की मादरी ज़बान है मगर उर्दू, अंग्रेज़ी, अ़रबी और फ़ारसी में भी महारत रखते हैं, ख़िदमते इस्लाम का भी जज़्बए बेकरां पाया है। अकषर अवक़ात इशाअ़ते इस्लाम की फ़िक्र में सरगर्दां रहते हैं। गुज़श्ता मौसिमे हज (सि. 1403 हि.) में सूफ़ी साहिब ने तब्लीग़े दीन के लिये यूरोप का सफ़र किया था। आप का येह तब्लिग़ी दौरा मिस्र, इंग्लेन्ड, हॉलेन्ड, तुर्की और जर्मनी पर मुश्तमिल था। वहां के इस्लामी मराकिज़ के अफ़राद से मुलाक़ात और तबादलए ख़यालात के इलावा बा'ज़ नए मराकिज़ की भी दरयाफ़्त हुई और ख़िदमते इस्लाम की राहें हमवार हुईं।

अन्जुमने ख़ुद्दामे अह़मद रज़ा लाहौर के आप सद्र हैं जिस ने थोड़े अ़रसे में मुतअ़द्दद व मुफ़ीद कार आमद किताबें शाएअ़ करने का एक रिकार्ड क़ाइम कर दिया है।

इधर दो साल से मुक़ाबला मक़ाला निगारी, इमाम अह़मद रज़ा एवॉर्ड और तक़्सीमे इन्आ़मात का भी सूफ़ी साहिब एहतिमाम करते हैं जो हिन्द व पाक और बंग्लादेश सत़्ह पर मुन्अ़क़िद होता है, मुफ़ीद और अहम किताबों की इशाअ़त में भी आप ख़ुसूसी दिलचस्पी का षुबूत देते हैं। तर्जमा "अन्वारुल ह़क़ फ़िस्सलात अ़ला सय्यिदिल ख़ल्क़" और "तआ़रुफ़े इमाम अह़मद रज़ा"

आप ही के जज़्बए दीन परवरी का षमरा है । अव्वलुज़्ज़िक्र अ़ल्लामा यूसुफ इस्माईल नब्हानी رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه की अ़रबी तस्नीफ़ का तर्जमा है जो दुरूदो सलाम के मौज़ूअ़ पर एक शानदार किताब है । जब कि दूसरी किताब आ'ला ह़ज़रत इमाम अह़मद रज़ा बरेल्वी رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه के ह़ालात पर एक मुख़्तसर मगर जामेअ़ किताब है जिस के मुरत्तिब भी ख़ुद सूफ़ी साह़िब हैं ।

ज़ेरे नज़र किताब "**सह़ाबा** (رضی اللہ عنہم) **का इश्के़ रसूल** (صلی اللہ علیہ وسلم)" भी आप के ज़ौक़े तस्नीफ़ का एक आ'ला नुमूना है जो आप के सोज़े पिन्हां और इश्के़ रिसालत का पता देती है । येह किताब आप के हाथों में है इस को पढ़ें और लुत्फ़ अन्दोज़ हों और मुअल्लिफ़ और मुतअ़ल्लिक़ीन को दुआ़एं दें ।

रब तआ़ला सूफ़ी साह़िब की येह ख़िदमत क़बूल फ़रमाए और मज़ीद इस क़िस्म की ख़िदमात की तौफ़ीक़ बख़्शे और फ़लाहे़ दारैन से नवाज़े । اٰمِين بِجاهِ النَّبِیِّ الْاَمين صَلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

इफ़्तिख़ार अह़मद क़ादिरी (रियाज़)
रुक्ने अल मज्मउ़ल इस्लामी मुबारक पूर (हिन्द)
8 जुमादिल उला सिन 1404 हि.
9 फ़रवरी सि. 1984 ई.

ता'ज़ीम व अदब

नबिय्ये अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की महब्बत के बिग़ैर आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم पर ईमान लाना मुतसव्वुर नहीं है, मोमिन के लिये ज़रूरी है कि वोह नबिय्ये अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को अपनी जान, बाप, बेटे और मख़्लूक़ से ज़ियादा महबूब रखे, जैसे कि **अल्लाह** तआला ने फ़रमाया है :

اَلنَّبِیُّ اَوْلٰی بِالْمُؤْمِنِیْنَ مِنْ اَنْفُسِهِمْ
(پ ۲۱، الاحزاب:۶)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *येह नबी मुसलमानों का उन की जान से ज़ियादा मालिक है ।*

और सरकारे दो आलम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم फ़रमाते हैं : तुम में से कोई एक हरगिज़ (कामिल) ईमानदार नहीं होगा जब तक कि मैं उसे उस की जान से ज़ियादा महबूब न होऊं ।"

(المسند لامام احمد بن حنبل،حدیث عبداللّٰہ بن ربیعة السلمی، الحدیث۱۸۹۸۳، ج۷،ص۹)

येह भी फ़रमाया : तुम में से कोई (कामिल) ईमानदार नहीं होगा जब तक मैं उसे बाप, बेटे और तमाम लोगों से ज़ियादा महबूब न होऊं । (صحیح البخاری، کتاب الایمان،باب حب الرسول من الایمان، الحدیث۱۵، ج۱،ص۱۷)

अलामाते महब्बत

हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से महब्बत की बहुत सी अलामतें और आषार हैं जो आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की महब्बत के इम्तिहान के लिये कसौटी की हैषिय्यत रखते हैं । उन में से एक अलामत हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का ब कषरत ज़िक्र करना है । हदीष शरीफ़ में है : "مَنْ اَحَبَّ شَیْأً اَکْثَرَ ذِکْرَہٗ" जो शख़्स किसी से महब्बत रखता है, उस का ज़िक्र ब कषरत करता है ।

(کنزالعمال، کتاب الاذکار،الباب الاول،الحدیث۱۸۲۵، ج۱،ص۲۱۷)

ता'ज़ीम

कषरते ज़िक्र के साथ साथ एक अलामत येह भी है कि ता'ज़ीम व तकरीम का कोई दक़ीक़ा फ़िरोग्ज़ाश्त न किया जाए

और हुज़ूर सय्यिदुल अनाम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का नामे पाक कमाले ता'ज़ीम व तकरीम और सलातो सलाम के साथ ले और नामे पाक लेते वक़्त ख़ौफ़ व ख़शिय्यत इज्ज़ो इन्किसारी और ख़ुशूअ़ व ख़ुज़ूअ़ का इज़्हार करे।

لَا تَجْعَلُوْا دُعَآءَ الرَّسُوْلِ بَيْنَكُمْ كَدُعَآءِ بَعْضِكُمْ بَعْضًا (پ۱۸،النور:۶۳)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *रसूल के पुकारने को आपस में ऐसा न ठहरा लो जैसा तुम में एक दूसरे को पुकारता है।*

तफ़्सीरे कबीर में है :

لاتنادوه كما ينادى بعضكم بعضا لا تقولوا يامحمد يا اباالقاسم ولكن قولوا يا رسول الله يا نبى الله .(التفسيرالكبير،ج۸،ص۴۲۵،پ۱۸،النور:۶۳)

"नबिय्ये अकरम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को इस त़रह़ न पुकारो जैसे तुम एक दूसरे को पुकारते हो। यूं न कहो : या मुह़म्मद ! या अबल क़ासिम ! बल्कि अ़र्ज़ करो या रसूलल्लाह, या नबिय्यल्लाह" (या'नी नबिय्ये अकरम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को नाम या कुन्यत से न पुकारो बल्कि अवसाफ़ और अल्क़ाब से याद करो)

अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है :

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَرْفَعُوْۤا اَصْوَاتَكُمْ فَوْقَ صَوْتِ النَّبِيِّ وَ لَا تَجْهَرُوْا لَهٗ بِالْقَوْلِ كَجَهْرِ بَعْضِكُمْ لِبَعْضٍ اَنْ تَحْبَطَ اَعْمَالُكُمْ وَاَنْتُمْ لَا تَشْعُرُوْنَ (پ۲۶،الحجرات:۲)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *ऐ ईमान वालो ! अपनी आवाज़ें ऊंची न करो इस ग़ैब बताने वाले (नबी) की आवाज़ से और इन के हुज़ूर बात चिल्ला कर न कहो जैसे आपस में एक दूसरे के सामने चिल्लाते हो कि कहीं तुम्हारे अ़मल अकारत न हो जाएं और तुम्हें ख़बर न हो।*

अबू मुह़म्मद मक्की رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं :

اى لاتسابقوه بالكلام ولاتغلظواله بالخطاب ولاتنادوه باسمه نداء بعضكم بعضا ولكن عظموه ووقروه ونادوه باشرف مايحب ان ينادى به يارسول الله! يا نبى الله. (الشفاء،الباب الثالث،ج۲،ص۶۵)

या'नी कलाम में नबिय्ये अकरम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से सबक़त न करो और आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से हम कलाम होते हुवे सख़्ती से बात न करो और आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का नाम ले कर न पुकारो जिस त़रह़ तुम एक दूसरे को पुकारते हो बल्कि आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ता'ज़ीम व तौक़ीर करो और अशरफ़ तरीन अवसाफ़ से आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को निदा करो जिन से निदा किये जाने को आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पसन्द फ़रमाएं और यूं कहो या रसूलल्लाह ! या नबिय्यल्लाह !" (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم)

नबिय्ये अकरम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की बे अदबी कुफ़्र है

अल्लाह तआ़ला ने अहले ईमान को नबिय्ये अकरम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के लिये आवाज़ बुलन्द करने और ता'ज़ीम व तौक़ीर के बिग़ैर बुलाने से मन्अ़ फ़रमाया और हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की इस बे अदबी को रवा नहीं रखा और इस अ़ज़ीम जुर्म के मुर्तकिब को आ'माल के बरबाद हो जाने की वईद सुनाई, मा'लूम हुवा कि बारगाहे रिसालत की बे अदबी आ'माल के ज़ाएअ़ हो जाने का सबब है और तमाम उ़-लमा का इस पर इत्तिफ़ाक़ है कि कुफ़्र के सिवा कोई गुनाह आ'माल के ज़ाएअ़ होने का सबब नहीं है और जो चीज़ आ'माल के ज़ियाअ़ का सबब हो, कुफ़्र है।

अब ग़ौर करना चाहिये कि नबिय्ये अकरम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की बे अदबी आ'माल के ज़ाएअ़ होने का सबब है और जो ज़ियाए़ आ'माल का सबब हो कुफ़्र है, नतीजा येह हुवा कि नबिय्ये अकरम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की बे अदबी कुफ़्र है। येह भी पेशे नज़र रहे कि ह़याते ज़ाहिरी में और विसाल के बा'द नबिय्ये अकरम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की शान ता'ज़ीम व तकरीम के सिल्सिले में यक्सां है।

इमामे मालिक رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ का अबू जा'फ़र मन्सूर से मुकालमा

अबू जा'फ़र मन्सूर बादशाह मस्जिदे नबवी علٰی صاحِبِھَا الصَّلٰوۃُ وَالسَّلام में ह़ज़रते इमाम मालिक رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ से एक मस्अले में गुफ़्तगू कर रहा था, इमाम मालिक رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने उस से फ़रमाया :

يا اميرالمؤمنين لاترفع صوتك فی هٰذا المسجد فان اللّٰه عزوجل ادب قوما فقال:**لَا تَرْ فَعُوْٓا اَصْوَاتَكُمْ فَوْقَ صَوْتِ النَّبِيِّ**...الآية و مدح قوما فقال:**اِنَّ الَّذِيْنَ يَغُضُّوْنَ اَصْوَاتَهُمْ عِنْدَ رَسُوْلِ اللّٰهِ**...الآية وذم قوما فقال: **اِنَّ الَّذِيْنَ يُنَادُوْنَكَ مِنْ وَّرَآءِ الْحُجُرَاتِ**... الآية وان حرمته ميتا كحرمته حيا فاستكان لها ابو جعفر وقال يا اباعبدالله استقبل القبلة وادعو ام استقبل رسول الله؟ فقال ولم تصرف وجهك عنه وهو وسيلتك وو سيلة ابيك آدم عليه السلام الى اللّٰه تعالٰی يوم القيامة بل استقبله واستشفع به فيشفعه اللّٰه.

(شرح الشفاء،الباب الثالث،ج٢،ص ٧٢)

"ऐ मुसलमानों के अमीर ! इस मस्जिद में आवाज़ बुलन्द न कर क्यूंकि **अल्लाह** तआ़ला ने एक जमाअ़त को अदब सिखाया और फ़रमाया :

لَا تَرْ فَعُوْٓا اَصْوَاتَكُمْ فَوْقَ صَوْتِ النَّبِيِّ (پ٢٦،الحجرات:٢)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *अपनी आवाज़ें ऊंची न करो इस ग़ैब बताने वाले (नबी) की आवाज़ से ।*

और एक जमाअ़त की ता'रीफ़ करते हुवे फ़रमाया :

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : बेशक वोह जो अपनी आवाज़ें पस्त करते हैं रसूलुल्लाह के पास वोह हैं जिन का दिल अल्लाह ने परहेज़गारी के लिये परख लिया है उन के लिये बख़्शिश और बड़ा सवाब है।

اِنَّ الَّذِيْنَ يَغُضُّوْنَ اَصْوَاتَهُمْ عِنْدَ رَسُوْلِ اللّٰهِ اُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ امْتَحَنَ اللّٰهُ قُلُوْبَهُمْ لِلتَّقْوٰى ؕ لَهُمْ مَّغْفِرَةٌ وَّاَجْرٌ عَظِيْمٌ ۝ (پ٢٦،الحجرات:٣)

और एक जमाअ़त की मज़म्मत करते हुवे फ़रमाया :

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : बेशक वोह जो तुम्हें हुजरों के बाहर से पुकारते हैं उन में अकसर बे अ़क़्ल हैं।

اِنَّ الَّذِيْنَ يُنَادُوْنَكَ مِنْ وَّرَآءِ الْحُجُرٰتِ (پ٢٦،الحجرات:٤)

बेशक बाद अज़ विसाल हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की इ़ज़्ज़त ऐसी है जैसी आप की ह़याते ज़ाहिरी में थी। (येह सुन कर) अबू जा'फ़र ने फ़रोतनी का इज़्हार किया और कहा ऐ अबू अ़ब्दुल्लाह (इमाम मालिक رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه की कुन्निय्यत) क़िब्ला रू हो कर दुआ करूं, या रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की त़रफ़ रुख़ करूं ? इमाम मालिक رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने फ़रमाया : तू हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से क्यूं रुख़ फेरता है ह़ालांकि हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم क़ियामत के दिन बारगाहे इलाही में तेरे और तेरे जद्दे अमजद आदम عَلَيْهِ السَّلَام के वसीला हैं, तू हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की त़रफ़ रुख़ कर और शफ़ाअ़त की दरख़्वास्त कर, अल्लाह तआ़ला तेरे लिये शफ़ाअ़त क़बूल फ़रमाएगा।

सहाबए किराम رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُم और ता'ज़ीमे रसूल صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

उ़रवा बिन मसऊ़द कहते हैं कि जब कुरैश ने उन्हें सुल्ह़े हुदैबिया के साल, नबिय्ये अकरम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में भेजा, उन्हों ने सहाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان से नबिय्ये अकरम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की बे पनाह ता'ज़ीम देखी, उन्हों ने देखा कि

नबिय्ये अकरम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم जब भी वुज़ू फ़रमाते तो सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان वुज़ू का पानी ह़ासिल करने के लिये बेह़द कोशिश करते ह़त्ता कि क़रीब था कि वुज़ू का पानी न मिलने के सबब लड़ पड़ें। उन्हों ने देखा कि नबिय्ये अकरम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم दहने मुबारक या बीनी मुबारक का पानी डालते तो सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان उसे हाथों में लेते, अपने चेहरे और जिस्म पर मलते और आबरू पाते, आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का कोई बाल जसदे अत़हर से जुदा नहीं होता था मगर उस के ह़ुसूल के लिये जल्दी करते, जब आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم उन्हें कोई ह़ुक्म देते तो फ़ौरन ता'मील करते और जब नबिय्ये अकरम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم गुफ़्त्गू फ़रमाते तो आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के सामने ख़ामोश रहते और अज़ राहे ता'ज़ीम आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की त़रफ़ आंख उठा कर न देखते।

जब उ़रवा बिन मसऊ़द क़ुरैश के पास वापस गए तो उन्हें कहा : ऐ क़ौमे क़ुरैश ! मैं किस्रा, क़ैसर और नज्जाशी (या'नी शाहे फ़ारस, शाहे रूम और शाहे ह़बशा) के पास उन की ह़ुकूमत में गया हूं, ब ख़ुदा मैं ने हरगिज़ कोई बादशाह अपनी क़ौम में इतना मोह़तरम नहीं देखा जिस क़दर मुह़म्मद (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) अपने अस्ह़ाब में मुअ़ज़्ज़ज़ हैं। एक रिवायत में है : "मैं ने कभी ऐसा बादशाह नहीं देखा कि उस के रफ़ीक़ उस की इस क़दर ता'ज़ीम करते हों जितनी मुह़म्मद صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के अस्ह़ाब عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان आप की ता'ज़ीम करते हैं। तह़क़ीक़ कि मैं ने ऐसी क़ौम देखी है जो कभी भी नबिय्ये अकरम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को नहीं छोड़ेगी और हमेशा आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ता'ज़ीम करती रहेगी।"

ह़ज़रते बरा बिन आ़ज़िब رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه फ़रमाते हैं : मैं चाहता था कि किसी अम्र के बारे में रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से सुवाल करूं लेकिन आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की हैबत के सबब दो साल तक मुअख़्ख़र करता रहा।" (الشفاء، الباب الثالث، ج٢، ص ٧١)

ह़ज़रते अ़म्र बिन अल आ़स رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं कि मुझे नबिय्ये अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से ज़ियादा न तो कोई मह़बूब था और न मेरी निगाह में आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से ज़ियादा कोई मोह़तरम था इस के बा वुजूद आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के एह़तिराम के सबब मैं आंख भर कर आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के जमाल की ज़ियारत न कर सकता था। अगर मुझ से हु़ज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की सिफ़त पूछी जाए तो मैं बयान नहीं कर सकूंगा क्यूंकि मैं आंख भर कर आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के जमाल से बहरह नहीं हो सकता था।" (الشفاء ،الباب الثالث، ج۲،ص۶۸)

ह़ज़रते उसामा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं कि मैं बारगाहे रिसालत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم में इस ह़ाल में ह़ाज़िर हुवा कि सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के गिर्द इस त़रह़ बैठे हुवे थे गोया उन के सरों पर परन्दे बैठे हुवे हैं। (الشفاء،الباب الثالث، ج۲،ص۶۹)

(या'नी वोह अपने सरों को ह़रकत नहीं दे रहे थे क्यूंकि परन्दा उस जगह बैठता है जो साकिन हो।)

ह़ज़रते अमीर मुआ़विया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को इत्त़िलाअ़ मिली कि काबिस बिन रबीआ़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के (सूरतन) मुशाबह हैं जब ह़ज़रते काबिस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ह़ज़रते अमीर मुआ़विया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के घर के दरवाज़े से दाख़िल हुवे तो ह़ज़रते अमीर मुआ़विया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ अपने तख़्त से उठ खड़े हुवे उन का इस्तिक़्बाल किया, उन की आंखों के दरमियान बोसा दिया और उन्हें मिरग़ब (एक मक़ाम) इनायत फ़रमाया (येह सब कुछ इस लिये था कि) उन की सूरत नबिय्ये अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से मिलती जुलती थी (الشفاء،الباب الثالث،ج۲،ص۸۸)

अगर अजल्लए सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان की ता'ज़ीम और इस बा बरकत बारगाह के एह़तिराम में मुबालग़ा करने और हर बाब में आदाब की रिआ़यत करने की रिवायात का इह़ात़ा किया जाए तो कलाम त़वील हो जाएगा। तमाम सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان इस ज़ाते करीम को बेहतरीन अल्क़ाब, कमाले तवाज़ोअ़ और मर्तबा व मक़ाम की इन्तिहाई रिआ़यत से ख़ित़ाब करते थे और इब्तिदाए कलाम में सलात के बा'द "فَدَیْتُکَ بِاَبِیْ وَ اُمِّی" मेरे वालिदैन भी आप पर फ़िदा हों, या "بِنَفْسِیْ اَنْتَ یَارَسُوْل!" मेरी जान आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم पर निषार है, जैसे कलिमात इस्ते'माल करते थे और फ़ैज़े सोह़बत की फ़िरावानी के बा वुजूद, मह़ब्बत की शिद्दत के तक़ाज़े की बिना पर, ता'ज़ीम व तौक़ीर में कोताही और तक़्सीर के मुर्तकिब नहीं होते थे बल्कि हमेशा हुज़ूर सय्यिदिल अनाम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ता'ज़ीम व इजलाल में इज़ाफ़ा करते थे।

ताबेई़न رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُم और ता'ज़ीमे मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم

इसी त़रह़ ताबेई़न और तबए़ ताबेई़न भी सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان की ता'ज़ीमे आषार के मुआ़मले में उन्हीं के नक़्शे क़दम पर थे। ह़ज़रते मुस्अ़ब बिन अ़ब्दुल्लाह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं कि जब इमाम मालिक رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के सामने नबिय्ये अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का ज़िक्र किया जाता तो उन के चेहरे का रंग मुतग़य्यिर हो जाता उन की पुश्त झुक जाती यहां तक कि येह अम्र उन के हमनशीनों पर गिरां गुज़रता।

एक दिन ह़ाज़िरीन ने इमाम मालिक رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से उन की इस कैफ़िय्यत के बारे में पूछा तो उन्हों ने फ़रमाया : जो कुछ मैं ने

देखा है, तुम देखते तो मुझ पर ए'तिराज़ न करते। मैं ने क़ारियों के सरदार ह़ज़रते मुह़म्मद बिन मुन्कदिर को देखा कि मैं ने जब भी उन से कोई ह़दीष पूछी तो वोह रो देते यहां तक कि मुझे उन के ह़ाल पर रह़्म आता था। (الشفاء،الباب الثالث،ج٢،ص٧٣)

वाक़िआते ता'ज़ीम

सि. 5 हि. में ग़ज़्वए बनी अल मुस्त़लक़ से वापसी के वक़्त क़ाफ़िला क़रीबे मदीना एक पड़ाव पर ठहरा तो उम्मुल मोअमिनीन ह़ज़रते आइशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا ज़रूरत के लिये किसी गोशे में तशरीफ़ ले गईं, वहां आप का हार टूट गया उस की तलाश में मश्ग़ूल हो गईं इधर क़ाफ़िले ने कूच किया और आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا का मोह़मल शरीफ़ ऊंट पर कस दिया और उन्हें येही ख़याल रहा कि उम्मुल मोअमिनीन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا इस में हैं और क़ाफ़िला चल दिया। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا आ कर क़ाफ़िले की जगह बैठ गईं और आप ने ख़याल किया कि मेरी तलाश में क़ाफ़िला ज़रूर वापस होगा।

क़ाफ़िले के पीछे गिरी पड़ी चीज़ उठाने के लिये एक साहिब रहा करते थे। इस मौक़अ़ पर ह़ज़रते सफ़्वान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ इस काम पर थे, जब वोह आए और उन्हों ने आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا को देखा तो बुलन्द आवाज़ से اِنَّا لِلّٰهِ وَاِنَّاۤ اِلَیْهِ رٰجِعُوْنَ पुकारा, आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا ने कपड़े से पर्दा कर लिया, उन्हों ने अपनी ऊंटनी बिठाई, आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا उस पर सुवार हो कर लश्कर में पहुंची। मुनाफ़िक़ीने सियाह बात़िन ने अवहामे फ़ासिदा फैलाए और आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا की शान में बदगोई शुरूअ़ की, बा'ज़ मुसलमान भी उन के फ़रेब में आ गए और उन की ज़बान से भी कोई कलिमए बेजा सरज़द हुवा। उम्मुल मोअमिनीन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا बीमार हो गईं और एक माह तक बीमार रहीं, इस ज़माने में उन्हें इत्तिलाअ़ न हुई कि मुनाफ़िक़ीन उन की निस्बत क्या बक रहे हैं।

एक रोज़ उम्मे मस्तह़ से उन्हें येह ख़बर मा'लूम हुई, इस से आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنۡہَا का मरज़ और बढ़ गया और इस सदमे में इस क़दर रोईं कि आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنۡہَا के आंसू न थमते थे और न एक लम्हे के लिये नींद आती थी । इस हाल में सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم पर वह़्य नाज़िल हुई और ह़ज़रते उम्मुल मोअमिनीन رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنۡہَا की त़हारत में आयाते कुरआनी नाज़िल हुईं जिन से आप का शरफ़ व मर्तबा बढ़ाया गया और आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنۡہَا की त़हारत व फ़ज़ीलत अज़ ह़द बयान हुई ।

सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने बर सरे मिम्बर ब क़सम फ़रमा दिया था कि मुझे अपने अहल की पाकी व ख़ूबी बिल यक़ीन मा'लूम है, तो जिस शख़्स ने उन के ह़क़ में बदगोई की है, उस की त़रफ़ से मेरे पास कौन मा'ज़ेरत पेश कर सकता है । ह़ज़रते उ़मर رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنۡہُ ने अ़र्ज़ किया : मुनाफ़िक़ीन बिल यक़ीन झूटे हैं, उम्मुल मोअमिनीन رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنۡہَا बिल यक़ीन पाक हैं, **अल्लाह** तआ़ला ने सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के जिस्मे पाक को मख्खी के बैठने से मह़फ़ूज़ रखा कि वोह नजासतों पर बैठती है, कैसे हो सकता है कि वोह आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को बद औ़रत की सोह़बत से मह़फ़ूज़ न रखे ।

ह़ज़रते उ़षमाने ग़नी رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنۡہُ ने भी इसी त़रह़ आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنۡہَا की त़हारत बयान की और अ़र्ज़ किया कि **अल्लाह** तआ़ला ने आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का साया ज़मीन पर न पड़ने दिया, ता कि उस साए पर किसी का क़दम न पड़े, तो जो परवर दगार عَزَّوَجَلَّ आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के साए को मह़फ़ूज़ रखता है किस त़रह़ मुमकिन है कि वोह आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के अहल को मह़फ़ूज़ न फ़रमाए ।

ह़ज़रते अ़ली كَرَّمَ اللہُ تَعَالٰی وَجۡہَهُ الۡکَرِیۡم ने अ़र्ज़ किया कि : एक जूं का ख़ून लगने से परवर दगारे आ़लम عَزَّوَجَلَّ ने आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को ना'लैन उतार देने का हुक्म दिया, जो

परवर दगार عَزَّوَجَلَّ आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के ना'लैन की इतनी सी बात रवा न फ़रमाए, मुमकिन नहीं कि वोह आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के अहल की आलूदगी गवारा करे। इसी त़रह़ बहुत से सह़ाबा عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان और सह़ाबिय्यात رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُنَّ ने क़समे खाईं।

(مدارج النبوت،قسم سوئم،باب پنجم،ازھجرت آنحضرت صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم،ج۲،ص۱۵۹)

ह़ज़रते उ़षमान बिन अ़फ़्फ़ान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के बारे में रिवायत है कि जब नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने हुदैबिया के मौक़अ़ पर आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को कुरैश के पास भेजा तो कुरैश ने ह़ज़रते उ़षमान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को त़वाफ़े का'बा की इजाज़त दे दी लेकिन ह़ज़रते उषमान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने येह कह कर इन्कार कर दिया कि :

مَا کُنْتُ لِاَفْعَلَ حَتّٰی یَطُوْفَ بِہٖ رَسُوْلُ اللّٰہِ صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَسَلَّم

मैं उस वक़्त तक त़वाफ़ नहीं कर सकता जब तक कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم त़वाफ़ नहीं करते। (الشفاء،الباب الثالث،ج۲،ص۷۰)

बे नज़ीर ज़ियाफ़त

एक मरतबा ह़ज़रते उ़षमाने ग़नी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ज़ियाफ़त की और अ़र्ज़ किया : या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! मेरे ग़रीब ख़ाने पर अपने दोस्तों समेत तशरीफ़ लाएं और मा ह़ज़र तनावुल फ़रमाएं। हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने येह दा'वत क़बूल फ़रमा ली और वक़्त पर मअ़ सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان के ह़ज़रते उ़षमाने ग़नी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के घर तशरीफ़ ले चले, ह़ज़रते उ़षमान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के पीछे चलने लगे और हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का एक एक क़दम मुबारक जो उन के घर की त़रफ़ चलते हुवे ज़मीन पर पड़ रहा था गिनने लगे, हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने दरयाफ़्त फ़रमाया : ऐ उ़षमान ! येह मेरे क़दम क्यूं गिन रहे हो ? ह़ज़रते उ़षमान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने

अ़र्ज़ किया : या रसूलल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! मेरे मां बाप आप पर कुरबान हो, मैं चाहता हूं कि हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के एक एक क़दम के इवज़ मैं आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ताज़ीम व तौक़ीर की ख़ातिर एक एक गुलाम आज़ाद करूं। चुनान्चे ह़ज़रते उ़षमाने ग़नी رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه के घर तक हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के जिस क़दर क़दम पड़े उसी क़दर गुलाम ह़ज़रते उ़षमान رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه ने आज़ाद किये। (جامع المعجزات، ص۲۵۷)

शाहकार ता'ज़ीम

ग़ज़्वए ख़ैबर से वापसी में मन्ज़िले सह्बा पर नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने नमाज़े अ़स्र पढ़ कर मौला अ़ली كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰی وَجْهَهُ الْكَرِيْم के ज़ानू पर सर मुबारक रख कर आराम फ़रमाया : मौला अ़ली كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰی وَجْهَهُ الْكَرِيْم ने नमाज़े अ़स्र न पढ़ी थी, आंख से देख रहे थे कि वक़्त जा रहा है मगर इस ख़याल से कि ज़ानू सरकाउं तो शायद ख़्वाबे मुबारक में ख़लल आए ज़ानू न हटाया यहां तक कि आफ़्ताब गुरूब हो गया। जब चश्मे अक़्दस खुली मौला अ़ली كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰی وَجْهَهُ الْكَرِيْم ने अपनी नमाज़ का ह़ाल अ़र्ज़ किया, हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने दुआ़ की, डूबा हुवा सूरज पलट आया, मौला अ़ली كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰی وَجْهَهُ الْكَرِيْم ने नमाज़े अ़स्र अदा की, फिर डूब गया, इस से षाबित हुवा कि अफ़्ज़लुल इबादात नमाज़, वोह भी नमाज़े वुस्ता या'नी अ़स्र मौला अ़ली كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰی وَجْهَهُ الْكَرِيْم ने हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की नींद पर कुरबान कर दी कि इबादतें भी हमें हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ही के सदक़े में मिलीं।

(الشفاء، ج۱، ص۵۹٤۔شواھدالنبوۃ، رکن سادس، ص۲۲۰)

ब वक़्ते हिजरत ग़ारे षौर में पहले ह़ज़रते सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه गए। अपने कपड़े फाड़ फाड़ कर उस के सूराख़ बन्द

किये, एक सूराख़ बाक़ी रह गया, इस में पाउं का अंगूठा रख दिया, फिर हु़ज़ूरे अक्दस صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को बुलाया, तशरीफ़ ले गए, और उन के ज़ानू पर सरे अक्दस रख कर आराम फ़रमाया, इस ग़ार में एक सांप मुश्ताक़े ज़ियारत रहता था, उस ने अपना सर सिद्दीक़े अक्बर رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه के पाउं पर मला, उन्हों ने इस ख़याल से कि हु़ज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की नींद में फ़र्क़ न आए पाउं न हटाया। आख़िर उस ने पाउं में काट लिया, जब सिद्दीक़े अक्बर رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه के आंसू चेहरए अन्वर पर गिरे चश्मे मुबारक खुली, अ़र्ज़े ह़ाल किया। हु़ज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने लुआ़बे दहन लगा दिया फ़ौरन आराम हो गया। हर साल वोह ज़हर औद करता, बारह बरस बा'द इसी से शहादत पाई। सिद्दीक़े अक्बर رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه ने जान भी सरकार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की नींद पर क़ुरबान की।

(مدارج النبوت، ج۲، ص۵۸)

इन्ही निकात को आ'ला ह़ज़रत इमाम अह़मद रज़ा बरेल्वी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِى ने अपने इन अश्आ़र में बयान फ़रमाया है :

मौला अ़ली ने वारी तेरी नींद पर नमाज़
और वोह भी अ़स्र सब से जो आ'ला ख़त़र की है

सिद्दीक़ बल्कि ग़ार में जां इस पे दे चुके
और ह़िफ़्ज़े जां तो जान फ़ुरूज़े ग़रर की है

हां तू ने उन को जान उन्हें फेर दी नमाज़
पर वोह तो कर चुके थे जो करनी बशर की है

षाबित हुवा कि जुम्ला फ़राइज़ फ़ुरूअ़ हैं
अस्लल उसूल बन्दगी इस ताजवर की है

(ह़दाइक़े बख़्शिश)

अदबे सरकार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيۡهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

सही़ह़ बुख़ारी में सह्ल बिन साअ़दी رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه से मरवी है कि एक रोज़ रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيۡهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم क़बीला बनी अ़म्र बिन औ़फ़ में सुल्ह़ कराने के वासिते़ तशरीफ़ ले गए। जब नमाज़ का वक़्त हुवा मुअज़्ज़िन ने ह़ज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه से पूछा : क्या आप लोगों को नमाज़ पढ़ाएंगे ताकि मैं इक़ामत कहूं, फ़रमाया : हां ! और उन्हों ने इमामत की, इस अ़र्से में हु़ज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيۡهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم भी तशरीफ़ ले आए और सफ़ में क़ियाम फ़रमाया, जब नमाज़ियों ने हु़ज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيۡهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को देखा तो तस्फ़ीक़ की (बाएं हाथ की पुश्त पर दाएं हाथ की उंगलियां इस त़रह़ मारना कि आवाज़ पैदा हो, तस्फ़ीक़ कहलाता है।) इस ग़रज़ से कि सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه ख़बरदार हो जाएं क्यूंकि उन की आ़दत थी कि नमाज़ में किसी त़रफ़ तवज्जोह न करते थे, जब सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه ने तस्फ़ीक़ की आवाज़ सुनी तो गोशए चश्म से देखा कि हु़ज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيۡهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم तशरीफ़ फ़रमा हैं, लिहाज़ा पीछे हटने का क़स्द किया। इस पर हु़ज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيۡهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इशारे से फ़रमाया कि अपनी ही जगह पर क़ाइम रहो, सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه ने दोनों हाथ उठाए इस नवाज़िश पर कि हु़ज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيۡهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने मुझे इमामत का हुक्म फ़रमाया, **अल्लाह** तआ़ला का शुक्र अदा किया और पीछे हट कर सफ़ में खड़े हो गए और रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيۡهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم आगे बढ़े। जब नमाज़ से फ़ारिग़ हुवे तो फ़रमाया कि अबू बक्र ! जब मैं ख़ुद तुम्हें हुक्म कर चुका था तो तुम को अपनी जगह पर खड़े रहने से कौन सी चीज़ मानेअ़ थी ? अ़र्ज़ किया : या रसूलल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيۡهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

अबू क़ुहाफ़ा का बेटा इस लाइक़ नहीं कि रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से आगे बढ़ कर नमाज़ पढ़ाए।

(صحیح البخاری، کتاب الاذان،باب من دخل لیؤم الناس...الخ، الحدیث٦٨٤، ج١، ص٢٤٤)

इज़्ज़ते रसूल صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के लिये मर मिटने का जज़्बा

हज़रते अ़ब्दुर्रहमान बिन औ़फ़ رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه मश्हूर और बड़े सहाबा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُم में से हैं। फ़रमाते हैं कि मैं बद्र की लड़ाई में मैदान में लड़ने वालों की सफ़ में खड़ा था। मैं ने देखा कि मेरे दाईं और बाईं जानिब अन्सार के दो कम उ़म्र लड़के हैं। मुझे ख़याल हुवा कि मैं अगर क़वी और मज़बूत लोगों के दरमियान होता तो अच्छा था कि ज़रूरत के वक़्त एक दूसरे की मदद कर सकते मेरे दोनों जानिब बच्चे हैं येह क्या मदद कर सकेंगे। इतने में उन दोनों लड़कों में से एक ने मेरा हाथ पकड़ कर कहा : चचा जान तुम अबू जह्ल को पहचानते हो? मैं ने कहा : हां पहचानता हूं तुम्हारी क्या ग़रज़ है? उस ने कहा कि मुझे मा'लूम हुवा है कि वोह रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की शान में गालियां बकता है। उस ज़ाते पाक की क़सम जिस के क़ब्ज़े में मेरी जान है अगर मैं उस को देख लूं तो मैं उस से जुदा नहीं होऊंगा यहां तक कि वोह मर जाए या मैं मर जाऊं, मुझे उस के सुवाल और जवाब पर तअ़ज्जुब हुवा। इतने में दूसरे ने येही सुवाल किया और जो पहले ने कहा था वोही उस ने भी कहा, इत्तिफ़ाक़न अबू जह्ल मैदान में मुझे दौड़ता हुवा नज़र आ गया, मैं ने उन दोनों से कहा कि तुम्हारा मत़्लूब जिस के बारे में तुम मुझ से सुवाल कर रहे थे वोह जा रहा है। दोनों येह सुन कर तल्वारें हाथ में लिये हुवे एक दम भागे चले गए और जा कर उस पर तल्वार चलानी शुरूअ़ कर दी यहां तक कि उस को गिरा दिया।

(صحیح البخاری، کتاب المغازی،باب ١٠،الحدیث٣٩٨٨،ج٣،ص١٤)

गुस्ताख़ी की सज़ा

हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की एक बेटी ह़ज़रते रुक़ैया رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهَا थीं जो अपनी बहन ह़ज़रते ज़ैनब رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهَا से तीन बरस बा'द पैदा हुईं जब कि हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की उ़म्र शरीफ़ 33 बरस थी। और बा'ज़ ने ह़ज़रत रुक़ैया رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهَا को ह़ज़रत ज़ैनब رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهَا से बड़ी बताया है । लेकिन सह़ीह़ येही है कि वोह ह़ज़रते ज़ैनब رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهَا से छोटी थीं। हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के चचा अबू लहब के बेटे उ़त्बा से निकाह़ हुवा था। जब सूरए तब्बत नाज़िल हुई तो अबू लहब ने उस से और उस के दूसरे भाई उ़तैबा, जिस के निकाह़ में हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की तीसरी शहज़ादी ह़ज़रते उम्मे कुल्सूम رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهَا थीं, से येह कहा कि मेरी मुलाक़ात तुम से ह़राम है अगर तुम मुह़म्मद (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) की बेटियों को त़लाक़ न दे दो, इस पर दोनों ने त़लाक़ दे दी। येह दोनों निकाह़ बचपन में हुवे थे रुख़्सती की नौबत भी नहीं आई थी। इस के बा'द फ़त्ह़े मक्का पर ह़ज़रते रुक़ैया رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهَا के ख़ावन्द मुसलमान हो गए थे मगर बीवी को पहले ही त़लाक़ दे चुके थे, ह़ज़रत रुक़ैया رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهَا का निकाह़ ह़ज़रते उ़षमान رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه से अ़रसा हुवा हो चुका था और ह़ज़रते रुक़ैया رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهَا ने दोनों मरतबा ह़बशा की हिजरत की।

(المواهب اللدنية،المقصد الثانی،الفصل الثانی فی ذکر اولاده الکرام،ج۲،ص ٦١)

हुज़ूरे अक्दस صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की तीसरी शहज़ादी ह़ज़रते उम्मे कुल्सूम رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهَا थीं, इस में इख़्तिलाफ़ है कि इन में और ह़ज़रते फ़ात़िमा رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهَا में से कौन बड़ी थीं अकषर की राए येह है कि उम्मे कुल्सूम رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهَا बड़ी थीं। अव्वल उ़तैबा बिन अबी लहब से निकाह़ हुवा मगर रुख़्सती नहीं हुई थी कि

सूरए तब्बत के नाज़िल होने पर त़लाक़ की नौबत आई जैसा कि ह़ज़रते रुक़ैया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا के बयान में गुज़रा लेकिन उन के ख़ावन्द तो मुसलमान हो गए थे जैसा कि गुज़र चुका और उन के ख़ावन्द उ़तैबा ने त़लाक़ दी और हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमते अक़्दस में आ कर निहायत गुस्ताख़ी व बे अदबी से पेश आया और ना मुनासिब अल्फ़ाज़ भी ज़बान से निकाले । हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने दुआ़ए ज़रर दी कि या **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! अपने कुत्तों में से एक कुत्ता इस पर मुसल्लत़ फ़रमा, अबू त़ालिब उस वक़्त मौजूद था बा वुजूद मुसलमान न होने के सहम गया और कहा कि इस दुआ़ए ज़रर से तुझे ख़लासी नहीं । चुनान्चे उ़तैबा एक मरतबा शाम के सफ़र में जा रहा था, उस का बाप अबू लहब बा वुजूद सारी अ़दावत और दुश्मनी के कहने लगा कि मुह़म्मद की दुआ़ए ज़रर की फ़िक्र है, क़ाफ़िले के सब लोग हमारी ख़बर रखें । एक मन्ज़िल पर पहुंचे, वहां शेर ज़ियादा थे, रात को तमाम क़ाफ़िले का सामान एक जगह जम्अ़ किया और उस का टीला सा बना कर उस पर उ़तैबा को सुलाया और क़ाफ़िले के तमाम आदमी चारों त़रफ़ सोए । रात को एक शेर आया और सब के मुंह सूंघे इस के बा'द एक जस्त लगाई और उस टीले पर पहुंच कर उ़तैबा का सर बदन से जुदा कर दिया, उस ने एक आवाज़ दी मगर साथ ही काम तमाम हो चुका था । बा'ज़ मुअर्रिख़ीन ने लिखा है कि येह मुसलमान हो चुका था और येह क़िस्सा पहले भाई के साथ पेश आया । बहर ह़ाल ह़ज़रते रुक़ैया और ह़ज़रते उम्मे कुल्सूम (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُمَا) के पहले शौहरों में से एक मुसलमान हुवे दूसरे के साथ येह इ़ब्रत का वाक़ेआ़ पेश आया ।

(المرجع السابق،ص ٦٢)

ता'ज़ीमे इरशादे रसूल صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

﴾1﴿ हज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا से रिवायत है कि रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने एक शख़्स के हाथ में सोने की अंगूठी देखी। आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने उस को निकाल कर फेंक दिया और फ़रमाया : क्या तुम में से कोई चाहता है कि आग का अंगारा अपने हाथ में डाले। रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के तशरीफ़ ले जाने के बा'द किसी ने उस शख़्स से कहा : तू अपनी अंगूठी उठा और बेच कर उस से फ़ाएदा उठा, उस ने जवाब दिया : नहीं, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की क़सम मैं उसे कभी नहीं लूंगा, जब रसूले खुदा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने उसे फेंक दिया है तो मैं उसे कैसे ले सकता हूं ? (مشکوٰۃ، کتاب اللباس، باب الخاتم، الفصل الاول، الحدیث٤٣٨٥، ج٢، ص٤٨١)

﴾2﴿ हज़रते अ़म्र बिन शोऐ़ब कहते हैं कि एक मरतबा सफ़र में हम लोग हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के साथ थे। मैं हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में हाज़िर हुवा। मेरे ऊपर एक चादर थी जो कुसुम के रंग में हल्की सी रंगी हुई थी। हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने देख कर फ़रमाया : येह क्या ओढ़ रखा है ? मुझे इस सुवाल से हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ना गवारी के आषार मा'लूम हुवे। घर वालों के पास वापस हुवा तो उन्हों ने चुल्हा जला रखा था मैं ने वोह चादर उस में डाल दी। दूसरे रोज़ जब हाज़िर हुवा तो हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि वोह चादर क्या हुई। मैं ने क़िस्सा सुना दिया, आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : औ़रतों में से किसी को क्यूं न पहना दी, औ़रतों के पहनने में तो कोई मुज़ायक़ा न था।

(سنن ابی داود، کتاب اللباس، باب فی الحمرۃ، الحدیث٤٠٦٦، ج٤، ص٧٣)

﴾3﴿ हुज़ूरे अकरम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم एक मरतबा दौलत कदे से बाहर तशरीफ़ ले जा रहे थे, रास्ते में एक कुब्बा (गुम्बददार हुजरह) देखा जो ऊपर बना हुवा था। सहाबा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُم से दरयाफ़्त किया, येह क्या है? उन्हों ने अ़र्ज़ किया : फुलां अन्सारी ने कुब्बा बनाया है। हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم सुन कर ख़ामोश रहे किसी दूसरे वक़्त वोह अन्सारी हाज़िरे ख़िदमत हुवे। सलाम अ़र्ज़ किया, हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने ए'राज़ फ़रमाया, सलाम का जवाब भी न दिया, उन्हों ने इस ख़याल से कि शायद ख़याल न हुवा हो दोबारा सलाम अ़र्ज़ किया, हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फिर ए'राज़ फ़रमाया और जवाब नहीं दिया, वोह इस के कैसे मुतहम्मिल हो सकते थे, सहाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان से जो वहां मौजूद थे कहा : ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! सरकार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم तो मुझे ना पसन्द फ़रमा रहे हैं। उन्हों ने कहा हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم बाहर तशरीफ़ ले गए थे रास्ते में तुम्हारा कुब्बा देखा था और दरयाफ़्त फ़रमाया था कि किस का है?

येह सुन कर वोह सहाबी رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه फ़ौरन गए और उस को तोड़ कर ऐसा ज़मीन के बराबर कर दिया कि नामो निशान भी न रहा और फिर आ कर अ़र्ज़ भी नहीं किया। इत्तिफ़ाक़न हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ही का उस जगह किसी दूसरे मौक़अ़ पर गुज़र हुवा तो देखा कि वोह कुब्बा वहां नहीं है, दरयाफ़्त फ़रमाया, सहाबा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُم ने अ़र्ज़ किया : अन्सारी ने आं हज़रत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के ए'राज़ को कई रोज़ हुवे ज़िक्र किया था, तो हम ने कह दिया था तुम्हारा कुब्बा देखा है तो उन्हों ने आ कर इस को बिल्कुल तोड़ दिया। हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया कि हर ता'मीर आदमी पर वबाल है मगर वोह ता'मीर जो सख़्त ज़रूरत और मजबूरी की हो। (سنن ابی داود، کتاب الادب،باب ماجاء فی البناء،الحدیث ٥٢٣٧، ج٤، ص ٤٦٠)

﴾4﴿ ह़ज़रते राफ़ेअ़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْه कहते हैं एक मरतबा हम लोग एक सफ़र में हु़ज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के हम रिकाब थे और हमारे ऊंटों पर चादरें पड़ी हुई थीं जिन में सुर्ख़ डोरे थे। हु़ज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया कि मैं देखता हूं कि येह सुर्ख़ी तुम पर ग़ालिब होती जाती है। हु़ज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का येह इर्शाद फ़रमाना था कि हम लोग एक दम ऐसे घबरा के उठे कि हमारे भागने से ऊंट भी इधर उधर भागने लगे और हम ने फ़ौरन सब चादरें ऊंटों से उतार लीं। (سنن ابی داود، کتاب اللباس، باب فی الحمرة، الحدیث ۴۰۷۰، ج۴، ص۷۴)

﴾5﴿ वाइल बिन ह़ज्र कहते हैं कि मैं एक मरतबा ह़ाज़िरे ख़िदमत हुवा, मेरे सर के बाल बहुत बढ़े हुवे थे, मैं सामने आया तो हु़ज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "ज़बाब, ज़बाब" मैं येह समझा कि मेरे बालों को इर्शाद फ़रमाया, वापस गया और उन को कटवा दिया। जब दूसरे दिन ख़िदमत में ह़ाज़िर हुवा तो इर्शाद फ़रमाया : मैं ने तुझे नहीं कहा था, लेकिन येह अच्छा किया।

(سنن ابی داود، کتاب الترجل، باب فی تطویل الجمة، الحدیث ۴۱۹۰، ج۴، ص۱۱۲)

﴾6﴿ अ़ब्दुल्लाह बिन मुग़फ़्फ़ल رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْه का एक नौ उ़म्र भतीजा ख़ज़्फ़ से खेल रहा था, उन्हों ने देखा और फ़रमाया, बरादर ज़ादे ऐसा न करो हु़ज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया कि इस से फ़ाइदा कुछ नहीं न शिकार हो सकता है न दुश्मन को नुक़्सान पहुंचाया जा सकता है और इत्तिफ़ाक़न किसी को लग जाए तो आंख फूट जाए, दांत टूट जाए। भतीजा कम उ़म्र था इस लिये जब चचा को ग़ाफ़िल देखा तो फिर खेलने लगा। उन्हों ने देख लिया, फ़रमाया कि मैं तुझे हु़ज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का इर्शाद सुनाता हूं कि इस से उन्हों ने मन्अ़ फ़रमाया है और तू फिर इस काम को करता है ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ की क़सम तुझ से कभी बात नहीं करूंगा। एक दूसरे

क़िस्से में इस के बा'द है कि ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! तेरे जनाज़े की नमाज़ में शरीक न होऊंगा और न तेरी इयादत करूंगा।

(سنن ابن ماجه، کتاب السنة،باب تعظیم حدیث رسول اللهصلی الله تعالیٰ علیه واٰلہٖ وسلم ...الخ،الحدیث۱۷، ج۱،ص۱۹)

नोट : ख़ज़फ़ येह है कि अंगूठे पर छोटी सी कंकरी रख कर उंगली से फेंकी जाए येह बच्चों का एक बेकार और अन्देशा नाक खेल है। हज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन मुग़फ़्फ़ल رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के भतीजे ने इर्शादे रसूल صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم सुन लेने के बा'द भी पाबन्दी न की जिसे सहाबिये रसूल बरदाश्त न कर सके और तर्के कलाम की क़सम खा ली। आज मुसलमान अपने ह़ालात पर ग़ौर करें कि अह़ादीषे रसूल صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم और इर्शादाते सरवरे काइनात صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की पाबन्दी हम में कितनी है ?

﴾8﴿ ह़कीम बिन ह़िज़ाम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ एक सह़ाबी हैं हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में ह़ाज़िर हुवे, कुछ त़लब किया, हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने अ़त़ा फ़रमाया, फिर किसी मौक़अ़ पर कुछ मांगा, हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फिर मर्ह़मत फ़रमाया, तीसरी दफ़्आ़ फिर सुवाल किया, हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने अ़त़ा फ़रमाया और इर्शाद फ़रमाया कि : ऐ ह़कीम ! येह माल सब्ज़ बाग़ है ज़ाहिर में बड़ी मीठी चीज़ है मगर इस का दस्तूर येह है कि अगर दिल के इस्तिग़्ना से मिले तो इस में बरकत होती है और अगर त़म्अ़ और लालच से ह़ासिल हो तो इस में बरकत नहीं होती ऐसा हो जाता है (जैसे जूउ़ल बक़र की बीमारी हो) कि हर वक़्त खाते जाए और पेट न भरे। ह़कीम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अ़र्ज़ किया : या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! आप के बा'द अब किसी से कुछ क़बूल नहीं करूंगा ह़त्ता कि दुन्या से रुख़्सत हो जाऊं। इस के बा'द ह़ज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अपने ज़मानए ख़िलाफ़त में ह़कीम

رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को बैतुल माल से कुछ अ़ता करने का इरादा फ़रमाया तो उन्हों ने इन्कार कर दिया इस के बा'द ह़ज़रते उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अपने ज़मानए ख़िलाफ़त में बार बार इसरार किया मगर उन्हों ने इन्कार ही किया। (صحیح البخاری، کتاب الزکاۃ،باب الاستعفاف عن المسألۃ،الحدیث۱۴۷۲، ج۱،ص۴۹۷)

﴾8﴿ ह़ज़रते अस्मा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا बड़ी सख़ी थीं। अव्वल जो कुछ ख़र्च करती थीं अन्दाज़े से नाप तोल कर ख़र्च करती थीं मगर जब हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया कि बांध बांध कर न रखा करो और ह़िसाब न लगाया करो जितना भी कुदरत में हो ख़र्च किया करो तो फिर ख़ूब ख़र्च करने लगीं। अपनी बेटियों और घर की औ़रतों को नसीह़त किया करती थीं कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के रास्ते में ख़र्च करने और सदक़ा करने में ज़रूरत से ज़ियादा होने और बचने का इन्तिज़ार न किया करो कि अगर ज़रूरत से ज़ियादती का इन्तिज़ार करती रहोगी तो होने का ही नहीं (कि ज़रूरत खुद बढ़ती रहती है) और अगर सदक़ा करती रहोगी तो सदक़े में ख़र्च कर देने से नुक़्सान में न रहोगी। (الطبقات الکبریٰ،ج۸،ص۱۹۸)

﴾9﴿ ह़ज़रते अ़ली رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अपने शागिर्द से फ़रमाया कि मैं तुम्हें अपना और फ़ातिमा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا का जो हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की सब से ज़ियादा लाडली बेटी थीं, क़िस्सा सुनाऊं ! शागिर्द ने अ़र्ज़ किया ज़रूर, फ़रमाया कि वोह अपने हाथ से चक्की पिसती थीं जिस की वजह से हाथों में निशान पड़ गए थे और खुद पानी की मशक भर कर लाती थीं जिस की वजह से सीने पर मशक की रस्सी के निशान पड़ गए थे और घर में झाड़ू वग़ैरा खुद ही देती थीं जिस की वजह से तमाम कपड़े मैले हो जाया करते थे। एक मरतबा हुज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के पास कुछ ग़ुलाम बांदियां आईं, मैं ने फ़ातिमा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا से कहा तुम भी जा कर हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से एक ख़िदमतगार मांग लो

ताकि तुम को कुछ मदद मिल जाए। वोह हुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में ह़ाज़िर हुईं, वहां मज्मअ़ था, और ह़या मिज़ाज में बहुत ज़ियादा थी इस लिये ह़या की वजह से सब के सामने बाप से भी मांगते हुवे शर्म आई, वापस आ गईं। दूसरे रोज़ हुज़ूरे अकरम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ख़ुद तशरीफ़ लाए, इर्शाद फ़रमाया कि फ़ाति़मा (رَضِیَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهَا) ! कल तुम किस काम के लिये गई थीं ? वोह ह़या की वजह से चुप हो गईं। मैं ने अ़र्ज़ किया कि या रसूलल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم इन की येह ह़ालत है कि चक्की की वजह से हाथों में गठ्ठे पड़ गए और मशक की वजह से सीने पर रस्सी के निशान हो गए, हर वक़्त के काम काज की वजह से कपड़े मैले रहते हैं। मैं ने कल इन से कहा था कि आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के पास ख़ादिम आए हुवे हैं एक येह भी मांग लें इस लिये गई थीं।

बा'ज़ रिवायात में आया है कि ह़ज़रते फ़ाति़मा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهَا ने अ़र्ज़ किया कि या रसूलल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! मेरे और अ़ली رَضِیَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه के पास एक ही बिस्तर है और वोह भी मेंढे की एक खाल है रात को उस को बिछा कर सो जाते हैं सुब्ह़ को उसी पर घास दाना डाल कर ऊंट को खिलाते हैं। हुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया कि बेटी सब्र करो ! ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام और उन की बीवी के पास दस बरस तक एक ही बिछौना था वोह भी ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام का चौग़ा था रात को बिछा कर उसी पर सो जाते थे, तो तक़्वा ह़ासिल करो और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से डरो और अपने परवर दगार عَزَّوَجَلَّ का फ़रीज़ा अदा करती रहो और घर के काम काज को अन्जाम देती रहो और जब सोने के वासिते़ लैटा करो तो سُبْحٰنَ الله 33 मरतबा और اَلْحَمْدُ لِلّٰه 33 मरतबा और اَللهُ اَكْبَر 34 मरतबा पढ़ लिया करो येह ख़ादिम से ज़ियादा अच्छी चीज़ है।

ह़ज़रते फ़ाति़मा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْھَا ने अ़र्ज़ किया : मैं अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से और उस के रसूल صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से राज़ी हूं।

(سنن ابی داود، کتاب الادب، باب فی التسبیح عند النوم، الحدیث ٥٠٦٣، ج٤، ص٤٠٩)

﴾10﴿ ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ह़ज़रते आ़इशा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْھَا के भान्जे थे और वोह उन से बहुत मह़ब्बत फ़रमाती थीं। उन्हों ने ही गोया भान्जे को पाला था। ह़ज़रते आ़इशा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْھَا की इस फ़य्याज़ी से परेशान हो कर कि ख़ुद तकलीफ़ें उठातीं और जो आए फ़ौरन ख़र्च कर देतीं एक मरतबा कह दिया कि ख़ाला का हाथ किस त़रह़ रोकना चाहिये ? ह़ज़रते आ़इशा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْھَا को भी येह फ़िक़रा पहुंच गया। इस पर नाराज़ हो गईं कि मेरा हाथ रोकना चाहता है और उन से न बोलने की नज़्र के तौ़र पर क़सम खाई। ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ को ख़ाला की नाराज़ी से बहुत सदमा हुवा, बहुत लोगों से सिफ़ारिश कराई मगर उन्हों ने अपनी क़सम का उ़ज़्र फ़रमा दिया।

आख़िर जब अ़ब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ बहुत ही परेशान हुवे तो ह़ुज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के नन्हियाल के दो ह़ज़रात को सिफ़ारिशी बना कर साथ ले गए, वोह दोनों ह़ज़रात इजाज़त ले कर अन्दर गए, येह भी छुप कर साथ हो लिये, जब वोह दोनों से पर्दे के अन्दर बैठ कर बात चीत फ़रमाने लगीं तो येह जल्दी से पर्दे में चले गए और जा कर ख़ाला से लिपट गए और बहुत रोए और ख़ुशामद की, वोह दोनों ह़ज़रात भी सिफ़ारिश करते रहे और मुसलमान से बोलना छोड़ने के मुतअ़ल्लिक़ ह़ुज़ूर صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के इर्शादात याद दिलाते रहे और अह़ादीष में जो मुमानअ़त इस की आई है वोह सुनाते रहे। जिस की वजह से ह़ज़रते आ़इशा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْھَا उन की ताब न ला सकीं और रोने लगीं, आख़िर मुआ़फ़ फ़रमा दिया और बोलने लगीं, लेकिन अपनी

क़सम के कफ़्फ़ारे में बार बार गुलाम आज़ाद करती थीं ह़त्ता कि चालीस ग़ुलाम आज़ाद किये और जब भी इस क़सम के तोड़ने का ख़याल आ जाता इतना रोतीं कि दूपट्टा तक आंसूओं से भीग जाता।

(صحیح البخاری، کتاب الادب، باب الهجرة، الحدیث ٦٠٧٣، ج٣، ص١١٩)

शौक़े मुवाफ़क़त

ह़ज़रते सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अपनी वफ़ात से चन्द घन्टे पेशतर अपनी साहिबज़ादी ह़ज़रते आइशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا से दरयाफ़्त किया कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के कफ़न में कितने कपड़े थे ? हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की वफ़ात शरीफ़ किस दिन हुई ? इस सुवाल की वजह येह थी कि आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की आरज़ू थी कि कफ़न व यौमे वफ़ात में हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की मुवाफ़क़त हो। ह़यात में हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का इत्तिबाअ़ था ही। वोह ममात में भी आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ही की इत्तिबाअ़ चाहते थे।

(صحیح البخاری، کتاب الجنائز، باب موت یوم الاثنین، الحدیث١٣٨٧، ج١، ص٤٦٨)

अल्लाह अल्लाह येह शौक़े इत्तिबाअ़ क्यूं न हो, सिद्दीक़े अक्बर थे

ता'ज़ीमे तबर्रुकात

﴿1﴾ **मोहरे नबुव्वत चूम ली :** ह़ज़रते सलमान फ़ारसी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ इस्लाम लाने से पहले मुख़्तलिफ़ दीनी व मज़हबी राहनुमाओं के पास आते जाते रहे। हर मज़हबी रहनुमा उन्हें वसिय्यत किया करता कि मेरे बा'द फ़ुलां के पास जाना, येह भी पूछ लिया करते कि उन की ज़िन्दगी के बा'द किस के पास रहना चाहिये, जब आप ने आख़िरी राहिब से पूछा कि अब मुझे किस की ख़िदमत में रहना होगा, उस ने कहा : अब दुन्या में कोई ऐसा शख़्स नज़र नहीं आता

जिस की सोहबत में तुम्हें अम्न व सलामती नसीब हो, हां ! अन क़रीब नबिय्ये आख़िरुज़्ज़मान صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم तशरीफ़ ला रहे हैं जो दीने इब्राहीमी पर होंगे, उन की हिजरत गाह ऐसा मक़ाम होगा जो दो पहाड़ों के दरमियान होगा और उस में खजूर के दरख़्त कषरत से पाए जाएंगे, नबिय्ये आख़िरुज़्ज़मान صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के दोनों कन्धों के दरमियान मोहरे नबुव्वत होगी, आप हदिय्या क़बूल करेंगे सदक़ा नहीं खाएंगे।

हज़रते सलमान फ़ारसी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने इस नसीहत को पेशे नज़र रखा और मुल्के अ़रब की त़रफ़ रुख़ किया, जूं ही वोह मदीना पहुंचे तो आं हज़रत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم हिजरत कर के क़ुबा तशरीफ़ ला चुके थे। सलमान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में कुछ चीजें ले कर ह़ाज़िर हुवे और हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से अ़र्ज़ किया : येह सदक़ा है, हुज़ूर क़बूल फ़रमाइये ! आं हज़रत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने सहाबा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُم से फ़रमाया : तुम खा लो। लेकिन ख़ुद न खाया। हज़रते सलमान ने दिल में कहा एक निशानी तो पूरी हो गई। सलमान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ कहते हैं बा'दे अज़ां मैं सहाबा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُم की जमाअ़त में मिल गया। जब आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم क़ुबा से मदीना तशरीफ़ लाए तो मैं कुछ चीज़ें ले कर ह़ाज़िरे ख़िदमत हुवा और अ़र्ज़ की ! हुज़ूर येह हदिय्या है क़बूल फ़रमाइये। आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने सहाबा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُم के साथ मिल कर खा लिया। मैं ने अपने आप से कहा : दो अ़लामतें पूरी हो गईं।

इस के बा'द मैं आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में उस वक़्त ह़ाज़िर हुवा जब आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم जन्नतुल बक़ीअ़ में एक सहाबी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का जनाज़ा पढ़ाने के लिये तशरीफ़ ले गए थे। आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के कन्धों पर दोशाला था

जिसे आप चादर और ईज़ार के तौर पर इस्ते'माल कर रहे थे। मैं आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के पीछे पीछे हो लिया। जब कपड़े का दामन एक त़रफ़ हुवा तो मैं ने मोहरे नबुव्वत को वैसा ही पाया जैसे मुझे बताया गया था, मैं जज़्बात से इस क़दर मग़लूब हुवा कि बे इख़्तियार मोहरे नबुव्वत को बढ़ कर चूम लिया और रोने लगा। आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने मुझे अपने पास बुला लिया। मैं ने अपनी सारी सर गुज़श्त हुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को सुनाई, आप ने इसे पसन्द फ़रमाया, सहाबा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُم ने भी मेरी सर गुज़श्त सुनी। (شواهد النبوة،ركن رابع، ص ٨٤)

﴾2﴿ मूए मुबारक : मक़ामे हुदैबिया में आं ह़ज़रत صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने बाल बनवा कर तमाम बाल मुबारक एक सब्ज़ दरख़्त पर डाल दिये। तमाम अस्ह़ाब رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُم उसी दरख़्त के नीचे जम्अ़ हो गए और बालों को एक दूसरे से छीनने लगे। ह़ज़रते उम्मे अ़म्मारा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهَا कहती हैं कि मैं ने भी चन्द बाल ह़ासिल कर लिये। आं ह़ज़रत صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के विसाले ज़ाहिरी के बा'द जब कोई बीमार होता तो मैं उन मुबारक बालों को पानी में डिबो कर पानी मरीज़ को पिलाती तो रब्बुल इ़ज़्ज़त उसे सिह़्ह़त अ़ता कर देता। (مدارج النبوت،قسم سوئم،باب ششم،ج ٢،ص ٢١٧)

﴾3﴿ लुआ़ब मुबारक : उ़तबा बिन फ़रक़द رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُ जिन्हों ने ह़ज़रते उ़मर رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُ के अ़हद में मोसल को फ़त्ह़ किया उन की बीवी उम्मे आ़सिम رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهَا बयान करती हैं कि उ़तबा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُ के हां हम चार औ़रतें थीं हम में से हर एक ख़ुश्बू लगाने में कोशिश करती थीं ताकि दूसरी से अत़यब हो और उ़तबा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُ कोई ख़ुश्बू न लगाते थे मगर अपने हाथ से तेल मल कर दाढ़ी को मल लेते थे और हम में सब से ज़ियादा ख़ुश्बूदार थे,

जब वोह बाहर निकलते तो लोग कहते कि हम ने उ़त्बा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ की खुश्बू से बढ़ कर कोई खुश्बू नहीं सूंघी। एक दिन मैं ने उन से पूछा कि हम इस्ते'माले खुश्बू में कोशिश करती हैं और तुम हम से ज़ियादा खुश्बूदार हो, इस का सबब क्या है? उन्हों ने जवाब दिया कि रसूले अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के अ़हदे मुबारक में मेरे बदन पर आबले नुमूदार हुवे। मैं ख़िदमते नबवी में ह़ाज़िर हुवा। आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से इस बीमारी की शिकायत की। सरकार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने मुझ से इर्शाद फ़रमाया कि कपड़े उतार दो। मैं ने सित्र के इलावा कपड़े उतार दिये और आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के सामने बैठ गया। आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने अपना लुआ़ब अपने दस्ते मुबारक पर डाल कर मेरी पीठ और पेट पर मल दिया उस दिन से मुझ में खुश्बू पैदा हो गई।

(الاستیعاب،باب حرف العین،عتبہ بن فرقد،ج۳،ص۱۴۸)

﴾5﴿ पसीनए मुबारक : हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के ख़ादिम ह़ज़रते अनस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم हमारे यहां तशरीफ़ लाए और क़ैलूला फ़रमाया। ह़ालते ख़्वाब में आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को पसीना आया, मेरी मां उम्मे सुलैम ने एक शीशी ली और आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का पसीना मुबारक इस में डालने लगीं। आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم बेदार हुवे और फ़रमाने लगे : उम्मे सुलैम तुम येह क्या करती हो? उन्हों ने अ़र्ज़ किया : येह आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का पसीना है हम इस को अपनी खुश्बू में डालते हैं और वोह सब खुश्बूओं से उ़म्दा खुश्बू है।

दूसरी रिवायत मुस्लिम में है कि उम्मे सुलैम ने यूं अ़र्ज़ किया : "या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم हम अपने बच्चों के

लिये आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के अ़रक़े मुबारक की बरकत के उम्मीदवार हैं।" आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : तू ने सच कहा। सहाबा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُم हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के अ़रक़े मुबारक को चेहरे और बदन पर मल दिया करते थे और वोह तमाम बलाओं से मह़फ़ूज़ रहा करते थे। (صحیح مسلم، کتاب الفضائل، باب طیب عرق النبی، الحدیث: ۲۳۳۱، ص ۱۲۷۲)

﴾5﴿ ह़ज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه रिवायत करते हैं कि एक शख़्स रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में आया और अ़र्ज़ किया कि या रसूलल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! मैं ने अपनी बेटी का निकाह़ कर दिया है, मैं उसे उस के ख़ावन्द के घर भेजना चाहता हूं, मेरे पास कोई ख़ुश्बू नहीं, आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم कुछ इनायत फ़रमाएं। सरकार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : मेरे पास मौजूद नहीं मगर कल सुब्ह़ एक चौड़े मुंह वाली शीशी और किसी दरख़्त की लकड़ी मेरे पास ले आना। दूसरे रोज़ वोह शख़्स शीशी और लकड़ी ले कर ह़ाज़िरे ख़िदमत हुवा। आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने अपने दोनों बाज़ूओं से उस में अपना पसीनए मुबारक डालना शुरूअ़ किया यहां तक कि वोह भर गई फिर फ़रमाया इसे ले जा कर अपनी बेटी से कह देना कि इस लकड़ी को शीशी में तर कर के मल लिया करें। पस जब वोह आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के पसीनए मुबारक को लगाती तो तमाम अहले मदीना को उस की ख़ुश्बू पहुंचती यहां तक कि उस के घर का नाम "**बैतुल मुत़य्यिबीन**" (या'नी ख़ुश्बू वालों का घर) हो गया।

(شواھد النبوۃ، رکن خامس، ص ۱۸۱)

वल्लाह जो मिल जाए मेरे गुल का पसीना   मांगे न कभी इ़त्र न चाहे दुल्हन फूल

《6》 **अदब व बरकत अन्दोज़ी :** ह़दीष शरीफ़ में मरवी है कि अबू मह़्ज़ूरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की पेशानी में बाल इस क़दर दराज़ थे कि जब वोह बैठते और उन बालों को छोड़ देते तो ज़मीन पर पहुंचते। लोगों ने उन से पूछा कि आप ने बालों को इतना क्यूं बढ़ाया ? उन्हों ने कहा कि इस वजह से इन को नहीं कटवाता कि एक वक़्त इन पर हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का दस्ते मुबारक लगा था इस लिये मैं ने तबर्रुकन इन बालों को छोड़ रखा है।

(مدارج النبوت،باب نہم،واجبات حقوق آنحضرت صلی اللہ تعالٰی علیہ والہٖ وسلم ...الخ،ج١ص٣١٦)

《7》 **मस्ह़े दस्त का कमाल :** ह़ाफ़िज़ अबू नुऐ़म मुतवफ़्फ़ा (**430** हि.) ने ब रिवायत उ़ब्बाद बिन अ़ब्दुस्समद नक़्ल किया है। उन्हों ने कहा कि हम ह़ज़रते अनस बिन मालिक رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के यहां आए। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने कनीज़ से कहा कि दस्तरख़्वान लाओ ताकि हम चाश्त का खाना खाएं, वोह ले आई। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया कि वोह रूमाल लाओ, वोह एक मैला रूमाल ले आई। आप ने फ़रमाया कि तन्नूर गर्म कर, उस ने तन्नूर गर्म किया, फिर आप के हुक्म से रूमाल उस में डाल दिया गया। वोह ऐसा सफ़ेद निकला गोया कि दूध है। हम ने ह़ज़रते अनस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से पूछा कि येह क्या है ? उन्हों ने फ़रमाया कि येह वोह रूमाल है जिस से रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم अपने रूए मुबारक को मस्ह़ फ़रमाया करते थे। जब येह मैला हो जाता है तो इसे हम यूं साफ़ कर लेते हैं क्यूंकि आग उस शै पर अषर नहीं करती जो अम्बिया عَلَیْہِمُ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام के रूए मुबारक पर से गुज़री हो।

(شواھد النبوۃ،رکن خامس،ص ١٨١)

هرچه اسباب جمال است رخ خوب ترا
همه بروجه کمال است کما لایخفی

﴾8﴿ क़त्अ़ए पैराहन की तासीर : ह़ज़रते मुह़म्मद बिन जाबिर के दादा सिनान इब्ने त़लक़ अल यमामी वफ़्द बनी ह़नीफ़ा में रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ख़िदमते अक़्दस में ह़ाज़िर हुवे और ईमान लाए । उन्हों ने अ़र्ज़ किया : या रसूलल्लाह ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم मुझे अपने कुरते का एक टुकड़ा इनायत फ़रमाइये मैं इस से उन्स रखता हूं । हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने उन की दरख़्वास्त मन्ज़ूर फ़रमा कर अपने कुरते का एक टुकड़ा इनायत फ़रमा दिया । मुह़म्मद बिन जाबिर का बयान है कि मेरे वालिद ने मुझ से बयान किया, वोह क़त्अ़ा हमारे पास था हम उसे धो कर ब ग़रज़े शिफ़ा अपने बीमारों को पिलाया करते थे ।

(الخصائص الکبریٰ،باب ما وقع فی وفد بنی حنیفۃ من الآیات،ج۲،ص۲٦)

﴾9﴿ अ़साए मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की बरकात : जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه का बयान है कि मेरे पास ग़ज़्वए ज़ातुर्रिक़ाअ़ में एक ऊंट था जिस का घुटना टूटा हुवा था । रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم मेरे पास से गुज़रे मगर ऊंट की सुस्त रवी इस बात की इजाज़त न देती थी कि मैं आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का साथ दे सकूं । मुझ से पूछा गया तो मैं ने सारा माजरा सुनाया । आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने अ़सा ले कर ऊंट पर तीन मरतबा घसा और फिर पानी का चुल्लू भर कर उस पर छिड़का और हुक्म दिया कि सुवार हो जाओ । मुझे क़सम है उस ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ की जिस ने हम पर एक सच्चा रसूल मबऊ़ष फ़रमाया, आं ह़ज़रत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم जिस क़दर तेज़ चलाते थे मेरा ऊंट पीछे न रहता और मैं हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के हमराह ही रहता था ।

(الخصائص الکبریٰ،کتاب ذکر معجزاتہ فی ضروب الحیوانات، باب قصۃ الجمل و الناقۃ،ج۲،ص۹۷)

﴾10﴿ हज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के बारे में मन्क़ूल है कि आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अपना हाथ मिम्बरे रसूले अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم पर जहां आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم बैठा करते थे रखा और फिर फ़र्ते महब्बत से अपने चेहरे पर फेर लिया।

﴾11﴿ मस्जिदे नबवी (علٰی صاحِبِھَا الصَّلٰوۃُ وَالسَّلام) से मुल्हिक़ हज़रते अ़ब्बास बिन अ़ब्दुल मुत्तलिब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का मकान था जिस का परनाला बारिश में आने जाने वाले नमाज़ियों पर गिरा करता था। हज़रते उ़मरे फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने उस को उठवा दिया, हज़रते अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ आप के पास आए और कहने लगे : **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! इस परनाले को रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने अपने दस्ते मुबारक से मेरी गरदन पर सुवार हो कर लगाया था। येह सुन कर हज़रते उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने जवाब दिया कि आप मेरी गरदन पर सुवार हो कर उस को फिर उसी जगह लगा दें, चुनान्चे ऐसा ही हुवा।

(وفاالوفاء،الفصل الثانی عشر،باب بین عمرو العباس،ج۱،ص۴۸۷)

कामिल मोमिन की निशानी

हुज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "जो नेकी पर ख़ुश और बुराई पर ग़मगीन होता है, वोह (कामिल) मोमिन है।"

(المستدرک،کتاب الایمان،باب لیس المومن......الخ،الحدیث:۳۶،ج۱،ص۱۶۳)

इ़श्क़ो मह़ब्बत

لَا يُؤْمِنُ اَحَدُكُمْ

हज़रते अनस बिन मालिक رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : तुम में से कोई उस वक़्त तक (कामिल) मोमिन न होगा जब तक कि मैं उसे उस के बाप, उस की अवलाद और तमाम लोगों से ज़ियादा महबूब न हो जाऊं।

(صحیح البخاری، کتاب الایمان،باب حب الرسول صلی اللہ تعالیٰ علیہ والہٖ وسلم...الخ، الحدیث۱۵،ج۱،ص۱۷)

इसी त़रह़ एक दूसरी ह़दीष में नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : तीन बातें जिस में होंगी वोह ह़लावते ईमान पा जाएगा। पहली बात तो येह कि उस मर्दे मोमिन के नज़दीक **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) और उस का रसूल (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) सब से ज़ियादा महबूब हों। और दूसरी बात येह कि वोह किसी से मह़ब्बत करे तो सिर्फ़ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के लिये करे। और तीसरी बात येह कि कुफ़्र से नजात पा लेने के बा'द उस की त़रफ़ पलट कर आने को इस त़रह़ ना पसन्द करे जिस त़रह़ वोह आग में डाले जाने को ना पसन्द करता है।

(صحیح البخاری، کتاب الایمان،باب حلاوۃ الایمان،الحدیث۱۶،ج۱،ص۱۷)

इस ह़दीष में ईमान की बुन्याद **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ और उस के रसूल صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की मह़ब्बत को बताया गया। और इस मह़ब्बत को ईमान की दूसरी ह़लावतों पर मुक़द्दम कर के इस की ग़ैर मा'मूली अहम्मिय्यत भी बता दी गई जिस से वाज़ेह़ हो जाता है कि मह़ब्बते रसूल صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم जाने ईमान है।

﴿1﴾ एक रोज़ ह़ज़रते उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْه ने रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से अ़र्ज़ किया कि बेशक आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم सिवाए मेरी जान के जो मेरे दो पहलूओं में है, मेरे नज़्दीक हर शै से ज़ियादा मह़बूब हैं। आं ह़ज़रत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "तुम में से कोई हरगिज़ मोमिन (कामिल) नहीं बन सकता जब तक मैं उस के नज़्दीक उस की जान से ज़ियादा मह़बूब न हो जाऊं।" येह सुन कर ह़ज़रते उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْه ने जवाब में अ़र्ज़ किया कि क़सम है उस ज़ात की जिस ने आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर किताब नाज़िल फ़रमाई। बेशक आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم मेरे नज़्दीक मेरी जान से जो मेरे दोनों पहलूओं के दरमियान है ज़ियादा मह़बूब हैं। इस पर हु़ज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "اَلْاٰن یا عمر या'नी हां अब ! ऐ उ़मर !"

(صحیح البخاری، کتاب الایمان والنذور، باب کیف کانت یمین النبی صلی اللہ تعالٰی علیہ والہ وسلم، الحدیث ٦٦٣٢، ج٤، ص٢٨٣)

﴿2﴾ ह़ज़रते अ़म्र बिन अल आ़स رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْه की वफ़ात का वक़्त आया तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْه ने अपने साहि़बज़ादे से अपनी तीन ह़ालतें बयान कीं। दूसरी ह़ालत बयान करते हुवे फ़रमाते हैं :

"कोई शख़्स मेरे नज़्दीक रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से ज़ियादा मह़बूब और मेरी आंखों में आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से ज़ियादा जलालत व हैबत वाला न था। मैं आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की हैबत के सबब से आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की त़रफ़ नज़र भर कर न देख सकता था।" (الشفاء، الباب الثالث، ج٢، ص٦٨)

﴿3﴾ जब फ़त्ह़े मक्का के दिन ह़ज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْه के वालिद अबू क़ुह़ाफ़ा ईमान लाए तो रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ख़ुश हुवे। इस पर ह़ज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْه

ने अ़र्ज़ किया : “क़सम है उस ज़ात की जिस ने आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को दीने ह़क़ के साथ भेजा है, इन (अबू क़ुह़ाफ़ा) के इस्लाम की निस्बत (आप के चचा) अबू त़ालिब का इस्लाम (अगर वोह इस्लाम लाते) मेरी आंखों को ज़ियादा ठन्डा करने वाला था।” (الشفاء بتعريف حقوق المصطفى صلى الله عليه وسلم،الباب الثانى،ج٢،ص ٤١)

《4》 ह़ज़रते षमामा बिन उषाल यमामी जो अहले यमामा के सरदार थे ईमान ला कर कहने लगे :

“ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! मेरे नज़्दीक रूए ज़मीन पर कोई चेहरा आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के चेहरे से ज़ियादा मबग़ूज़ न था। आज वोही चेहरा मुझे सब चेहरों से ज़ियादा मह़बूब है। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की कसम ! मेरे नज़दीक कोई दीन आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के दीन से ज़ियादा बुरा न था अब वोही दीन मेरे नज़दीक सब दीनों से ज़ियादा मह़बूब है। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! मेरे नज़दीक कोई शहर आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के शहर से ज़ियादा मबग़ूज़ न था। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! अब वोही शहर मेरे नज़दीक सब शहरों से ज़ियादा मह़बूब है।”

(صحيح البخارى، كتاب المغازى،باب وفدبنى حنيفة،الحديث٤٣٧٢،ج٣،ص ١٣١)

《5》 ह़ज़रते हिन्द बिन्ते उ़त्बा (ज़ौजए अबू सुफ़्यान बिन ह़र्ब) जो ह़ज़रते अमीर ह़म्ज़ा رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه का कलेजा चबा गई थीं, ईमान ला कर कहने लगीं : “या रसूलल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! रूए ज़मीन पर कोई अहले ख़ैमा मेरी निगाह में आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के अहले ख़ैमा से ज़ियादा मबग़ूज़ न थे। लेकिन आज मेरी निगाह में रूए ज़मीन पर कोई अहले ख़ैमा आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के अहले ख़ैमा से ज़ियादा मह़बूब नहीं।”

(صحيح البخارى، كتاب مناقب الانصار،باب ذكر هند بنت عتبة،الحديث٣٨٢٥،ج٢،ص ٥٦٧)

﴾6﴿ ह़ज़रते सफ़्वान बिन उमय्या رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का बयान है कि हुनैन के दिन रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने मुझे माल अ़ता फ़रमाया, ह़ालांकि आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم मेरी नज़र में मबग़ूज़ तरीन ख़ल्क़ थे। आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم मुझे अ़ता फ़रमाते रहे यहां तक कि आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم मेरी नज़र में मह़बूब तरीन ख़ल्क़ हो गए। (جامع الترمذی، کتاب الزکاۃ،باب ماجاء فی اعطاء المؤلفۃ قلوبھم،الحدیث ٦٦٦،ج٢،ص١٤٧)

﴾7﴿ फ़त्ह़े मक्का में ह़ज़रते अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ, अबू सुफ़्यान बिन ह़र्ब को जो अब तक ईमान न लाए थे, अपने पीछे ख़च्चर पर सुवार कर के रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में लाए। ह़ज़रते उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अ़र्ज़ किया : अगर इजाज़त हो तो इस दुश्मने खुदा की गरदन उड़ा दूं ? ह़ज़रते अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अ़र्ज़ किया : या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! मैं ने अबू सुफ़्यान को पनाह दी है। ह़ज़रते उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने इस्रार किया तो ह़ज़रते अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने कहा : ऐ इब्ने ख़त्ताब ! अगर अबू सुफ़्यान क़बीलए बनू अ़दी में से होते तो आप ऐसा न कहते। इस पर ह़ज़रते उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने कहा : ऐ अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ! जिस दिन आप इस्लाम लाए, आप का इस्लाम मेरे नज़दीक ख़त्ताब के इस्लाम से (अगर वोह इस्लाम लाता) ज़ियादा मह़बूब था, क्यूंकि आप का इस्लाम रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के नज़दीक ज़ियादा मह़बूब था।

(الشفاء بتعریف حقوق المصطفی صلی اللہ تعالی علیہ وسلم،الباب الثانی،ج٢،ص٤١)

﴾8﴿ जंगे उहुद में एक अ़फ़ीफ़ा के बाप, भाई और शौहर शहीद हो गए। उसे येह ख़बर मिली तो कुछ परवाह न की और पूछा येह बताओ कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم कैसे हैं ? जब उसे

बता दिया गया कि हुज़ूर (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) بحمدالله ब ख़ैर हैं तो बोली कि मुझे दिखा दो। हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को देख कर कहने लगी : كُلُّ مُصِيبَةٍ بَعْدَكَ جَلَلَ आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के होते हर मुसीबत हेच है। (المرجع السابق،ص٤٢)

बढ़ कर उस ने रुख़े अक़्दस को जो देखा तो कहा
तू सलामत है तो फिर हेच हैं सब रन्जो अलम
मैं भी और बाप भी, शौहर भी, बरादर भी फ़िदा
ऐ शहे दीं तेरे होते हुवे क्या चीज़ हैं हम

﴾9﴿ ह़ज़रते अ़ब्दुर्रह़मान बिन सा'द رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه का बयान है कि ह़ज़रते इब्ने उ़मर رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُمَا का पाउं सुन हो गया। उन से येह सुन कर एक शख़्स ने कहा कि आप رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه के नज़्दीक जो सब से ज़ियादा मह़बूब है उसे याद कीजिये। येह सुन कर आप رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه ने कहा : या मुह़म्मदाह ! (और आप का पाउं अच्छा हो गया) (المرجع السابق،ص٤٣)

﴾10﴿ ह़ज़रते बिलाल बिन रबाह़ رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه की वफ़ात का वक़्त आया तो उन की ज़ौजा ने कहा : (हाए ग़म !) येह सुन कर ह़ज़रते बिलाल رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه ने कहा : واطرباه القى غداً الاحبة محمداً وحزبه वाह ख़ुशी ! मैं कल दोस्तों या'नी मुह़म्मद صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم और आप के अस्ह़ाब رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُم से मिलूंगा। (المرجع السابق)

﴾11﴿ जब सि. 7 हि. में क़बीलए अशअ़रिय्यीन में से ह़ज़रते अबू मूसा رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه वग़ैरा मदीना शरीफ़ को आए तो ज़ियारत से मुशर्रफ़ होने से पहले पुकार पुकार कर यूं कहने लगे : غداً نلقى الاحبة محمداً وصحبه हम कल दोस्तों या'नी मुह़म्मद صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم और आप के अस्ह़ाब رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُم से मिलेंगे। (المرجع السابق،ص٤٨)

रिज़ाए रसूल صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के लिये जज़्बए ईसार

जिस रोज़ हुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم आ़ज़िमे मौज़ए तबूक हुवे, ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन ख़ैसमा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه अपने घर आए। उन की दो ह़सीनो जमील बीवियां थीं जिन्हों ने उस रोज़ ख़स के पर्दों को पानी में बसा कर उन से निहायत उ़म्दा फ़र्श तैयार किये और फिर उन पर अ़ब्दुल्लाह رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه के लिये निहायत उ़म्दा और लज़ीज़ खाने चुने। जूं ही अ़ब्दुल्लाह رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه ने उन खानों को देखा तो कहा سُبْحٰنَ الله वोह रसूल صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم जिसे परवर दगारे आ़लम عَزَّوَجَلَّ ने आइन्दा व गुज़श्ता तमाम गुनाहों से मुनज़्ज़ा पैदा फ़रमाया, इस शदीद गर्मी के मौसिम में कुफ़्फ़ार से क़िताल के लिये तशरीफ़ ले जाएं और अ़ब्दुल्लाह रंगा रंग खानों से सैर हो कर इन बीवियों से मुबाशरत करे, ऐसा नहीं हो सकता। खुदा عَزَّوَجَلَّ की क़सम मैं जब तक रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में न पहुंचूं इन बीवियों से कलाम नहीं करूंगा।

घर से निकले और अपने ऊंट पर सुवार हो कर एक त़रफ़ चल दिये। बीवियों ने हर चन्द कलाम की कोशिश की लेकिन आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه मुल्तफ़त न हुवे। जूं ही अ़ब्दुल्लाह رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه मक़ामे तबूक के नज़्दीक पहुंचे तो हुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को बताया गया कि एक ऊंट सुवार दूर से इस त़रफ़ आता हुवा दिखाई देता है। हुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया वोह इब्ने ख़ैसमा होगा। नज़्दीक पहुंचे तो देखा कि हुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के फ़रमान के मुत़ाबिक़ वोह इब्ने ख़ैसमा ही थे। उन्हों ने हुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में पहुंच कर सलाम अ़र्ज़ किया। हुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने जवाबन फ़रमाया : ऐ इब्ने ख़ैसमा ! رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه क्या ही अच्छी बात है तुम फ़ानी नाज़ो ने'मत को छोड़ कर रिज़ाए ह़क़ में खो गए जो तुम्हारे लिये बेहतर है। (شرح العلامة الزرقانی،باب غزوة تبوك،ج٤،ص٨٢)

हज़रते अबू ज़र رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنۡہ का जज़्बए जां निषारी : हज़रते अबू ज़र गिफ़ारी رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنۡہ फ़रमाते हैं : हुज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم जब ग़ज़्वए तबूक के लिये रवाना हुवे तो मेरा ऊंट बहुत लाग़र और ज़ईफ़ था। मेरा ख़याल था कि चन्द रोज़ मज़ीद ठहर कर हुज़ूर صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से जा मिलूंगा। मैं ने कई रोज़ तक अपने ऊंट को चारा खिलाया, बा'दे अज़ां मैं आ़ज़िमे सफ़र हुवा। जब एक जगह पहुंचा तो मेरे ऊंट की टांग टूट गई जिस के बाइष वोह आगे न चल सका, मैं ने अपना मालो मताअ़ अपनी पुश्त पर रखा और चल दिया। रास्ते में सख़्त गर्मी से दो चार होना पड़ा। लश्करे इस्लाम के पास पहुंचा तो लोगों ने हुज़ूर صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से अ़र्ज़ किया : कोई शख़्स पैदल चला आ रहा है। सरकार صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : अबू ज़र गिफ़ारी होंगे। जब मैं हुज़ूर صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में ह़ाज़िर हुवा तो आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने क़ियाम की ह़ालत में फ़रमाया : ख़ुश रहो अबू ज़र ! (رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنۡہ) तुम तन्हा सफ़र करते हो तन्हा ही इस दुन्या से जाओगे और तन्हा ही बरोज़े ह़श्र उठोगे।

कहते हैं जब अबू ज़र गिफ़ारी رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنۡہ का विसाल हुवा तो आप तन्हा ही थे। अ़ब्दुल्लाह इब्ने मसऊ़द رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنۡہ ने आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنۡہ को ब ह़ालते वफ़ात पाया तो कहा : सच फ़रमाया था ख़ुदा के सादिक़ो मस्दूक़ रसूल صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने। साह़िबे मुस्तक़्सी ने लिखा है कि मैं ने ह़ज़रते अबू ज़र رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنۡہ के मज़ार की ज़ियारत की है। मुझे वहां वोह कैफ़ व जज़्ब ह़ासिल हुवा जो दूसरे सह़ाबए किराम عَلَیۡہِمُ الرِّضۡوَان के मज़ार पर न पा सका। मैं ने उन की क़ब्र के पास नमाज़ अदा की, जूं ही मैं सर ब सुजूद हुवा आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنۡہ की तुर्बते अन्वर से मुश्को अ़म्बर की ख़ुश्बू निकली जिस ने मेरे मशामे जां तक को मुअ़त्त़र व मुअ़म्बर कर दिया। (شواھد النبوۃ،رکن رابع،ص ۱۲۵)

شدیم خاک ولیکن زتربت ما
تواں شناخت کزیں خاک مردے خیزد

हु़ज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के बा'द दुन्या क़ाबिले दीद न रही : जब हु़ज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के विसाले ज़ाहिरी की ख़बर आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के मुअज़्ज़िन अ़ब्दुल्लाह बिन ज़ैद अन्सारी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने सुनी तो वोह इस क़दर ग़मज़दा हुवे कि नाबीना होने की दुआ़ मांगने लगे कि मेरे आक़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के बिग़ैर येह दुन्या मेरे लिये क़ाबिले दीद न रही। आप उसी वक़्त नाबीना हो गए। लोगों ने कहा : तुम ने येह दुआ़ क्यूं मांगी ? फ़रमाया : लज़्ज़ते निगाह तो देखने में है मगर सरकार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के बा'द अब मेरी आंखें किसी के दीदार का ज़ौक़ ही नहीं रखतीं।

(المرجع السابق،ص١٣٩)

इज़्तिराबे इ़श्क़ : एक दिन हु़ज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के आ़शिक़े ज़ार ह़ज़रते सौबान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ह़ाज़िर हुवे तो उन का चेहरा उतरा हुवा और रंग उड़ा हुवा देख कर हु़ज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने वजह पूछी तो दर्दमन्द आ़शिक़ ने अ़र्ज़ किया : या रसूलल्लाह ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم न कोई जिस्मानी तकलीफ़ है और न कहीं दर्द। बात येह है कि रुख़े अन्वर जब आंखों से ओझल होता है तो दिल बेताब हो जाता है फ़ौरन ज़ियारत से इस को तसल्ली देता हूं। अब रह रह कर मुझे येह ख़याल सता रहा है कि जन्नत में हु़ज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का मक़ामे बुलन्द कहां होगा और येह मिस्कीन किस गोशे में पड़ा होगा। अगर रूए ताबां की ज़ियारत न हुई तो मेरे लिये जन्नत की सारी लज़्ज़तें ख़त्म हो जाएंगी, फ़िराक़ व हिज्र का येह जांका सदमा तो इस दिले ना तुवां से बरदाश्त न हो सकेगा। हु़ज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم येह माजरा सुन कर ख़ामोश हो गए।

यहां तक कि जिब्रईले अमीन عَلَیْهِ السَّلَام येह मुज़्दा ले कर तशरीफ़ लाए।

وَمَنْ يُّطِعِ اللّٰهَ وَالرَّسُوْلَ فَاُولٰٓئِكَ مَعَ الَّذِيْنَ اَنْعَمَ اللّٰهُ عَلَيْهِمْ مِّنَ النَّبِيّٖنَ وَالصِّدِّيْقِيْنَ وَالشُّهَدَآءِ وَالصّٰلِحِيْنَ ۚ وَحَسُنَ اُولٰٓئِكَ رَفِيْقًا (پ٤،النسآء:٦٩)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *और जो **अल्लाह** और उस के रसूल का हुक्म माने तो उसे उन का साथ मिलेगा जिन पर **अल्लाह** ने फ़ज़्ल किया या'नी अम्बिया और सिद्दीक़ और शहीद और नेक लोग।*

(الجامع لاحکام القرآن،الحدیث ٢٣٠٩،ج٥،ص ٢٦١)

इत़ाअ़त गुज़ार उ़श्शाक़ को जन्नत में जुदाई का सदमा नहीं पहुंचेगा बल्कि उन को अपने मह़बूब صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की मइय्यत व रूयत मुयस्सर होगी। ह़क़ीक़त येह है कि इ़श्के़ मुस्त़फ़वी में सिर्फ़ ह़ज़रते सौबान رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهُ ही की येह कैफ़िय्यत न थी बल्कि सब सह़ाबा رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهُم का येही ह़ाल था।

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ और उस का रसूल صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم बस : ह़ज़रते उ़मर رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهُ फ़रमाते हैं कि एक मरतबा हु़ज़ूरे अक़्दस صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने सदक़ा करने का हुक्म फ़रमाया। इत्तिफ़ाक़न उस ज़माने में मेरे पास कुछ माल मौजूद था। मैं ने कहा : आज इत्तिफ़ाक़ से मेरे पास माल मौजूद है, अगर मैं अबू बक्र رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهُ से कभी बढ़ सकता हूं तो आज बढ़ जाऊंगा। येह सोच कर मैं ख़ुशी ख़ुशी घर गया और जो कुछ घर में था उस में से आधा ले आया। हु़ज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि घर वालों के लिये क्या छोड़ा, मैं ने अ़र्ज़ किया कि, छोड़ आया, हु़ज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : आख़िर क्या छोड़ा? मैं ने अ़र्ज़ किया कि आधा छोड़ आया। और ह़ज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهُ ने जो रखा था सब ले आए। हु़ज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : अबू बक्र ! घर

वालों के लिये क्या छोड़ा। उन्हों ने अ़र्ज़ किया : उन के लिये **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ और उस के रसूल صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को छोड़ आया हूं।

परवाने को चराग़ है तो बुलबुल को फूल बस
सिद्दीक़ के लिये है ख़ुदा का रसूल बस

या'नी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ और उस के रसूल صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के नाम की बरकत, उन की रिज़ा और ख़ुशनूदी को छोड़ आया हूं। ह़ज़रते उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं कि मैं ने कहा : मैं ह़ज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से कभी नहीं बढ़ सकता। येह क़िस्सा ग़ज़्वए तबूक के लिये फ़राहमिये माल व अस्बाब का है।

(شرح العلامة الزرقاني، باب غزوة تبوك، ج٤، ص٦٩)

ह़ज़रते अनस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के सह़ीफ़ए अख़्लाक़ में हुब्बे रसूल صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم और इत्तिबाए़ सुन्नत के निहायत नुमायां अब्वाब हैं उन्हों ने होश की आंखें खोलीं तो इस्लाम को अपने घराने पर शुरूअ़ दिन ही से पर तौ फ़िगन देखा। उन की वालिदा ह़ज़रते उम्मे सुलैम, सोतेले वालिद ह़ज़रते अबू त़ल्ह़ा, चचा ह़ज़रते अनस बिन नज़्र, भाई ह़ज़रते बरा बिन अल मलक, ख़ाला उम्मे ह़राम और सभी सरवरे दो आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के मुख़्लिस शैदाई थे। (رِضْوَانُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْهِمْ اَجْمَعِیْن)

ख़ानदान में हर वक़्त ज़ाते रिसालत मआब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم और आप की दा'वते ह़क़ का चर्चा होता रहता था। इस पाकीज़ा माह़ोल ने कमसिन अनस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के दिल में हु़ज़ूरे पुरनूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की मह़ब्बत का बीज बो दिया। इस के बा'द उन को मुसल्सल दस बरस तक रह़मते दो आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमत करने की सआ़दत नसीब हुई। इस दौरान उन को हु़ज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के बे मिष्ल अख़्लाक़े आ़ली ने इतना मुतअष्षिर किया कि वोह अपने शफ़ीक़ आक़ा व मौला صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के आ़शिक़े सादिक़ बन गए।

हु़ज़ूर صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने जब विसाल फ़रमाया, तो ह़ज़रते अनस رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ की दुन्या अन्धेर हो गई। रह़मते आ़लम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की याद उन को हर वक़्त तड़पाती रहती थी। उन की कोई मह़फ़िल ऐसी न होती थी जिस में हु़ज़ूर صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का ज़िक्रे ख़ैर न हो। अ़हदे रिसालत का कोई वाक़ेआ़ किसी से सुनते या ख़ुद बयान करते तो आंखें नम हो जातीं और शिद्दते तअष्षुर से आवाज़ भरा जाती। कई दफ़्अ़ा ऐसा होता की अपने आप पर क़ाबू न रहता और सख़्त बे चैनी के आ़लम में मह़फ़िल से उठ खड़े होते और जब तक घर पहुंच कर तबर्रुकाते नबवी की ज़ियारत न कर लेते कल न पड़ती थी।

एक दिन सरवरे काइनात صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का हुल्या बयान कर रहे थे कि : "मैं ने कभी कोई रेशम रसूलुल्लाह صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की हथेली से ज़ियादा नर्म नहीं छूवा, और न कभी कोई ख़ुश्बू हु़ज़ूर صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के बदने मुबारक से ज़ियादा ख़ुश्बूदार सूंघी।"

(صحیح البخاری، کتاب المناقب، باب صفة النبی صلی اللہ تعالیٰ علیه واٰلہٖ وسلم، الحدیث ۳۵۶۱، ج۲، ص۴۸۹)

इसी त़रह़ बयान करते करते फ़र्ते मह़ब्बत से इतने बे क़रार हो गए कि गिर्या त़ारी हो गया और ज़बान पर बे इख़्तियार येह अल्फ़ाज़ आ गए।

"क़ियामत के दिन रसूलुल्लाह صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ज़ियारत नसीब होगी तो अ़र्ज़ करूंगा या रसूलल्लाह ! صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم आप का अदना ग़ुलाम अनस ह़ाज़िर है।" हु़ज़ूर صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से बे पनाह मह़ब्बत और अ़क़ीदत का येह अषर था कि उन्हें अकषर ख़्वाब में सय्यिदुल अनाम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ज़ियारत नसीब हो जाती थी। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ और उस का रसूल صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم उन को दुन्या की हर शै से मह़बूब तर थे। (المسند لامام احمد بن حنبل، مسند انس بن مالك بن النضر، الحدیث ۱۳۳۱۵، ج۴، ص۴۴۲)

सहीह़ बुख़ारी में ख़ुद उन से रिवायत है कि रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि तीन बातें ऐसी हैं जो किसी शख़्स में पाई जाएं तो गोया उस ने ईमान की ह़लावत पा ली। एक येह कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ और अल्लाह का रसूल صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم उस को सारी दुन्या से अ़ज़ीज़ तर हों, दूसरे येह कि जिस से महृब्बत करे अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की ख़ातिर करे, तीसरे येह कि इस्लाम लाने के बा'द कुफ़्र की त़रफ़ लौट जाने को ऐसा ना पसन्द करे जैसा कि आग में पड़ जाने को करता है।

(صحیح البخاری، کتاب الایمان، باب حلاوة الایمان، الحدیث ١٦، ج١، ص١٧)

ह़ज़रते ज़ाहिर رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ **:** एक बदवी सह़ाबी ज़ाहिर رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ जो ब ज़ाहिर ह़सीन न थे, जंगल के फल सब्ज़ी वग़ैरा आं ह़ज़रत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में ब त़ौरे हदिय्या लाया करते थे। जब वोह आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से रुख़्सत होते तो आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم शहर की चीज़ें कपड़ा वग़ैरा उन को दे दिया करते थे। सरकार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को उन से महृब्बत थी और फ़रमाया करते थे कि ज़ाहिर हमारा रू सताई है और हम उस के शहरी हैं।

एक रोज़ आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم बाज़ार की त़रफ़ निकले तो देखा कि ज़ाहिर رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ अपनी मताअ़ बेच रहे हैं। आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने पीठ की त़रफ़ जा कर उन की आंखों पर अपना दस्ते मुबारक रखा और उन को गोद में ले लिया, वोह बोले कौन है ? मुझे छोड़ दो। उन्हों ने मुड़ कर देखा तो आं ह़ज़रत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم थे। अपनी पीठ (ब क़स्दे बरकत) और भी हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के सीने से लिपटाने लगे। हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कोई है जो ऐसे ग़ुलाम को ख़रीदे। वोह बोले या रसूलल्लाह ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم अगर आप बेचते हैं

तो मुझे कम क़ीमत पाएंगे। हुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "तू ख़ुदा के नज़्दीक गिरां क़दर है।"

(جامع الترمذی،شمائل محمدیة صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم ،باب ماجاء فی صفة مزاح...الخ،الحدیث۲۳۸،ج۵،ص۵٤۵)

ह़ज़रते ज़ैद बिन ह़ारिषा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُ का इ़श्के रसूल صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم :

ह़ज़रते ज़ैद बिन ह़ारिषा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُ ज़मानए जाहिलिय्यत में अपनी वालिदा के साथ नन्हियाल जा रहे थे, बनू क़ैस ने वोह क़ाफ़िला लूटा जिस में ज़ैद رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُ भी थे। उन को मक्का में ला कर बेचा। ह़कीम बिन ह़िज़ाम ने अपनी फूफी ह़ज़रते ख़दीजा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهَا के लिये उन को ख़रीद लिया। जब हुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का निकाह़ ह़ज़रते ख़दीजा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهَا से हुवा तो उन्हों ने ज़ैद رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُ को हुज़ूरे अक़्दस صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में ब तौरे हदिय्या पेश किया। ज़ैद رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُ के वालिद को उन के फ़िराक़ का बहुत सदमा था और होना भी चाहिये था कि अवलाद की मह़ब्बत फ़ित़री चीज़ है। वोह ज़ैद رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُ के फ़िराक़ में रोते और अश्आ़र पढ़ते फिरा करते थे, अकषर जो अश्आ़र पढ़ते थे उन का मुख़्तसर तर्जमा येह है कि "मैं ज़ैद की जुदाई में रो रहा हूं और येह भी नहीं जानता कि वोह ज़िन्दा है कि उस की उम्मीद रखूं या मौत ने उस का काम तमाम कर दिया कि उस से मायूस हो जाऊं, ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! मुझे येह भी मा'लूम नहीं कि तुझे ऐ ज़ैद नर्म ज़मीन ने हलाक किया या किसी पहाड़ ने हलाक किया। काश मुझे येह मा'लूम हो जाता कि तू उ़म्र भर में कभी भी वापस आएगा या नहीं, सारी दुन्या में मेरी इन्तिहाई ग़रज़ तेरी वापसी है। जब आफ़्ताब तुलूअ़ होता है तो मुझे ज़ैद ही याद आता है और जब बारिश होने को आती है तो भी उसी की याद मुझे सताती है और जब हवाएं चलती हैं तो वोह भी उस की याद को भड़काती हैं। हाए मेरा ग़म और मेरी फ़िक्र किस क़दर त़वील हो गई मैं उस की तलाश

और कोशिश में सारी दुन्या में ऊंट की तेज़ रफ़्तारी को काम में लाऊंगा और दुन्या का चक्कर लगाने से न उक्ताऊंगा, ऊंट चलने से उक्ता जाएं तो उक्ता जाएं लेकिन मैं कभी भी न उक्ताऊंगा। अपनी सारी ज़िन्दगी इसी में गुज़ार दूंगा। हां मेरी मौत ही आ गई तो ख़ैर कि मौत हर चीज़ को फ़ना कर देने वाली है आदमी ख़्वाह कितनी ही उम्मीदें लगाए मगर मैं अपने बा'द फुलां फुलां रिश्तेदारों और आल व अवलाद को वसिय्यत कर जाऊंगा कि वोह भी इसी त़रह़ ज़ैद को ढूंडते रहें।"

ग़रज़ वोह येह अश्आ़र पढ़ते और रोते हुवे ढूंडते फिरा करते थे। इत्तिफ़ाक़ से उन की क़ौम के चन्द लोगों का ह़ज को जाना हुवा और उन्हों ने ज़ैद को पहचाना। बाप का ह़ाल सुनाया, शे'र सुनाए उन की याद व फ़िराक़ की दास्तान सुनाई। ह़ज़रते ज़ैद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने उन के हाथ तीन शे'र कह भेजे जिन का मत़लब येह था कि "मैं यहां मक्का में हू।" उन लोगों ने जा कर ज़ैद की ख़ैर व ख़बर उन के बाप को सुनाई और वोह अश्आ़र सुनाए जो ज़ैद ने कहे थे और पता बताया। ज़ैद के बाप और चचा फ़िदये की रक़म ले कर उन को ग़ुलामी से छुड़ाने की ख़ात़िर मक्कए मुकर्रमा पहुंचे, तह़क़ीक़ की, पता चलाया, ह़ुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में पहुंचे और अ़र्ज़ किया : ऐ हाशिम की अवलाद ! अपनी क़ौम के सरदार ! तुम लोग ह़रम के रहने वाले हो और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के घर के पड़ोसी, तुम ख़ुद क़ैदियों को रिहा कराते हो, भूकों को खाना खिलाते हो। हम अपने बेटे की त़लब में तुम्हारे पास पहुंचे हैं हम पर एह़सान फ़रमाओ और करम करो। फ़िदया क़बूल करो और इस को रिहा कर दो बल्कि जो फ़िदया हो उस से ज़ियादा ले लो। ह़ुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : बस इतनी सी बात है ! अ़र्ज़ किया ह़ुज़ूर ! बस येही अ़र्ज़ है।

आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : उस को बुलाओ और उस से पूछ लो अगर वोह तुम्हारे साथ जाना चाहे तो बिग़ैर फ़िदया ही के वोह तुम्हारी नज़्र है और अगर न जाना चाहे तो मैं ऐसे शख़्स पर जब्र नहीं कर सकता जो ख़ुद न जाना चाहे। उन्हों ने अ़र्ज़ किया कि आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इस्तिह़क़ाक़ से भी ज़ियादा एह़सान फ़रमाया येह बात ख़ुशी से मन्ज़ूर है। ह़ज़रते ज़ैद رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه बुलाए गए, आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : तुम इन को पहचानते हो ? अ़र्ज़ किया : जी हां पहचानता हूं येह मेरे बाप हैं और येह मेरे चचा। हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि मेरा ह़ाल भी तुम्हें मा'लूम है। अब तुम्हें इख़्तियार है कि मेरे पास रहना चाहो तो मेरे पास रहो, इन के साथ जाना चाहो तो इजाज़त है। ह़ज़रते ज़ैद رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه ने अ़र्ज़ किया : हुज़ूर ! मैं आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के मुक़ाबले में भला किस को पसन्द कर सकता हूं आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم मेरे लिये बाप की जगह भी हैं और चचा की जगह भी हैं।

उन दोनों बाप, चचा ने कहा कि ज़ैद ! ग़ुलामी को आज़ादी पर तरजीह देते हो ? बाप, चचा और सब घर वालों के मुक़ाबले में ग़ुलाम रहने को पसन्द करते हो ? ह़ज़रते ज़ैद رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه ने फ़रमाया कि हां मैं ने इन में (हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की त़रफ़ इशारा कर के) ऐसी बात देखी है जिस के मुक़ाबले में किसी चीज़ को भी पसन्द नहीं कर सकता। हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने जब येह जवाब सुना तो उन को गोद में ले लिया और फ़रमाया कि मैं ने इस को अपना बेटा बना लिया। ज़ैद رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه के बाप और चचा भी येह मन्ज़र देख कर बहुत ख़ुश हुवे और ख़ुशी से उन को छोड़ कर चले गए। (الاصابة فی تمییز الصحابة، زید بن حارثة، ج۲، ص۴۹۵)

हज़रते ज़ैद उस वक़्त बच्चे थे, बचपन की हालत में भी सारे घर को, अज़ीज़ो अक़ारिब को ग़ुलामी पर क़ुरबान कर देना जिस अ़ज़ीम व जलील महब्बत का पता देता है वोह ज़ाहिर है।

हज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ और बारगाहे मुस्त़फ़ा صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : हज़रते आइशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہَا का बयान है कि हज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ की वफ़ात के बा'द बा'ज़ लोगों ने येह ख़याल ज़ाहिर किया कि आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ को शुहदा के दरमियान दफ़्न कर दें और बा'ज़ कहते थे कि आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ को जन्नतुल बक़ीअ़ में दफ़्न किया जाए। मैं ने कहा कि मैं तो उन्हें अपने हुजरे में अपने महबूब صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के पास दफ़्न करूंगी। अभी हम इस इख़्तिलाफ़ में थे कि मुझ पर नींद ग़ालिब आ गई मैं ने किसी को येह कहते सुना कि महबूब को महबूब की त़रफ़ ले आओ। जब मैं बेदार हुई तो पता चला कि तमाम ह़ाज़िरीन ने इस आवाज़ को सुन लिया था यहां तक कि मस्जिद में मौजूद लोगों ने भी इस आवाज़ को गोशे होश से सुना।

वफ़ात से पहले सय्यिदुना सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने वसिय्यत फ़रमाई थी कि मेरे ताबूत (जनाज़े) को हुज़ूर صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के रौज़ए अन्वर के पास ला कर रख देना और السلام علیك یا رسول اللہ कह कर अ़र्ज़ करना कि हुज़ूर صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم अबू बक्र رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के आस्तानए आ़लिय्या पर ह़ाज़िर हुवा है। अगर इजाज़त हुई तो दरवाज़ा खुल जाएगा और मुझे अन्दर ले जाना वरना जन्नतुल बक़ीअ़ में दफ़्न कर देना। रावी का बयान है कि जब हज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ की वसिय्यत पर अ़मल किया गया तो अभी वोह कलिमात पायए इख़्तिताम को न पहुंचे थे कि पर्दा उठ गया। और आवाज़ आई कि : "ह़बीब को ह़बीब की त़रफ़ ले आओ।"

(شواھد النبوۃ،رکن سادس،ص ۲۰۰)

जाए गौर है कि अगर अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को ज़िन्दा न जानते तो हरगिज़ ऐसी वसिय्यत न फ़रमाते कि रौज़ए अक़्दस के सामने मेरा जनाज़ा रख कर इजाज़त तलब की जाए। हज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने वसिय्यत की और सहाबए किराम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُم ने उसे अमली जामा पहनाया जिस से षाबित होता है कि हज़रते सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ और तमाम सहाबए किराम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُم का अक़ीदा था कि रसूले अक़्दस صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم बादे विसाल भी क़ब्रे अन्वर में ज़िन्दा और साहिबे इख़्तियार व तसर्रुफ़ हैं। اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ عَزَّوَجَلَّ

शौक़े रफ़ाक़त : हज़रते रबीआ बिन का'ब अस्लमी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ का बयान है कि मैं रात को रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमते अक़्दस में रहा करता था, आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के वुज़ू के लिये पानी लाया करता था और दीगर ख़िदमत भी बजा लाया करता था। एक रोज़ आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने मुझ से फ़रमाया : سَل (मांगो) मैं ने अर्ज़ किया : اَسْئَلُکَ مُرَافَقَتَکَ فِی الْجَنَّۃِ मैं आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से बहिश्त में आप का साथ मांगता हूं। आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : इस के इलावा और कुछ ? हज़रते रबीआ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने अर्ज़ किया कि मेरा मक़्सूद तो वोही है। आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया तू कषरते सज्दा से मेरी मदद कर।

(صحیح مسلم، کتاب الصلوۃ، باب فضل السجود، الحدیث ۴۸۹، ص ۲۵۲)

मत़लब येह है कि ख़ुद भी इस मक़ामे बुलन्द की शान पैदा करो, मेरी अ़त़ा के नाज़ पर कषरते इबादत से ग़ाफ़िल न हो जाओ। अशिअ़तुल्लम्आ़त में इस ह़दीष के तह़त है :

”واز اطلاق سوال کہ فرمودہ سل بخواہ و تخصیص نہ کرد وبمطلوبی خاص معلوم می شود کہ کا رھمہ بدست ھمت و کرامت اوست صلی اللہ تعالیٰ علیہ والہٖ وسلم ھر چہ خواھدو ھر کرا خواھد باذن پروردگار خود بدھد“

(اشعۃ اللمعات، کتاب الصلاۃ،باب السجود وفضلہ،ج۱،ص۴۲۵)

तर्जमा : सरकार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि : मांगो ! इस में किसी ख़ास मत़लब की तख़्सीस नहीं की इस से मा'लूम होता है कि सारे काम हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के दस्ते इ़ज़्ज़त व कुव्वत में हैं आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم जो चाहें जिसे चाहें अपने परवर दगार عَزَّوَجَلَّ के इज़्न से अ़ता फ़रमाएं।

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ और रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की मह़ब्बत : ह़ज़रते अबू ज़र رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का बयान है कि एक रोज़ मैं दोपहर के वक़्त रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के दौलत ख़ाने पर ह़ाज़िर हुवा। नबिय्ये अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم तशरीफ़ फ़रमा न थे। मैं ने ख़ादिम से दरयाफ़्त किया, उस ने कहा कि ह़ज़रते आ़इशा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا के घर में हैं, मैं वहां आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में पहुंचा। आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم बैठे हुवे थे और कोई आदमी आप के पास न था। मुझे उस वक़्त येह गुमान होता था कि आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم वह़्य की ह़ालत में हैं। मैं ने आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को सलाम अ़र्ज़ किया। आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने मेरे सलाम का जवाब दिया, फिर फ़रमाया तुझे क्या चीज़ यहां लाई है ? मैं ने अ़र्ज़ किया : अल्लाह عَزَّوَجَلَّ और रसूल صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की मह़ब्बत।

आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने मुझ से फ़रमाया कि बैठ जा, मैं आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के पहलू में बैठ गया, न मैं आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से कुछ पूछता और न आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم मुझ से कुछ फ़रमाते। मैं थोड़ी देर ठहरा कि इतने में ह़ज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ जल्दी जल्दी चलते हुवे आए। उन्हों ने रसूलुल्लाह صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को सलाम किया । आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने सलाम का जवाब दिया फिर फ़रमाया : तुझे क्या चीज़ यहां लाई ? ह़ज़रते अबू बक्र رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने अ़र्ज़ किया : **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ और रसूल صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की मह़ब्बत। आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने हाथ से इशारा फ़रमाया कि बैठ जा। वोह एक बुलन्द जगह पर नबिय्ये अकरम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के मुक़ाबिल बैठ गए। फिर ह़ज़रते उ़मर رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ आए उन्हों ने भी ऐसा ही किया और रसूलुल्लाह صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने वैसा ही फ़रमाया। ह़ज़रते उ़मर رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ ह़ज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ के पहलू में बैठ गए।

फिर इसी त़रह़ ह़ज़रते उ़षमान رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ आए और ह़ज़रते उ़मर رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ के पहलू में बैठ गए। इस के बा'द रसूलुल्लाह صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने सात या नव के क़रीब संगरेज़े लिये। इन संगरेज़ों ने आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के मुबारक हाथ में तस्बीह़ पढ़ी यहां तक कि आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के हाथ में शहद की मख्खी के मानिन्द आवाज़ सुनाई दी। फिर आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने उन संगरेज़ों को ज़मीन पर रख दिया और वोह चुप हो गए।

फिर आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने वोह संगरेज़े मुझे छोड़ कर अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ को दिये। उन संगरेज़ों ने ह़ज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ के हाथ में तस्बीह़ पढ़ी। यहां तक कि मैं ने शहद की मख्खियों की त़रह़ उन से आवाज़ सुनी, फिर आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने वोह कंकर ह़ज़रते अबू बक्र رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ से

ले कर ज़मीन पर रख दिये वोह चुप हो गए और वैसे ही संगरेज़े बन गए। फिर आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने ह़ज़रते उ़मर رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه को दिये उन के हाथ में भी उन्हों ने तस्बीह़ पढ़ी जैसा कि अबू बक्र رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه के हाथ में पढ़ी थी। यहां तक कि मैं ने शहद की मख्खी की मानिन्द उन की आवाज़ सुनी फिर आप ने ज़मीन पर रख दिये, फिर आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने ह़ज़रते उ़षमान رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه को दिये उन के हाथ में भी उन्हों ने तस्बीह़ पढ़ी जैसा कि ह़ज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه और ह़ज़रते उ़मर رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه के हाथ में पढ़ी थी यहां तक कि मैं ने शहद की मख्खी की मानिन्द उन की आवाज़ सुनी। फिर उन को ज़मीन पर रख दिया गया। वोह चुप हो गए। फिर रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : येह नबुव्वत की ख़िलाफ़त की शहादत है।

(الخصائص الکبریٰ، ذکر معجزاته فی انواع الجمادات،باب تسبیح الحصی،ج۲،ص۱۲٤)

शौक़े दीदार : जब ह़ज़रते मुस्अ़ब बिन उ़मैर رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه क़ुरआन की तिलावत और इस्लाम की तफ़्सीर कर रहे थे ह़ज़रते अबू अ़ब्दुर्रह़मान رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه आप की त़रफ़ मुतवज्जेह हो कर सुन रहे थे इस दौरान जब भी सरकार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का ज़िक्र आता तो अबू अ़ब्दुर्रह़मान رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه की आंखों में रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का शौक़े दीदार चमक उठता और आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की मुलाक़ात के लिये वोह बेचैन हो जाते। एक बार अबू अ़ब्दुर्रह़मान رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه ने ह़ज़रते मुस्अ़ब رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه की त़रफ़ मुतवज्जेह हो कर कहा : रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ज़ियारत का किस क़दर इश्तियाक़ है कब साल जाएगा और मौसिमे ह़ज आएगा और हम आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ज़ियारत से मुशर्रफ़ होंगे। ह़ज़रते मुस्अ़ब رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه मुस्कुराए और फ़रमाया : अबू अ़ब्दुर्रह़मान ! सब्र करो, दिन जल्द ही गुज़र जाएंगे।

इब्ने मस्लिमा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने कहा हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की दीद के बिग़ैर मुझे सुकून मुयस्सर नहीं कब येह दिन गुज़रेंगे, फिर वोह कुछ देर ख़ामोश रहे और फ़रमाया मुझे अन्देशा है कि किसी वजह से हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से मेरी मुलाक़ात न हो सके इस लिये क्या आप हमारे सामने हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का सरापा ही बयान कर सकते हैं ? आप, हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की सोह्बत में रहे हैं और हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के चेहरए अक्दस की ज़ियारत से बहरह वर हुवे हैं। सभी हाज़िरीन ने बयक ज़बान कहा, इब्ने मस्लिमा तुम ने हमारे दिल की बात कह दी। इब्ने उ़मैर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ! रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का सरापा बयान कीजिये।

ह़ज़रते मुस्अ़ब बिन उ़मैर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ क़ा'दा से (दो ज़ानू हो कर) बैठ गए, अपना सर झुकाया, नज़रें नीची कीं जैसे आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का सरापा अपने ज़ेह्न में ला रहे हों। फिर आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अपना सर उठाया और फ़रमाया : रसूले अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के रंग में सफ़ेदी और सुर्ख़ी का ह़सीन इम्तिज़ाज है, चश्माने मुबारक बड़ी ही ख़ूबसूरत हैं, भवें मिली हुई हैं, बाल सीधें हैं घुंघरियाले नहीं है। दाढ़ी घनी है, दोनों मूंढों के बीच फ़ासिला है, आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की गरदन मुबारक जैसे चांदी की छागल, हथेली और क़दम मोटे हैं। आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم जब चलते हैं तो ऐसा लगता है जैसे आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ऊंचाई से नीचे आ रहे हों और जब खड़े होते हैं तो ऐसा मा'लूम होता है जैसे आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم किसी चट्टान से निकल पड़े हों, जब आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم किसी की त़रफ़ रुख़ फ़रमाते तो मुकम्मल त़ौर पर मुतवज्जेह होते हैं।

आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के चेहरए मुबारक पर पसीना मोती के मानिन्द होता है, न आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم पस्त क़द है न दराज़ क़ामत, आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के दोनों कन्धों के दरमियान मोहरे नबुव्वत है। जो आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को यकायक देखता है मरऊब हो जाता है। और जो आश्ना हो कर आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की सोह़बत में रहता है वोह आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से मह़ब्बत करने लगता है, आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم सब से ज़ियादा सख़ी और सब से ज़ियादा जुर्अत मन्द हैं। आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का त़र्ज़े तकल्लुम सब से सच्चा, ईफ़ाए अह़द में सब से पक्के, सब से नर्म त़ब्अ़ और रहन सहन में सब से अच्छे हैं। मैं ने आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم जैसा किसी को न पहले देखा और न ही बा'द में।

जिस वक़्त ह़ज़रते मुस्अ़ब बिन उ़मैर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ येह बयान कर रहे थे सह़ाबा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُم की उस जमाअ़त पर सुकूत छाया हुवा था, वोह सभी ह़ज़रात पूरी तवज्जोह के साथ रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के इस सरापाए अक़्दस को समाअ़त कर रहे थे अभी ह़ज़रते मुस्अ़ब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ अपना बयान मुकम्मल भी न कर सके थे कि अहले मह़फ़िल बयक ज़बान पुकार उठे : صلی اللہ علیک یارسول اللہ

मह़ब्बत व फ़िदाइय्यत : जब मदीनए त़य्यिबा के अन्दर इस्लाम से वाबस्ता होने वालों की ता'दाद ख़ासी बढ़ गई क़बीलए ओस व ख़ज़रज के लोग जूक़ दर जूक़ इस्लाम क़बूल करने लगे तो अहले मदीना ने अपने हादी व आक़ा नबिय्ये अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को अपने वत़न मदीनए मुक़द्दसा तशरीफ़ लाने की दा'वत दी, इस के बा'द अन्सार के लोग बड़ी बे चैनी से रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के इन्तिज़ार की घड़ियां गिनने लगे। उस वक़्त उन के शौक़े दीदार का आ़लम क्या था इसे बयान नहीं किया जा सकता। जिस लम्ह़ा येह बिशारत मिली कि अब

रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم मदीना के क़रीब आ चुके हैं। हुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के उ़श्शाक़ व मुह़िब्बीन इस्तिक़्बाल के लिये "षनियतुल वदाअ़" तक पहुंच गए कि कब हुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की त़ल्अ़ते ज़ैबा से उन की मे'राज होने वाली है और जिस वक़्त उन ह़ज़रात ने हुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को देखा मरह़बा की सदाओं से पूरी फ़ज़ा गूंज उठी, इन इस्तिक़्बाल करने वालों में ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन अनीस رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه फ़िदाइये रसूल صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم भी थे। येह तो वुफ़ूरे मसर्रत से बे क़ाबू हो रहे थे। येही वोह सह़ाबिये रसूल صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم हैं जिन्हों ने रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के एक इशारे पर इस्लाम के एक बहुत बड़े दुश्मन अबू राफ़ेअ़ सलाम बिन अबुल ह़क़ीक़ को उस के क़ल्ए़ के अन्दर घुस कर क़त्ल किया था।

वाक़िआ़ की थोड़ी तफ़्सील यूं है कि सलाम बिन अबुल ह़क़ीक़ **अल्लाह** और उस के रसूल صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का सख़्त दुश्मन था। उस ने बनू नज़ीर के यहूदियों को रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के क़त्ल पर बर अंगेख़्ता किया था। रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के सामने जब येह सूरते ह़ाल लाई गई तो आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने उस दुश्मने दीन को कैफ़रे किरदार तक पहुंचाने के लिये सह़ाबा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُم की एक जमाअ़त मुन्तख़ब की उन में ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन अनीस رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه भी थे। इस दस्ते की क़ियादत ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन अ़तीक رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه को सोंपी गई। येह दस्ता इस मुहिम के लिये रवाना हुवा। रात में चलता और दिन में कमीन गाहों में छुपा रहता। ता आन कि येह दस्ता सलाम बिन अबुल ह़क़ीक़ के क़ल्ए़ के अन्दर दाख़िल हो गया। रात का वक़्त था, क़ल्ए़ के सब लोग सो गए, सलाम बिन अबुल ह़क़ीक़ क़ल्ए़ के एक बालाख़ाने पर सो रहा था। निस्फ़ शब में येह लोग आहिस्ता आहिस्ता उस तक पहुंचने के लिये चल पड़े, जब उस के

क़मरे तक पहुंचे उस की बीवी जाग गई। एक सहाबी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ आगे बढ़े और उस को हिरासां करने के लिये उस पर तल्वार उठाई, क्यूंकि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की वसिय्यत थी कि अबू राफ़ेअ़ सलाम के इ़लावा किसी को येह क़त्ल न करें। वोह औ़रत ख़ामोश हो गई और थर थराते हुवे अपनी जगह दुबक गई।

दूसरे फ़िदाई आगे बढ़े, सख़्त तारिकी थी, अबू राफ़ेअ़ की सह़ीह़ जगह का पता न चलता था। फ़िदाइयों की तल्वारें चलने लगीं लेकिन उस को कोई ख़ास गेहरा ज़ख़्म न लग सका ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन अनीस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ आगे बढ़े उन के सामने अबू राफ़ेअ़ था जो कि चीख़ो पुकार कर रहा था आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अपनी तल्वार से उस बदतरीन दुश्मन को कैफ़रे किरदार तक पहुंचा दिया। जब अबू राफ़ेअ़ की हलाकत का यक़ीन हो चुका तो सह़ाबा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُم की येह जमाअ़त मसर्रत व शादमानी के साथ मदीनए मुक़द्दसा के लिये रवाना हुई। सह़ाबए किराम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُم मदीना की त़रफ़ तेज़ी से बढ़ रहे थे ताकि अपने सरकार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को इस दुश्मन की हलाकत की बिशारत सुनाएं। येह क़ाफ़िला मस्जिदे नबवी शरीफ़ علٰی صاحِبِہَا الصَّلٰوۃُ وَالسَّلام के क़रीब पहुंचा तो देखा कि हु़ज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم सह़ाबए किराम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُم से गुफ़्तगू फ़रमा रहे हैं। हु़ज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने उन को इस आ़लम में देखा कि उन के चेहरे आषारे ख़ुशी से दमक रहे हैं। हु़ज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने तबस्सुम फ़रमाते हुवे कहा : "اَفْلَحَتِ الْوُجُوْہ" येह चेहरे कामयाब हैं। रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ज़बाने मुबारक से निकलने वाले येह कलिमात कितने अ़ज़ीम हैं। सह़ाबा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُم की उस जमाअ़त ने भी बिला किसी ताख़ीर कहा : "اَفْلَحَ وَجْھُکَ یَارَسُوْلَ اللّٰہ" आप का चेहरए मुबारक कामयाब है, हां हां आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से ही येह कामरानी है, अगर

आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की हिदायत व रहनुमाई न होती तो हम कामयाब न होते।

लोग इस कामयाबी से पलटने वाले क़ाफ़िले से सलाम बिन अबुल ह़क़ीक़ के क़त्ल की कैफ़िय्यत दरयाफ़्त करने के लिये उन के गिर्द जम्अ़ हो गए, सारे ही मुजाहिदीन कह रहे थे मेरी तल्वार ने अबू राफ़ेअ़ का काम तमाम किया है। हुज़ूरे पाक صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم तबस्सुम फ़रमा रहे हैं कि इस शरफ़े अ़ज़ीम को हर शख़्स अपने ही ह़िस्से में लेना चाहता है। हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने अपने दस्ते मुबारक से उन को ख़ामोश रहने का इशारा किया फिर फ़रमाया : हर शख़्स अपनी तल्वार मेरे सामने पेश करें। हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने सब की तल्वारों का जाइज़ा लिया और उन की त़रफ़ मुतवज्जेह हो कर फ़रमाया। अ़ब्दुल्लाह बिन अनीस की तल्वार ने उस का काम तमाम किया है, इस में उस का अषर अब भी है। (السيرة النبويةلابن هشام،مقتل سلام بن ابی الحقيق،ج٤،ص٢٣٥)

क़बाइले हज़ील ख़ालिद बिन सुफ़्यान की क़ियादत में रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से जंग करने के लिये मक़ामे नख़्ला में जम्अ़ हुवे। नबिय्ये अकरम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने **रअ्सुल फ़ितना** ख़ालिद को कैफ़रे किरदार तक पहुंचाने का अ़ज़्मे मुसम्मम फ़रमाया। इस मुहिम के लिये हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने अ़ब्दुल्लाह बिन अनीस رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه को मुन्तख़ब किया और फ़रमाया : मुझे मा'लूम हुवा है कि इब्ने सुफ़्यान मुझ से जंग करने के लिये लोगों को जम्अ़ कर रहा है, और वोह इस वक़्त नख़्ला में है तुम वहां जा कर उस को क़त्ल करो।

सिपाही ने अपने आक़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की आवाज़ पर लब्बैक कहा लेकिन इस मुहिम का सर करना आसान न था। दुश्मन अपने हज़ारों सिपाहियों के बीच में है और वहां तक पहुंचना बहुत मुश्किल है। अब यहां सिवाए ह़र्ब फ़रेब के और कोई चारा

नहीं और उस के लिये भी बातें बनानी होंगी, और येह चीज़ इस्लाम में रवा नहीं, नाचार उन्हों ने हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से इस की इजाज़त चाही। हु़ज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने उन को इस की छूट दी कि الحرب خدعة जंग धोका है।

हज़रते अ़ब्दुल्लाह رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه तल्वार ह़माइल किये हुवे येह मुहिम सर करने के लिये निकल पड़े और अ़स्र के वक़्त नख़्ला पहुंच गए। वहां उन्हों ने दुश्मनों की ज़बरदस्त भीड़ देखी, फिर अपने निशाने की त़रफ़ मुतवज्जेह हुवे। ख़ालिद को देखा कि औ़रतों के झुंड में है। हज़रते अ़ब्दुल्लाह رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه उस वक़्त अपना मन्सूबा मुकम्मल करना चाहते थे मगर अ़स्र की नमाज़ फ़ौत होने का भी उन्हें अन्देशा था। ऐसे वक़्त में उन्हों ने दुश्मन की त़रफ़ पेश क़दमी करते हुवे ही इशारे से नमाज़ पढ़ी और ख़ालिद के पास पहुंच गए। ख़ालिद ने उन से पूछा, तुम कौन हो? हज़रते अ़ब्दुल्लाह رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه ने फ़रमाया अ़रब ही का एक आदमी हूं। मैं ने सुना है कि तुम ने उन (हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) से लड़ने का मन्सूबा बना रखा है तो मैं भी इसी के लिये आया हूं। ख़ालिद ने कहा : हां हां मेरा भी ख़याल है कि अब बहुत जल्द हम मदीना पर चढ़ाई कर के फ़त्ह ह़ासिल करेंगे।

ख़ालिद अपनी औ़रतों से सिर्फ़ नज़र कर के हज़रते अ़ब्दुल्लाह رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه से बातें करने लगा और हज़रते अ़ब्दुल्लाह رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه अपने ज़ेह्न में निशाना फिट करने लगे। हज़रते अ़ब्दुल्लाह رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه का त़र्ज़े तकल्लुम बड़ा ख़ूब था। ख़ालिद आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه से मानूस और मुत़मइन हो गया। हज़रते अ़ब्दुल्लाह رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه ख़ालिद से बातें कर रहे हैं और मौक़अ़ की ताक में हैं। चुनान्चे उन्हें मौक़अ़ हाथ आ ही गया। तल्वार नियाम से निकाली और ख़ालिद का सर क़लम कर दिया। उस का धड़ ज़मीन पर जा गिरा और एक धमक सी हुई। ख़ालिद की औ़रतें मुतवज्जेह

हुई तो क्या देखती हैं कि उस का सर उस के तन से जुदा पड़ा है। अब क्या था वोह औ़रतें चीख़ पड़ीं वहां के सभी लोग ख़ालिद की लाश की त़रफ़ मुतवज्जेह हुवे और इधर ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ वहां से दौड़ पड़े। अब जब ख़ालिद के लोग क़ातिल की तलाश कर रहे हैं तो क़ातिल का पता नहीं। अभी उसे दफ़्नाया भी न गया था कि उस के गिर्द जम्अ़ होने वालों का बादल छटने लगा और सुब्ह़ तक पूरा नख़्ला ख़ाली हो गया।

इधर ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का दिल ह़ुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का मन्शा पूरा कर देने पर खुशी व मसर्रत से लबरेज़ है। दौड़ते हुवे सरकार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में आ रहे हैं, ज़मीन सिमट क्यूं नहीं जाती कि फ़ौरन अपने सरकार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को हलाकते दुश्मन की बिशारत सुना दूं। ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ मस्जिदे नबवी علٰی صاحِبِهَا الصَّلٰوةُ وَالسَّلام में ह़ाज़िर हुवे। ह़ुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم सह़ाबा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُم के दरमियान तशरीफ़ फ़रमा थे। जब ह़ुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने उन की आमद मह़सूस की तो आप की त़रफ़ मुस्कुराते हुवे नज़र उठाई और इर्शाद फ़रमाया : "اَفْلَحَ الْوَجْهُ" येह चेहरा कामयाब है। ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अ़र्ज़ किया : आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का चेहरा मुबारक कामयाब है। मैं ने उस दुश्मन को क़त्ल कर डाला, ह़ुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : तुम ने सच कहा।

उस वक़्त ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ येह अश्आ़र सुनाने लगे।

اقول لہ والسيف يعجم رأسه　　انا ابن انيس فارساً غير قعدد

وقلت له خذها بضربة ماجد　　حنيف على دين النبى محمد

وكنت اذا هم النبى لكا فر　　سبقت اليه باللسان وباليد

(السيرة النبوية لابن هشام،غزوة عبدالله بن انيس،ج٤،ص٥٢١)

"मैं उस वक़्त कह रहा था जब तल्वार उस का सर चाट रही थी कि मैं इब्ने अनीस शहसुवार हूं कोई अपाहज नहीं हूं।"

"और मैं ने कहा : मुझ जैसे दीने मुहम्मद صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर क़ाइम रहने वाले साहिबे मज्द शख़्स का एक वार ही काफ़ी है।"

"और मेरा ह़ाल तो येह है कि जब नबी صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم किसी काफ़िर को अन्जाम तक पहुंचाने का इरादा फ़रमाते हैं तो मैं उस की त़रफ़ ज़बान से और हाथ से सबक़त करता हूं।"

ह़ज़रते हुज़ैफ़ा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه की मह़ब्बत और फ़िदाइय्यत :

ह़ज़रते हुज़ैफ़ा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه फ़रमाते हैं कि ग़ज़्वए ख़न्दक़ में हमारी एक त़रफ़ तो मक्का के काफ़िरों और उन के साथ दूसरे काफ़िरों के बहुत से गुरौह जो हम पर चढ़ाई करने आए थे और ह़म्ले के लिये तैयार थे, और दूसरी त़रफ़ ख़ुद मदीनए मुनव्वरा में बनू क़ुरैज़ा के यहूद हमारी दुश्मनी पर तुले हुवे थे जिन से हर वक़्त अन्देशा था कि कहीं मदीने को ख़ाली देख कर वोह हमारे अहलो इयाल को बिल्कुल ख़त्म न कर दें, हम लोग मदीनए मुनव्वरा से बाहर लड़ाई के सिलसिले में पड़े हुवे थे, मुनाफ़िक़ों की जमाअ़त घर के तन्हा और ख़ाली होने का बहाना कर के इजाज़त ले कर अपने घरों को वापस जा रही थी और हुज़ूरे अक़्दस صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم हर इजाज़त मांगने वाले को इजाज़त मर्ह़मत फ़रमा देते थे।

और इस दौरान में एक रात आंधी इस क़दर शिद्दत से आई कि न इस से पहले कभी इतनी आई न इस के बा'द। अन्धेरा इस क़दर ज़ियादा कि आदमी को पास वाला आदमी तो क्या अपना हाथ भी नज़र नहीं आता था और हवा इतनी सख़्त कि उस का शोर बिजली की त़रह़ गरज रहा था। मुनाफ़िक़ीन अपने घरों को लौट रहे थे। हम तीन सो का मज्मअ़ उसी जगह था। हुज़ूरे अक़्दस صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم एक एक का ह़ाल दरयाफ़्त फ़रमा रहे थे, और इस अंधेरे में हर त़रफ़ तह़क़ीक़ात फ़रमा रहे थे, इतने में मेरे पास

से हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का गुज़र हुवा, मेरे पास न तो दुश्मन से बचाव के वासिते कोई हथयार था न सर्दी से बचाव के लिये कोई कपड़ा, सिर्फ़ एक छोटी सी चादर थी, जो ओढ़ने में घुटनों तक आती थी और वोह भी मेरी नहीं, अहलिया की थी, उस को ओढ़े घुटनों के बल ज़मीन से चिमटा हुवा बैठा था। हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने दरयाफ़्त फ़रमाया : कौन है? मैं ने अ़र्ज़ किया हुज़ैफ़ा, मगर मुझ से सर्दी के मारे उठा भी न गया और शर्म के मारे ज़मीन से चिमट गया। हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया कि उठ खड़ा हो, और दुश्मनों के जथ्थे में जा कर उन की ख़बर ला, क्या हो रहा है? मैं उस वक़्त घबराहट और ख़ौफ़ और सर्दी की वजह से सब से ज़ियादा ख़स्ता ह़ाल था, मगर ता'मीले इर्शाद में उठ कर फ़ौरन चल दिया, जब मैं जाने लगा तो हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने दुआ दी :

اَللّٰهُمَّ احْفَظْهُ مِنْ بَيْنِ يَدَيْهِ وَمِنْ خَلْفِهٖ وَعَنْ يَمِيْنِهٖ وَعَنْ شِمَالِهٖ وَمِنْ فَوْقِهٖ وَمِنْ تَحْتِهٖ

अल्लाह तू इस की ह़िफ़ाज़त फ़रमा सामने से और पीछे से, दाएं से और बाएं से, ऊपर से और नीचे से। हुज़ैफ़ा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ कहते हैं कि हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का येह इर्शाद फ़रमाना था कि गोया मुझ से ख़ौफ़, सर्दी बिल्कुल जाती रही और हर हर क़दम पर मा'लूम हो रहा था कि गोया गर्मी में चल रहा हूं।

हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने चलते वक़्त येह भी इर्शाद फ़रमाया कि कोई ह़रकत न करना चुपचाप देख कर चले आओ कि क्या हो रहा है। मैं वहां पहुंचा तो देखा आग जल रही है और लोग उस में सेंक रहे हैं, एक शख़्स आग पर हाथ सेंकता है और कूख पर फेरता है, और हर त़रफ़ से वापस चल दो, वापस चल दो कि सदाएं आ रही हैं। हर शख़्स अपने क़बीले वालों को आवाज़ दे कर येह कहता है कि वापस चलो और हवा की तेज़ी की वजह से चारों त़रफ़

से पथ्थर उन के ख़ैमों पर बरस रहे थे, ख़ैमों की रस्सियां टूटती जाती थीं और घोड़े वग़ैरा जानवर हलाक हो रहे थे। अबू सुफ़यान जो गोया उस वक़्त सारी जमाअ़तों का सरदार बन रहा था आग पर सेंक रहा था, मेरे दिल में आया कि मौक़अ़ अच्छा है इस का काम तमाम कर डालूं, तरकश से तीर निकाल कर कमान में रख भी दिया मगर फिर हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का इर्शाद याद आया कि कोई ह़रकत न करना, देख कर चले आना इस लिये मैं ने तीर तरकश में रखा, उस को शुबा हो गया, कहने लगा, तुम में कोई जासूस है, हर शख़्स ने अपने बराबर वाले का हाथ पकड़ा, मैं ने जल्दी से एक आदमी का हाथ पकड़ कर पूछा तू कौन है? उस ने कहा तू मुझे नहीं जानता, फ़ुलां हूं। मैं वहां से वापस आया, जब आधे रास्ते पर था तो तक़रीबन बीस सुवार मुझे इमामा बांधे हुवे मिले, उन्हों ने कहा कि अपने आक़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से कह देना कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने दुश्मनों का इन्तिज़ाम कर दिया बे फ़िक्र रहें।

मैं वापस पहुंचा तो हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم एक छोटी सी चादर ओढ़े नमाज़ पढ़ रहे थे येह हमेशा की आ़दते शरीफ़ा थी कि जब कोई घबराहट की बात पेश आती तो हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم नमाज़ की त़रफ़ तवज्जोह फ़रमाते। नमाज़ से फ़रागत पर मैं ने वहां का जो मन्ज़र देखा अ़र्ज़ किया। जासूस का क़िस्सा सुन कर दन्दाने मुबारक चमकने लगे। हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने मुझे अपने पाउं मुबारक के क़रीब लिटा दिया और अपनी चादर का ज़रा सा ह़िस्सा मुझ पर डाल दिया। मैं ने अपने सीने को हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के तल्वों से चिमटा लिया।

(مدارج النبوت،قسم سوم،باب پنجم ازھجرت آنحضرت صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم، ج ۲،

ص ۱۷۳ بتصرف۔دلائل النبوۃ(مترجم)،لامام ابو نعیم احمد بن عبداللہ اصفھانی،

باب غزوۂ خندق کے معجزات ص ۴۴۷،بتصرف)

सहाबए किराम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُمْ इश्क़ो वफ़ा की इम्तिहान गाह में

येह शहादत कि उल्फ़त में क़दम रखना है
लोग समझते हैं कि आसान है मुसलमान होना

हज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का हाल : इब्तिदाए इस्लाम में जो शख़्स मुसलमान होता था वोह अपने इस्लाम को हत्तल वुस्अ़ मख़्फ़ी रखता था। हुज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की त़रफ़ से भी, इस ख़याल से कि उन को काफ़िरों से अज़िय्यत न पहुंचे, इख़्फ़ा की तल्क़ीन होती थी। जब मुसलमानों की ता'दाद उन्तालीस तक पहुंची तो हज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने इज़्हार की दरख़्वास्त की और चाहा कि खुल्लम खुल्ला अ़लल ए'लान तब्लीग़े इस्लाम की जाए। हुज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने अव्वल इन्कार फ़रमाया मगर अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के इस्रार पर क़बूल फ़रमा लिया और उन सब हज़रात رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُمْ को साथ ले कर मस्जिदे ह़रम शरीफ़ में तशरीफ़ ले गए।

हज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने ख़ुत़बा शुरूअ़ किया, येह सब से पहला ख़ुत़बा है जो इस्लाम में पढ़ा गया और हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के चचा सय्यिदुश्शुहदा हज़रते हम्ज़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ उसी दिन इस्लाम लाए हैं और इस के तीन दिन बा'द हज़रते उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ मुशर्रफ़ ब इस्लाम हुवे हैं। ख़ुत़बे का शुरूअ़ होना था कि चारों त़रफ़ से कुफ़्फ़ारो मुशरिकीन मुसलमानों पर टूट पड़े। हज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को भी बा वुजूद येह कि मक्कए मुकर्रमा में आ़म तौ़र पर उन की अ़ज़मतो शराफ़त मुसल्लम थी, इस क़दर मारा कि तमाम चेहरा मुबारक ख़ून में भर

गया, नाक, कान सब लहू लुहान हो गए। पहचाने न जाते थे, जूतों से मारा, पाउं में रौंदा, जो न करना था सब कुछ ही किया, ह़ज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ बेहोश हो गए, बनू तीम या'नी ह़ज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के क़बीले के लोगों को ख़बर हुई तो वहां से उठा कर लाए।

सब को यक़ीन हो चला था कि ह़ज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ इस वह़शियाना ह़म्ले से ज़िन्दा न बच सकेंगे, बनू तीम मस्जिद में आए और ए'लान किया : ह़ज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की अगर ह़ादिषे में वफ़ात हो गई तो हम लोग उन के बदले में उ़त्बा बिन रबीआ़ को क़त्ल करेंगे, उ़त्बा ने ह़ज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को मारने में बहुत ज़ियादा बदबख़्ती का इज़्हार किया था। शाम तक ह़ज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को बेहोशी रही, बा वुजूद आवाज़ें देने के बोलने या बात करने की नौबत न आती थी। शाम को आवाज़ें देने पर वोह बोले तो सब से पहले अल्फ़ाज़ येह थे कि हुज़ूर صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का क्या ह़ाल है? लोगों की त़रफ़ से इस पर बहुत मलामत हुई कि उन ही के साथ की ब दौलत येह मुसीबत आई और दिन भर मौत के मुंह में रहने पर बात की तो वोह भी हुज़ूर صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ही का जज़्बा और उन ही के लिये।

लोग पास से उठ कर चले गए, बद दिली भी थी, और येह भी कि आख़िर कुछ जान है कि बोलने की नौबत आई और आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की वालिदा उम्मे ख़ैर से कह गए कि उन के खाने पीने के लिये किसी चीज़ का इन्तिज़ाम कर दें। वोह कुछ तय्यार कर के लाईं और खाने पर इस्रार किया मगर ह़ज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की वोही एक सदा थी कि हुज़ूर صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का क्या ह़ाल है? हुज़ूर صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم पर क्या गुज़री? उन की वालिदा ने कहा कि मुझे तो ख़बर नहीं क्या ह़ाल है, आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : उम्मे जमील رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا (ह़ज़रते उ़मर की बहन)

के पास जा कर दरयाफ़्त कर लो कि क्या ह़ाल है ? वोह बेचारी बेटे की इस मज़्लूमाना ह़ालत की बे ताबाना दरख़्वास्त पूरी करने के लिये उम्मे जमील رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا के पास गईं और मुह़म्मद (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) का ह़ाल दरयाफ़्त किया । वोह भी आ़म दस्तूर के मुत़ाबिक़ उस वक़्त अपने इस्लाम को छुपाए हुवे थीं । फ़रमाने लगीं मैं क्या जानूं कौन मुह़म्मद (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) और कौन अबू बक्र सिद्दीक़ (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ) ! तेरे बेटे की ह़ालत सुन कर रंज हुवा अगर तू कहे तो मैं चल कर उस की ह़ालत देखूं, उम्मे ख़ैर ने क़बूल कर लिया, उन के साथ गईं, और ह़ज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की ह़ालत देख कर तह़म्मुल न कर सकीं, बे तह़ाशा रोना शुरूअ़ कर दिया कि बद किरदारों ने क्या ह़ाल कर दिया । **अल्लाह** तआ़ला उन को उन के किये की सज़ा दे, ह़ज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फिर पूछा कि हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का क्या ह़ाल है ? उम्मे जमील رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا ने ह़ज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की वालिदा की त़रफ़ इशारा कर के फ़रमाया कि वोह सुन रही हैं, आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया कि उन से ख़ौफ़ न करो । उम्मे जमील رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا ने ख़ैरिय्यत सुनाई और अ़र्ज़ किया कि बिल्कुल सह़ीह़ सालिम हैं । आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने पूछा कि इस वक़्त कहां हैं ? उन्हों ने अ़र्ज़ किया कि अरक़म के घर तशरीफ़ रखते हैं ।

आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया कि मुझ को ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ की क़सम है कि उस वक़्त तक कोई चीज़ न खाऊंगा न पियूंगा जब तक कि हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ज़ियारत न कर लूं । उन की वालिदा को तो बे क़रारी थी कि वोह कुछ खा लें और उन्हों ने क़सम खा ली कि जब तक हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ज़ियारत न कर लूं कुछ न खाऊंगा । इस लिये वालिदा ने इस का इन्तिज़ार किया कि लोगों की आमदो रफ़्त बन्द हो जाए । मबादा कोई देख ले और कुछ अज़िय्यत पहुंचाए । जब रात का बहुत सा हिस्सा गुज़र गया तो ह़ज़रते अबू बक्र

सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को ले कर हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में अरक़म के घर पहुंचीं। ह़ज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से लिपट गए। हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم भी लिपट कर रोए। और मुसलमान भी रोने लगे कि ह़ज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की ह़ालत देखी न जाती थी। इस के बा'द ह़ज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने दरख़्वास्त की, येह मेरी वालिदा हैं, आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم इन के लिये हिदायत की दुआ़ फ़रमा दें और इन को इस्लाम की तब्लीग़ भी फ़रमा दें, हुज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने उन को इस्लाम की तरग़ीब दी, वोह भी उस वक़्त मुसलमान हो गईं। (البداية والنهاية، ج٣، ص٣٠)

ह़ज़रते अबू ज़र गि़फ़ारी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का जज़्बए इस्लाम :

ह़ज़रते अबू ज़र गि़फ़ारी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ मश्हूर सह़ाबी हैं, जिन का शुमार सह़ाबए किराम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُم के जलीलुल क़द्र ज़ाहिदों और अ़ज़ीम उ़-लमा में है, ह़ज़रते अ़ली كَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْھَہُ الْکَرِیْم का इर्शाद है कि अबू ज़र رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ऐसे इ़ल्म के ह़ामिल हैं जिन से लोग आ़जिज़ हैं मगर उन्हों ने उसे मह़फ़ूज़ रखा है। जब उन को हुज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की नबुव्वत की पहले पहल ख़बर पहुंची तो उन्हों ने अपने भाई को ह़ालात की तह़क़ीक़ के लिये मक्का भेजा कि जो शख़्स येह दा'वा करता है कि मेरे पास वह़्य आती है और आस्मान की ख़बरें आती हैं उस के ह़ालात मा'लूम करें और उस के कलाम को ग़ौर से सुनें।

वोह मक्कए मुकर्रमा आए और ह़ालात मा'लूम करने के बा'द अपने भाई से जा कर कहा कि मैं ने उन को अच्छी आ़दतों और उ़म्दा ख़याल का हुक्म करते देखा और एक ऐसा कलाम सुना जो न शे'र है और न काहिनों की ख़बरें। ह़ज़रते अबू ज़र رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को इस मुजमल बात से तशफ़्फ़ी न हुई, तो ख़ुद सामाने सफ़र लिया और मक्का पहुंचे और सीधे मस्जिदे ह़राम में गए, हुज़ूर

صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को पहचानते न थे और किसी से पूछना मस्लहत के ख़िलाफ़ समझा, शाम तक इसी हाल में रहे। शाम को हज़रते अ़ली كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰى وَجْهَهُ الْكَرِيْم ने देखा कि एक परदेसी मुसाफ़िर है, मुसाफ़िरों, ग़रीबों, परदेसियों की ख़बरगीरी और उन की ज़रूरत का पूरा करना इन हज़रत رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه की आ़दत व त़बीअ़त थी, इस लिये उन को अपने घर ले आए, मेज़बानी फ़रमाई। लेकिन उन से कुछ पूछने की ज़रूरत न समझी कि कौन हो और क्यूं आए, मुसाफ़िर ने भी कुछ ज़ाहिर न किया, सुब्ह़ को फिर मस्जिद में आ गए ताकि आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के मुतअ़ल्लिक़ किसी से कुछ दरयाफ़्त करें, लेकिन कोई ऐसा शख़्स नज़र न आया जो आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के मुतअ़ल्लिक़ कुछ बताता। दूसरी शाम को भी हज़रते अ़ली رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه को ख़याल हुवा कि परदेसी मुसाफ़िर है ब ज़ाहिर जिस के लिये आया है वोह ग़रज़ पूरी नहीं हुई इस लिये फिर अपने घर ले गए और रात को खिलाया सुलाया मगर पूछने की उस रात को भी नौबत नहीं आई।

तीसरी रात को फिर येही सूरत हुई तो हज़रते अ़ली رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه ने दरयाफ़्त किया कि तुम किस काम के लिये आए हो क्या ग़रज़ है? तो हज़रते अबू ज़र رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه ने क़सम और अ़हदो पैमान के बा'द उन को ग़रज़ बताई। हज़रते अ़ली كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰى وَجْهَهُ الْكَرِيْم ने फ़रमाया : वोह बेशक **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के रसूल صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم हैं, और सुब्ह़ को जब मैं जाऊं तो तुम मेरे साथ चलना, मैं वहां तक पहुंचा दूंगा, लेकिन मुख़ालफ़त का ज़ोर है इस लिये रास्ते में अगर मुझ से कोई ऐसा शख़्स मिला जिस से मेरे साथ चलने की वजह से तुम पर कोई अन्देशा हो तो मैं इस्तिन्जा के लिये रुक जाऊंगा या अपना जूता दुरुस्त करने लगूंगा, तुम सीधे चले चलना, मेरे साथ ठहरना नहीं, जिस की वजह से तुम्हारा मेरा साथ होना मा'लूम न हो। चुनान्चे सुब्ह़ को हज़रते अ़ली كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰى وَجْهَهُ الْكَرِيْم के पीछे पीछे

हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में पहुंचे, वहां जा कर बात चीत हुई, उसी वक़्त मुसलमान हो गए। हुज़ूरे अकरम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने उन की तकलीफ़ के ख़याल से फ़रमाया कि अपने इस्लाम को अभी ज़ाहिर न करना, चुपके से अपनी क़ौम में चले जाओ, जब हमारा ग़लबा हो जाए उस वक़्त चले आना। उन्हों ने अ़र्ज़ किया या रसूलल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! उस ज़ात की क़सम ! जिस के क़ब्ज़े में मेरी जान है कि इस कलिमए तौह़ीद को उन बे ईमानों के बीच में चिल्ला कर पढ़ूंगा ! चुनान्चे उसी वक़्त मस्जिदे ह़राम में तशरीफ़ ले गए और बुलन्द आवाज़ से "اَشْهَدُ اَنْ لَّآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَاَشْهَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا رَّسُوْلُ اللّٰهِ" पढ़ा। फिर क्या था चारों त़रफ़ से लोग उठे और इस क़दर मारा कि ज़ख़्मी कर दिया, मरने के क़रीब हो गए।

हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के चचा ह़ज़रते अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه जो उस वक़्त मुसलमान भी नहीं हुवे थे, उन के ऊपर बचाने के लिये लैट गए और लोगों से कहा : क्या ज़ुल्म करते हो येह शख़्स क़बीलए ग़िफ़ार का है और येह क़बीला मुल्के शाम के रास्ते में पड़ता है, तुम्हारी तिजारत वग़ैरा सब मुल्के शाम के साथ है अगर येह मर गया तो शाम का आना जाना बन्द हो जाएगा। इस पर उन लोगों को भी ख़याल हुवा कि मुल्के शाम से सारी ज़रूरतें पूरी होती हैं, वहां का रास्ता बन्द हो जाना मुसीबत है इस लिये उन को छोड़ दिया, दूसरे दिन फिर इसी त़रह़ उन्हों ने जा कर बा आवाज़े बुलन्द कलिमा पढ़ा और लोग इस कलिमे को सुनने की ताब न ला सकते थे। इस लिये उन पर टूट पड़े, दूसरे दिन भी ह़ज़रते अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه ने इसी त़रह़ उन को समझा कर हटाया कि तिजारत का रास्ता बन्द हो जाएगा।

(صحیح البخاری، کتاب المناقب، باب قصة اسلام ابی ذر الغفاری، الحدیث:۳۵۲۲، ج۲، ص ۴۸۰
و کتاب مناقب الانصار، باب اسلام ابی ذر، الحدیث:۳۸۶۱، ج۲، ص۵۷۶)

हज़रते अबू ज़र رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का येह जोश इज़हारे ग़लबए हक़ के वल्वले की बिना पर था और सरकार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का मन्अ़ करना इज़हारे शफ़्क़त की बुन्याद पर, लेकिन हज़रते अबू ज़र رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने देखा कि सरकार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم जब ख़ुद मसाइब झेल रहे हैं तो हमें पीछे रहने की क्या ज़रूरत ? इस लिये अपनी राहत पर सरकार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के इत्तिबाए़ अ़मल को तरजीह़ दी और फिर इता़अ़ते ह़क़ में हमेशा सर गर्म रहे ।

ह़ज़रते अ़म्मार और उन के वालिदैन (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُم) **:** ह़ज़रते अ़म्मार رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ और उन के मां-बाप को भी सख़्त से सख़्त तकलीफ़ें पहुंचाई गईं । मक्का की सख़्त गर्म और रेतिली ज़मीन में उन को अ़ज़ाब दिया जाता और हुज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का उस त़रफ़ गुज़र होता तो सब्र की तल्क़ीन फ़रमाते और जन्नत की बिशारत अ़ता़ फ़रमाते, आख़िर उन के वालिद ह़ज़रते यासिर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ इसी ह़ालते तकलीफ़ में वफ़ात पा गए कि ज़ालिमों ने मरने तक चैन न लेने दिया और उन की वालिदा ह़ज़रते सुमय्या رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا ने भी सख़्त तकालीफ़ उठाईं, अबू जहल ने उन की नाफ़ के नीचे बरछा मारा जिस से वोह शहीद हो गईं मगर इस्लाम से न हटीं, ह़ालांकि बुढ़ी थीं, ज़ईफ़ थीं, मगर उस बद नसीब ने किसी चीज़ का ख़याल न किया ।

इस्लाम में सब से पहली शहादत उन की है और इस्लाम में सब से पहली मस्जिद ह़ज़रते अ़म्मार رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की बनाई हुई है । जब हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم हिजरत फ़रमा कर मदीना तशरीफ़ ले गए तो हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से अ़म्मार رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अ़र्ज़ किया कि हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के लिये एक साया दार मकान बनाना चाहिये जिस में तशरीफ़ रखा करें और दोपहर को आराम

फ़रमा लिया करें और नमाज़ भी साए में पढ़ लिया करें, तो कुबा में ह़ज़रते अ़म्मार رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अव्वल पथ्थर जम्अ़ किये और फिर मस्जिद बनाई। लड़ाई में निहायत जोश से शरीक होते थे, एक मरतबा वज्द में आ कर कहने लगे : अब जा कर दोस्तों से मिलेंगे, मुह़म्मद صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم और उन की जमाअ़त से मिलेंगे, इतने में प्यास लगी और पानी किसी से मांगा उस ने दूध सामने किया उस को पिया और पी कर कहने लगे : मैं ने हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से सुना कि तू दुन्या में सब से आख़िरी चीज़ दूध पियेगा, इस के बा'द शहीद हो गए, उस वक़्त चौरानवे बरस की उ़म्र थी। बा'ज़ ने एक आध साल कम बतलाई है। (ماخوذمن اسدالغابة،ج٤،ص١٤١)

उन की वालिदा ह़ज़रते सुमय्या बिन्ते ख़ुब्बात़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا मज़्लूमाना शहादत के इ़लावा और भी सख़्तियां झेल चुकी हैं, उन को गर्मी के वक़्त सख़्त धूप में कंकरियों पर डाला जाता, लोहे की ज़िरह पहना कर धूप में खड़ा किया जाता ताकि धूप की गर्मी से लोहा तपने लगे। हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का उधर से गुज़र होता तो सब्र की तल्क़ीन और जन्नत का वा'दा फ़रमाते यहां तक कि सब से बड़े दुश्मने इस्लाम अबू जह्ल के हाथों उन की शहादत हुई। (رضی الله تعالى عنها وارضاها عنا) (اسدالغابة،ج٧،ص١٦٧)

ह़ज़रते सुहैब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का इस्लाम : ह़ज़रते सुहैब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ भी ह़ज़रते अ़म्मार رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ही के साथ मुसलमान हुवे। नबिय्ये अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ह़ज़रते अरक़म सह़ाबी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के मकान पर तशरीफ़ फ़रमा थे कि येह दोनों ह़ज़रात अ़लाह़िदा अ़लाह़िदा ह़ाज़िरे ख़िदमत हुवे और मकान के दरवाज़े पर इत्तिफ़ाक़िया इकठ्ठे हो गए, हर एक ने दूसरे की ग़रज़ मा'लूम की तो एक ही ग़रज़ या'नी इस्लाम लाना और हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के फ़ैज़ से मुस्तफ़ीज़ होना दोनों का मक़्सूद था। इस्लाम लाए और इस्लाम

लाने के बा'द जो कुछ उस ज़माने में क़लील और कमज़ोर जमाअ़त को पेश आता था वोह पेश आया। हर त़रह़ सताए गए। तक्लीफ़ें पहुंचाई गईं। आख़िरे कार हिजरत का इरादा फ़रमाया तो काफ़िरों को येह चीज़ भी गवारा न थी कि येह लोग किसी दूसरी जगह जा कर आराम से ज़िन्दगी बसर करें।

इस लिये जिस की हिजरत का ह़ाल मा'लूम होता था उस को पकड़ने की कोशिश करते थे कि तकालीफ़ से नजात पा न सके। चुनान्चे इन का भी पीछा किया गया, और एक जमाअ़त इन को पकड़ने के लिये गई, इन्हों ने अपना तरकश संभाला जिस में तीर थे और उन लोगों से कहा कि देखो तुम को मा'लूम है कि मैं तुम से ज़ियादा तीर अन्दाज़ हूं एक भी तीर मेरे पास बाक़ी रहेगा तो तुम लोग मुझ तक आ नहीं सकोगे और जब एक भी तीर न रहेगा तो मैं अपनी तल्वार से मुक़ाबला करूंगा यहां तक कि तल्वार भी मेरे हाथ में न रहे इस के बा'द जो तुम से हो सके करना। इस लिये अगर तुम चाहो तो अपनी जान के बदले में अपने माल का पता बता सकता हूं जो मक्का में है और दो बांदियां भी हैं वोह तुम सब ले लो ! इस पर वोह लोग राज़ी हो गए, ह़ज़रते सुहैब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अपना माल दे कर जान छुड़ाई, इस बारे में आयते पाक नाज़िल हुई।

وَمِنَ النَّاسِ مَنۡ یَّشۡرِیۡ نَفۡسَہُ ابۡتِغَآءَ مَرۡضَاتِ اللّٰہِ ؕ وَاللّٰہُ رَءُوۡفٌۢ بِالۡعِبَادِ ۝ (پ۲، البقرۃ:۲۰۷)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *और कोई आदमी अपनी जान बेचता है अल्लाह की मरज़ी चाहने में और अल्लाह बन्दों पर मेहरबान है।*

हु़ज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم उस वक़्त कुबा में तशरीफ़ फ़रमा थे, सूरत देख कर इर्शाद फ़रमाया कि नफ़्अ़ की तिजारत की। सुहै़ब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ कहते हैं कि हु़ज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم उस वक़्त खजूर तनावुल फ़रमा रहे थे और मेरी आंख दुख रही थी, साथ खाने लगा, हु़ज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि आंख तो दुख रही है और

खजूरें खाते हो ? मैं ने अ़र्ज़ किया : हुज़ूर صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم उस आंख की त़रफ़ से खाता हूं जो दुरुस्त है। हुज़ूर صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم येह जवाब सुन कर हंस पड़े । (اسد الغابة، ج۳، ص۳۹)

ह़ज़रते सुहैब رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه बड़े ही ख़र्च करने वाले थे। ह़त्ता कि ह़ज़रते उ़मर رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه ने उन से फ़रमाया कि तुम फ़ुज़ूल ख़र्ची करते हो। उन्हों ने अ़र्ज़ किया कि ना ह़क़ कहीं ख़र्च नहीं करता। ह़ज़रते उ़मर رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه का जब विसाल होने लगा तो उन्हीं को जनाज़े की नमाज़ पढ़ाने की वसिय्यत फ़रमाई थी।

(اسد الغابة، ج۳، ص۴۱)

ह़ज़रते उ़मर رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه के बहनोई और बहन : फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه से कौन वाक़िफ़ नहीं ? क़ब्ले इस्लाम येह भी नुमायां थे और इस्लाम व अहले इस्लाम की अ़दावत में सर गर्म, यहां तक कि नबिय्ये अकरम صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के क़त्ल के दर पै रहते थे, एक रोज़ कुफ़्फ़ार ने मश्वरे की कमीटी क़ाइम की, कि कोई है जो मुह़म्मद (صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) को क़त्ल कर दे ? उ़मर ने कहा कि मैं करूंगा ! लोगों ने कहा : बेशक तुम ही कर सकते हो, उ़मर तल्वार लटकाए हुवे उठे और चल दिये। इसी फ़िक्र में जा रहे थे कि एक साह़िब क़बीला बनू ज़ुहरह के जिन का नाम ह़ज़रते सा'द बिन अबी वक़्क़ास رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه है। बा'ज़ ने ह़ज़रते नुऐ़म का नाम लिखा है। उन्हों ने पूछा : उ़मर ! कहां जा रहे हो ? कहने लगे : मुह़म्मद (صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) के क़त्ल की फ़िक्र में हूं। (عَزَّوَجَلَّ نَعُوْذُ بِاللّٰه) सा'द ने कहा। बनू हाशिम और बनू ज़ुहरह से कैसे मुत़्मइन हो गए ? वोह तुम को बदले में क़त्ल कर देंगे। इस जवाब पर बिगड़ गए और कहने लगे मा'लूम होता है तू भी बे दीन (या'नी मुसलमान) हो गया है ला पहले तुझी को निमटा दूं। येह कह कर तल्वार सोंत ली और ह़ज़रते सा'द رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه ने भी येह कह कर

कि हां मैं मुसलमान हो गया हूं तल्वार संभाली, दोनों त़रफ़ से तल्वार चलने को थी कि ह़ज़रते सा'द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने कहा कि पहले अपने घर की तो ख़बर ले तेरी बहन और बहनोई दोनों मुसलमान हो चुके हैं।

येह सुनना था कि गुस्से से भर गए और सीधे बहन के घर गए। वहां ह़ज़रते ख़ब्बाब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ किवाड़ बन्द किये हुवे उन दोनों मियां बीवी को कुरआन शरीफ़ पढ़ा रहे थे। उ़मर ने किवाड़ खुलवाई। उन की आवाज़ से ह़ज़रते ख़ब्बाब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ तो जल्दी से अन्दर छुप गए लेकिन वोह सह़ीफ़ा जल्दी में बाहर रह गया जिस पर आयाते कुरआनी लिखी हुई थीं। हमशीरा ने किवाड़ खोला। उ़मर के हाथ में कोई चीज़ थी जिस को बहन के सर पर मारा जिस से सर से ख़ून बहने ? लगा और कहा कि अपनी जान की दुश्मन तू भी बद दीन हो गई इस के बा'द घर में आए और पूछा क्या कर रहे थे, और येह आवाज़ किस की थी ? बहनोई ने कहा कि बातचीत कर रहे थे। कहने लगे क्या तुम ने अपने दीन को छोड़ कर दूसरा दीन इख़्तियार कर लिया ? बहनोई ने कहा अगर दूसरा दीन ह़क़ हो तो ? येह सुनना था कि उन की दाढ़ी पकड़ कर खींची और बे तहाशा टूट पड़े और ज़मीन पर गिरा कर ख़ूब मारा। बहन ने छुड़ाने की कोशिश की तो उन के मुंह पर एक त़मांचा इस ज़ोर से मारा कि ख़ून निकल आया। वोह भी आख़िर उ़मर ही की बहन थीं, कहने लगीं : उ़मर ! हम को इस वजह से मारा जाता है कि हम मुसलमान हो गए। बेशक हम मुसलमान हो गए जो तुझ से हो सके तू कर ले।

इस के बा'द उ़मर की नज़र उस सह़ीफ़े पर पड़ी जो जल्दी में बाहर रह गया था और गुस्से का जोश भी इस मार पीट से कम हो गया था और बहन के इस त़रह़ ख़ून में भर जाने से शर्म सी आ रही थी, कहने लगे अच्छा मुझे दिखलाओ येह क्या है, बहन ने

कहा कि तू नापाक है और इस को नापाक हाथ नहीं लगा सकते। हर चन्द कोशिश की मगर वोह बे वुज़ू और बे ग़ुस्ल के देने को तैयार न हुई। उ़मर ने ग़ुस्ल किया और उस को ले कर पढ़ा, उस पर सूरए त़ाहा लिखी हुई थी। उस को पढ़ना शुरूअ़ किया और "اِنَّنِیۡۤ اَنَا اللّٰہُ لَاۤ اِلٰہَ اِلَّاۤ اَنَا فَاعۡبُدۡنِیۡ ۙ وَاَقِمِ الصَّلٰوۃَ لِذِکۡرِیۡ ○"(پ١٦،طٰہ:١٤) तक पढ़ा था कि हालत ही बदल गई। कहने लगे अच्छा मुझे भी मुह़म्मद صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के पास ले चलो। येह अल्फ़ाज़ सुन कर ह़ज़रते ख़ब्बाब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ अन्दर से निकले और कहा कि ऐ उ़मर! तुम्हें ख़ुशख़बरी देता हूं कि कल शबे पंजशम्बा (बुध) हुज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने दुआ़ मांगी थी कि या **अल्लाह** उ़मर या अबू जह्ल में जो तुझे ज़ियादा पसन्द हो उस से इस्लाम को कुव्वत अ़ता फ़रमा (चूंकि येह दोनों कुव्वत में मश्हूर थे) मा'लूम होता है कि हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की दुआ़ तुम्हारे ह़क़ में क़बूल हो गई। इस के बा'द हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में ह़ाज़िर हुवे और जुमुआ़ की सुब्ह़ मुसलमान हुवे। (تاریخ الخلفاء،فصل فی الأخبار الواردۃفی اسلامہ،ص٨٧)

ह़ज़रते ज़ैनब बिन्ते रसूलुल्लाह (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا) की हिजरत और वफ़ात :

दो जहां के सरदार हुज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की सब से बड़ी साहि़बज़ादी ह़ज़रते ज़ैनब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا ए'लाने नबुव्वत से दस साल पहले जब कि हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की उ़म्र शरीफ़ **30** बरस की थी पैदा हुई और ख़ाला ज़ाद भाई अबुल आ़स बिन रबीअ़ से निकाह़ हुवा। हिजरत के वक़्त हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के साथ न जा सकीं, उन के ख़ावन्द बद्र की लड़ाई में कुफ़्फ़ार के साथ शरीक हुवे और क़ैद हुवे, अहले मक्का ने जब अपने क़ैदियों की रिहाई के लिये फ़िद्ये इरसाल किये तो ह़ज़रते ज़ैनब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا ने भी अपने ख़ावन्द की रिहाई के लिये माल भेजा जिस में वोह हार

भी था जो ह़ज़रते ख़दीजा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا ने जहेज़ में दिया था। नबिय्ये अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने जब उस को देखा तो ख़दीजा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا की याद ताज़ा हो गई। आबदीदा हुवे, सहाबा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُم के मश्वरे से येह क़रार पाया कि अबुल आ़स को बिला फ़िद्या छोड़ दिया जाए इस शर्त़ पर कि वोह वापस जा कर ह़ज़रते ज़ैनब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا को मदीना त़य्यिबा भेज दें। हु़ज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने दो आदमी ह़ज़रते ज़ैनब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا को लेने के लिये साथ कर दिये कि वोह मक्का से बाहर ठहर जाएं और अबुल आ़स ह़ज़रते ज़ैनब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا को उन तक पहुंचवा दें।

चुनान्चे ह़ज़रते ज़ैनब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا के देवर कनाना आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا को ले कर चले, आप ऊंट पर सुवार हो कर रवाना हुईं, कुफ़्फ़ार को जब इस की ख़बर हुई तो आग बगोला हो गए और एक जमाअ़त मज़ाह़मत के लिये पहुंच गई। जिस में हब्बार बिन अस्वद जो ह़ज़रते ख़दीजा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا के चचा ज़ाद भाई का लड़का था और इस लिह़ाज़ से ह़ज़रते ज़ैनब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا का भाई हुवा वोह और उस के साथ एक और शख़्स भी था उन दोनों में से किसी ने (और अकषर ने हब्बार ही को लिखा है) ह़ज़रते ज़ैनब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا को नेज़ा मारा जिस से वोह ज़ख़्मी हो कर ऊंट से गिरीं चूंकि ह़ामिला थीं इस वजह से पेट का बच्चा भी ज़ाएअ़ हुवा। कनाना ने तीरों से मुक़ाबला किया, अबू सुफ़यान ने उन से कहा कि मुह़म्मद (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) की बेटी और इस त़रह़ अ़लल ए'लान चली जाए येह गवारा नहीं। इस वक़्त वापस चलो फिर चुपके से भेज देना।

कनाना ने इस को क़बूल कर लिया और वापस ले आए। दो एक रोज़ बा'द फिर रवाना किया, ह़ज़रते ज़ैनब का येह ज़ख़्म कई साल तक रहा और कई साल तक इस में बीमार रह कर सि. **8** हि. में इन्तिक़ाल फ़रमाया। (رضی اللہ تعالی عنہا وارضاھا عنا)

हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि वोह मेरी सब से अच्छी बेटी थी जो मेरी महब्बत में सताई गई।

(الطبقات الکبریٰ لابن سعد، ذکر بنات رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم، ج۸، ص۲۶۔۲۷

و سیرۃ النبویۃ لابن ہشام،خروج زینب الی المدینۃ، ج۱، ص۵۷۶)

हज़रते ख़ब्बाब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ **की जली हुई पीठ :** अमीरुल मोअमिनीन हज़रते उमर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को एक मरतबा सहाबिये रसूल हज़रते ख़ब्बाब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की पीठ नज़र आ गई। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने देखा कि पूरी पुश्ते मुबारक में सफ़ेद सफ़ेद ज़ख़्मों के निशान हैं। दरयाफ़्त फ़रमाया कि ऐ ख़ब्बाब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ! येह तुम्हारी पीठ में ज़ख़्मों के निशान कैसे हैं ? आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने जवाब दिया कि अमीरुल मोअमिनीन ! आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को इन ज़ख़्मों की क्या ख़बर ? येह उस वक़्त की बात है जब आप नंगी तल्वार ले कर हुज़ूर रह़मतुल्लिल आलमीन صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का सर काटने के लिये दौड़ते फिरते थे। उस वक़्त हम ने महब्बते रसूल صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का चराग़ अपने दिल में जलाया और मुसलमान हुवे। उस वक़्त कुफ़्फ़ारे मक्का ने मुझ को आग के जलते हुवे कोइलों पर पीठ के बल लिटा दिया, मेरी पीठ से इतनी चरबी पिघली कि कोइले बुझ गए और मैं घन्टों बेहोश रहा मगर रब्बे का'बा की क़सम ! कि जब मुझे होश आया तो सब से पहले ज़बान से कलिमा لَآ اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ مُحَمَّدٌ رَّسُوْلُ اللّٰہِ صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم निकला।

अमीरुल मोअमिनीन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ हज़रते ख़ब्बाब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की मुसीबत सुन कर आबदीदा हो गए और फ़रमाया : ऐ ख़ब्बाब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ! कुरता उठाओ ! मैं तुम्हारी इस पीठ की ज़ियारत करूंगा। **अल्लाह अल्लाह** ! येह पीठ कितनी मुबारक व मुक़द्दस है जो महब्बते रसूल صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ब दौलत आग में जलाई गई है।

(الطبقات الکبریٰ لابن سعد، خباب بن الارت، ج۳، ص۱۲۳)

हज़रते अ़म्मार رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ **आग के कोइलों पर :** इसी त़रह़ ह़ज़रते अ़म्मार बिन यासिर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को पहले चोब और कोड़ों की मार से कुफ़्फ़ार ने निढाल कर दिया फिर आग के दहकते हुवे कोइलों पर पीठ के बल लिटा दिया। मगर येह इस्तिक़ामत का पहाड़ बन कर इस्लाम पर षाबित क़दम रहे। इस ह़ालत में ह़ुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم उन के क़रीब से गुज़रे तो ह़ज़रते अ़म्मार رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم कह कर पुकारा, अ़म्मार رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की येह मुसीबत देख कर रह़मते आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का दिल सदमों से चूर चूर हो गया और फ़रमाया :

یَا نَارُ کُوْنِیْ بَرْدًا وَّ سَلٰمًا عَلٰی عَمَّارٍ کَمَا کُنْتِ عَلٰی اِبْرَاھِیْمَ

या'नी ऐ आग ! तू अ़म्मार पर इस त़रह़ ठन्डक और सलामती बन जा जिस त़रह़ तू ह़ज़रते इब्राहीम عَلَیْہِ السَّلَام पर ठन्डक और सलामती बन गई थी। (الطبقات الکبری لابن سعد،عمار بن یاسر، ج۳،ص۱۸۸)

रह़मते आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ह़ज़रते अ़म्मार رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के ज़ख़्मों पर अपना दस्ते शफ़्क़त फेरते हुवे फ़रमाते कि "عمار طیب و مطیب" या'नी अ़म्मार पाकीज़ा और ख़ुश्बूदार है।

हिजरते ह़बशा और शअ़्बे अबी त़ालिब : मुसलमानों को और उन के सरदार फ़ख़्रे दो आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को कुफ़्फ़ार से जब तकालीफ़ पहुंचती ही रहीं और आए दिन उन में बजाए कमी के इज़ाफ़ा ही होता रहा तो ह़ुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने सह़ाबा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُم को इस बात की इजाज़त मर्ह़मत फ़रमा दी कि वोह यहां से दूसरी जगह चले जाएं। बहुत से ह़ज़रात ने ह़बशा की त़रफ़ हिजरत फ़रमाई। ह़बशा के बादशाह अगर्चे नस्रानी थे और उस वक़्त मुसलमान न हुवे थे मगर उन के रह़्म दिल और मुन्सिफ़ मिज़ाज होने की शोहरत थी। चुनान्चे ए'लाने नबुव्वत के पांचवें

बरस रजब के महीने में पहली जमाअ़त के ग्यारह या बारह मर्द और चार या पांच औ़रतों ने ह़बशा की हिजरत की। मक्का वालों ने उन का पीछा भी किया कि येह न जा सकें, मगर येह लोग हाथ न आए, वहां पहुंच कर उन को येह ख़बर मिली कि मक्का वाले सब मुसलमान हो गए और इस्लाम को ग़लबा हो गया। इस ख़बर से येह ह़ज़रात बहुत खुश हुवे और अपने वत़न की त़रफ़ लौटे। लेकिन मक्कए मुकर्रमा के क़रीब पहुंच कर मा'लूम हुवा कि येह ख़बर ग़लत़ थी और मक्का वाले इसी त़रह़ बल्कि इस से भी ज़ियादा दुश्मनी और ईज़ा रसानी में मसरूफ़ हैं तो उन में से बा'ज़ ह़ज़रात वहीं से वापस हो गए और बा'ज़ किसी की पनाह ले कर मक्कए मुकर्रमा में दाख़िल हुवे। येह ह़बशा की पहली हिजरत कहलाती है।

इस के बा'द एक बड़ी जमाअ़त ने (जो **83** मर्द और **18** औ़रतें बताई जाती है) मुतफ़र्रिक़ तौ़र पर हिजरत की और येह ह़बशा की दूसरी हिजरत कहलाती है। बा'ज़ सह़ाबा رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُم ने दोनों हिजरतें कीं, और बा'ज़ ने एक। कुफ़्फ़ार ने जब देखा येह लोग ह़बशा में चैन की ज़िन्दगी बसर करने लगे तो उन को और भी गुस्सा आया और बहुत से तह़ाइफ़ के साथ नज्जाशी शाहे ह़बशा के पास एक वफ़्द भेजा जो बादशाह के लिये बहुत से तोह़फ़े ले कर गया। और उस के ख़वास और पादरियों के लिये भी बहुत से हदिय्ये ले कर गया। जा कर पादरियों और हुक्काम से मिला और हदिय्ये दे कर उन से बादशाह के यहां अपनी सिफ़ारिश का वा'दा लिया और बादशाह की ख़िदमत में येह वफ़्द ह़ाज़िर हुवा। अव्वल बादशाह को सजदा किया और फिर तोह़फ़े पेश कर के अपनी दरख़्वास्त पेश की और रिश्वत लेने वाले हुक्काम ने ताईद की। उन्हों ने कहा ऐ बादशाह ! हमारी क़ौम के चन्द बे वुक़ूफ़ लड़के अपने क़दीमी दीन को छोड़ कर एक नए दीन में दाख़िल हो गए

जिस को हम जानते हैं और न आप जानते हैं, आप के मुल्क में आ कर रहने लगे। हम को शुरफ़ाए मक्का ने और उन के बाप चचा ने और रिश्तेदारों ने भेजा है कि उन को वापस लाएं आप उन को हमारे सिपुर्द कर दें। बादशाह ने जवाब दिया जिन लोगों ने मेरी पनाह ली है बिग़ैर तह़क़ीक़ उन को तुम्हारे ह़वाले नहीं कर सकता उन से बुला कर तह़क़ीक़ कर लूं अगर येह सह़ीह़ हुवा तो ह़वाले कर दूंगा।

चुनान्चे मुसलमानों को बुलाया गया। मुसलमान बहुत परेशान हुवे क्या करें ? मगर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के फ़ज़्ल ने मदद की और हिम्मत से येह तै़ किया कि चलना चाहिये और साफ़ बात कहना चाहिये, बादशाह के यहां पहुंच कर सलाम किया। किसी ने ए'तिराज़ किया तुम ने बादशाह को आदाबे शाही के मुवाफ़िक़ सजदा नहीं किया, इन लोगों ने कहा कि हम को हमारे प्यारे नबी صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के सिवा किसी को सजदा करने की इजाज़त नहीं दी। इस के बा'द बादशाह ने उन से ह़ालात दरयाफ़्त किये। ह़ज़रते जा'फ़र رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه आगे बढ़े और फ़रमाया : हम लोग जहालत में पड़े हुवे थे, न **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ को जानते थे न उस के रसूलों عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام से वाक़िफ़ थे। पथ्थरों को पूजते थे। मुर्दार खाते थे। बुरे काम करते थे। रिश्ते नाते तोड़ते थे। हम में का क़वी ज़ईफ़ को हलाक कर देता था। हम इसी ह़ाल में थे कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने एक रसूल صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم भेजा जिस के नसब, जिस की सच्चाई, और अमानत दारी को हम ख़ूब जानते हैं। उस ने हम को एक **अल्लाह** वह़्दहू ला शरीक की इ़बादत की त़रफ़ बुलाया और पथ्थर और बुतों के पूजने से मन्अ़ फ़रमाया। उस ने हम को अच्छे काम करने का हुक्म दिया। नमाज़, रोज़ा, सदक़ा, ख़ैरात का हुक्म दिया और अच्छे अख़्लाक़ ता'लीम किये। ज़िना, बदकारी, झूट बोलना, यतीम का माल खाना, किसी पर तोहमत लगाना और इस क़िस्म के बुरे आ'माल से मन्अ़ फ़रमाया। हम को क़ुरआने पाक की ता'लीम दी, हम उस पर ईमान लाए और

उस के फ़रमान की ता'मील की जिस पर हमारी क़ौम दुश्मन बन गई और हम को हर त़रह सताया, हम लोग मजबूर हो कर तुम्हारी पनाह में अपने नबी صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के इर्शाद से आए हैं।

बादशाह ने कहा : जो कु़रआन तुम्हारे नबी صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ले कर आए हैं वोह कुछ हमें सुनाओ। ह़ज़रते जा'फ़र رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ ने सूरए मरयम की अव्वल की आयतें पढ़ीं, जिस को सुन कर बादशाह भी रो दिया और उन के पादरी जो कषरत से मौजूद थे सब के सब इस क़दर रोए कि दाढ़ियां तर हो गईं। इस के बा'द बादशाह ने कहा : खु़दा عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! येह कलाम और जो कलाम ह़ज़रते ईसा عَلَیْهِ السَّلَام ले कर आए थे एक ही नूर से निकले हैं। और उन लोगों से साफ़ इन्कार कर दिया कि मैं इन को तुम्हारे ह़वाले नहीं कर सकता। वोह लोग बड़े परेशान हुवे कि बड़ी ज़िल्लत उठानी पड़ी। आपस में सलाह़ की, एक शख़्स ने कहा कि कल ऐसी तदबीर करूंगा कि बादशाह इन की जड़ ही काट दे, साथियों ने कहा ऐसा नहीं करना चाहिये, येह लोग अगर्चे मुसलमान हो गए हैं मगर फिर भी हमारे रिश्तेदार हैं मगर उस ने न माना। दूसरे दिन फिर बादशाह के पास गए और जा कर कहा : येह लोग ह़ज़रते ईसा عَلَیْهِ السَّلَام की शान में गुस्ताख़ी करते हैं और उन को **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का बेटा नहीं मानते। बादशाह ने फिर मुसलमानों को बुलाया।

सह़ाबा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُم कहते हैं कि दूसरे दिन के बुलाने से हमें और ज़ियादा परेशानी हुई, बहर ह़ाल गए। बादशाह ने पूछा तुम ह़ज़रते ईसा عَلَیْهِ السَّلَام के बारे में क्या कहते हो ? उन्हों ने कहा वोही कहते हैं जो हमारे नबी صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर उन की शान में नाज़िल हुवा कि वोह **अल्लाह** के बन्दे हैं और उस के रसूल हैं। वोह रूहुल्लाह हैं और कलिमतुल्लाह हैं जिस को खु़दा عَزَّوَجَلَّ ने कंवारी और पाक मरयम رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا की त़रफ़ डाला। नज्जाशी ने कहा : ह़ज़रते ईसा عَلَیْهِ السَّلَام भी इस के सिवा कुछ नहीं कहते,

पादरी लोग आपस में सरगोशियां करने लगे, नज्जाशी ने कहा : तुम जो चाहो कहो। इस के बा'द नज्जाशी ने वफ़्दे मक्का के तोह़फ़े वापस कर दिये और मुसलमानों से कहा : तुम अम्न से हो जो तुम्हें सताए उस को तावान देना पड़ेगा और इस का ए'लान भी करा दिया कि जो शख़्स इन को सताएगा उस को तावान देना होगा।

(السيرة النبوية،ذكرالهجرة الاولى،ج۱،ص۳۰۰،ارسال القريش الى الحبشة،ج۱،ص۳۱۰)

इस की वजह से वहां के मुसलमानों का इकराम और भी ज़ियादा होने लगा और उस वफ़्द को ज़िल्लत से वापस आना पड़ा। इस वाक़िए से कुफ़्फ़ार का गुस्सा और भी बढ़ गया, दूसरी त़रफ़ ह़ज़रते उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के ईमान लाने ने उन को और भी जला रखा था लिहाज़ा हर वक़्त इस फ़िक्र में रहते थे कि इन लोगों का उन से मिलना जुलना बन्द हो जाए और इस्लाम का चराग़ किसी त़रह़ बुझे। इस लिये सरदाराने मक्का की एक बड़ी जमाअ़त ने आपस में मश्वरा किया कि अब खुल्लम खुल्ला मुह़म्मद (صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) को क़त्ल कर दिया जाए लेकिन क़त्ल करना भी आसान काम न था इस लिये कि बनू हाशिम भी बड़े जथ्थे और ऊंचे त़ब्क़े के लोग शुमार होते थे। उन में अगर्चे अकषर मुसलमान नहीं हुवे थे लेकिन जो मुसलमान नहीं हुवे थे वोह भी ह़ुज़ूर صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के क़त्ल हो जाने पर आमादा नहीं थे।

इस लिये इन सब कुफ़्फ़ार ने मिल कर एक मुआ़हदा किया कि सारे बनू हाशिम और बनू अ़ब्दुल मुत्त़लिब का बायकॉट किया जाए। न उन को कोई शख़्स अपने पास बैठने दे न उन से कोई ख़रीदो फ़रोख़्त करे, न बात चीत करे, न उन के घर जाए, न उन को अपने घर में आने दे और उस वक़्त तक सुल्ह़ न की जाए जब तक कि वोह ह़ुज़ूरे अकरम (صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) को क़त्ल करने के लिये हमारे ह़वाले न कर दें येह मुआ़हदा ज़बानी ही गुफ़्तगू पर ख़त्म

नहीं हुवा बल्कि यकुम मुहर्रम सि. 7 नबवी को एक मुआहदा तहरीरी लिख कर बैतुल्लाह में लटकाया गया ताकि हर शख़्स इस का एहतिराम करे और इस को पूरा करने की कोशिश करे और इस मुआहदे की वजह से तीन बरस तक येह हज़रात दो पहाड़ों के दरमियान एक घाटी में नज़र बन्द रहे कि न कोई उन से मिल सकता था न येह किसी से मिल सकते थे न मक्के के किसी आदमी से कोई चीज़ ख़रीद सकते थे न बाहर से आने वाले किसी ताजिर से मिल सकते थे, अगर कोई शख़्स बाहर निकलता तो पीटा जाता और किसी से ज़रूरत का इज़्हार करता तो साफ़ जवाब पाता। मा'मूली सामान ग़ल्ला वग़ैरा जो उन लोगों के पास था वोह कहां तक काम देता ? आख़िर फ़ाक़ों पर फ़ाक़े गुज़रने लगे और औरतें और बच्चे भूक से बेताब हो कर रोते और चिल्लाते और उन के अइज़्ज़ा को अपनी भूक और तकालीफ़ से ज़ियादा इन बच्चों की तकालीफ़ सतातीं।

आख़िर तीन बरस के बा'द वोह सहीफ़ा दीमक की नज़्र हुवा और इन हज़रात की येह मुसीबत दूर हुई। तीन बरस का ज़माना ऐसे सख़्त बायकॉट और नज़र बन्दी में गुज़रा और ऐसी हालत में इन हज़रात पर क्या क्या मशक़्क़तें गुज़री होंगी लेकिन इस के बा'द भी सहाबए किराम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُم निहायत षाबित क़दमी के साथ अपने दीन पर जमे रहे बल्कि इस की इशाअ़त फ़रमाते रहे।

(شرح العلامة الزرقانی،دخول الشعب و خبر الصحیفة،ج۲،ص۱۲۔السیرة النبویة، خبرالصحیفة،ج۶،ص۳۲۵)

हज़रते अबू सलमह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के ज़न व फ़रज़न्द : हज़रते अबू सलमह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ साहिबुल हिजरतैन हैं। पहले हबशा को हिजरत की फिर वहां से वापस हो कर मदीनए मुनव्वरा हिजरत कर गए। मदीनए मुनव्वरा की तरफ़ हिजरत करते वक़्त उन्हों ने अपनी ज़ौजा और इक लौते बेटे सलमह को ऊंट पर बिठाया और ख़ुद नकील पकड़ कर रवाना हुवे। उन के मैके वाले ख़ानदाने बनू मुग़ीरा के लोग आ गए और कहा कि ख़बरदार ! ऐ अबू

सलमह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ! तुम ख़ुद जा सकते हो मगर अपनी लड़की उम्मे सलमह को हरगिज़ तुम्हारे साथ मदीना नहीं जाने देंगे और ज़बरदस्ती ज़ालिमों ने उम्मे सलमह और बच्चे सलमह को ऊंट से उतार लिया। लोग समझते थे कि बीवी और बच्चे की महब्बत अबू सलमह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ को हिजरत से रोक लेगी। मगर वाह रे ! महब्बते रसूल صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का जज़्बा कि बीवी और बच्चे की जुदाई से कलेजा शक़ हो रहा था मगर क़दम नहीं डगमगाए और बीवी बच्चे को **"ख़ुदा ह़ाफ़िज़"** कह कर अकेले मदीने चले गए।

फिर अबू सलमह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ के ख़ानदान वाले बनी अ़ब्दुल असद ने बच्चे सलमह को येह कह कर बनी मुग़ीरा से छीन लिया कि लड़की तुम्हारी है मगर बच्चा हमारे ख़ानदान का है। इस त़रह़ बीबी उम्मे सलमह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا अपने शौहर और लख़्ते जिगर दोनों से जुदा हो गईं और एक साल तक शौहर और बच्चे के फ़िराक़ में रोती रहीं। बिल आख़िर उन के चचा ज़ाद भाई ने सब को समझा बुझा कर राज़ी कर लिया कि उम्मे सलमह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا अपने बच्चे को ले कर अबू सलमह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ के पास चली जाए। बीबी उम्मे सलमह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا का जज़्बए हिजरत देखिये कि बच्चे को ले कर तन्हा मदीना रवाना हो गईं। तन्ईम के पास उ़षमान बिन त़ल्ह़ा मिले जो अभी मुसलमान नहीं हुवे थे मगर निहायत शरीफ़ इन्सान और अबू सलमह के दोस्त थे। पूछा : तुम अकेली कहां जा रही हो ? उन्हों ने कहा : मदीना, पूछा : तुम्हारे साथ कोई नहीं ? बीबी उम्मे सलमह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا ने कहा : हमारे साथ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की ज़ात के सिवा कोई भी नहीं। उ़षमान बिन त़ल्ह़ा कहने लगे : येह ग़ैर मुमकिन है तुम एक शरीफ़ की बीवी हो कर तन्हा इतना लम्बा सफ़र करो। ख़ुद ऊंट की नक़ील पकड़ कर बीबी उम्मे सलमह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا को मदीनए मुनव्वरा पहुंचा दिया।

रास्ते में ऊंट पर सामान लाद कर ऊंट को बिठा देते और खुद किसी दरख़्त की आड़ में छुप जाते। जब उम्मे सलमह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا सुवार हो जाती थीं तो येह ऊंट की नकील पकड़ कर चल देते थे। इस त़रह़ बीबी उम्मे सलमह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا मदीनए मुनव्वरा अपने शौहर अबू सलमह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ के पास पहुंच गईं। फिर जब सि. **4** हि. में ह़ज़रते अबू सलमह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ एक जंग में ज़ख़्मी हो कर शहीद हो गए तो हुज़ूर रह़मतुल्लिल आ़लमीन صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने बीबी उम्मे सलमह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا से निकाह़ फ़रमा लिया और उन को उम्मते मुस्लिमा की मादरे मुक़द्दस होने का शरफ़ ह़ासिल हो गया। (اسدالغابة، ام سلمة بنت أبی أمية، ج٧،ص ٣٧١) رضی الله تعالی عنها وارضاها عنا

नोट : सफ़रे हिजरत हर एक पर फ़र्ज़ था, रिफ़ाक़ते मह़रम या शौहर की शर्त़ भी न थी। और आयते ह़िजाब उस वक़्त अभी नाज़िल न हुई थी। ह़ज़रते उम्मे सलमह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا के सफ़र पर कोई इश्काल नहीं।

इश्क़ो वफ़ा का अ़जीब मन्ज़र : रसूले अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने एक बार छे या दस आदमियों की जमाअ़त अहले मक्का की ख़बर लाने के लिये भेजी। रास्ते में बनू लह़यान के दो सो आदमियों से मुक़ाबला हुवा जिस की तफ़्सील आगे आ रही है। बा'ज़ रिवायात से मा'लूम होता है कि काफ़िरों ने उहुद में अपने मक़्तूल काफ़िर अ़ज़ीज़ों के जोशे इन्तिक़ाम में इन ह़ज़रात को फ़रेब से अपने यहां बुलाया। **सलाफ़ा** नामी एक औ़रत जिस के दो लड़के उहुद में मारे गए थे उस ने मन्नत मानी थी कि अगर मेरे बेटों के क़ातिल आ़सिम का सर हाथ में आ जाए तो उस की खोपड़ी में शराब पियूंगी। उस ने ए'लान कर दिया कि जो आ़सिम का सर लाए उसे सो ऊंट इन्आ़म दूंगी।

सुफ़्यान बिन ख़ालिद ने सो ऊंटों की त़म्अ़ में क़बीलए अ़ज़ल व क़ारह के चन्द आदमियों को मदीनए मुनव्वरा भेजा। उन्हों ने वहां अपने को मुसलमान ज़ाहिर किया और सरकार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से कह कर चन्द ह़ज़रात की जमाअ़त अपने यहां तब्लीग़े दीन की ग़रज़ बता कर साथ लाए जिन में ह़ज़रते आ़सिम, ह़ज़रते ख़ुबैब, ह़ज़रते ज़ैद बिन अद्दषिन्ना, ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन त़ारिक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُم भी थे। रास्ते में ले जा कर बद अ़हदी की और दो सो आदमियों को मुक़ाबले के लिये बुला लिया जिन में सो आदमी मश्हूर तीर अन्दाज़ थे।

दस या छे बुज़ुर्गों رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُم की येह मुख़्तसर जमाअ़त दुश्मनों की बद निय्यती देख कर फ़दफ़द नामी एक पहाड़ पर चढ़ गई। कुफ़्फ़ार ने कहा : हम तुम्हें क़त्ल नहीं करना चाहते। सिर्फ़ अहले मक्का से तुम्हारे बदले कुछ माल लेना चाहते हैं तुम हमारे साथ आ जाओ मगर उन्हों ने कहा हम काफ़िरों के अ़हद में आना नहीं चाहते और तरकश से तीर निकाल कर मुक़ाबला किया। जब तीर ख़त्म हो गए तो नेज़ों से मुक़ाबला किया। ह़ज़रते आ़सिम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने साथियों से जोश में कहा : तुम से धोका किया गया मगर घबराने की बात नहीं। शहादत को ग़नीमत समझो तुम्हारा मह़बूब तुम्हारे साथ है और जन्नत की ह़ूरें तुम्हारी मुन्तज़िर हैं। येह कह कर जोश से मुक़ाबला किया और जब नेज़ा भी टूट गया तो तल्वार से मुक़ाबला किया। दुश्मनों का मज्मअ़ कषीर था आख़िर शहीद हो गए और दुआ़ की, या **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ अपने रसूल صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को हमारे ह़ाल से आगाह फ़रमा देना।

सरकार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को उसी वक़्त इस वाक़िए का इ़ल्म हो गया। ह़ज़रते आ़सिम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ येह भी सुन चुके थे कि सलाफ़ा ने मेरे सर की खोपड़ी में शराब पीने की मन्नत मानी है। इस लिये मरते वक़्त दुआ़ की : या **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! मेरा सर तेरे रास्ते में काटा जा रहा है तू ही इस का मुह़ाफ़िज़ है। चुनान्चे शहादत

के बा'द जब काफ़िरों ने सर काटने का इरादा किया तो अल्लाह तआ़ला ने शहद की मख्खियों का और बा'ज़ रिवायतों में है कि भिड़ों का एक ग़ोल भेज दिया। जिन्हों ने उन के बदन को चारों त़रफ़ से घेर लिया, काफ़िरों का ख़याल था कि रात के वक़्त जब येह उड़ जाएगी तो सर काट लेंगे मगर रात को बारिश की एक रौ आई और उन की ना'श को बहा कर ले गई। इस त़रह़ सात आदमी या तीन आदमी शहीद हो गए। ग़रज़ तीन बाक़ी रह गए। ह़ज़रते ख़ुबैब, और ज़ैद बिन अद्दषिन्ना और अ़ब्दुल्लाह बिन त़ारिक़ (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡھُمۡ) इन तीनों ह़ज़रात से फिर उन्हों ने अ़हदो पैमान किया कि तुम नीचे आ जाओ हम तुम से बद अ़हदी न करेंगे, येह तीनों ह़ज़रात رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡھُمۡ नीचे उतर आए और नीचे उतरने पर कुफ़्फ़ार ने उन की कमानों की तानत उतार कर उन की मुश्कें बांधीं।

ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन त़ारिक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ ने फ़रमाया कि येह पहली बद अ़हदी है मैं तुम्हारे साथ हरगिज़ न जाऊंगा इन शहीद होने वालों की इक़्तिदा ही मुझे पसन्द है, उन्हों ने ज़बरदस्ती उन को खींचना चाहा मगर येह न टले तो उन लोगों ने उन को भी शहीद कर दिया। सिर्फ़ दो ह़ज़रात رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡھُمَا उन के साथ रहे जिन को ले जा कर उन लोगों ने मक्का वालों के हाथ फ़रोख़्त कर दिया। एक ह़ज़रते ज़ैद बिन अद्दषिन्ना رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ जिन को सफ़वान बिन उमय्या ने पचास ऊंटों के बदले में ख़रीदा कि अपने बाप उमय्या के बदले क़त्ल कर दे। बुख़ारी शरीफ़ की रिवायत में है कि ह़ज़रते ख़ुबैब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ को ह़ारिष बिन आ़मिर की अवलाद ने ख़रीदा कि उन्हों ने बद्र में ह़ारिष को क़त्ल किया था। सफ़वान ने तो अपने क़ैदी ह़ज़रते ज़ैद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ को फ़ौरन ही ह़रम से बाहर अपने ग़ुलाम के साथ भेज दिया कि क़त्ल कर दिये जाएं।

ह़ज़रते ज़ैद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ को क़त्ल करने के लिये ह़द्दे ह़रम से बाहर ले गए तो उस का तमाशा देखने के लिये और भी बहुत से

लोग जम्अ़ हुवे जिन में अबू सुफ़्यान भी थे (जो अब तक इस्लाम न लाए थे) अबू सुफ़्यान ने ह़ज़रते ज़ैद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से यूं कहा :

"ऐ ज़ैद (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ) ! मैं तुम को खुदा عَزَّوَجَلَّ की क़सम दे कर पूछता हूं। क्या तुम येह पसन्द करते हो कि इस वक़्त हमारे पास बजाए तुम्हारे, मुह़म्मद (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) हों जिन को हम क़त्ल कर दें और तुम आराम से अपने अहल में बैठो।"

ह़ज़रते ज़ैद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने जवाब दिया : **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! मैं पसन्द नहीं करता कि मुह़म्मद (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) इस वक़्त जिस मकान में तशरीफ़ रखते हैं उन को एक कांटा लगने की तकलीफ़ भी हो और मैं आराम से अपने अहल में बैठा रहूं।"

येह सुन कर अबू सुफ़्यान ने कहा : "मैं ने लोगों में से किसी को नहीं देखा कि दूसरों से ऐसी मह़ब्बत रखता हो जैसा कि मुह़म्मद صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के अस्ह़ाब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُم मुह़म्मद صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से रखते हैं। उस के गुलाम निस्त़ास ने ह़ज़रते ज़ैद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को शहीद कर दिया। (السیرة النبویة،ذکر یوم الرجیع فی سنة ثلاث،ج٤،ص١٤٧)

ह़ज़रते खुबैब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ एक अ़रसे तक क़ैद रहे। ह़जर बिन अबी उहाब तमीमी की बांदी जो बा'द में मुसलमान हो गई कहती हैं कि : " ह़ज़रते खुबैब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ हम लोगों की क़ैद में थे तो हम ने देखा कि खुबैब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ एक दिन अंगूर का बहुत बड़ा खोशा आदमी के सर बराबर, हाथ में लिये हुवे अंगूर खा रहे थे और मक्के में उस वक़्त अंगूर बिल्कुल नहीं था।" वोही कहती हैं कि जब उन के क़त्ल का वक़्त क़रीब आया तो उन्हों ने सफ़ाई के लिये उस्तरा मांगा वोह दे दिया गया, इत्तिफ़ाक़ से एक कमसिन बच्चा उस वक़्त खुबैब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के पास पहुंच गया। लोगों ने देखा कि उस्तरा उन के हाथ में है और बच्चा उन के पास, येह देख कर घबराए। खुबैब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने कहा कि क्या तुम येह समझते हो कि मैं बच्चा क़त्ल कर दूंगा, ऐसा नहीं कर सकता इस के बा'द

उन को ह़रम से बाहर लाया गया और सूली पर लटकाने के वक़्त आख़िरी ख़्वाहिश के त़ौर पर पूछा गया कि कोई तमन्ना हो तो बताओ ? उन्हों ने फ़रमाया कि मुझे इतनी मोहलत दो कि मैं दो रक्अ़त नमाज़ पढ़ लूं कि दुन्या से जाने का वक़्त है अल्लाह तआ़ला की मुलाक़ात क़रीब है, चुनान्चे मोहलत दी गई, उन्हों ने दो रक्अ़तें बड़े इत़्मीनान से पढ़ीं और फिर फ़रमाया कि अगर मुझे येह ख़याल न होता कि तुम लोग येह समझोगे कि मैं मौत के डर से देर कर रहा हूं तो दो रक्अ़त और पढ़ता इस के बा'द सूली पर लटका दिये गए।

ह़ज़रते ख़ुबैब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ **तख़्ते दार पर :** जब मुशरिकीने मक्का ने ह़ज़रते ख़ुबैब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को तख़्ताए दार पर खड़ा किया तो जनाबे ख़ुबैब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अहले मक्का के लिये बद दुआ़ की। ह़ज़रते अमीर मुआ़विया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं कि मुझे मेरे बाप ने ज़मीन पर लिटा दिया क्यूंकि उन का ख़याल था कि अगर ज़मीन पर लेट जाएं तो बद दुआ़ का अषर नहीं होता। इस बद दुआ़ से ह़ज़रते सुफ़्यान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ पर एक इज़्तिराबी कैफ़िय्यत त़ारी हो गई, मुझ पर इस बद दुआ़ का येह अषर हुवा कि कई सालों तक मेरी शोहरत ख़त्म रही। कहते हैं कि एक साल के अन्दर अन्दर जितने आदमी भी सूली पर चढ़ाते वक़्त मौजूद थे मर खप गए।

सई़द बिन आ़मिर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ बा'ज़ अवक़ात बेहोश हो जाते थे। अमीरुल मोअमिनीन ह़ज़रते उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने उन्हें एक अ़मल बताया और साथ ही पूछा कि येह ग़शी का सबब क्या है ? उन्हों ने बताया कि जब ख़ुबैब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को सूली पर खड़ा किया गया तो मैं वहां मौजूद था जूं ही इस का नक़्शा सामने आता है मैं ह़वास खो बैठता हूं। तख़्ताए दार पर ह़ज़रते ख़ुबैब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने कहा : ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ! हम ने अपने आक़ा व मौला जनाबे

मुह़म्मदुर्रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की तब्लीग़ पर अ़मल किया, यहां कोई भी नहीं जो मेरा पैग़ाम उन तक पहुंचा दे। तू क़ादिरो क़य्यूम है। मेरा सलाम उन तक पहुंचा दे। ह़ज़रते उसामा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه कहते हैं मैं मदीने में हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के पास बैठा था कि आसारे वह़्य ज़ाहिर हुवे। और आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : وعليه السلام و رحمة الله। इस के बा'द आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की आंखों में आंसू भर आए और बताया ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ ने ख़ुबैब رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه का सलाम मुझे पहुंचाया है। आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने बिशारत दी जो शख़्स ह़ज़रते ख़ुबैब رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه को तख़्ताए दार से नीचे उतारेगा उस का मक़ाम बहिश्त है। (شواهد النبوة، رکن رابع، ص ۱۰۰)

ह़ज़रते बिलाल رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه का इ़श्क़े रिसालत : ह़ज़रते बिलाल رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه वोह सह़ाबिये रसूल رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه हैं जिन को बिल्कुल आग़ाज़े इस्लाम में मुशर्रफ़ ब इस्लाम होने का इम्तियाज़ ह़ासिल है। ऐसे ख़ौफ़नाक माह़ोल में जब इस्लाम लाने की पादाश में सख़्त तरीन मसाइब व आलाम से दो चार होना पड़ता था, ह़ज़रते बिलाल رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه को कुफ़्फ़ारे मक्का सख़्त से सख़्त अज़िय्यतें देते थे। उन को पकड़ कर ले जाते और धूप में लिटा देते और पथ्थर ला कर उन के पेट पर रख देते और कहते : तुम्हारा दीन लात व उ़ज़्ज़ा का दीन है। ह़ज़रते बिलाल رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه कहते : मेरा परवर दगार, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ है। ऐसे ऐसे मसाइब झेलते मगर सीने में इ़श्क़े मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم इस त़रह़ पैवस्त था कि सारे आलाम व मसाइब इस के सामने हेच थे।

(السيرة النبوية، ذكر عدوان المشركين على المستضعفين، ج ۱، ص ۲۹۷)

एक दिन ह़ज़रते बिलाल رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه ख़ानए का'बा में दाख़िल हुवे। कुरैश को इस का इ़ल्म न था, आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه ने इधर उधर देखा तो कोई नज़र न आया बस आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه बुतों के पास आ कर उन पर थूकने लगे और कहने लगे वोह लोग

नाकाम और ख़सारे में हैं जिन्हों ने तुम्हारी परस्तिश की। क़ुरैश ने उन को गिरिफ़्तार करना चाहा लेकिन आप भागने में कामयाब हो गए और अपने मालिक अ़ब्दुल्लाह बिन जद्आ़न के घर में छुप गए। क़ुरैश के लोग अ़ब्दुल्लाह के पास आए और उस को आवाज़ दी, वोह बाहर आया तो उस से उन लोगों ने कहा : क्या तुम बे दीन हो गए ? उस ने कहा : मुझ जैसे शख़्स से भी ऐसी बात कही जा रही है ? अब तो महूज़ इस के कफ़्फ़ारे में लात व उ़ज़्ज़ा के लिये **100** ऊंटनियां क़ुरबान करूंगा। क़ुरैश के लोगों ने कहा : तुम्हारे काले (बिलाल رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ) ने येह येह कर डाला है। उस ने उन को बुलाया। लोग उन को तलाश कर के अ़ब्दुल्लाह के पास लाए येह उन को पहचानता न था। उस ने ख़ौलिया को बुला कर पूछा येह कौन है ? क्या मैं ने तुम को येह हुक्म न दे रखा था कि मक्का के गुलामों में से किसी को यहां न रहने देना। ख़ौलिया ने कहा येह तुम्हारी बकरियां चराता था। और इस के इ़लावा और कोई इन को पहचानता न था इस त़रह़ मैं ने इसे छोड़ दिया था।

इस के बा'द अ़ब्दुल्लाह ने अबू जहल और उमय्या बिन ख़लफ़ से कहा : बिलाल (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ) तुम्हारे ह़वाले है। तुम लोग इस के साथ जो चाहो करो। येह दोनों उन को बत़्ह़ा के तपते हुवे हिस्से पर खींचते हुवे लाते हैं और उन के दोनों बाज़ूओं पर चक्की रख देते हैं और कहते है اکفر محمد (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) ! मुह़म्मद صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का इन्कार करो। येह कहते हैं येह नहीं हो सकता कि दामने मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم छोड़ूं और फिर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की तौह़ीद का ए'लान करते हैं।

इस अ़ज़ाब का सिलसिला टूटा न था कि वहां से ह़ज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का गुज़र हुवा। उन्हों ने फ़रमाया : इस अस्वद (काले) को क्या करना चाहते हो। ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! तुम इस से इन्तिक़ाम ले ही नहीं सकते।

उमय्या बिन ख़लफ़ ने अपने आदमियों से कहा देखो ! मैं अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के साथ एक ऐसा खेल खेलता हूं कि अभी तक उन के साथ येह खेल खेला न गया होगा। फिर वोह हंस कर बोला। अबू बक्र ! (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ) तुम्हारा मेरे ऊपर क़र्ज़ है तुम मुझ से बिलाल (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ) को ख़रीद लो। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : हां (क्या लोगे ?) उस ने कहा : तुम्हारे ग़ुलाम निस्तास को। हज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : अगर मैं उसे दे दूं तो तुम बिलाल को मुझे दे दोगे ? उस ने कहा हां ! हज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : मैं ने येह कर लिया। फिर वोह हंस कर बोला : नहीं, आप को उस के साथ उस की बीवी को भी देना होगा। हज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : चलो येही सही।

फिर उस ने वोही शरारत की, कि नहीं आप को उस की बीवी के साथ उस की लड़की को भी देना होगा। हज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : चलो येह भी सही। फिर वोह हंस कर बोला : इतने में भी नहीं हो सकता। जब तक आप उन के साथ दो सो दीनार न दें। हज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : तुम्हें झूट से कुछ शर्म नहीं। उस ने लात व उ़ज़्ज़ा की क़सम खा कर कहा : अगर आप येह दो सो दीनार भी दे दें तो ज़रूर अपनी बात पूरी करूंगा। हज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : येह भी सही।

अब जा कर येह सौदा मुकम्मल होता है। हज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ इतनी भारी क़ीमत पर हज़रते बिलाल رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को ख़रीद कर रिज़ाए इलाही عَزَّوَجَلَّ के लिये आज़ाद कर देते हैं। हज़रते बिलाल رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को जां गुसिल मसाइब व आलाम से छुटकारा मिलता है।

सरकार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के कमसिन जांबाज़ : ग़ाबा मदीनए तृय्यिबा से चार पांच मील पर एक आबादी है, वहां हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के कुछ ऊंट चरा करते थे। काफ़िरों के एक मज्मअ़ के साथ अ़ब्दुर्रह़मान फ़ज़ारी ने उन को लूट लिया, जो साहिब चराते उन को क़त्ल कर दिया और ऊंटों को ले कर चल दिये। येह लुटेरे घोड़े पर सुवार थे और हथयार लगाए हुवे थे। इत्तिफ़ाक़न ह़ज़रते सलमह बिन अक्वअ़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ सुब्ह़ के वक़्त पैदल तीर कमान लिये हुवे ग़ाबा की त़रफ़ चले जा रहे थे कि अचानक उन लुटेरों पर नज़र पड़ी। बच्चे थे, वोह दौड़ते बहुत थे, कहते हैं कि उन की दौड़ ज़र्बुल मषल और मश्हूर थी, येह अपनी दौड़ में घोड़े को पकड़ लेते थे और घोड़ा इन को पकड़ नहीं सकता था। इस के साथ ही तीर अन्दाज़ी में बहुत मश्हूर थे।

ह़ज़रते सलमह बिन अक्वअ़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने मदीनए मुनव्वरा की त़रफ़ मुंह कर के एक पहाड़ी पर चढ़ कर लूट का ए'लान किया और ख़ुद उन लुटेरों के पीछे दौड़े, तीर कमान साथ ही थी यहां तक कि उन के पास पहुंच गए और तीर मारने शुरूअ़ किये और इस फुरती से दमा दम तीर बरसाए कि वोह लोग बड़ा मज्मअ़ समझे और चूंकि ख़ुद तन्हा थे और पैदल भी थे इस लिये जब कोई घोड़ा लौटा कर पीछा करता तो किसी दरख़्त की आड़ में छुप जाते और आड़ में से उस घोड़े को तीर मारते जिस से वोह ज़ख़्मी हो जाता और वोह इस ख़याल से वापस जाता कि घोड़ा गिर गया तो मैं पकड़ा जाऊंगा।

ह़ज़रते सलमह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ कहते हैं कि ग़रज़ वोह भागते रहे और मैं पीछा करता रहा ह़त्ता कि जितने ऊंट उन्हों ने हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के लूटे थे वोह मेरे पीछे हो गए और तीस बरछे और तीस चादरें वोह अपनी छोड़ गए इतने में उ़य्यना बिन ह़सन की एक जमाअ़त मदद के तौर पर उन के पास पहुंच गई। और उन

लुटेरों को कुव्वत ह़ासिल हो गई और येह भी मा'लूम हो गया कि मैं अकेला हूं। उन के कई आदमियों ने मिल कर मेरा पीछा किया मैं एक पहाड़ पर चढ़ गया और वोह भी चढ़ गए। जब मेरे क़रीब हो गए तो मैं ने कहा कि ज़रा ठहरो ! पहले मेरी एक बात सुनो ! तुम मुझे जानते भी हो कि मैं कौन हूं ? उन्हों ने कहा कि बताओ तुम कौन हो ? मैं ने कहा कि मैं इब्नुल अक्वअ़ हूं, उस ज़ाते पाक की क़सम ! जिस ने मुह़म्मद صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को इ़ज़्ज़त दी, तुम में से कोई मुझे पकड़ना चाहे तो नहीं पकड़ सकता और मैं तुम में से जिस को पकड़ना चाहूं वोह मुझ से हरगिज़ नहीं छूट सकता। उन के मुतअ़ल्लिक़ चूं कि आ़म तौ़र से येह शोहरत थी कि बहुत ज़ियादा दौड़ते हैं ह़त्ता कि अ़रबी घोड़ा भी उन का मुक़ाबला नहीं कर सकता। इस लिये येह दा'वा कुछ अ़जीब नहीं था।

सलमह رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ कहते हैं कि मैं इस त़रह़ उन से बातचीत करता रहा और मेरा मक़्सूद येह था कि उन लोगों के पास तो मदद पहुंच गई है मुसलमानों की त़रफ़ से मेरी मदद भी आ जाए कि मैं भी मदीने में ए'लान कर के आया था। ग़रज़ उन से इसी त़रह़ मैं बात करता रहा और दरख़्तों के दरमियान से मदीनए मुनव्वरा की त़रफ़ ग़ौर से देखता था कि मुझे एक जमाअ़त घोड़े सुवारों की दौड़ कर आती हुई नज़र आई उन में सब से आगे अख़रम असदी थे, उन्हों ने आते ही अ़ब्दुर्रह़मान फ़ज़ारी पर ह़म्ला किया और अ़ब्दुर्रह़मान भी उन पर मुतवज्जेह हुवा। उन्हों ने अ़ब्दुर्रह़मान के घोड़े पर ह़म्ला किया और पाउं काट दिये जिस से वोह घोड़ा गिरा और अ़ब्दुर्रह़मान ने गिरते हुवे उन पर ह़म्ला कर दिया जिस से वोह शहीद हो गए और अ़ब्दुर्रह़मान उन के घोड़े पर सुवार हो गया उन के पीछे अबू क़तादा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ थे उन्हों ने ह़म्ला शुरूअ़ कर दिया। अ़ब्दुर्रह़मान ने फ़ौरन अबू क़तादा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ के घोड़े के पाउं पर ह़म्ला किया जिस से वोह गिरे और गिरते हुवे उन्हों ने अ़ब्दुर्रह़मान पर ह़म्ला

किया जिस से वोह क़त्ल हो गया और अबू क़तादा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़ौरन उस घोड़े पर सुवार हो गए जो पहले अख़रम असदी का था और अब इस पर अ़ब्दुर्रह़मान सुवार हो चुका था।

(صحیح مسلم، کتاب الجھادو السیر،باب غزوۃ ذی قرد وغیرھا،الحدیث:۱۸۰۷، ص ۱۰۰۰)

मुजाहिदाना जवाब : कुरैशे मक्का ने मुसलमानों को तंग करने के लिये जब जंगे बद्र की बुन्याद डाली तो हुज़ूर सरवरे आ़लम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने सह़ाबए किराम رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُم से इर्शाद फ़रमाया कि दुश्मन लड़ने पर आमादा है। बताओ तुम्हारी क्या राए है ? सह़ाबए किराम رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُم में से मुहाजिरीन ने जवाब दिया : या रसूलल्लाह ! صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم वोही करें जिस बात का ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ ने आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को हुक्म दिया है। हम आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के साथ हैं। ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! हम ऐसा न कहेंगे। जैसा कि बनी इस्राईल ने अपने पैग़म्बर ह़ज़रते मूसा عَلَیْہِ السَّلَام से कहा था।

فَاذْهَبْ اَنْتَ وَ رَبُّكَ فَقَاتِلَاۤ اِنَّا هٰهُنَا قٰعِدُوْنَ ۝۲۴ (پ۶،المائدۃ:۲۴)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : तो आप जाइये और आप का रब तुम दोनों लड़ो हम यहां बैठे हैं।

या रसूलल्लाह صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! हम हुज़ूर صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के नाम पर कुरबान हो जाने को तैयार हैं। अन्सार ने अ़र्ज़ किया : या रसूलल्लाह صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! हम आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم पर ईमान ले लाए हैं। उस ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! जिस ने आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को मबऊ़ष फ़रमाया है अगर आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم हमें दरया में कूद जाने का इर्शाद फ़रमाएंगे तो हम उस में कूद जाएंगे। या रसूलल्लाह صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم हम से मश्वरा क्यूं त़लब फ़रमाते हैं ? हम बे वफ़ाई करने वाले नहीं हैं !

تعالٰی اللہ येह शेवा ही नहीं है बा वफ़ाओं का
पिया है दूध हम लोगों ने ग़ैरत वाली माओं का
नबी का हुक्म हो तो कूद जाएं हम समन्दर में
*जहां को महूव कर दें ना'रए **अल्लाहु अक्बर** में*

हुज़ूर صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم अपने सहाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان का मुजाहिदाना जवाब पा कर बहुत खुश हुवे।

(مدارج النبوت، قسم سوم، ذکر سال دوم از ھجرت مذکور جنگ بدر، ج۲، ص۸۳)

ह़ज़रते का'ब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की दर्दनाक कहानी : तीन सह़ाबा ह़ज़रते का'ब बिन मालिक, हिलाल बिन उमय्या और मिरारह बिन रबीअ़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُم बिग़ैर किसी क़वी उ़ज़्र के सुस्ती के बाइ़ष जंगे तबूक में शरीक न हो सके। ह़ज़रते का'ब बिन मालिक رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ अपनी सरगुज़िश्त बड़ी तफ़्सील के साथ खुद ही बयान फ़रमाते हैं कि : मैं जंगे तबूक से पहले किसी लड़ाई में भी इतना मालदार नहीं था जितना तबूक के वक़्त था उस वक़्त मेरे पास खुद ज़ाती दो ऊंटनियां थीं इस से पहले कभी मेरे पास दो ऊंटनियां न हुई थीं। जंगे तबूक के मौक़अ़ पर चूंकि सफ़र दूर का था और गर्मी भी शदीद थी इस लिये हुज़ूर صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने साफ़ ए'लान फ़रमाया था कि लोग तैयारी कर लें चुनान्चे मुसलमानों की इतनी बड़ी जमाअ़त हुज़ूर صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के साथ हो गई कि रजिस्टर में उन का नाम भी लिखना दुश्वार था और मजमअ़ की कषरत की वजह से कोई शख़्स अगर छुपना चाहता कि मैं न जाऊं और पता न चले तो हो सकता था। मैं भी सामाने सफ़र की तैयारी का इरादा सुब्ह़ ही करता मगर शाम हो जाती और किसी क़िस्म की तैयारी की नौबत न आती। मैं अपने दिल में ख़याल करता कि मुझे वुस्अ़त ह़ासिल है पुख़्ता इरादा करूंगा तय्यारी फ़ौरन हो जाएगी।

इसी त़रह़ दिन गुज़रते गए ह़त्ता कि हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم रवाना भी हो गए और मुसलमान आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के साथ साथ थे मगर मेरा सामाने सफ़र तैयार न हुवा। फिर मुझे येह ख़याल रहा कि एक दो रोज़ में तैयार हो कर लश्कर से जा मिलूंगा। इस त़रह़ आज कल पर टालता रहा ह़त्ता कि हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم और मुसलमान तबूक को रवाना हो गए। उस वक़्त मैं ने कोशिश भी की मगर सामान न हो सका। अब जब मदीनए मुनव्वरा में इधर उधर देखता हूं तो सिर्फ़ वोही लोग मिलते हैं जिन के ऊपर निफ़ाक़ का बदनुमा दाग़ लगा हुवा था या मा'ज़ूर थे। उधर हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने तबूक पहुंच कर दरयाफ़्त फ़रमाया कि का'ब رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه नज़र नहीं पड़ते क्या बात हुई ? एक साहि़ब ने अ़र्ज़ किया : या रसूलल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! उस को मालो जमाल के फ़ख़्र ने रोका, ह़ज़रते मुआ़ज़ رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه ने फ़रमाया कि ग़लत़ कहा : हम जहां तक समझते हैं वोह भले आदमी हैं, मगर हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने बिल्कुल सुकूत फ़रमाया और कुछ इर्शाद न फ़रमाया ह़त्ता कि चन्द रोज़ में हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की वापसी की ख़बर सुनी तो मुझे रंजो ग़म हुवा और फ़िक्र पैदा हुई। दिल में झूटे झूटे उ़ज़्र आते थे कि इस वक़्त किसी फ़र्ज़ी उ़ज़्र से जान बचा लूं फिर किसी वक़्त मुआ़फ़ी की दरख़्वास्त कर लूंगा और इस बारे में अपने घराने के हर समझदार से मश्वरा करता रहा मगर जब मुझे मा'लूम हुवा कि हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم तशरीफ़ ले ही आए तो मेरे दिल ने फ़ैसला किया कि बिग़ैर सच के कोई चीज़ नजात न देगी और मैं ने सच सच अ़र्ज़ करने की ठान ली।

हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की आ़दत थी कि जब सफ़र से वापस तशरीफ़ लाते तो अव्वल मस्जिद में तशरीफ़ ले जाते और दो रक्अ़त तहि़य्यतुल मस्जिद पढ़ते और वहां थोड़ी देर तशरीफ़ रखते कि लोगों से मुलाक़ात फ़रमाएं। चुनान्चे ह़स्बे मा'मूल

हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم तशरीफ़ लाए तो मस्जिद में तशरीफ़ ले गए और वहां तशरीफ़ फ़रमा रहे और मुनाफ़िक़ लोग झूटे झूटे उ़ज़्र करते और क़समें खाते रहे कि हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم उन के ज़ाहिरी ह़ाल को क़बूल फ़रमाते रहे कि इतने में मैं भी ह़ाज़िर हुवा और हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को सलाम किया, हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने नाराज़ी के अन्दाज़ में तबस्सुम फ़रमाया और ए'राज़ फ़रमाया : मैं ने अ़र्ज़ किया : या नबिय्यल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने ए'राज़ क्यूं फ़रमा लिया। ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! मैं न तो मुनाफ़िक़ हूं न मुझे ईमान में कुछ तरद्दुद है। इर्शाद फ़रमाया कि : यहां आ। मैं क़रीब हो कर बैठ गया, हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : तुझे किस चीज़ ने रोका ? मैं ने अ़र्ज़ किया : या रसूलल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم अगर मैं किसी दुन्यादार के पास इस वक़्त होता तो मुझे यक़ीन है कि मैं उस के ग़ुस्से से कोई न कोई बात बना कर ख़लासी पा लेता कि मुझे बात करने का सलीक़ा **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने अ़ता फ़रमाया है। लेकिन या रसूलल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के मुतअ़ल्लिक़ मुझे इ़ल्म है कि आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के सामने झूट नहीं चल सकता। और अगर मैं आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से सच्ची बात अ़र्ज़ करूं जिस से आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم मुझ से नाराज़ हो जाएं तो मुझे उम्मीद है कि ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ की ज़ाते पाक आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के इताब को ज़ाइल कर देगी। हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم मैं सच ही अ़र्ज़ करता हूं कि वल्लाह عَزَّوَجَلَّ ! मुझे कोई उ़ज़्र न था और जैसा फ़ारिग़ और वुस्अ़त वाला मैं उस ज़माने में था किसी ज़माने में भी इस से पहले न हुवा था। हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : इस ने सच कहा। फिर फ़रमाया कि अच्छा उठ जाओ, तुम्हारा फ़ैसला **अल्लाह** तआ़ला ख़ुद फ़रमाएगा। मैं वहां से उठा तो मेरी क़ौम के बहुत से लोगों ने मुझ

से कहा : ब ख़ुदा हम नहीं जानते कि तू ने इस से पहले कोई गुनाह किया हो। अगर तू कोई उ़ज़्र कर के हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से इस्तिग़्फ़ार की दरख़्वास्त करता तो हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का इस्तिग़्फ़ार तेरे लिये काफ़ी था।

मैं ने उन से पूछा कि कोई और भी ऐसा शख़्स है जिस के साथ येह मुआ़मला हुवा हो। लोगों ने बताया कि दो शख़्सों के साथ और भी येही मुआ़मला हुवा कि उन्हों ने भी येही गुफ़्त्गू की जो तू ने की और येही जवाब उन को भी मिला है जो तुझ को मिला। एक हिलाल बिन उमय्या और दूसरे मिरारह बिन रबीअ़ (رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا) मैं ने देखा कि दो सालेह़ शख़्स जो दोनों बदरी हैं वोह भी मेरे शरीके ह़ाल हैं, (का'ब رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه फ़रमाते हैं कि) हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने हम तीनों से बोलने की भी मुमानअ़त फ़रमा दी कि कोई शख़्स हम से कलाम न करे। अब इस इर्शाद की सह़ाबए किराम رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُم ने ता'मील इस त़रह़ कर के दिखा दी कि हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की मुमानअ़त पर लोगों ने हम से बोलना छोड़ दिया और हम से इजतिनाब किया। गोया दुन्या ही बदल गई ह़त्ता कि ज़मीन बा वुजूद अपनी वुस्अ़त के हमें तंग मा'लूम होने लगी सारे लोग अजनबी मा'लूम होने लगे। दरो दीवार बेगाने हो गए मुझे सब से ज़ियादा फ़िक्र इस बात की थी कि अगर मैं इस ह़ाल में मर गया तो हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم जनाज़े की नमाज़ भी न पढ़ेंगे और ख़ुदा न ख़्वास्ता हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का विसाल शरीफ़ हो गया तो मैं हमेशा हमेशा के लिये ऐसा ही रहूंगा। न मुझ से कोई कलाम करेगा न मेरी नमाज़े जनाज़ा पढ़ेगा कि हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के इर्शाद के ख़िलाफ़ कौन कर सकता है ?

ग़रज़ हम तीनों ने पचास दिन इस ह़ाल में गुज़ारे। मेरे दोनों रुफ़क़ा शुरूअ़ ही से घर में छुप कर बैठ गए थे। मैं सब में क़वी था, चलता फिरता, बाज़ार में जाता, नमाज़ में शरीक होता, मगर

मुझ से कोई बात न करता। हुज़ूर صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की मजलिस में हाज़िर हो कर सलाम करता। और बहुत ग़ौर से ख़याल करता कि हुज़ूर صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के लब मुबारक जवाब के लिये हिले या नहीं ? नमाज़ के बा'द हुज़ूर صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के क़रीब ही खड़े हो कर नमाज़ पूरी करता और आंख चुरा कर देखता कि हुज़ूर صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم मुझे देखते भी हैं या नहीं। जब मैं मश्ग़ूल होता तो हुज़ूर صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم मुझे देखते और जब मैं उधर मुतवज्जेह होता तो हुज़ूर صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم मुझ से रुखे़ अन्वर फेर लेते और मेरी जानिब से ए'राज़ फ़रमा लेते।

ग़रज़ येही हालात गुज़रते रहे और मुसलमानों का बात चीत बन्द कर देना मुझ पर बहुत ही भारी हो गया तो मैं अबू क़तादा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की दीवार पर चढ़ा वोह मेरे रिश्ते के चचाज़ाद भाई थे और मुझ से तअ़ल्लुक़ात भी बहुत ही ज़ियादा थे मैं ने ऊपर चढ़ कर सलाम किया तो उन्हों ने भी सलाम का जवाब न दिया। मैं ने उन को क़सम दे कर पूछा कि क्या तुम्हें मा'लूम नहीं कि मुझे **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ और उस के रसूल صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से मह़ब्बत है। उन्हों ने इस का जवाब न दिया। मैं ने दोबारा क़सम दी और दरयाफ़्त किया वोह फिर भी चुप ही रहे। मैं ने तीसरी बार क़सम दे कर पूछा तो उन्हों ने सिर्फ़ इतना कहा। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ जाने और उस का रसूल صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم। येह कलिमा सुन कर मेरी आंखों से आंसू निकल पड़े और मैं वहां से लौट आया।

इसी दौरान में एक मरतबा मदीने के बाज़ार में जा रहा था कि एक क़िब्ती को जो नस्रानी था और शाम से मदीनए मुनव्वरा अपना ग़ल्ला फ़रोख़्त करने आया था येह कहते हुवे सुना कि कोई का'ब बिन मालिक (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ) का पता बताइये। लोगों ने उस को मेरी त़रफ़ इशारा कर के बताया। वोह नस्रानी मेरे पास आया और ग़स्सान के काफ़िर बादशाह का ख़त़ मुझे ला कर दिया, उस

में लिखा हुवा था, "हमें मा'लूम हुवा है कि तुम्हारे आक़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने तुम पर ज़ुल्म कर रखा है तुम्हें **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ज़िल्लत की जगह न रखे और ज़ाएअ़ न करे तुम हमारे पास आ जाओ हम तुम्हारी मदद करेंगे।" हज़रते का'ब बिन मालिक رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُ फ़रमाते हैं कि मैं ने येह ख़त पढ़ कर اِنَّا لِلّٰهِ पढ़ा कि मेरी हालत यहां तक पहुंच गई है कि काफ़िर भी मुझ में तम्अ़ करने लगे हैं और मुझे इस्लाम तक से हटाने की तदबीरें होने लगी हैं। येह एक मुसीबत और आई और उस ख़त को मैं ने एक तन्नूर में फेंक दिया और हुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से जा कर अ़र्ज़ किया : या रसूलल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! अब तो आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के ए'राज़ की वजह से काफ़िर भी मुझ में तम्अ़ करने लगे।

इस हालत में हम पर चालीस रोज़ गुज़रे थे कि हुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का क़ासिद मेरे पास हुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का येह इर्शाद वाला ले कर आया कि अपनी ज़ौजा को भी छोड़ दो। मैं ने दरयाफ़्त किया कि क्या मन्शा है उस को त़लाक़ दे दूं ? कहा, नहीं बल्कि उस से अलाहि़दगी इख़्तियार कर लो और मेरे दोनों साथियों के पास भी इन ही क़ासिद की मा'रिफ़त येही हुक्म पहुंचा, मैं ने अपनी ज़ौजा से कह दिया कि तू अपने मैके चली जा जब तक **अल्लाह** तआ़ला इस अम्र का फ़ैसला न फ़रमाए, वहीं रहना। हिलाल बिन उमय्या की ज़ौजा हुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में ह़ाज़िर हुई और अ़र्ज़ किया : या रसूलल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! हिलाल बिल्कुल बुढ्ढे शख़्स हैं कोई ख़बरगीरी करने वाला न होगा तो हलाक हो जाएंगे, अगर आप इजाज़त दें तो मैं कुछ काम काज उन का कर दिया करूं। हुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया अच्छा इस बात की तुझे इजाज़त है मगर क़ुर्बत न हो, उन्हों ने अ़र्ज़ किया : या रसूलल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! इस बात की त़रफ़ तो उन को मैलान भी नहीं जिस रोज़ से येह वाक़ेआ़ पेश आया है आज तक उन का वक़्त रोते ही गुज़र रहा है।

हज़रते का'ब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं कि इस हाल में दस रोज़ और गुज़रे कि हम से बातचीत मेल जोल छुटे हुवे पूरे पचास दिन हो गए। पचासवें दिन सुब्ह की नमाज़ अपने घर की छत पर पढ़ कर मैं निहायत ग़मगीन बैठा हुवा था कि ज़मीन मुझ पर बिल्कुल तंग थी और ज़िन्दगी दूभर हो रही थी कि सुल्अ़ पहाड़ की चोटी पर एक ज़ोर से चिल्लाने वाले ने आवाज़ दी कि का'ब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ खुशख़बरी हो तुम को। मैं इतना ही सुन कर सजदे में गिर गया और खुशी के मारे रोने लगा और समझा कि तंगी दूर हो गई। हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने सुब्ह की नमाज़ के बा'द हमारी मुआ़फ़ी का ए'लान फ़रमाया, जिस पर एक शख़्स ने पहाड़ पर चढ़ कर ज़ोर से आवाज़ दी जो सब से पहले पहुंच गई, इस के बा'द एक साहिब घोड़े पर सुवार भागे हुवे आए, मैं ने अपने पहनने के कपड़े उस बिशारत देने वाले की नज़्र किये और फिर हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में हाज़िर हुवा। इस तरह़ मेरे दोनों साथियों के पास भी खुशख़बरी ले कर लोग गए। मैं जब मस्जिदे नबवी में गया तो लोग ख़िदमते अक्दस में हाज़िर थे। मुबारक बाद देने के लिये दौड़े और सब से पहले अबू तल्हा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने बढ़ कर मुबारक बाद दी और मुसाफ़ह़ा किया जो हमेशा ही यादगार रहेगा। मैं ने हुज़ूरे अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की बारगाह में जा कर सलाम किया तो चेहरए अन्वर खिल रहा था और खुशी के अन्वार चेहरए मुबारक से ज़ाहिर हो रहे थे। हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का चेहरए मुबारक खुशी के वक़्त चांद की तरह़ चमकने लगता था।

मैं ने अ़र्ज़ किया : या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! मेरी तौबा की तक्मील येह है कि मेरी जितनी जाएदाद है वोह सब **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के रास्ते में सदक़ा है (इस लिये कि येह इमारत व

षरवत ही इस मुसीबत का सबब बनी थी) हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि इस में तंगी होगी कुछ हिस्सा अपने पास भी रहने दो, मैं ने अ़र्ज़ किया बेहतर है कुछ हिस्सा मेरे पास भी रहने दिया जाए, मुझे सच ही ने नजात दी इस लिये मैं ने अ़हद किया कि हमेशा सच ही बोलूंगा। (صحیح البخاری، کتاب المغازی، باب حدیث کعب بن مالک.....الخ، الحدیث: ٤٤١٨، ج٣، ص١٤٥)

फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ का फ़ैसला : हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के ज़माने में एक यहूदी और एक मुनाफ़िक़ में किसी बात पर झगड़ा पैदा हो गया। यहूदी चाहता था कि जिस त़रह़ भी हो मैं इसे ह़ज़रत मुह़म्मद صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में ले चलूं। चुनान्चे वोह कोशिश कर के उसे हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की बारगाहे अ़दालत में ले आया और हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने वाक़िआ़त सुन कर फ़ैसला यहूदी के ह़क़ में दिया। वोह मुनाफ़िक़ यहूदी से कहने लगा मैं तो उ़मर رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ के पास चलूंगा और उन का ही फ़ैसला मन्ज़ूर करूंगा। यहूदी बोला, अ़जीब उल्टे आदमी हो। कोई बड़ी अ़दालत से हो कर छोटी अ़दालत में भी जाता है ? जब तुम्हारे पैग़म्बर (मुह़म्मद صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) फ़ैसला दे चुके तो अब उ़मर رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ के पास जाने की क्या ज़रूरत है ?

मगर वोह मुनाफ़िक़ न माना और उस यहूदी को ले कर ह़ज़रते उ़मर رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ के पास आया और ह़ज़रते उ़मर رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ से फ़ैसला त़लब करने लगा, यहूदी बोला जनाब पहले येह बात सुन लीजिये कि हम इस से क़ब्ल मुह़म्मद صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से फ़ैसला ले आए हैं और उन्हों ने फ़ैसला मेरे ह़क़ में फ़रमा दिया है मगर येह शख़्स उस फ़ैसले से मुत़मइन नहीं और अब यहां आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ के पास आ पहुंचा है। ह़ज़रते उ़मर رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ ने येह बात सुनी तो मुनाफ़िक़ से पूछा क्या यहूदी जो कुछ बयान कर रहा

है दुरुस्त है ? मुनाफ़िक़ ने कहा हां सरकार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم इस के ह़क़ में फ़ैसला कर चुके हैं । फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : अच्छा ठहरो मैं अभी आया और तुम्हारा फ़ैसला करता हूं, येह कह कर आप अन्दर तशरीफ़ ले गए और फिर एक तल्वार ले कर निकले और उस मुनाफ़िक़ की गरदन पर येह कहते हुवे मारी कि जो हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़ैसला न माने उस का फ़ैसला येह है ।

हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم तक येह बात पहुंची तो आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया वाक़ेई उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की तल्वार किसी मोमिन पर नहीं उठती । फिर **अल्लाह** तआ़ला ने येह आयत भी नाज़िल फ़रमा दी ।

فَلَا وَرَبِّكَ لَا يُؤْمِنُوْنَ حَتّٰى يُحَكِّمُوْكَ فِيْمَا شَجَرَ بَيْنَهُمْ

(پ۵،النساء:۶۵)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *तो ऐ मह़बूब तुम्हारे रब की क़सम वोह मुसलमान न होंगे जब तक अपने आपस के झगड़े में तुम्हें ह़ाकिम न बनाएं ।*

(الدرالمنثور،النساء:٦٥،ج٢،ص٥٨٥)

शमशीरे उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ और मामूं का सर : जंगे बद्र में ह़ज़रते उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का ह़क़ीक़ी मामूं आ़स बिन हिश्शाम बिन मुग़ीरा गुस्से में भरा हुवा जंग के लिये मैदान में निकला, ह़ज़रते फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने बढ़ कर मुक़ाबला किया । और भांजे ने मामूं के सर पर ऐसी तल्वार मारी कि सर को काटते हुवे जबड़े तक उतर गई और फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने क़ियामत तक के लिये येह नज़ीर क़ाइम कर दी कि क़बीला और रिश्तेदारी सब कुछ मह़ब्बते रसूल صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم पर क़ुरबान है ।

बेटे की तल्वार बाप का सर : सि. 5 हि. में बनुल मुस्त़लक़ की मशहूर जंग हुई, इस में एक मुहाजिर और एक अन्सारी की बाहम लड़ाई हो गई, मा'मूली बात थी मगर बढ़ गई, हर एक ने अपनी अपनी क़ौम से दूसरे के ख़िलाफ़ मदद चाही और दो फ़रीक़ हो गए। क़रीब था कि आपस में लड़ाई हो जाए मगर बा'ज़ लोगों ने दरमियान में पड़ कर सुल्ह़ करा दी। अ़ब्दुल्लाह बिन उबय्य मुनाफ़िक़ों का सरदार और मुसलमानों का सख़्त मुख़ालिफ़ था मगर चूंकि इस्लाम ज़ाहिर करता था इस लिये उस के साथ ख़िलाफ़ का बरताव न किया जाता था। और येही उस वक़्त के मुनाफ़िको के साथ आ़म बर्ताव किया जाता था। उस को जब इस क़िस्से की ख़बर हुई तो उस ने हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की शान में गुस्तख़ाना लफ़्ज़ कहे और अपने दोस्तों से ख़ित़ाब कर के कहा कि येह सब कुछ तुम्हारा अपना ही किया हुवा है। तुम ने इन लोगों को अपने शहरों में ठिकाना दिया, अपने मालों को इन के दरमियान आधा आधा बांट दिया अगर तुम इन लोगों की मदद करना छोड़ दो तो अभी सब चले जाएं और येह भी कहा कि ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! अगर हम मदीना पहुंच गए तो हम इ़ज़्ज़त वाले मिल कर इन ज़लीलों को वहां से निकाल देंगे।

ह़ज़रते ज़ैद बिन अरक़म رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ नौ उ़म्र बच्चे थे। वहां मौजूद थे, येह सुन कर ताब न ला सके, कहने लगे, ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! तू ज़लील है, तू अपनी क़ौम में भी तिरछी निगाहों से देखा जाता है। तेरा कोई ह़िमायती नहीं और मुह़म्मद صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم इ़ज़्ज़त वाले हैं। रह़मान عَزَّوَجَلَّ की त़रफ़ से भी इ़ज़्ज़त दिये गए हैं और अपनी क़ौम में भी इ़ज़्ज़त वाले हैं, अ़ब्दुल्लाह बिन उबय्य ने कहा अच्छा चुपका रह मैं तो वैसे ही मज़ाक़ में कह रहा था, मगर ह़ज़रते ज़ैद رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ ने जा कर हुज़ूरे अक़्दस صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से नक़्ल कर दिया। ह़ज़रते उ़मर رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ ने दरख़्वास्त भी की,

कि इस काफ़िर की गरदन उड़ा दी जाए मगर हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इजाज़त मर्हमत न फ़रमाई। अ़ब्दुल्लाह बिन उबय्य को जब इस की ख़बर हुई कि हुज़ूर तक येह क़िस्सा पहुंच गया है तो ह़ाज़िरे ख़िदमत हो कर झूटी क़समें खाने लगा कि मैं ने कोई ऐसा लफ़्ज़ नहीं कहा है। ज़ैद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने झूट नक़्ल कर दिया है। अन्सार के भी कुछ लोग ह़ाज़िरे ख़िदमत थे। उन्हों ने भी सिफ़ारिश की के या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! अ़ब्दुल्लाह क़ौम का सरदार है बड़ा आदमी शुमार होता है कि एक बच्चे की बात उस के मुक़ाबले में क़ाबिले क़बूल नहीं। मुमकिन है कि सुनने में कुछ ग़लती हुई हो या समझने में। हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने उस का उ़ज़्र क़बूल फ़रमा लिया।

ह़ज़रते ज़ैद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को जब उस की ख़बर हुई कि उस ने झूटी क़समों से अपने को सच्चा षाबित कर दिया और ज़ैद को झुटला दिया तो शर्म की वजह से बाहर निकलना छोड़ दिया। बिल आख़िर सूरए मुनाफ़िक़ून नाज़िल हुई जिस से ह़ज़रते ज़ैद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की सच्चाई और अ़ब्दुल्लाह बिन उबय्य की झूटी क़समों का राज़ खुल गया। ह़ज़रते ज़ैद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की वक़्अ़त मुवाफ़िक़ व मुख़ालिफ़ सब की नज़रों में बढ़ गई और अ़ब्दुल्लाह बिन उबय्य का क़िस्सा भी सब पर ज़ाहिर हो गया। अ़ब्दुल्लाह बिन उबय्य के बेटे का नाम भी अ़ब्दुल्लाह था और बड़े पक्के मुसलमान और सच्चे आ़शिक़े रसूल थे। जंग से वापसी के वक़्त मदीनए मुनव्वरा से बाहर तल्वार खींच कर खड़े हो गए और बाप से कहने लगे : उस वक़्त तक मदीने में दाख़िल होने नहीं दूंगा जब तक तू उस का इक़रार न करे कि तू ज़लील है और मुह़म्मद صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم अ़ज़ीज़ हैं। उस को बड़ा तअ़ज्जुब हुवा क्यूंकि येह हमेशा से बाप के साथ नेकी का बरताव करने वाले थे मगर हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के मुक़ाबले में बाप की कोई इ़ज़्ज़त व मह़ब्बत दिल में न रही।

आख़िर उस ने मजबूर हो कर इक़रार किया कि वल्लाह मैं ज़लील हूं और मुह़म्मद صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم अ़ज़ीज़ हैं। इस के बा'द मदीने में दाख़िल हो सका। (السیرۃ النبویۃ،جھجاہ وسنان وما کان من ابن أبی،ج۳،ص۲۴۸۔۲۴۹)

इसी त़रह़ जंगे बद्र में कुफ़्फ़ार का सिपह सालार उ़त्बा बिन रबीआ़ जब मैदान में निकला तो उस के फ़रज़न्द ह़ज़रते अबू हुज़ैफ़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ तल्वार खींच कर उस के मुक़ाबले को निकले, मगर रह़मते आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इस को गवारा नहीं फ़रमाया कि बेटे की तल्वार बाप के ख़ून से रंगीन हो, इस लिये अबू हुज़ैफ़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ मुक़ाबले से हटा दिये गए और उ़त्बा बिन रबीआ़ ह़ज़रते ह़म्ज़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की तल्वार से क़त्ल हुवा।

बाप नापाक बिस्तर पाक : उम्मुल मोअमिनीन ह़ज़रते उम्मे ह़बीबा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا के वालिद अबू सुफ़्यान सुल्ह़े हुदैबिया के ज़माने में मदीना आए, अपनी बेटी से मिलने गए और बिस्तर पर बैठने लगे तो बीबी उम्मे ह़बीबा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا ने बिस्तर उलट दिया और फ़रमाया कि येह अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के ह़बीब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का पाक बिस्तर है और तुम मुशरिक होने की वजह से नापाक हो इस लिये तुम इस बिस्तरे नबुव्वत पर नहीं बैठ सकते। अबू सुफ़्यान को इस से बड़ा रंज हुवा मगर ह़ज़रते उम्मे ह़बीबा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا के दिल में जो अ़ज़मत व मह़ब्बते रसूल थी उस के लिह़ाज़ से वोह कब बरदाश्त कर सकती थीं कि बिस्तरे नबुव्वत पर एक मुशरिक बैठे। अल्लाहु अक्बर ! ह़ज़रते उम्मे ह़बीबा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا ने अपने बाप की अ़ज़मत व मह़ब्बत को मह़ब्बते रसूल पर क़ुरबान कर दिया क्यूंकि येही ईमान की शान है कि बाप छूटता हो तो छूट जाए मगर अ़ज़मते मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم और मह़ब्बते रसूल صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का दामन न छूटने पाए।

(الطبقات الکبری،ام حبیبۃ بنت سفیان رضی اللّٰہ عنہا،ج۸،ص۷۸)

मा'रिकए उहुद में सहाबा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُم की जां निषारी

हज़रते अ़ली رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ **:** गज़्वए उहुद में मुसलमानों को कुछ शिकस्त का सामना हुवा। उस वक़्त मुसलमान चारों तरफ़ से कुफ़्फ़ार के नर्ग़े में आ गए, जिस की वजह से बहुत से लोग शहीद भी हुवे और कुछ भागे। नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को भी कुफ़्फ़ार ने घेर लिया और येह मश्हूर कर दिया था कि हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم शहीद हो गए। सहाबए किराम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُم इस ख़बर से बहुत परेशान हुवे, और इसी वजह से बहुत से इधर उधर मुतफ़र्रिक़ हो गए।

हज़रते अ़ली كَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْہَہُ الْکَرِیْم फ़रमाते हैं कि कुफ़्फ़ार ने जब मुसलमानों को घेर लिया और हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم मेरी नज़र से ओझल हो गए तो मैं ने आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को अव्वल ज़िन्दों में तलाश किया, न पाया, फिर शुहदा में जा कर तलाश किया वहां भी न पाया, तो मैं ने अपने दिल में कहा कि ऐसा तो नहीं हो सकता कि हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم लड़ाई से भाग जाएं। ब ज़ाहिर हक़ तआला हमारे आ'माल की वजह से हम पर नाराज़ हुवा। इस लिये अपने पाक रसूल صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को आस्मान पर उठा लिया। इस लिये अब इस से बेहतर कोई सूरत नहीं कि मैं तलवार ले कर काफ़िरों के जथ्थे में घुस जाऊं। यहां तक कि मारा जाऊं। मैं ने तलवार ले कर ह़म्ला किया। यहां तक कि कुफ़्फ़ार बीच में से हटते गए।

अचानक मेरी निगाह हुज़ूरे अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم पर पड़ गई तो बे ह़द मसर्रत हुई और मैं ने समझा कि **अल्लाह** तआला ने मलाइका के ज़रीए अपने मह़बूब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की हिफ़ाज़त की। मैं हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के पास जा कर खड़ा हुवा। हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : अ़ली ! इन को

रोको। मैं ने तन्हा उस जमाअ़त का मुक़ाबला किया और उन के मुंह फेर दिये और बा'ज़ों को क़त्ल किया इस के बा'द फिर एक और जमाअ़त हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर ह़म्ले के लिये बढ़ी, आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फिर ह़ज़रते अ़ली رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه की त़रफ़ इशारा किया उन्हों ने फिर तन्हा उस जमाअ़त का मुक़ाबला किया। इस के बा'द ह़ज़रते जिब्रईल عَلَیْهِ السَّلَام ने आ कर ह़ज़रते अ़ली رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه की इस जवां मर्दी और मदद की ता'रीफ़ की तो हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : انه منی وانا منه बे शक अ़ली मुझ से है और मैं अ़ली से हूं, या'नी कमाले इत्तिह़ाद की त़रफ़ इशारा फ़रमाया तो ह़ज़रते जिब्रईल عَلَیْهِ السَّلَام ने अ़र्ज़ किया : ''وانا منکما'' और मैं तुम दोनों से हूं। (مدارج النبوت،قسم سوم،باب چهارم،ج۲،ص۱۲۱،۱۲۲)

ग़सीलुल मलाइका : जंगे उहुद के अय्याम में ह़ज़रते ह़न्ज़ला बिन अबी आ़मिर رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه की शादी हुई थी। जिस रात आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه अपनी दुल्हन को बियाह कर लाए थे, इसी रात हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की त़रफ़ से ए'लान हो गया कि कुफ़्फ़ारे मक्का मदीनए मुनव्वरा पर ह़म्ला करने वाले हैं, उन के मुक़ाबले के लिये मैदाने जिहाद में चलो। ह़ज़रते ह़न्ज़ला رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه बा वुजूद येह कि नौ जवान थे और शादी की पहली शब थी मगर हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की त़रफ़ से ए'लाने जिहाद सुन कर सब कुछ भूल गए और अपनी दुल्हन को भी नज़र अन्दाज़ किया, गोया येह शे'र पढ़ते हुवे कि :

सब से बेगाना रहे यार व शनासा तेरा
हूर पर आंख न डाले कभी शैदा तेरा

मैदाने जिहाद में चलने के लिये उठ खड़े हुवे और इस मह़विय्यत के आ़लम में आप को अपने ग़ुस्ल करने की ज़रूरत भी

याद न रही। इसी हालत में मा'रिकए जंग में तशरीफ़ ले गए और उसी दिन हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के सामने शहीद भी हो गए। जब लड़ाई ख़त्म हुई तो शुहदा की लाशें जम्अ़ करने का हुक्मे नबवी हुवा ! सब लाशें मिल गईं मगर ह़ज़रते ह़न्ज़ला رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की लाश मुबारक न मिली, यकायक हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने आस्मान की त़रफ़ निगाह उठा कर मुलाह़ज़ा फ़रमाया तो देखा कि ह़ज़रते ह़न्ज़ला رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की लाश फ़िरिश्ते उपर ले जा कर एक नूरानी तख़्ते पर लिटा कर आबे रह़मत से ग़ुस्ल दे रहे हैं। उसी दिन से आप का लक़ब ग़सीलुल मलाइका हुवा।

(الاستیعاب، حضرت حنظلہ بن ابی عامر رضی اللہ عنہ، ج۱، ص۴۳۳)

शौके़ शहादत : ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन जह़श رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने ग़ज़वए उहुद में ह़ज़रते सा'द बिन अबी वक़्क़ास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से कहा कि ऐ सा'द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ! आओ मिल कर दुआ़ करें, हर एक अपनी ज़रूरत के मुत़ाबिक़ दुआ़ करे और दूसरा आमीन कहे। फिर दोनों ह़ज़रात ने एक कोने में जा कर दुआ़ की। अव्वल ह़ज़रते सा'द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने दुआ़ की। या अल्लाह ! عَزَّوَجَلَّ जब कल लड़ाई हो तो मेरे मुक़ाबले में एक बड़े बहादुर को मुक़र्रर फ़रमाना मैं उस को तेरे रास्ते में क़त्ल करूं। ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने आमीन कही। इस के बा'द ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने दुआ़ की : ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ! कल मैदाने जिहाद में मेरा एक बहादुर से मुक़ाबला करा जो सख़्त ह़मले वाला हो मैं उस पर शिद्दत से ह़म्ला करूं वोह भी मुझ पर ज़ोर से ह़म्ला करे और मैं बहुतों को क़त्ल कर के फिर ख़ुद भी शहीद हो जाऊं और शहीद होने के बा'द काफ़िर मेरे नाक कान काट लें फिर क़ियामत में जब मैं तेरे हुज़ूर पेश किया जाऊं तो तू फ़रमाए : अ़ब्दुल्लाह ! तेरे नाक कान क्यूं काटे गए ?

तो मैं अ़र्ज़ करूं : या **अल्लाह** ! عَزَّوَجَلَّ तेरे और तेरे रसूल صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के रास्ते में काटे गए। फिर तू कहे कि सच है मेरे ही रास्ते में काटे गए। ह़ज़रते सा'द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने आमीन कही, दूसरे दिन लड़ाई हुई तो दोनों ह़ज़रात की दुआ़एं इसी त़रह़ क़बूल हुईं जिस त़रह़ मांगी थी। (الاستيعاب،باب حرف العين،ج٣،ص١٥)

क़दमे रसूल صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم **पर शहादत :** जंगे उहुद की हल चल और बद ह़वासी में जब महरे रिसालत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को हुजूमे कुफ़्फ़ार के दल बादल ने घेर लिया। और उस वक़्त सय्यिदुल मह़बूबीन صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि कौन मुझ पर जान देता है ? तो ह़ज़रते ज़ियाद बिन सिकन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ चन्द अन्सारियों को ले कर येह ख़िदमत अदा करने के लिये बढ़े। हर एक ने जां बाज़ी से लड़ते हुवे अपनी जान फ़िदा कर दी, मगर एक ज़ख़्म भी रह़मते आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को लगने न दिया, और ज़ियाद बिन सिकन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को येह शरफ़ ह़ासिल हुवा कि ज़ख़्मों से चूर चूर हो कर दम तोड़ रहे थे। रह़मते आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने हुक्म दिया कि उन का लाशा मेरे क़रीब लाओ, लोग उठा कर लाए, अभी कुछ जान बाक़ी थी। आप ने ज़मीन पर घसीट कर अपना मुंह मह़बूबे ख़ुदा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के क़दमों पर रख दिया और इसी ह़ालत में आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की रूह़ परवाज़ कर गई। (اسدالغابة فى معرفة الصحابة، حضرت زياد بن سكن رضى الله عنه ، ج٢، ص٣٢١)

तेरे क़दमों पर सर हो और तारे ज़िन्दगी टूटे
येही अन्जामे उल्फ़त है येही मरने का ह़ासिल है

سُبْحٰنَ اللّٰہ ! इस मौत पर हज़ारों ज़िन्दगियां क़ुरबान ! ! !

अस्सी ज़ख़्म : ह़ज़रते अनस बिन नज़्र رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ जो ह़ज़रते अनस बिन मालिक رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के चचा थे, लड़ते लड़ते बहुत आगे निकल गए देखा कि कुछ लोगों ने हथयार फेंक दिये। अनस

बिन नज़्र رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने पूछा कि यहां तुम लोग क्या करते हो ? रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का कुछ पता नहीं ! लोगों ने कहा : अब लड़ कर क्या करेंगे ? जिन के लिये लड़ते थे वोही न रहे। हम ने सुना है कि रह़मते आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم शहीद हो गए। अनस बिन नज़्र رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ येह सुन कर तड़प गए और फ़रमाया कि फिर हम उन के बा'द ज़िन्दा रह कर क्या करेंगे। येह कह कर दुश्मन की फ़ौज में घुस गए और लड़ कर शहादत पाई। जंग के बा'द जब उन की लाश देखी गई तो 80 से ज़ियादा तीर, तल्वार और नेज़े के ज़ख़्म थे, कोई शख़्स पहचान तक न सका, उन की बहन ने उंगली देख कर लाश को पहचाना।

(اسد الغابۃفی معرفۃ الصحابۃ،انس بن نضر،ج ۱،ص ۱۹۸)

ह़ज़रते वहब बिन क़ाबिस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का कारनामा : ह़ज़रते वहब बिन क़ाबिस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ एक सह़ाबी हैं, जो किसी वक़्त में मुसलमान हुवे थे और गांव में रहते थे, बकरियां चराते थे। अपने भतीजे के साथ एक रस्सी में बकरियां बांधे हुवे मदीनए मुनव्वरा पहुंचे, पूछा कि हु़ज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم कहां तशरीफ़ ले गए ? मा'लूम हुवा कि उहुद की लड़ाई पर गए हुवे हैं, वोह बकरियों को वहीं छोड़ कर हु़ज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के पास पहुंच गए, इतने में एक जमाअ़त कुफ़्फ़ार की ह़म्ला करती हुई आई। हु़ज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया जो इन को मुन्तशिर कर दे वोह जन्नत में मेरा रफ़ीक़ है। ह़ज़रते वहब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने ज़ोर से तल्वार चलानी शुरूअ़ की और सब को हटा दिया, दूसरी मरतबा फिर येही सूरत पेश आई, तीसरी मरतबा फिर ऐसा ही हुवा, हु़ज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने उन को जन्नत की ख़ुश ख़बरी दी। इस का सुनना था कि तल्वार ले कर कुफ़्फ़ार के जमघटे में घुस गए और शहीद हुवे।

हज़रते सा'द बिन अबी वक़्क़ास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ कहते हैं कि मैं ने वहब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ जैसी दिलेरी और बहादुरी किसी लड़ाई में नहीं देखी और शहीद होने के बा'द हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को मैं ने देखा कि वहब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ के सिरहाने खड़े थे और इरशाद फ़रमाते थे : **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ तुम से राज़ी हो मैं तुम से राज़ी हूं। इस के बा'द हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने खुद अपने दस्ते मुबारक से दफ़्न फ़रमाया बा वुजूद येह कि इस लड़ाई में हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم खुद भी ज़ख़्मी थे। हज़रते उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि मुझे किसी के अ़मल पर इतना रश्क नहीं आया जितना वहब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ के अ़मल पर आया मेरा दिल चाहता है कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के यहां उन जैसा आ'माल नामा ले कर पहुंचूं।

(الاصابة فی تمییز الصحابة، وھب بن قابس، ج٦،ص٤٩٢)

हज़रते उम्मे अ़म्मारा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا : येह जंगे उहुद में अपने शोहर हज़रते ज़ैद बिन आ़सिम और अपने दो बेटों हज़रते अ़म्मारा और हज़रते अ़ब्दुल्लाह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُم को साथ ले कर मैदान में कूद पड़ीं। और जब कुफ़्फ़ार ने हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم पर ह़म्ला कर दिया तो येह एक ख़न्जर ले कर कुफ़्फ़ार के मुक़ाबले में खड़ी हो गईं और कुफ़्फ़ार के तीर व तल्वार के हर एक वार को रोकती रहीं। यहां तक की जब इब्ने क़मीआ मलऊ़न ने रह़मते आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم पर तल्वार चला दी तो हज़रते उम्मे अ़म्मारा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا ने उस तल्वार को अपनी पीठ पर रोक लिया। चुनान्चे उन के कन्धे पर इतना गहरा ज़ख़्म लगा कि ग़ार पड़ गया। फिर खुद बढ़ कर इब्ने क़मीआ के कन्धे पर इस ज़ोर से तल्वार मारी कि वोह दो टुकड़े हो जाता मगर वोह मलऊ़न दोहरी ज़िरह पहने हुए था इस लिये बच गया। इस जंग में बीबी उम्मे अ़म्मारा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا के सर व गरदन पर तेरह ज़ख़्म लगे थे।

ह़ज़रते बीबी उम्मे अ़म्मारा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا के फ़रज़न्द ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का बयान है कि मुझे एक काफ़िर ने जंगे उहुद में ज़ख़्मी कर दिया और मेरे ज़ख़्म से ख़ून बन्द नहीं होता था। मेरी वालिदा उम्मे अ़म्मारा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا ने फ़ौरन अपना कपड़ा फाड़ कर ज़ख़्म को बांध दिया और कहा, बेटा उठो, खड़े हो जाओ और फिर जिहाद में मश्ग़ूल हो जाओ। इत्तिफ़ाक़ से वोही काफ़िर सामने आ गया। हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि ऐ उम्मे अ़म्मारा (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا) ! देख तेरे बेटे को ज़ख़्मी करने वाला येही है। येह सुनते ही ह़ज़रते उम्मे अ़म्मारा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا ने झपट कर उस काफ़िर की टांग में तल्वार का ऐसा भरपूर हाथ मारा कि वोह काफ़िर गिर पड़ा, और फिर चल न सका बल्कि सुरीन के बल घिसटता हुवा भागा। येह मन्ज़र देख कर रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم मुस्कुराए और फ़रमाया कि ऐ उम्मे अ़म्मारा (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا) ! तू ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ का शुक्र अदा कर कि उस ने तुझ को इतनी त़ाक़त और हिम्मत अ़त़ा फ़रमाई कि तू ने ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ की राह में जिहाद किया।

ह़ज़रते उम्मे अ़म्मारा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا ने अ़र्ज़ किया कि या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم दुआ़ फ़रमाइये कि **अल्लाह** तआ़ला हम लोगों को जन्नत में आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमत गुज़ारी का शरफ़ अ़त़ा फ़रमाए, उस वक़्त आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने उन के लिये और उन के शौहर और उन के बेटों के लिये इस त़रह़ दुआ़ फ़रमाई कि :

اللھم اجعلھم رفقا ئی فی الجنة

या **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! इन सब को जन्नत में मेरा रफ़ीक़ बना दे।

ह़ज़रते बीबी उम्मे अ़म्मारा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا ज़िन्दगी भर अ़लानिया येह कहती रहीं कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की इस दुआ़ के बा'द दुन्या में बड़ी से बड़ी मुसीबत मुझ पर आ जाए तो मुझ को उस की कोई परवाह नहीं है।

(الطبقات الکبری لابن سعد،ام عمارۃ،ج۸،ص۳۰۳)

पयामे सा'द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ **:** इसी उहुद की लड़ाई में हुज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने दरयाफ़्त फ़रमाया कि सा'द बिन रबीअ़ (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ) का ह़ाल मालूम नहीं हुवा कि क्या गुज़री ? एक सह़ाबी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को तलाश के लिये भेजा, वोह शुहदा की जमाअ़त में तलाश कर रहे थे आवाज़ें भी दे रहे थे कि शायद वोह ज़िन्दा हो, फिर पुकार कर कहा कि मुझे हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने भेजा है कि सा'द बिन रबीअ़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की ख़बर लाऊं तो एक जगह से बहुत ही ज़ईफ़ आवाज़ आई। येह उस त़रफ़ बढ़े, जा कर देखा कि सात मक़्तूलीन के दरमियान पड़े हैं और एक आध सांस बाक़ी है। जब येह क़रीब पहुंचे तो ह़ज़रते सा'द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने कहा कि हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से मेरा सलाम कह देना और कह देना कि **अल्लाह** तआ़ला मेरी जानिब से आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को इस से अफ़्ज़ल और बेहतर बदला अ़त़ा फ़रमाए जो किसी नबी عَلَیْہِ السَّلَام को उस के उम्मती की त़रफ़ से बेहतर से बेहतर अ़त़ा किया हो और मुसलमानों को मेरा येह पैग़ाम पहुंचा देना कि अगर काफ़िर हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم तक पहुंच गए और तुम में से कोई एक आंख भी चमकती हुई रहे या'नी वोह ज़िन्दा रहा तो **अल्लाह** तआ़ला के यहां कोई उ़ज़्र भी तुम्हारा न चलेगा और येह कह कर जां बह़क़ हुवे। (الاصابة فی تمییز الصحابة،سعد بن ربیع رضی اللہ عنہ، ج۳،ص۴۹)

ह़ज़रते जाबिर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ **का शौक़ व वारफ़्तगी :** उहुद की लड़ाई से फ़राग़त पर मुसलमान मदीनए त़य्यिबा पहुंचे। जंग की तकान थी। मगर मदीनए मुनव्वरा पहुंचते ही येह इत्तिलाअ़ मिली कि अबू सुफ़्यान ने लड़ाई से वापसी पर ह़ुमैरा अल असद (एक जगह का नाम है) पहुंच कर साथियों से मश्वरा किया और येह राए क़ाइम की, कि उहुद की लड़ाई में मुसलमानों को शिकस्त हुई है

ऐसे मौक़अ़ को ग़नीमत समझना चाहिये था कि न मा'लूम फिर ऐसा वक़्त आए न आए, इस लिये हुज़ूरे अक़्दस صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को (نَعُوْذُ بِاللّٰه) क़त्ल कर के लौटना चाहिये था इस इरादे से उस ने वापसी का मश्वरा किया।

हुज़ूरे अक़्दस صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने ए'लान कर दिया कि जो लोग उहुद में साथ थे वोही सिर्फ़ साथ हों और दोबारा ह़म्ले के लिये चलना चाहिये। अगर्चे मुसलमान उस वक़्त थके हुवे थे मगर इस के बावुजूद सब के सब तैयार हो गए चूंकि हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने ए'लान फ़रमा दिया था कि सिर्फ़ वोही लोग साथ चलें जो उहुद में साथ थे इस लिये ह़ज़रते जाबिर رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه ने अ़र्ज़ किया : या रसूलल्लाह ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم मेरी तमन्ना उहुद में भी शिर्कत की थी मगर वालिद ने येह कह कर इजाज़त न दी कि मेरी सात बहनें हैं कोई और मर्द नहीं है, उन्हों ने फ़रमाया था कि हम दोनों में से एक का रहना ज़रूरी है और खुद जाने का इरादा फ़रमा चुके थे इस लिये मुझे इजाज़त न दी थी। उहुद की लड़ाई में उन की शहादत हो गई, अब हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم मुझे इजाज़त मर्हमत फ़रमा दें कि मैं भी हम रिकाब चलूं। हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इजाज़त मर्हमत फ़रमा दी, उन के इलावा और कोई ऐसा शख़्स नहीं गया जो उहुद में शरीक न हुवा।

(السيرة النبوية لابن هشام،خروج الرسول فی اثر العدو...الخ،ج٢،ص٨٧)

ज़ाते सरवरे काइनात صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से

सहाबए किराम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُم के

तअ़ल्लुक़े ख़ातिर पर उमूमी नज़र

उस्वए सहाबा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُم का दरख़्शां बाब

सहाबए किराम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡھُم और बारगाहे रिसालते मआब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

बरकत अन्दोज़ी : सहाबए किराम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡھُم मुख़्तलिफ़ तरीक़ों से रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ज़ात से बरकत अन्दोज़ होते रहते। मषलन बच्चे बीमार पड़ते या पैदा होते तो उन को आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में हाज़िर करते, आप बच्चे के सर पर हाथ फेरते, अपने मुंह में खजूर डाल कर उस के मुंह में डालते, और उस के लिये बरकत की दुआ फ़रमाते।

हज़रते साइब बिन यज़ीद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡه कहते हैं कि मैं बीमार पड़ा तो मेरी ख़ाला मुझ को आप की ख़िदमत में ले गईं। आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने मेरे सर पर हाथ फेरा और दुआए बरकत की। इस के बा'द आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने वुज़ू किया तो मैं ने आप के वुज़ू का पानी पिया।

(صحیح البخاری، کتاب الدعوات ، باب الدعاء للصبیان بالبرکة .....الخ، الحدیث:٦٣٥٢،ج٤،ص٢٠٤)

हज़रते अबू मूसा अश्अरी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡه के लड़का पैदा हुवा तो आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में लाए, आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने उस का नाम रखा, अपने मुंह में खजूर डाल के उस के मुंह में डाली और उस को बरकत की दुआ दी।

(صحیح البخاری، کتاب الدعوات ، باب الدعاء للصبیان بالبرکة .....الخ، الحدیث:٦٣٥٢،ج٤،ص٢٠٣)

हज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡه पैदा हुवे तो उन की वालिदा हज़रते अस्मा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡهَا उन को ले कर आईं और आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की गोद में रख दिया।

आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने खजूर मंगा कर चबाई और उस को उन के मुंह में डाल दिया फिर बरकत की दुआ़ दी । आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم बच्चों के मुंह में लुआ़ब डाल देते और बा'ज़ की आंखों पर हाथ फेरते ।

(صحیح البخاری، کتاب العقیقۃ، باب تسمیۃ المولود....الخ، الحدیث:٥٤٦٧، ج٣،ص٥٤٦)

हज़रते ज़ोहरा बिन सईद رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه एक सहाबी थे । बचपन ही में उन की वालिदा उन को आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में लाईं । सरकार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने उन के सर पर हाथ फेरा और दुआ़ दी चुनान्चे जब उन को ले कर उन के दादा ग़ल्ला ख़रीदने के लिये बाज़ार जाते थे और हज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه और हज़रते इब्ने जुबैर رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه से मुलाक़ात होती थी तो कहते थे कि हम को भी शरीक करो क्यूं कि रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने तुम को बरकत की दुआ़ दी है ।

(صحیح البخاری، کتاب الشرکۃ، باب الشرکۃ فی الطعام وغیرہ، الحدیث: ٢٥٠١-٢٥٠٢،ج٢،ص١٤٥)

अ़ल्लामा इब्ने ह़जर رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه इस की शर्ह़ में लिखते हैं : "इस ह़दीष से षाबित होता है कि रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से बरकत ह़ासिल करने के लिये सह़ाबए किराम رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُم को आप की ख़िदमत में अपनी अवलाद को ह़ाज़िर करने का बड़ा शौक़ था ।" (فتح الباری شرح صحیح البخاری، کتاب الشرکۃ، باب الشرکۃ فی الطعام وغیرہ، ج٦،ص١١٥)

नमाज़े फ़ज्र के बा'द सह़ाबए किराम رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُم के मुलाज़िम बरतनों में पानी ले कर ह़ाज़िर होते आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم उन में दस्ते मुबारक डाल देते वोह मुतबर्रक हो जाता ।

जब फल पुख़्ता होते तो पहला फल आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में पेश करते । आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم बरकत की

दुआ फ़रमाते और सब से छोटा बच्चा जो मौजूद होता उस को दे देते। आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के वुज़ू का बचा हुवा पानी सहाबा رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهُم के लिये आबे ह़यात था जिस पर वोह जान देते थे।

एक बार ह़ज़रते बिलाल رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه ने आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के वुज़ू का बचा हुवा पानी निकाला तो तमाम सहाबा رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهُم ने उस को झपट लिया।

(سنن النسائی ، کتاب الطھارۃ، باب الانتفاع بفضل الوضوء، ج۱، ص۸۷)

एक दिन आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने वुज़ू किया। पानी बच गया तो तमाम सहाबा رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهُم ने उस को ले कर जिस्म पर मल लिया।

(صحیح البخاری، کتاب الوضوء، باب استعمال فضل وضوء الناس،الحدیث:۱۸۷،ج۱،ص۸۸)

एक बार आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ह़लक़ करवा रहे थे, सह़ाबए किराम رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهُم ने आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को घेर लिया और वोह ऊपर ही से बालों को उचक रहे थे।

(صحیح مسلم،کتاب الوضوء، باب قرب النبی علیہ السلام من الناس وتبرکھم بہ، الحدیث:۲۳۲۵،ص۱۲۷۰)

एक बार रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने ह़ज़रते अबू मह़ज़ूरा رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه की पेशानी पर हाथ फैर दिया, इस के बा'द उन्हों ने उ़म्र भर न सर के आगे के बाल कटवाए न मांग निकाली।

(سنن ابی داود،کتاب الصلوۃ، باب کیف الاذان، تحت الحدیث:۵۰۱،ج۱، ص۲۱۲)

बल्कि इस को बत़ौरे तबर्रुक और यादगार के क़ाइम रखा।

आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم जब सह़ाबए किराम رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهُم के मकान पर तशरीफ़ लाते तो वोह आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से बरकत ह़ासिल करने की दरख़्वास्त करते।

एक बार आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم एक सहाबी رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه के घर तशरीफ़ ले गए। उन्हों ने दा'वत की, जब चलने लगे तो घोड़े की बाग पकड़ कर अ़र्ज़ की, कि मेरे लिये दुआ़ फ़रमाइये, आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने दुआ़ए बरकत और दुआ़ए मग़फ़िरत फ़रमाई।

(سنن ابی داود، کتاب الأشربة، باب فی النفخ فی الشراب ، الحدیث:۳۷۲۹، ج۳، ص۴۷۵)

एक बार आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ह़ज़रते सा'द رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه के घर तशरीफ़ लाए और दरवाज़े पर खड़े हो कर सलाम किया। उन्हों ने आहिस्ता से जवाब दिया। उन के साहि़ब ज़ादे ने कहा कि रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को इज़्न नहीं देते? बोले चुप रहो, मक़्सद येह है कि आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم हम पर बार बार सलाम करें। आप ने दोबारा सलाम किया। फिर उसी क़िस्म का जवाब मिला। तीसरी बार सलाम कर के आप वापस चले, तो ह़ज़रते सा'द رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه पीछे पीछे दौड़े हुवे आए और कहा कि मैं आप का सलाम सुनता था लेकिन जवाब इस लिये आहिस्ता से देता था कि आप हम पर मुतअ़द्दद बार सलाम करें।

(سنن ابی داود ، کتاب الادب،باب کم مرة یسلم الرجل فی الاستئذان، الحدیث: ۵۱۸۵،ج۴،ص۴۴۵)

मुह़ाफ़ज़ते यादगारे रसूल صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم **:** सह़ाबए किराम رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُم के ज़माने में रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की यादगारें मह़फ़ूज़ थीं जिन को वोह जान से ज़ियादा अ़ज़ीज़ रखते थे और उन से बरकत ह़ासिल करते थे।

ह़ज़रते अ़ली बिन हुसैन رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه का बयान है कि जब हम ह़ज़रते इमामे हुसैन رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه की शहादत के ज़माने में यज़ीद

के दरबार से पलट कर मदीने में आए तो ह़ज़रते मिस्वर बिन मख़्रमा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ मिले और मुझ से कहा कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की तलवार मुझे दे दो ऐसा न हो कि येह लोग इस को छीन लें। ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! अगर तुम ने मुझे येह तलवार दी तो जब तक जिस्म में जान बाक़ी है कोई शख़्स इस की त़रफ़ दस्त दराज़ी नहीं कर सकता।

(سنن ابی داود، کتاب النکاح، باب مایکرہ ان یجمع بینھن من النساء، الحدیث: ۲۰۶۹،ج۲،ص۳۲۷)

ह़ज़रते आइशा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا के पास आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का एक जुब्बा मह़फ़ूज़ था। जब उन का इन्तिक़ाल हुवा तो ह़ज़रते अस्मा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا ने उस को ले लिया और मह़फ़ूज़ रखा। चुनान्चे जब उन के ख़ानदान में कोई शख़्स बीमार होता था तो शिफ़ा ह़ासिल करने के लिये धो कर उस का पानी पिलाती थीं।

(المسندلامام احمد بن حنبل، حدیث اسماء بنت ابی بکر صدیق رضی اللہ تعالیٰ عنہما، الحدیث: ۲۷۰۰۸،ج۱۰،ص۲۷۱)

बहुत से सह़ाबा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُم इन यादगारों को ज़ादे आख़िरत समझते थे और इन को बा'दे मर्ग भी अपने पास से जुदा करना पसन्द नहीं करते थे।

जब रसूले अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ह़ज़रते अनस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के घर तशरीफ़ लाते थे तो उन की वालिदा आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के पसीने को एक शीशी में भर कर अपनी ख़ुश्बू में मिला देती थीं। चुनान्चे जब ह़ज़रते अनस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने इन्तिक़ाल किया तो वसिय्यत की, कि येह ख़ुश्बू इन के ह़नूत़ (चन्द ख़ुश्बूदार चीज़ों का एक मुरक्कब जो मुर्दे को ग़ुस्ल देने के बा'द उस पर मलते हैं) में शामिल की जाए।

रिवायत में येह भी है कि वोह आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के मूए मुबारक को भी शीशी में भर लेती थीं।

(صحیح البخاری، کتاب الاستئذان،باب من زارقوما فقال عندھم ، الحدیث: ٦٢٨١،ج٤،ص١٨٢)

लेकिन अ़ल्लामा इब्ने ह़जर رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने इस ह़दीष की शर्ह़ में पहले तो इस को एक बे जोड़ चीज़ समझा है लेकिन इस के बा'द लिखा है कि बा'ज़ लोगों के नज़्दीक इस से वोह बाल मुबारक मुराद हैं जो कंघी करने में आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के सर से जुदा हो जाते थे।

फिर ह़ज़रते अनस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से एक रिवायत नक़्ल की है कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने जब मिना में अपने बाल मुबारक उतरवाए तो ह़ज़रते अबू त़ल्ह़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के बाल मुबारक ले लिये और उन को ह़ज़रते अनस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की वालिदा के ह़वाले किया जिन को उन्हों ने अपनी ख़ुश्बू में शामिल कर लिया। इस से येह नतीजा निकलता है कि जिस ख़ुश्बू में येह बाल मुबारक शामिल थे उसी में वोह पसीने को भी शामिल कर लेती थीं।

(فتح الباری شرح البخاری، کتاب الاستئذان،باب من زار قوما فقال عندھم، تحت الحدیث: ٦٢٨١،ج١٢،ص٥٩)

ग़ज़्वए ख़ैबर में आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने एक सह़ाबिया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا को ख़ुद दस्ते मुबारक से एक हार पहनाया था, वोह उस की इतनी क़द्र करती थीं कि उ़म्र भर गले से जुदा नहीं किया और जब इन्तिक़ाल करने लगीं तो वसिय्यत की, कि उन के साथ वोह भी दफ़्न कर दिया जाए।

(المسند لامام احمد بن حنبل، حدیث امرأۃ من بنی غفار رضی اللہ عنہا، الحدیث: ٢٧٢٠٦،ج١٠،ص٣٢٤)

हज़रत अमीरे मुआविया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के पास आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का एक कुरता, एक तहबन्द, एक चादर और चन्द मूए मुबारक थे, उन्हों ने वफ़ात के वक़्त वसिय्यत की कि येह कपड़े कफ़न में लगाए जाएं और मूए मुबारक मुंह और नाक में भर दिये जाएं। (تاریخ الخلفاء،معاویة بن ابو سفیان،ص۱۵۸ بتصرف)

रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने जिन कपड़ों में इन्तिक़ाल फ़रमाया था, हज़रते आइशा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا ने उन को महफ़ूज़ रखा था। चुनान्चे उन्हों ने एक दिन एक सहाबी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को एक यमनी तहबन्द और एक कम्बल दिखा कर कहा कि खुदा عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! सरकार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इन ही कपड़ों में इन्तिक़ाल फ़रमाया था। (سنن ابی داود، کتاب اللباس،باب لباس الغلیظ،الحدیث:۴۰۳۶،ج۴،ص۶۳)

एक सहाबी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने ख़ज़्ज़ (ऊन और रेशम से बुना हुवा कपड़ा) का सियाह इमामा अ़ता फ़रमाया था, उन्हों ने उस को महफ़ूज़ रखा था और इस पर फ़ख़्र किया करते थे, चुनान्चे एक बार बुख़ारा में ख़च्चर पर सुवार हो कर निकले तो इमामा दिखा कर कहा कि येह रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने मुझ को इनायत फ़रमाया था।

(سنن ابی داود، کتاب اللباس،باب ماجاء فی الخز،الحدیث:۴۰۳۸، ج۴، ص۶۴)

आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के चन्द बाल मुबारक हज़रते उम्मे सलमह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا ने बतौरे यादगार के महफ़ूज़ रखे थे और जब कोई शख़्स बीमार होता था तो एक बरतन में पानी भर कर भेज देता था और वोह उस में उन मुबारक बालों को धो कर वापस कर देती थीं, जिस को वोह शिफ़ा हासिल करने के लिये पी जाता था (या उस से ग़ुस्ल कर लेता था)।

(صحیح البخاری، کتاب اللباس،باب مایذکر فی الشیب،الحدیث۵۸۹۶،ج۴،ص۷۶)

खुलफ़ा इन यादगारों की निहायत इ़ज़्ज़त करते थे, और इन से बरकत अन्दोज़ होते थे, एक बार आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने किसी अ़जमी बादशाह के नाम ख़त़ लिखना चाहा तो लोगों ने कहा कि जब तक ख़त़ पर मोहर न हो अहले अ़जम उस को नहीं पढ़ते, इस लिये आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने एक चांदी की अंगूठी तय्यार करवाई, जिस के नगीने पर मुह़म्मदुर्रसूलुल्लाह (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) कन्दा था, उस अंगूठी को खुलफ़ाए षलाषा ने मह़फ़ूज़ रखा था, अख़ीर में ह़ज़रते उ़षमान رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه के हाथ से एक कुंवें में गिर पड़ी, उन्हों ने तमाम कुंवें का पानी निकाल डाला, लेकिन येह गोहरे नायाब न मिल सका।

(سنن ابی داود، کتاب الخاتم، باب ماجاء فی اتخاذ الخاتم، الحدیث: ٤٢١٤ـ٤٢١٥، ج٤، ص١١٩)

ह़ज़रते का'ब बिन ज़ुहैर رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا के क़सीदे के सिले में रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने ख़ुद अपनी चादर इनायत फ़रमाई थी। येह चादर अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه ने उन के साह़िब ज़ादे से ख़रीद ली और उन के बा'द तमाम खुलफ़ा ई़दैन में वोही चादर ओढ़ कर निकलते थे। (الاصابة، تذکرة کعب بن زهیر، ج٥، ص٤٤٣)

आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم जिस पियाले में पानी पीते थे, वोह ह़ज़रते अनस बिन मालिक رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه के पास मह़फ़ूज़ था एक बार वोह टूट गया तो उन्हों ने उस को चांदी के तार से जुड़वाया, उस में एक लोहे का ह़ल्क़ा भी लगा हुवा था, बा'द को ह़ज़रते अनस رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه ने उस में सोने या चांदी का ह़ल्क़ा लगवाना चाहा लेकिन ह़ज़रते त़ल्ह़ा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه ने मन्अ़ किया कि रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने जो काम किया है उस में तग़य्युर नहीं करना चाहिये।

आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के दो और पियाले ह़ज़रते सह्ल رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ और ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन सलाम رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ के पास मह़फ़ूज़ थे।

(صحیح البخاری، کتاب الأشربۃ، باب الشرب من قدح النبی صلی اللہ علیہ وسلم وآنیتہ،الحدیث:٥٦٣٧۔٥٦٣٨، ج٣،ص٥٩٥)

एक दिन आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ह़ज़रते उम्मे सुलैम رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہَا के घर तशरीफ़ लाए, घर में एक मश्कीज़ा लटक रहा था, आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने उस का दहाना अपने मुंह से लगाया और पानी पिया, ह़ज़रते उम्मे सुलैम رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہَا ने मश्कीज़े के दहाने को काट कर अपने पास बत़ौरे यादगार रख लिया।

(طبقات الکبری،تذکرۃ ام سلیم بنت ملحان، ج٨،ص٣١٥)

आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ह़ज़रते शिफ़ा बिन्ते अ़ब्दुल्लाह رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ के यहां कभी कभी क़ैलूला फ़रमाते थे, इस ग़रज़ से उन्हों ने आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के लिये एक ख़ास बिस्तर और एक ख़ास तहबन्द बनवा लिया था, जिस को पहन कर आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم इस्तिराह़त फ़रमाते थे, येह यादगारें एक मुद्दत तक उन के पास मह़फ़ूज़ रहीं। अख़ीर में मरवान ने उन से ले लिया।

(اسدالغابۃ، تذکرۃ الشفاء بنت عبداللہ، ج٧،ص١٧٧)

इन यादगारों के इ़लावा सह़ाबए किराम رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُم आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की हर चीज़ को यादगार समझते थे और लोगों को उस की ज़ियारत करवाते थे।

ह़ज़रते नाफ़ेअ़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ का बयान है कि मुझ को ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने मस्जिद में वोह जगह दिखाई जहां आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم मो'तकिफ़ होते थे।

(سنن ابی داود، کتاب الصوم، باب این یکون الاعتکاف؟،الحدیث:٢٤٦٥، ج٢،ص٤٨٩)

अदबे रसूल صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

सहाबए किराम رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُم जिस त़रह रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का अदबो एह़तिराम करते थे, उस का इज़्हार सेंकड़ों त़रीके़ से होता था, जब आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में ह़ाज़िर होते तो दरबारे नबुव्वत के अदब व अ़ज़मत के लिह़ाज़ से ख़ास त़ौर पर कपड़े ज़ैबे तन कर लेते । एक सह़ाबिया رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا फ़रमाती हैं कि

جمعت علیّ ثیابی حین اُمَسَیتُ فاتیتُ رسولَ الله صلی الله تعالیٰ علیه وآله وسلم

शाम हुई तो मैं ने तमाम कपड़े पहन लिये और आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में ह़ाज़िर हुई ।

(سنن ابی داود، کتاب الطلاق،باب فی عدة الحامل،الحدیث:٢٣٠٦،ج٢،ص٤٢٧)

बिग़ैर त़हारत के आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में ह़ाज़िर होना और आप से मुसाफ़ह़ा करना गवारा न करते, मदीने के किसी रास्ते में आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से ह़ज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه का सामना हो गया, उन को नहाने की ज़रूरत थी, गवारा न हुवा कि इस ह़ालत में आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के सामने आएं, इस लिये आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को देखा तो कतरा गए और ग़ुस्ल कर के ख़िदमते अक़्दस में ह़ाज़िर हुवे । आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने देखा तो फ़रमाया : अबू हुरैरा (رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه) ! कहां थे ? बोले, मुझे ग़ुस्ल की ह़ाजत थी, इस लिये आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के पास बैठना पसन्द नहीं करता था ।

(سنن ابی داود، کتاب الطهارة، باب فی الجنب یصافح، الحدیث:٢٣١،ج١،ص١١٠)

आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के सामने बैठते तो फ़र्ते अदब से तस्वीर बन जाते, अह़ादीष में इसी ह़ालत का नक़्शा इन अल्फ़ाज़

में खींचा गया है, كانما على رءُوسهم الطير या'नी सह़ाबा आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के सामने इस त़रह़ बैठते थे गोया उन के सरों पर चिड़िया बैठी होती हैं। (سنن ابی داود، كتاب الطب، باب فى الرجل يتداوى، الحديث:٣٨٥٥،ج٤، ص٥)

घर में बच्चे पैदा होते तो अदब से उन का नाम मुह़म्मद न रखते, एक दफ़्आ़ एक सह़ाबी رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه के घर में बच्चा पैदा हुवा तो उन्हों ने **मुह़म्मद** नाम रखा। लेकिन उन की क़ौम ने कहा : हम न येह नाम रखने देंगे न इस कुन्यत से तुम को पुकारेंगे तुम इस के मुतअ़ल्लिक़ खुद रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से मश्वरा कर लो। वोह बच्चे को ले कर आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में ह़ाज़िर हुवे और वाक़िआ़ बयान किया, तो इरशाद हुवा कि मेरे नाम पर नाम रखो लेकिन मेरी कुन्यत न इख़्तियार करो।

(صحيح مسلم ، كتاب الآداب ، باب النهى عن التكنى بابى القاسم.....الخ، الحديث:٢١٣٣،ص١١٧٨)

अगर रास्ते में कभी साथ हो जाता तो अदब की वजह से आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के साथ सुवारी पर सुवार होना पसन्द न करते। एक बार ह़ज़रते उ़क़्बा बिन आ़मिर رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का ख़च्चर हांक रहे थे, आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : सुवार क्यूं नहीं हो लेते। लेकिन उन्हों ने इस को बड़ी बात समझा कि आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के ख़च्चर पर सुवार होऊं। ताहम (امتثالا للامر) (ता'मीले हुक्म के लिये) थोड़ी दूर तक सुवार हो लिये। (سنن النسائى، كتاب الاستعاذة، ج٨،ص٢٥٣)

फ़र्ते अदब से किसी बात में आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर तक़द्दुम या मुसाबक़त गवारा न करते। आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ग़ज़्वए तबूक के सफ़र में क़ज़ाए ह़ाजत के लिये सह़ाबा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُم से अलग हो गए, नमाज़े फ़ज्र का वक़्त आ गया तो सह़ाबा

رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡھُم ने आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के आने से पेशतर ही हज़रते अ़ब्दुर्रह़मान बिन औ़फ़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہ की इमामत में नमाज़ शुरूअ़ कर दी। आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم पहुंचे तो एक रक्अ़त नमाज़ हो चुकी थी, इस लिये आप दूसरी रक्अ़त में शरीक हुवे। नमाज़ हो चुकी तो तमाम सह़ाबा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡھُم ने इस को बे अदबी बल्कि गुनाह ख़याल किया और सब के सब कषरत के साथ तस्बीह़ करने लगे, आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم नमाज़ से फ़ारिग़ हुवे तो फ़रमाया कि तुम ने अच्छा किया।

(سنن ابی داود، کتاب الطهارة، باب المسح على الخفين، الحديث:١٤٩، ج١، ص٨٣)

एक बार आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم कोई निज़ाअ़ चुकाने के लिये क़बीला बनू अ़म्र बिन औ़फ़ में तशरीफ़ ले गए। नमाज़ का वक़्त आ गया तो मुअज़्ज़िन हज़रते अबू बक्र رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہ की ख़िदमत में आया कि नमाज़ पढ़ा दीजिये। वोह नमाज़ पढ़ा रहे थे कि सरकार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم आ कर शरीके जमाअ़त हो गए। लोगों ने **तस्फ़ीक़** की (बाएं हाथ की पुश्त पर दाएं हाथ की उंगलियां इस त़रह़ मारना कि आवाज़ पैदा हो, **तस्फ़ीक़** कहलाता है।) हज़रते अबू बक्र رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہ अगर्चे किसी त़रफ़ मुतवज्जेह न होते थे, ताहम जब लोगों ने मुत्तसिल तस्फ़ीक़ की, तो मुड़ कर देखा कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم हैं, आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इशारा किया कि अपनी जगह पर क़ाइम रहो। उन्हों ने पहले ख़ुदा का शुक्र किया कि आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इन की इमामत को पसन्द फ़रमाया, फिर पीछे हट आए और आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने आगे बढ़ कर नमाज़ पढ़ाई, नमाज़ से फ़ारिग़ हो कर फ़रमाया कि जब मैं ने हुक्म दिया तो तुम क्यूं अपनी जगह से हट आए? बोले

कि इब्ने अबी क़ुहाफ़ा का येह मुंह न था कि रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के आगे नमाज़ पढ़ाए।

(سنن ابی داود، کتاب الصلاۃ،باب التصفیق فی الصلاۃ، الحدیث: ۹۴۰، ج۱،ص ۳۵۴)

एक बार आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पैदल जा रहे थे, कि इसी ह़ालत में एक सह़ाबी رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه गधे पर सुवार आए। आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को पैदल देखा तो ख़ुद फ़र्ते़ अदब से पीछे हट गए और आप को आगे सुवार करना चाहा, लेकिन आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : तुम आगे बैठने के ज़ियादा मुस्तह़िक़ हो, अलबत्ता अगर तुम्हारी इजाज़त हो तो मैं आगे बैठ सकता हूं।

(سنن ابی داود،کتاب الجهاد،باب رب الدابة أحق بصدرها، الحدیث: ۲۵۷۲، ج۳،ص ۴۰)

अगर कभी आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के साथ खाना खाने का इत्तिफ़ाक़ होता तो जब तक आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم खाना शुरूअ़ न करते तमाम सह़ाबा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُم फ़र्ते़ अदब से खाने में हाथ न डालते।

(سنن ابی داود،کتاب الأطعمة، باب التسمیة علی الطعام، الحدیث:۳۷۶۶،ج۳،ص ۴۸۷)

अदब के बाइ़ष आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से आगे चलना पसन्द नहीं करते।

एक सफ़र में ह़ज़रते इब्ने उ़मर رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه एक सरकश ऊंट पर सुवार थे जो रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से आगे निकल जाता था। ह़ज़रते उ़मर رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه ने उन को डांटा कि कोई आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से आगे न बढ़ने पाए।

(صحیح البخاری، کتاب الهبة، باب من أهدی له هدیةٌ وعندهٗ جلساؤه.....الخ، الحدیث: ۲۶۱۰،ج۲،ص ۱۷۹)

किसी चीज़ में आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से मुक़ाबले की जुरअत न करते, एक बार चन्द सह़ाबा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُم जो क़बीलए

अस्लम से तअ़ल्लुक़ रखते थे बाहम तीर अन्दाज़ी में मुक़ाबला कर रहे थे, आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : ऐ बनू इस्माईल तीर फेंको क्यूंकि तुम्हारे बाप तीर अन्दाज़ थे और मैं फ़ुलां क़बीले के साथ हूं। दूसरे गुरौह के लोग फ़ौरन रुक गए। आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने पूछा कि तीर क्यूं नहीं फेंकते ? बोले अब क्यूंकर मुक़ाबला करें जब कि आप उन के साथ हैं। फ़रमाया : तीर फेंको मैं तुम सब के साथ हूं।

(صحیح البخاری، کتاب الجهاد و السیر، باب التحریض علی الرمی ، الحدیث: ۲۸۹۹، ج۲، ص۲۸۲)

अ़ल्लामा इब्ने ह़जर رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه इस ह़दीष की शर्ह़ में लिखते हैं कि येह लोग इस लिये रुक गए कि अगर वोह अपने फ़रीक़ पर ग़ालिब आ गए और रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم भी उस के साथ हैं तो आप भी मग़्लूब हो जाएंगे। इस लिये उन्हों ने अदब से मुक़ाबला ही करना छोड़ दिया, इस अदबो एह़तिराम का नतीजा येह था कि आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की निस्बत किसी क़िस्म का सूए अदब गवारा न करते।

(فتح الباری شرح صحیح البخاری، کتاب الجهاد و السیر، باب التحریض علی الرمی، تحت الحدیث:۲۸۹۹، ج۷، ص۷۷)

आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم हिजरत कर के मदीना तशरीफ़ लाए तो ह़ज़रते अबू अय्यूब अन्सारी رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه के मकान में क़ियाम फ़रमाया, और आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم नीचे के ह़िस्से में और उन के अहलो इयाल ऊपर के ह़िस्से में रहने लगे। एक रात ह़ज़रते अबू अय्यूब رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه बेदार हुवे तो कहा कि हम और रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के ऊपर चलें फिरें ? इस ख़याल से तमाम अहलो इयाल को एक कोने में कर दिया। सुब्ह़ को

आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में गुज़ारिश की, कि आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ऊपर क़ियाम फ़रमाएं। इरशाद हुवा कि नीचे का हिस्सा हमारे लिये ज़ियादा मोज़ूं है।

एक रिवायत में है हज़रते अबू अय्यूब رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه बराबर इस बात पर मुसिर रहे कि हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ऊपर की मन्ज़िल में रहें और ख़ुद निचली मन्ज़िल में रहें।

बोले कि जिस छत के नीचे आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم हों हम उस पर नहीं चढ़ सकते, लिहाज़ा आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने बालाख़ाने पर क़ियाम फ़रमाया। (مدارج النبوت،قسم دوم، باب چهارم،بیان قضیهٔ هجرت آنحضرت ،ج۲، ص۶۵)

बा'ज़ सहाबा رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُم आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से सिन में बड़े थे, लेकिन उन को फ़र्ते अदब से येह गवारा न था कि उन को आप से बड़ा कहा जाए।

एक बार हज़रते उ़षमान رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه ने एक सहाबी رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه से पूछा : आप बड़े हैं या रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ? बोले : बड़े तो रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم हैं, अलबत्ता मैं आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से पहले पैदा हुवा। (سنن الترمذی،کتاب المناقب، باب ماجاء فی میلاد النبی، الحدیث:۳۶۳۹، ج۵، ص۳۵۶)

अगर ना दानिस्तगी में भी आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की शान में कोई ना मुनासिब बात निकल जाती तो उस की मुआफ़ी चाहते।

एक सहाबिया رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهَا का बच्चा मर गया, और वोह इस पर रो रही थीं। आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का गुज़र हुवा तो फ़रमाया : ख़ुदा से डरो और सब्र करो, बोलीं तुम्हें मेरी मुसीबत की क्या परवाह है, आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم चले गए तो लोगों ने कहा कि रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم थे, दौड़ी हुई आईं और अ़र्ज़ की, कि मैं ने हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को नहीं पहचाना था।

(سنن ابی داود،کتاب الجنائز،باب الصبر عندالصدمة، الحدیث:۳۱۲۴،ج۳، ص۲۵۸)

अगर किसी दूसरे शख़्स के मुतअ़ल्लिक़ आप صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की निस्बत बे अदबी का ख़याल होता तो सहा़बए किराम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُم सख़्त बरहम होते। एक बार ह़ज़रते अबू बक्र رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ दौलत सराए अक़्दस में आए। देखा कि ह़ज़रते आ़इशा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا ब आवाज़े बुलन्द बोल रही हैं। फ़ौरन त़मांचा उठाया और कहा अब कभी आप صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के सामने आवाज़ बुलन्द न होने पाए।

(سنن ابی داود، کتاب الأدب، باب ماجاء فی المزاح، الحدیث:٤٩٩٩، ج٤، ص٣٩٠)

आप صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم पर एक शख़्स का कुछ क़र्ज़ था, उस ने गुस्ताख़ाना त़रीक़े से तक़ाज़ा किया, तो तमाम सहा़बा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُم उस पर बर अंगेख़्ता हो गए तो नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : रुको ! क़र्ज़ ख़्वाह को मक़रूज़ पर मुत़ालबा करने का उस वक़्त तक ह़क़ है जब तक वोह क़र्ज़ अदा न करे।

(سنن ابن ماجه، کتاب الصدقات، باب لصاحب الحق سلطان، الحدیث٢٤٢٥، ج٣،ص١٥٠)

एक बार आप صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم सफ़र में थे, एक बद्दू आया और वह़शियाना लहजे में आवाज़ बुलन्द की और पुकारा या मुह़म्मद, या मुह़म्मद। सहा़बए किराम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُم ने कहा : येह क्या ? (इस त़रह़ कहना) मन्अ़ है।

(سنن الترمذی، کتاب الدعوات، باب فی فضل التوبة والاستغفار.....الخ، الحدیث:٣٥٤٧، ج٥، ص٣١٦)

एक बार आप صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि : अन्सार के ख़ानदानों में सब से अफ़्ज़ल बनू नज्जार हैं, फिर बनू अ़ब्दिल अश्हल, फिर बनू ह़ारिष बिन अल ख़ज़रज, फिर बनू साइदा, इन के इ़लावा अन्सार के तमाम ख़ानदान अच्छे हैं, ह़ज़रते सा'द बिन उ़बादा क़बीलए बनू साइदा से थे, उन को जब मा'लूम हुवा कि

आप صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने उन के क़बीले को चौथे नम्बर पर रखा है तो उन को किसी क़दर ना गवार हुवा, बोले मेरे गधे पर ज़ीन कसो मैं ख़ुद रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से इस के मुतअ़ल्लिक़ गुफ़्त्गू करूंगा, लेकिन उन के भतीजे ह़ज़रते सह्ल رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने कहा : क्या आप रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की तरदीद के लिये जाते हैं ? ह़ालां कि हु़ज़ूर صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم वुजूहे फ़ज़ीलत के सब से ज़ियादा आ़लिम हैं, येह क्या कम है कि आप का चौथा नम्बर है !

(صحیح مسلم، کتاب الفضائل،باب فی خیر دور الانصار.....الخ،الحدیث: ۲۵۱۱،ص ۱۳۶۱)

सुल्ह़े हुदैबिय्या के बा'द काफ़िरों का मुसलमानों में इख़्तिलात़ हो गया, ह़ज़रते सलमह आए और एक दरख़्त के नीचे लैट गए, चार मुशरिक भी उस जगह आए और हु़ज़ूर صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को बुरा भला कहना शुरूअ़ कर दिया, उन को गवारा न हो सका, उठ गए और दूसरी जगह चले गए, और चारों मुशरिक भी तलवार को लटका कर सो रहे, इसी ह़ालत में शोर हुवा कि इब्ने ज़ुनैम क़त्ल कर दिया गया, ह़ज़रते सलमह ने मौक़अ़ पा कर तलवार मियान से खींच ली, और चारों पर ह़ालते ख़्वाब में ह़म्ला कर के उन के तमाम हथयारों पर क़ब्ज़ा कर लिया, और कहा कि उस ज़ात की क़सम जिस ने मुह़म्मद صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को इ़ज़्ज़त दी तुम में से जो शख़्स सर उठाएगा उस का दिमाग़ पाश पाश कर दिया जाएगा।

(صحیح مسلم، کتاب الجهاد،باب غزوة ذی قرد وغیرها.....الخ، الحدیث: ۱۸۰۷، ص ۱۰۰۰)

एक शख़्स का नाम मुह़म्मद था, ह़ज़रते उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने देखा कि एक आदमी उन को गाली दे रहा है, बुला कर कहा कि देखो तुम्हारी वजह से **मुह़म्मद** को गाली दी जा रही है, अब ता दमे मर्ग तुम इस नाम से पुकारे नहीं जा सकते, चुनान्चे उसी वक़्त उस

का नाम अ़ब्दुर्रह़मान रख दिया गया। फिर बनू त़ल्ह़ा के पास पैग़ाम भेजा। जो लोग इस नाम के हों उन के नाम बदल दिये जाएं। इत्तिफ़ाक़ से वोह लोग सात आदमी थे और उन के सरदार का नाम मुह़म्मद था। लेकिन उन्हों ने कहा : ख़ुद रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ही ने मेरा नाम **मुह़म्मद** रखा है, बोले अब मेरा इस पर कोई ज़ोर नहीं चल सकता।

(المسند لامام احمد بن حنبل، حديث محمد بن طلحة بن عبيدالله رضى الله تعالىٰ عنه، الحديث:١٧٩١٦، ج٤، ص٢٦٧)

छोटे छोटे बच्चे भी अगर आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के साथ किसी क़िस्म की शोख़ी करते तो सह़ाबए किराम رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُم उन को डांट देते, ह़ज़रते उम्मे ख़ालिद رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهَا अपने बाप के साथ ह़ाज़िरे ख़िदमत हुईं, और बचपन की वजह से ख़ातिमुन्नबुव्वत से खेलने लगीं, उन के वालिद ने डांटा, लेकिन आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : खेलने दो।

(صحيح البخارى، كتاب الجهاد، باب من تكلم بالفارسية و الرطانة، الحديث:٣٠٧١، ج٢، ص٣٣١)

जो चीज़ें शाने नबुव्वत के ख़िलाफ़ होतीं, सह़ाबए किराम رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُم आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के सामने उन के ज़िक्र तक को सूए अदब समझते, आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने जब क़ज़ा उ़मरह अदा फ़रमाया तो ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन रवाह़ा رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के आगे आगे अश्आ़र पढ़ते चलते थे, ह़ज़रते उ़मर رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه ने सुना तो फ़रमाया : रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के सामने और ह़ुदूदे ह़रम के अन्दर शे'र पढ़ते हो ? लेकिन आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने ख़ुद इस को मुस्तह़सन फ़रमाया।

(سنن النسائى، كتاب مناسك الحج، باب انشاد الشعر فى الحرم والمشى بين يدى الامام، ج٥، ص٢٠٢)

(तिरमिज़ी में है कि अश्आर ह़ज़रते मालिक رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने पढ़े थे और येही सह़ीह़ भी है)

एक बार कुछ लोगों ने जुमुआ़ के दिन आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के मिम्बर के सामने शोरो गुल करना शुरूअ़ किया, ह़ज़रते उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने डांटा कि आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के मिम्बर के सामने आवाज़ ऊंची न करो।

(صحیح مسلم، کتاب الامارة ،باب فضل الشھادة فی سبیل اللہ تعالٰی، الحدیث:۱۸۷۹،ص۱۰٤٤)

येह ता'ज़ीम, येह अदब, येह इ़ज़्ज़त, आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ज़िन्दगी के साथ ही मख़्सूस न थी, आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के विसाल के बा'द भी सह़ाबए किराम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُم आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का इसी त़रह़ अदब करते थे, आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के विसाल के बा'द क़ब्र के मुतअ़ल्लिक़ इख़्तिलाफ़ हुवा कि लह़द खोदी जाए या सन्दूक़, इस पर लोगों ने शोरो गुल करना शुरूअ़ कर दिया, ह़ज़रते उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के सामने वफ़ात व ह़यात दोनों ह़ालतों में शोरो शग़ब न करो।

(سنن ابن ماجه،کتاب الجنائز،باب ماجاء فی الشق، الحدیث:۱۵۵۸، ج۲،ص۲٤۵)

सह़ाबए किराम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُم के इस अदबो एह़तिराम का मन्ज़र सुल्ह़े हुदैबिया में उ़रवह को नज़र आया तो वोह सख़्त मुतअष्षिर हुवा, उस ने सुल्ह़ से मुतअ़ल्लिक़ आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से गुफ़्त्गू की, तो अ़रब के त़रीक़े के मुत़ाबिक़ रीशे मुबारक की त़रफ़ हाथ बढ़ाना चाहा, लेकिन जब जब हाथ बढ़ाता था ह़ज़रते मुग़ीरा बिन शा'बा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ तलवार के ज़रीए से रोक देते थे,

इस वाक़िए से उ़रवह की इस त़रफ़ तवज्जोह हो गई और उस ने सह़ाबा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْھُم के त़र्ज़े अ़मल को बग़ौर देखना शुरूअ़ किया। तो उस पर येह अषर पड़ा कि पलटा तो कुफ़्फ़ार से बयान किया कि मैं ने क़ैसरो किस्रा और नज्जाशी के दरबार देखे हैं। लेकिन मुह़म्मद (صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) के अस्ह़ाब जिस क़दर मुह़म्मद (صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) की ता'ज़ीम करते हैं इस क़दर किसी बादशाह के रुफ़क़ा नहीं करते। अगर वोह थूकते हैं तो उन लोगों के हाथों में उन का थूक गिरता है और वोह अपने जिस्म व चेहरे पर उस को मलते हैं, अगर वोह कोई हुक्म देते हैं तो जान निषार करते हैं और वोह लोग बचे खुचे पानी के लिये बाहम लड़ पड़ते हैं अगर उन के सामने बोलते हैं तो उन की आवाज़ें पस्त हो जाती हैं, और वोह उन की त़रफ़ आंख भर कर नहीं देखते।

(صحیح البخاری، کتاب الشروط، باب الشروط فی الجہاد والمصالحۃ مع اہل الحرب وکتابۃ الشروط،الحدیث:۲۷۳۱،ج۲،ص۲۲۳)

जां निषारी

सुल्ह़े हुदैबिया में जब उ़रवह ने रसूलुल्लाह صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से कहा कि मैं आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के सामने ऐसे चेहरे और मख़्लूत़ आदमी देखता हूं जो आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को छोड़ कर भाग जाएंगे, तो ह़ज़रते अबू बक्र رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ के दिल पर इस त़न्ज़ आमेज़ फ़िक़रे ने निश्तर का काम दिया और उन्हों ने बरहम हो के कहा हम, और आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को छोड़ कर भाग जाएंगे ?

(صحیح البخاری، کتاب الشروط، باب الشروط فی الجہاد والمصالحۃ مع اہل الحرب.....الخ، الحدیث:۲۷۳۱،ج۲،ص۲۲۳)

येह एक क़ौल था जिस की ताईद हर मौक़अ़ पर सह़ाबए किराम رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْھُم ने अपने अ़मल से की।

इब्तिदाए इस्लाम में एक बार आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم नमाज़ पढ़ने में मश्ग़ूल थे, उ़क़्बा बिन अबी मुई़त़ आया और आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का गला घोंटना चाहा, ह़ज़रते अबू बक्र رَضِيَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه ने उस को धकेल दिया और कहा कि एक आदमी को सिर्फ़ इस लिये क़त्ल करते हो कि वोह कहता है कि मेरा मा'बूद **अल्लाह** है, ह़ालांकि वोह तुम्हारे ख़ुदा की जानिब से दलाइल ले कर आया है।

(صحیح البخاری، کتاب فضائل اصحاب النبی، باب قول النبی لو کنت متخذا خلیلا، الحدیث:۳۶۷۸، ج۲، ص۵۲٤)

हिजरत के बा'द ख़त़रात और भी ज़ियादा हो गए थे, कुफ़्फ़ारे मक्का के इ़लावा अब मुनाफ़िक़ीन और यहूद नए दुश्मन हो गए थे, जिन का रात दिन डर लगा रहता था, मगर सह़ाबए किराम رَضِيَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهُم आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ह़िफ़ाज़त के लिये अपने आप को इन तमाम ख़त़रात में डाल देते थे, चुनान्चे इब्तिदाए हिजरत में आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم एक शब बेदार हुवे तो फ़रमाया : काश ! आज की रात कोई सालेह़ बन्दा मेरी ह़िफ़ाज़त करता। थोड़ी देर के बा'द हथयार की झुन्झुनाहट की आवाज़ आई। आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने आवाज़ सुन कर फ़रमाया : कौन है ? जवाब मिला : मैं सा'द बिन अबी वक़्क़ास। फ़रमाया : क्यूं आए ? बोले मेरे दिल में आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की निस्बत ख़ौफ़ पैदा हुवा इस लिये ह़िफ़ाज़त के लिये ह़ाज़िर हुवा। (سنن الترمذی، کتاب المناقب، باب مناقب ابی اسحاق سعد بن ابی وقاص، الحدیث:۳۷۷۷، ج۵، ص٤۱۹)

इन ख़त़रात की वजह से अगर आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم थोड़ी देर के लिये भी आंख से ओझल हो जाते तो जां निषारों के दिल धड़कने लगते थे।

आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم एक दिन सहाबए किराम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُم के हल्के में रोनक अफ़्रोज़ थे, किसी ज़रूरत से उठे तो पलटने में देर हो गई। सहाबए किराम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُم घबरा गए कि खुदा न ख़्वास्ता दुश्मनों की तरफ़ से कोई चश्मे ज़ख़्म तो नहीं पहुंचा। हज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ इसी परेशानी की हालत में घबरा कर आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की जुस्तजू में अन्सार के एक बाग़ में पहुंचे। दरवाज़ा ढूंडा, तो नहीं मिला, दीवार में पानी की एक नाली नज़र आई उस में से घुस कर आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم तक पहुंचे और सहाबा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُم की परेशानियों की दास्तान सुनाई।

(صحیح مسلم، کتاب الایمان، باب دلیل علی أن من مات علی التوحید دخل الجنة قطعًا، الحدیث:۳۱،ص۳۷)

ग़ज़वात में येह ख़तरात और भी बढ़ते जाते थे, इस लिये सहाबए किराम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُم की जां निषारी में और भी तरक्क़ी होती जाती थी।

ग़ज़वए ज़ातुर्रिक़ाअ में एक सहाबी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने एक मुशरिक की बीवी को गिरिफ़्तार किया। उस ने इन्तिक़ाम लेने के लिये क़सम खा ली कि जब तक अस्हाबे मुहम्मद صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم में से किसी सहाबी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के ख़ून से ज़मीन को रंगीन न कर लूंगा, चैन न लूंगा, इस लिये जब आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم वापस हुवे, उस ने तआक़ुब किया। आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم मन्ज़िल पर फ़रोकश हुवे तो दरयाफ़्त फ़रमाया कि कौन मेरी हिरासत की ज़िम्मादारी अपने सर लेगा। मुहाजिरीन व अन्सार दोनों में से एक एक बहादुर इस शरफ़ को हासिल करने के लिये उठे, आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने हुक्म दिया कि घाटी के दहाने पर जा कर मुतमक्किन हो जाएं (कि वोही कुफ़्फ़ार की कमीनगाह हो सकता था) दोनों बुज़ुर्ग वहां पहुंचे तो मुहाजिर बुज़ुर्ग सो गए और अन्सारी ने नमाज़ पढ़ना

शुरूअ़ की, मुशरिक आया, और फ़ौरन ताड़ गया कि येह मुहाफ़िज़ और निगहबान हैं, तीन तीर मारे और तीनों के तीनों उन के जिस्म में तराज़ू हो गए। (سنن ابی داود، کتاب الطھارۃ، باب الوضوء من الدم، الحدیث:۱۹۸،ج۱، ص۹۹)
लेकिन वोह अपनी जगह से न हटे।

आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ग़ज़्वए हुनैन के लिये निकले तो एक सहाबी رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه ने शाम के वक़्त ख़बर दी कि मैं ने आगे जा कर पहाड़ के ऊपर से देखा तो मा'लूम हुवा कि क़बीला हवाज़ुन के ज़न व मर्द चौपायों और मवेशियों को ले कर उमंड़ आए हैं। आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم मुस्कुराए, और फ़रमाया कि : अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने चाहा तो कल येह मुसलमानों के लिये ग़नीमत होगा, और फ़रमाया : आज मेरी पासबानी कौन करेगा ? ह़ज़रते अनस बिन अबी मरषद ग़नवी رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه ने अ़र्ज़ किया : मैं या रसूलल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! इरशाद हुवा कि सुवार हो जाओ, वोह अपने घोड़े पर सुवार हो कर आए तो फ़रमाया कि उस घाटी के ऊपर चढ़ जाओ।

आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم नमाज़े फ़ज्र के लिये उठे, तो सहाबा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُم से फ़रमाया कि तुम्हें अपने शह सुवार की भी ख़बर है ? सहाबा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُم ने अ़र्ज़ की, हमें तो कुछ ख़बर नहीं, जमाअ़त क़ाइम हुई, तो आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم नमाज़ पढ़ाते जाते थे और मुड़ मुड़ के घाटी की त़रफ़ देखते जाते थे। नमाज़ अदा कर चुके तो फ़रमाया : लो मुबारक हो ! तुम्हारा शह सुवार आ गया। सहाबए किराम رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُم ने घाटी के दरख़्तों के दरमियान से देखा तो वोह आ पहुंचे और ख़िदमते मुबारक में ह़ाज़िर हो कर सलाम किया और अ़र्ज़ किया : मैं घाटी के बुलन्द तरीन ह़िस्से पर जहां आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने मामूर फ़रमाया था, चढ़ गया, सुब्ह़ को दोनों घाटियां भी देखीं तो एक जानदार भी नज़र न आया।

आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कभी नीचे भी उतरे थे ? बोले सिर्फ़ नमाज़ और क़ज़ाए ह़ाजत के लिये। इरशाद हुवा : तुम को जन्नत मिल चुकी, इस के बा'द अगर कोई अ़मल न करो तो कोई ह़रज नहीं। (سنن ابی داود، کتاب الجهاد، باب فی فضل الحرس فی سبیل الله عزوجل، الحدیث:۲۵۰۱، ج۳، ص۱۴)

एक ग़ज़्वे में सहाबए किराम رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُم ने एक टीले पर क़ियाम फ़रमाया। इस शिद्दत से सर्दी पड़ी कि बा'ज़ लोगों ने ज़मीन में गढ़ा खोदा और उस के अन्दर घुस कर ऊपर से ढाल डाल दी। आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने येह ह़ालत देखी तो फ़रमाया कि : आज की शब मेरी ह़िफ़ाज़त कौन करेगा ? मैं उस को दुआ़ दूंगा, एक अन्सारी ने अ़र्ज़ किया कि मैं ! या रसूलल्लाह ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم। आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने क़रीब बुला कर उन का नाम पूछा और देर तक दुआ़ देते रहे, ह़ज़रते अबू रैह़ाना رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ ने येह दुआ़ सुनी तो अ़र्ज़ गुज़ार हुवे कि मैं दूसरा निगहबान बनूंगा। आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने क़रीब बुला कर नाम पूछा और उन को भी दुआ़ दी।

(المسند للامام احمد بن حنبل، حدیث أبی ریحانة، الحدیث:۱۷۲۱۳، ج۶، ص۹۹)

आयते करीमा :

وَاللّٰهُ يَعْصِمُكَ مِنَ النَّاسِ ط

(پ۶، المائدة:۶۷)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *और* ***अल्लाह*** *तुम्हारी निगहबानी करेगा लोगों से।*

नाज़िल होने के बा'द आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने अपने लिये पासबान मुक़र्रर करना बन्द कर दिया।

ग़ज़्वए बद्र में जब आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने कुफ़्फ़ार के मुक़ाबले के लिये सहाबए किराम رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُم को त़लब किया तो ह़ज़रते मिक़्दाद رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ बोले, हम वोह नहीं हैं

जो मूसा عَلَیْہِ السَّلَام की क़ौम की त़रह़ कह दें, "तुम और तुम्हारा ख़ुदा दोनों जाओ और लड़ो" बल्कि हम आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के दाएं से, बाएं से, आगे से, पीछे से लड़ेंगे। आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने येह जां निषाराना फ़िक़्रे सुने तो चेहरए मुबारक फ़र्ते मसर्रत से चमक उठा। (صحيح البخاری، کتاب المغازی، باب قول الله تعالی، الحدیث:۳۹۵۲، ج۳، ص۵)

सह़ाबए किराम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُم के जां निषाराना जज़्बात का ज़ुहूर सब से ज़ियादा ग़ज़्वए उह़ुद में हुवा, चुनान्चे इस ग़ज़्वे में किसी मक़ाम पर रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के साथ सिर्फ़ नव सह़ाबा (जिन में सात अन्सारी और दो क़ुरैशी या'नी ह़ज़रते अबू त़ल्ह़ा और ह़ज़रते सा'द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا) रह गए। इस ह़ालत में कुफ़्फ़ार आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم पर दफ़्अ़तन टूट पड़े, तो आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने उन जां निषारों की त़रफ़ ख़िता़ब कर के फ़रमाया कि : जो इन अश्क़िया को मेरे पास से हटाएगा उस के लिये **जन्नत** है। एक अन्सारी फ़ौरन आगे बढ़े और लड़ कर आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم पर क़ुरबान हो गए। इसी त़रह़ कुफ़्फ़ार बराबर आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم पर ह़म्ला करते जाते और आप बार बार पुकारते जाते थे, और एक एक अन्सारी बढ़ कर आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم पर अपनी जान क़ुरबान करता जाता था, यहां तक कि सातों बुज़ुर्ग **शहीद** हो गए।

(صحيح مسلم، کتاب الجهادو السير، باب غزوة احد، الحدیث:۱۷۸۹، ص۹۸۹)

ह़ज़रते अबू त़ल्ह़ा और ह़ज़रते सा'द (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا) की जां निषारी का वक़्त आया, तो ह़ज़रते सा'द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ के सामने आप ने अपना तरकश बिखैर दिया, और फ़रमाया कि तीर फेंको, मेरे मां बाप तुम पर क़ुरबान।

(صحيح البخاری، کتاب المغازی، باب اذهمت طائفتان منكم أن تفشلاو الله وليهما.....الخ، الحدیث:۴۰۵۵، ج۳، ص۳۷)

हज़रते अबू त़ल्हा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ सिपर ले कर आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के सामने खड़े हो गए और तीर चलाने लगे, और इस शिद्दत से तीर अन्दाज़ी की, कि दो तीन कमानें टूट गईं, अगर आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم गरदन उठा कर कुफ़्फ़ार की त़रफ़ देखते थे तो वोह कहते थे, मेरे मां बाप आप पर कुरबान हों गरदन उठा कर न देखें, मबादा कोई तीर लग जाए मेरा सीना आप के सीने के सामने है।

(صحیح البخاری، کتاب المغازی، باب اذھمت طائفتان منکم أن تفشلاواللہ ولیھما.....الخ،الحدیث:٤٠٦٤،ج٣،ص٣٨)

इस ग़ज़्वे में ह़ज़रते शमास बिन उ़षमान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की जां निषारी का येह आ़लम था कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم दाएं बाएं जिस त़रफ़ निगाह उठा कर देखते थे उन की तलवार चमकती हुई नज़र आती थी, उन्हों ने अपने आप को आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की सिपर बना लिया, यहां तक कि इसी ह़ालत में शहीद हुवे।

(الطبقات الکبری،تذکرۃ شماس بن عثمان رضی اللہ عنہ،ج٣، ص١٨٦)

इसी ग़ज़्वे में आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने एक सह़ाबी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को ह़ज़रते सा'द बिन रबीअ़ अन्सारी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की तलाश में रवाना फ़रमाया, वोह लाशों के दरमियान उन को ढूंडने लगे, तो ह़ज़रते सा'द बिन रबीअ़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ख़ुद बोल उठे, क्या काम है? जवाब दिया कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने मुझे तुम्हारा ही पता लगाने के लिये भेजा है, बोले जाओ, आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में मेरा सलाम अ़र्ज़ कर दो, और कह दो कि मुझे नेज़े के बारह ज़ख़्म लगे हैं, और अपने क़बीले में

ए'लान कर दो कि अगर रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم शहीद हो गए और उन में का एक मुतनफ़्फ़िस भी ज़िन्दा रहा तो खुदा عَزَّوَجَلَّ के नज़्दीक उन का कोई उ़ज़्र क़ाबिले समाअ़त न होगा।

(الموطا الامام مالك، كتاب الجهاد، باب الترغيب فى الجهاد، الحديث:١٠٣٥، ج٢، ص٢٤)

न सिर्फ़ मर्द बल्कि औ़रतें भी आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की जां निषारी की आरज़ू रखती थीं, ह़ज़रते तुलैब बिन उ़मैर رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه इस्लाम लाए और अपनी मां अरवा बिन्ते अ़ब्दुल मुत्त़लिब को इस की ख़बर दी तो बोलीं कि तुम ने जिस शख़्स की मदद की वोह इस का सब से ज़ियादा मुस्तह़िक़ था, अगर मर्दों की त़रह़ हम भी इस्तित़ाअ़त रखतीं तो आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ह़िफ़ाज़त करतीं और आप की त़रफ़ से लड़तीं। (الاستيعاب، تذكرة طليب بن عمير، ج٢، ص٣٢٣)

ख़िदमते रसूल صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

सह़ाबए किराम رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُم रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ख़िदमत को अपना सब से बड़ा शरफ़ ख़याल करते थे, इस लिये मुतअ़द्दद बुज़ुर्गों ने अपने आप को आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ख़िदमत के लिये वक़्फ़ कर दिया था, ह़ज़रते बिलाल رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه ने इब्तिदाए बिअ़्षत ही से आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ख़ानादारी के तमाम कारोबार का इन्तिज़ाम अपने ज़िम्मे ले लिया था, और इस के लिये त़रह़ त़रह़ की अज़िय्यतें और तक्लीफ़ें बरदाश्त करते थे, लेकिन आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के शरफ़े ख़िदमत का छोड़ना कभी गवारा नहीं करते थे, हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का मा'मूल था कि जब कोई ग़रीब मुसलमान ख़िदमते मुबारक में ह़ाज़िर होता और उस के बदन पर कपड़े न होते तो ह़ज़रते बिलाल رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه को हुक्म देते और वोह क़र्ज़ ले कर उस की ख़ूराक व लिबास का इन्तिज़ाम करते।

एक बार किसी मुशरिक से इस ग़रज़ के लिये क़र्ज़ लिया। लेकिन एक दिन उस ने देखा तो निहायत सख़्त लहजे में कहा, ओ ह़बशी तुझे मा'लूम है कि अब महीने में कितने दिन रह गए हैं? सिर्फ़ चार दिन इसी अ़र्से में क़र्ज़ वुसूल कर लूं। वरना जिस त़रह़ तू पहले बकरियां चराया करता था इसी त़रह़ बकरियां चरवाऊंगा। ह़ज़रते बिलाल رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को इस से सख़्त रन्ज हुवा, इशा के बा'द आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में आए और कहा कि मुशरिक ने मुझे येह कुछ कहा है, और वोह मुझे ज़लील कर रहा है, इजाज़त फ़रमाइये तो जब तक क़र्ज़ अदा न हो जाए मुसलमान क़बाइल में भाग कर पनाह लूं। घर वापस आए तो भागने का तमाम सामान भी कर लिया, लेकिन रज़्ज़ाक़े आ़लम ने सुब्ह़ तक ख़ुद क़र्ज़ के अदा करने का तमाम सामान कर दिया।

(سنن ابی داود، کتاب الخراج والفیء والامارۃ، باب فی الامام یقبل ھدایاالمشرکین، الحدیث: ۳۰۵۵، ج۳، ص۲۳۰)

ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को येह शरफ़ ह़ासिल था, कि जब आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم कहीं जाते तो वोह पहले आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को जूते पहनाते, फिर आगे आगे अ़सा ले कर चलते, आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم मजलिस में बैठना चाहते तो आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के पाउं से जूते निकालते, फिर आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को अ़सा देते, जब आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم उठते, फिर इसी त़रह़ जूते पहनाते, आगे आगे अ़सा ले कर चलते, और हुजरए मुबारका तक पहुंच जाते।

आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم नहाते तो पर्दा करते, आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم सोते तो बेदार करते, आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم सफ़र में जाते तो बिछौना, मिस्वाक, जूता और वुज़ू का पानी

उन के साथ होता, इस लिये वोह साहिबे सवादे रसूलिल्लाह صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم या'नी आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के मीरे सामान कहे जाते थे।

(الطبقات الکبری،عبداللہ بن مسعود رضی اللہ عنہ ، ج۳،ص۱۱۳)

ह़ज़रते रबीआ़ अस्लमी رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ भी शबो रोज़ आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में मसरूफ़ रहते। जब आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم इशा की नमाज़ से फ़ारिग़ हो कर दौलत सराए अक़्दस में तशरीफ़ ले जाते तो वोह दरवाज़े पर बैठ जाते कि मबादा आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को कोई ज़रूरत पेश आ जाए।

एक बार आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने उन को निकाह़ करने का मश्वरा दिया। बोले : येह तअ़ल्लुक़ आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमत गुज़ारी में ख़लल अन्दाज़ होगा जिस को मैं पसन्द नहीं करता। लेकिन आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के बार बार के इस्रार से शादी करने पर रिज़ा मन्द हो गए।

(المسند لامام احمد بن حنبل، حدیث ربیعۃ بن کعب الاسلمی رضی اللہ عنہ، الحدیث:۱۶۵۷۷،ج۵،ص۵۶۹)

ह़ज़रते उ़क़्बा बिन आ़मिर رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ भी आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के मुस्तक़िल ख़िदमत गुज़ार थे, उन का काम येह था कि सफ़र में आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ऊंटनी को हांकते हुवे चलते थे। (مدارج النبوت،قسم پنجم،باب چہارم،ج۲،ص۴۹۵)

ह़ज़रते अनस बिन मालिक رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ को बचपन ही से उन की वालिदा ने आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमत के लिये वक़्फ़ कर दिया था। (الاصابۃ ،انس بن مالک بن النضر،ج۱،ص۲۷۶ ملخصًا)

ह़ज़रते सलमा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہَا एक सह़ाबिया थीं, जिन्हों ने इस इस्तिक़्लाल के साथ आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमत की,

कि उन को ख़ादिमए रसूलिल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का लक़ब हासिल हुवा।

(سنن ابی داود، کتاب الطب، باب فی الحجامة، الحدیث:٣٨٥٨،ج٤،ص٦)

ह़ज़रते सफ़ीना ह़ज़रते सलमा (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا) की वालिदा के ग़ुलाम थे। उन्हों ने इन को इस शर्त़ पर आज़ाद करना चाहा कि वोह अपनी उ़म्र आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ख़िदमत गुज़ारी में सर्फ़ कर दें, उन्हों ने कहा कि अगर आप येह शर्त़ न भी करतीं तब भी मैं ता नफ़्से वापसीं आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ख़िदमत से अ़लाह़िदा न होता।

(سنن ابی داود، کتاب العتق، باب العتق علی الشرط،الحدیث:٣٩٣٢، ج٤،ص٣١)

इन बुज़ुर्गों के इ़लावा अकषर सह़ाबा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُم जो आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में ह़ाज़िर रहते थे उन को भी उ़मूमन शरफ़े ख़िदमत ह़ासिल हुवा करता था, एक बार आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم रफ़्ए़ ह़ाजत के लिये बैठे तो ह़ज़रते उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ आप के पीछे पानी का कूज़ा ले कर खड़े रहे, आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने पूछा : उ़मर क्या है? बोले कि वुज़ू का पानी, फ़रमाया कि हर वक़्त इस की ज़रूरत नहीं।

(سنن ابی داود، کتاب الطهارة، باب فی الاستبراء، الحدیث:٤٢،ج١،ص٤٩)

ह़ज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ जो हमेशा ख़िदमते मुबारक में ह़ाज़िर रहते थे उन को अकषर येह शरफ़ ह़ासिल होता कि जब आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم रफ़्ए़ ह़ाजत के लिये तशरीफ़ ले जाते तो वोह किसी त़श्त या कूज़े में पानी लाते और आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم वुज़ू करते। (سنن ابی داود، کتاب الطهارة ، باب الرجل یدلك یده بالأرض اذا استنجی، الحدیث:٤٥،ج١،ص٥٠)

हज़रते अबू सम्ह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ हमेशा आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में मसरूफ़ रहते थे, चुनान्चे जब आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم गुस्ल फ़रमाते तो वोह पीठ फेर कर खड़े हो जाते और आप उन की आड़ में नहा लेते। (اسدالغابة، تذکرة ابوالسمح مولی النبی صلی اللہ علیہ وسلم، ج٦،ص١٦٦)

जब आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने हिज्जतुल वदाअ़ में रमिये जमरा करना चाही तो ख़ुद्दामे बारगाह हज़रते उसामा और हज़रते बिलाल رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا साथ साथ थे, एक के हाथ में नाक़ा की नकील थी और दूसरे बुज़ुर्ग आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के सर पर अपना कपड़ा ताने हुवे चलते थे कि आफ़्ताब की शुआएं चेहरए मुबारक को गर्म निगाहों से न देखने पाएं !

(سنن ابی داود، کتاب المناسك، باب المحرم یظلل، الحدیث١٨٣٤،ج٢،ص٢٤٢)

मह़ब्बते रसूल صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم

ह़दीष शरीफ़ में है कि हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि जब तक मैं तुम को तुम्हारे बाप अवलाद और तमाम लोगों से ज़ियादा महबूब न हो जाऊं, तुम लोग (कामिल) मोमिन नहीं हो सकते, और सहाबए किराम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُم को ईमान का येही दरजए कमाल हासिल था, चुनान्चे हज़रते जाबिर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के वालिद जब ग़ज़्वए उहुद की शिर्कत के लिये रवाना हुवे तो बेटे से कहा कि मैं ज़रूर शहीद होऊंगा और रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के सिवा मुझ को तुम से ज़ियादा कोई अ़ज़ीज़ नहीं है। तुम मेरा क़र्ज़ अदा करना और अपने भाइयों के साथ नेक सुलूक करना।

(اسدالغابة، تذکرة عبداللہ بن عمرو بن حرام رضی اللہ عنہ، ج٣،ص٣٥٤)

इस के इलावा सहाबए किराम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُم और भी मुख़्तलिफ़ तरीक़ों से आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की महब्बत का इज़्हार करते थे।

एक बार एक सह़ाबी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में ह़ाज़िर हुवे, जोशे मह़ब्बत में आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की क़मीस उलट दी, उस के अन्दर घुस गए, आप को चूमा, आप से लिपट गए।

(سنن ابی داود، کتاب الزکاۃ، باب مالایجوزمنعه،الحدیث: ١٦٦٩، ج٢،ص١٧٧)

ह़ज़रते उसैद बिन हुज़ैर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ एक शगुफ़्ता मिज़ाज सह़ाबी थे, एक रोज़ हंसी मज़ाक़ की बातें करते थे, कि आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने उन के पहलू में एक छड़ी से कोंच दिया, उन्हों ने इस का इन्तिक़ाम लेना चाहा, आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم इस पर राज़ी हो गए, लेकिन उन्हों ने कहा आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के बदन पर कुरता है, ह़ालां कि मेरे बदन पर कुरता नहीं, आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने कुरता भी उठा दिया, कुरते का उठाना था कि वोह आप से लिपट गए, करवट को बोसा दिया, और अ़र्ज़ किया : या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم येही मक़्सूद था !

(سنن ابی داود،کتاب الأدب، باب فی قبلة الجسد،الحدیث٥٢٢٤، ج٤، ص٤٥٦)

जब आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में वफ़्दे अ़ब्दुल क़ैस ह़ाज़िर हुवा तो सुवारी से उतरने के साथ ही सब के सब दौड़े और आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के हाथ पाउं को बोसा दिया।

(المرجع السابق،باب فی قبلة الرجل، الحدیث:٥٢٢٥،ج٤،ص٤٥٦)

ह़ज़रते करदम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने ह़िज्जतुल वदाअ़ में आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ज़ियारत की तो आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के क़दम चूम लिये और आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की रिसालत का इक़रार किया, और आप की बातें सुनते रहे।

(سنن ابی داود،کتاب النکاح، باب تزویج من لم یولد، الحدیث:٢١٠٣، ج٢، ص٣٤٠)

हज़रते ज़ाहिर رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ एक बदवी सहाबी थे, जो रसूलुल्लाह صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से निहायत महब्बत रखते थे, और आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में हदिय्या भेजा करते थे, आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم भी उन से महब्बत रखते थे और फ़रमाया करते थे, कि ज़ाहिर (رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ) हमारे बदवी हैं और हम उन के शहरी हैं।

एक दिन वोह अपना सौदा फ़रोख़्त कर रहे थे, आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने पीछे से आ कर उन को गोद में ले लिया, उन्हों ने कहा कौन है? छोड़ दो! लेकिन मुड़ कर देखा और मा'लूम हुवा कि आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم हैं तो अपनी पुश्त को बार बार आप के सीने से चिमटाते थे और तस्कीन नहीं होती थी।

(شمائل ترمذی،باب ماجاء فی صفة مزاح رسول اللہ صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم، الحدیث:۲۳۸،ج۵،ص۵٤٥)

अ़रब में येह ख़याल था कि अगर किसी के पाउं सुन हो जाएं और वोह अपने मह़बूब को याद करे तो येह कैफ़िय्यत ज़ाइल हो जाती है। एक बार हज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا के पाउं सुन हो गए तो किसी ने कहा अपने मह़बूब को याद कर लो, बोले : या मुह़म्मदाह (صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم)

(الأدب المفرد،باب مایقول الرجل اذاخدرت رجلہ ، الحدیث:۹۹۳،ص۲٦۱)

हज़रते उम्मे अ़तिय्या رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہَا एक सहाबिया थीं, जब वोह आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का ज़िक्र करतीं तो फ़र्ते मसर्रत से कहतीं "बि अबी" या'नी मेरे बाप आप पर कुरबान।

(سنن النسائی، کتاب الحیض والاستحاضة، باب شھود الحیض العیدین ودعوۃ المسلمین، ج۱ ص۱۹۳)

इ़ज़्ज़त और महब्बत की वजह से सहाबए किराम رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُم आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के आराम व आसाइश का

निहायत ख़याल रखते थे और आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की किसी क़िस्म की तक्लीफ़ गवारा नहीं करते थे।

आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم एक सफ़र में थे जिस में एक सह़ाबी رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه निहायत एहतिमाम के साथ आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के लिये पानी ठन्डा करते थे।

(صحیح مسلم، کتاب الزھد والرقائق، باب حدیث جابر الطویل، الحدیث۳۰۰٦، ص۱٦۰۲)

एक औ़रत थी जो हमेशा मस्जिदे नबवी علیٰ صاحِبِھَا الصَّلٰوۃُ وَالسَّلام में झाड़ू दिया करती थी, उस का इन्तिक़ाल हो गया तो सह़ाबए किराम رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُم ने उस को दफ़्न कर दिया और आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को इत्तिलाअ़ न दी, आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को मा'लूम हुवा तो फ़रमाया, कि मुझे ख़बर क्यूं नहीं की ? बोले हम ने तक्लीफ़ देना गवारा न किया, इसी त़रह़ एक और सह़ाबी رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه का इन्तिक़ाल हो गया तो सह़ाबए किराम رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُم ने हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को ख़बर न की और कहा कि अन्धेरी रात थी हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को ज़ह़मत होती।

(سنن ابن ماجه، کتاب الجنائز، باب ماجاء فی الصلوۃ علی القبر، الحدیث:۱۵۲۸۔۱۵۳۰، ج۲، ص۲۳۳۔۲۳٤)

आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को जो चीज़ मह़बूब होती वोह आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की मह़ब्बत की वजह से सह़ाबए किराम رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُم को भी मह़बूब हो जाती। "कद्दू" आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को बहुत मरग़ूब था इस लिये ह़ज़रते अनस बिन मालिक رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه भी इस को निहायत पसन्द फ़रमाते थे, चुनान्चे एक रोज़ कद्दू खा रहे थे तो ख़ुद ब ख़ुद बोल उठे, इस बिना पर कि रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को तुझ से मह़ब्बत थी, तू मुझे किस क़दर मह़बूब है। (سنن الترمذی، کتاب الاطعمة، باب ماجاء فی اکل الدباء، الحدیث:۱۸۵٦، ج۳، ص۳۳٦)

आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की महब्बत ने सहाबए किराम رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُم के नज़्दीक आप की हर चीज़ को महबूब बना दिया था, आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का मा'मूल था कि हर काम की इब्तिदा दाहिनी जानिब से फ़रमाते।

एक बार ह़ज़रते मैमूना رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا के घर में ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के दाईं और ह़ज़रते ख़ालिद बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه बाईं जानिब बैठे हुवे थे, हज़रते मैमूना رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا दूध लाईं तो आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने पी कर ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا से फ़रमाया कि ह़क़ तो तुम्हारा ही है लेकिन अगर ईषार करो तो ख़ालिद को दे सकते हो। अ़र्ज़ की : मैं आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का झूटा किसी को नहीं दे सकता।

(سنن الترمذی، کتاب الدعوات، باب ما یقول اذا أکل طعاما، الحدیث:٣٤٦٦، ج٥،ص ٢٨٣)

एक मरतबा आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने पानी या दूध पी कर ह़ज़रते उम्मे हानी رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا को इनायत फ़रमाया। बोलीं : मैं अगर्चे रोज़े से हूं लेकिन आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का झूटा वापस करना पसन्द नहीं करती हूं।

(المسندلامام احمد بن حنبل،حدیث ام ھانئ بنت ابی طالب واسمھا فاختة،الحدیث:٢٦٩٥٨،ج١٠،ص ٢٦٠)

एक बार एक सह़ाबी رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه ख़िदमते मुबारक में ह़ाज़िर हुवे, आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم खाना खा रहे थे, उन को भी शरीक करना चाहा, वोह रोज़े से थे इस लिये उन को अफ़्सोस हुवा कि हाए रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का खाना न खाया।

(سنن ابن ماجه، کتاب الأطعمة،باب عرض الطعام، الحدیث:٣٢٩٩،ج٤، ص٢٦)

तक्लीफ़ की वजह से आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को रन्ज होता तो तमाम सह़ाबा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُم को रन्ज होता, आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को ख़ुशी होती तो तमाम सह़ाबा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُم भी उस में शरीक होते। आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने एक महीने के लिये अज़्वाजे मुत़ह्हरात से अ़लाह़िदगी इख़्तियार कर ली तो तमाम सह़ाबा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُم ने मस्जिद में आ कर गिर्या व ज़ारी शुरूअ़ कर दी।

(صحیح مسلم، کتاب الطلاق،باب فی الایلاء واعتزال النساء...الخ،الحدیث: ۱٤۷۹،ص۷۸٤)

आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने जब मरज़ुल मौत में ह़ज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه को इमाम बनाना चाहा तो ह़ज़रते आ़इशा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا ने कहा कि वोह रक़ीक़ुल क़ल्ब आदमी हैं। जब आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को न देखेंगे तो ख़ुद रोएंगे, और तमाम सह़ाबा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُم भी।

(سنن ابن ماجه، کتاب الصلوة،باب ماجاء فی صلاة رسول الله صلی الله علیه وسلم فی مرضه، الحدیث:۱۲۳۲،ج۲،ص۴۷)

ह़ज़रते अ़म्र बिन अल जमूअ़ رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه एक फ़य्याज़ सह़ाबी थे, इन को आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से इस क़दर मह़ब्बत थी कि जब आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم निकाह़ करते तो वोह आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की जानिब से दा'वते वलीमा करते।

(اصابة، تذکرة عمرو بن الجموح، ج٤،ص٥٠٧)

आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم जब किसी ग़ज़्वे में तशरीफ़ ले जाते तो सह़ाबिय्यात رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُنَّ फ़र्ते मह़ब्बत से आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की वापसी और सलामती के लिये नज़्रें मानती थीं।

एक बार आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم जब किसी ग़ज़्वे से वापस आए तो एक सह़ाबिय्या (जारिया सौदा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا) ने कहा कि या रसूलल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! मैं ने नज़्र मानी थी कि अगर

खुदा आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को सहीह व सालिम वापस लाएगा तो आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के सामने दफ़ बजा के गाऊंगी।

(سنن الترمذی، کتاب المناقب، باب ابی حفص عمر بن خطاب ، الحدیث: ۳۷۱۰، ج۵، ص۳۸٦)

आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم उमूमन फ़क़्रो फ़ाक़ा के साथ ज़िन्दगी बसर करते थे, सहाबए किराम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُم के सामने आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़ानगी ज़िन्दगी का येह मन्ज़र आ जाता तो फ़र्ते महब्बत से आबदीदा हो जाते।

एक बार हज़रते उमर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ दौलत सराए अक़्दस में तशरीफ़ ले गए तो देखा कि आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم चटाई पर लैटे हुवे हैं, जिस पर कोई बिस्तर नहीं है। जिस्मे मुबारक पर तहबन्द के सिवा कुछ नहीं, पहलू में चटाई के निशानात पड़े हैं, तोशाख़ाने में मुठ्ठी भर जव के सिवा और कुछ नहीं, आंखों से बे साख़्ता आंसू निकल आए, इरशाद हुवा कि उमर क्यूं रोते हो ? बोले, क्यूं न रोऊं ? आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की येह हालत है और क़ैसरो किस्रा दुन्या के मज़े उड़ा रहे हैं ! फ़रमाया : क्या तुम्हें येह पसन्द नहीं कि हमारे लिये आख़िरत और उन के लिये दुन्या हो।

(صحیح مسلم، کتاب الطلاق، باب فی الایلاء واعتزال النساء و تخییرھن، الحدیث: ۱۴۷۹، ص۷۸۴)

आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के विसाल के बा'द सहाबए किराम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُم को जब आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की येह हालत याद आती थी तो आंखों से आंसू निकल पड़ते थे।

एक बार हज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के सामने चपातियां आईं तो देख कर रो पड़े कि सरकार صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने अपनी आंखों से कभी चपाती नहीं देखी।

(سنن ابن ماجہ، کتاب الاطعمۃ، باب الرقاق، الحدیث:۳۳۳۸، ج۴، ص۴۳)

एक दिन ह़ज़रते अ़ब्दुर्रह़मान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अपने दोस्तों को गोश्त रोटी खिलाया तो रो पड़े और कहा कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का विसाल भी हो गया और आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने पेट भर जव की रोटी कभी नहीं खाई।

(شمائل ترمذی،باب ماجاء فی عیش النبی صلی اللہ علیہ وسلم ، الحدیث: ۳۷۸، ج۵،ص۵۷۵)

अगर आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم किसी चीज़ से मुतमत्तेअ़ न होते तो सह़ाबए किराम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُم उस से मुतमत्तेअ़ होना पसन्द न करते, आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का विसाल हुवा तो आप के कफ़न के लिये एक हुल्ला ख़रीदा गया लेकिन बा'द में आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم दूसरे कपड़े में कफ़्नाए गए, और येह हुल्ला ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन अबी बक्र رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने इस ख़याल से ले लिया कि इस को अपने कफ़न के लिये मह़फ़ूज़ रखेंगे लेकिन फिर कहा कि जब ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ की मरज़ी न हुई कि वोह रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का कफ़न हो, तो मेरा क्यूं हो। येह कह कर उस को फ़रोख़्त कर के उस की क़ीमत सदक़ा कर दी।

(صحیح مسلم، کتاب الجنائز، باب فی کفن المیت، الحدیث:۹۴۱،ص۴۶۹)

ग़ज़्वए तबूक सख़्त गर्मियों के ज़माने में वाकेअ़ हुवा था, ह़ज़रते अबू ख़ैषमा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ एक सह़ाबी थे जो इस ग़ज़्वे में शरीक न हो सके थे एक दिन वोह घर में आए तो देखा कि उन की अज़्वाज ने उन की आसाइश के लिये निहायत सामान किया है, बालाख़ाने पर छिड़काव किया है, पानी सर्द किया है, उ़म्दा खाना तय्यार किया है। लेकिन वोह तमाम सामाने ऐ़श देख कर बोले : रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم इस लू और गर्मी में खुले हुवे

मैदान में हों और अबू ख़ैषमा साया, सर्द पानी, उ़म्दा गिज़ा और ख़ूब सूरत औ़रतों के साथ लुत्फ़ उठाए ? खुदा عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! येह इन्साफ़ नहीं है, मैं हरगिज़ बालाख़ाने पर न आऊंगा चुनान्चे उसी वक़्त ज़ादे राह लिया और तबूक की त़रफ़ रवाना हो गए।

(اسدالغابة، تذكرة مالك بن قيس بن خيثمة،ج٥،ص٤٧)

विसाल के बा'द आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم याद आते तो सह़ाबा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُم बे इख़्तियार रो पड़ते। एक दिन ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُمَا ने फ़रमाया : और जुमा'रात का दिन किस क़दर सख़्त था, इस के बा'द इस क़दर रोए कि ज़मीन की कंकरियां आंसू से तर हो गईं। ह़ज़रते सईद बिन जुबैर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने पूछा जुमा'रात का दिन क्या ? बोले : इसी दिन आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के मरज़ुल मौत में शिद्दत आई थी।

(صحيح مسلم ، كتاب الوصية، باب ترك الوصية لمن ليس له شئ يوصى فيه ، الحديث:١٦٣٧،ص٨٨٨)

आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की मुबारक सोह़बतों की याद आती तो सह़ाबए किराम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُم की आंखों से बे इख़्तियार आंसू जारी हो जाते। एक बार ह़ज़रते अबू बक्र और ह़ज़रते अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُمَا अन्सार की एक मजलिस में गए तो देखा कि सब लोग रो रहे हैं, सबब पूछा तो बोले कि हम को सरकार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की मजलिस याद आ गई, अ़ल्लामा इब्ने ह़जर رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ इस ह़दीष की शर्ह़ में लिखते हैं कि येह वाक़िआ़ आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की अ़लालत के ज़माने का है, जिस में अन्सार को येह ख़ौफ़ पैदा हुवा कि अगर इस मरज़ में आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का विसाल हुवा तो आप की मजलिस मुयस्सर न होगी, इस लिये वोह इस ग़म में रो पड़े।

हज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ जब रसूलुल्लाह صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का तज़्किरा फ़रमाते थे तो आंखों से आंसू जारी हो जाते थे। (الطبقات الکبری،تذکرۃ عبداللہ بن عمر بن خطاب، ج٤،ص١٢٧)

क़राबते रसूल صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की इ़ज़्ज़त व मह़ब्बत

रसूलुल्लाह صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के तअ़ल्लुक़ से सहाबए किराम अहले बैत رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْھُم की भी निहायत इ़ज़्ज़त व मह़ब्बत करते थे। एक बार ह़ज़रते इमाम बाक़र, ह़ज़रते जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْھُم की ख़िदमत में ह़िज्जतुल वदाअ़ की कैफ़िय्यत पूछने की ग़रज़ से ह़ाज़िर हुवे। उस वक़्त अगर्चे वोह ब हैषिय्यते त़ालिबुल इ़ल्म और नियाज़ मन्दाना आए थे, ताहम ह़ज़रते जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْھُمَا ने निहायत तपाक से उन का ख़ैर मक़्दम किया पहले उन के सर की त़रफ़ हाथ बढ़ाया और उन की घुन्डी खोली, सीने पर हाथ रखा और मरह़बा कहा, फिर अस्ल मस्अले पर गुफ़्त्गू करने की इजाज़त दी।

(سنن ابی داود، کتاب المناسك، باب صفة حجة النبی صلی اللہ علیہ وسلم، الحدیث:١٩٠٥،ج٢،ص٢٦٥)

एक बार एक इ़राक़ी ने ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْھُمَا से पूछा कि मच्छर का ख़ून जो कपड़े पर लग जाता है इस का क्या हुक्म है ? बोले, इन को देखो रसूलुल्लाह صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के नवासे को तो शहीद कर डाला और मच्छर के ख़ून का सुवाल करते हैं।

(سنن الترمذی، کتاب المناقب، باب مناقب الحسن والحسین رضی اللہ عنھما، الحدیث:٣٧٩٥،ج٥،ص٤٢٧)

रसूलुल्लाह صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के विसाल के चन्द रोज़ बा'द एक दिन ह़ज़रते अबू बक्र رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ एक रास्ते से गुज़रे।

देखा कि ह़ज़रते ह़सन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ खेल रहे हैं, उठा कर अपने कन्धे पर रख लिया और येह शे'र पढ़ा

وابابی شبه النبی   لیس شبیها بعلی

मेरे बाप तुम पर कुरबान कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के हम शक्ल हो, अ़ली رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के मुशाबा नहीं, ह़ज़रते अ़ली كَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْہَہُ الْکَرِیْم भी साथ थे वोह हंस पड़े ।

(المسند لامام احمد بن حنبل،مسند ابی بکرالصدیق ، الحدیث: ٤٠، ج١، ص٢٨)

एक दिन ह़ज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ इमामे ह़सन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मिले और कहा कि ज़रा पेट खोलिये जहां रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने बोसा दिया था वहीं मैं भी बोसा दूंगा, चुनान्चे उन्हों ने पेट खोला और उन्हों ने वहीं बोसा दिया ।

(المسندلامام احمد بن حنبل،مسند ابی ھریرۃ، الحدیث:٩٥١٥،ج٣،ص٤١٥)

एक बार बहुत से लोग मस्जिदे नबवी علٰی صاحِبِھَا الصَّلٰوۃُ وَالسَّلام में बैठे हुवे थे, इत्तिफ़ाक़ से ह़ज़रते इमामे हुसैन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ आ निकले और सलाम किया, सब ने सलाम का जवाब दिया, लेकिन ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन अ़म्र बिन अल आ़स رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ख़ामोश रहे, जब सब चुप हुवे तो ब आवाज़े बुलन्द कहा اَلسَّلَامُ عَلَیْکُمْ وَرَحْمَۃُ اللّٰہِ येह कह कर सब की त़रफ़ मुख़ात़िब हो कर कहा, मैं तुम्हें बताऊं कि ज़मीन के रहने वालों में, आस्मान वालों को सब से मह़बूब शख़्स कौन है? येही जो जा रहा है, जंगे सिफ़्फ़ीन के बा'द से इन्हों ने मुझ से बात चीत नहीं की, अगर वोह मुझ से राज़ी हो जाएं तो येह मुझे सुर्ख़ ऊंटों से भी ज़ियादा मह़बूब है ।

(اسدالغابۃ،تذکرۃ عبداللہ بن عمروبن العاص،ج٣،ص٣٥٨)

हज़रते अबुल तुफ़ैल رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ हज़रते अ़ली کَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْھَہُ الْکَرِیْم के बहुत बड़े ह़ामी थे, हज़रते अ़ली کَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْھَہُ الْکَرِیْم के इन्तिक़ाल के बा'द एक बार हज़रते अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने उन से पूछा कि तुम्हारे दोस्त अबुल ह़सन के ग़म में तुम्हारा क्या ह़ाल है? बोले, मूसा عَلَیْہِ السَّلَام के ग़म में जो ह़ाल उन की मां का था।

(اسدالغابة، تذكرة ابو طفيل عامر بن واثلة، ج٦، ص١٩٢)

हज़रते फ़ातिमा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا ने जब हज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की विराषत का मुत़ालबा किया, और हज़रते अ़ली کَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْھَہُ الْکَرِیْم ने रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की क़राबत के हुक़ूक़ जताए तो हज़रते अबू बक्र رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने उस मौक़अ़ पर जो तक़रीर की उस में ख़ास तौर पर अहले बैत की मह़ब्बत का बयान किया और कहा कि उस ज़ात की क़सम जिस के हाथ में मेरी जान है, रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की क़राबत के हुक़ूक़ का लिह़ाज़ मुझे अपनी क़राबत से ज़ियादा है। उन लोगों को भी इन के हुक़ूक़ का लिह़ाज़ रखने का हुक्म दिया।

(صحيح البخاري، كتاب فضائل اصحاب النبي، باب مناقب قرابة رسول الله صلى الله تعالىٰ عليه وسلم، الحديث:٣٧١٢، ج٢، ص٥٣٨)

एक बार हज़रते अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने एक मुआ़मले में हज़रते उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से इसरार किया और कहा कि या अमीरल मोअमिनीन! अगर मूसा عَلَیْہِ السَّلَام के चचा आप के पास मुसलमान हो कर आते तो आप क्या करते? बोले : उन के साथ हुस्ने सुलूक करता। हज़रते अ़ब्बास ने कहा : तो फिर मैं रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का चचा हूं, बोले : ऐ अबुल फ़ज़्ल! आप की क्या राए है, ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ की क़सम! आप के बाप मुझे अपने बाप से ज़ियादा मह़बूब हैं, क्यूं कि मुझे मा'लूम है

कि वोह रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को मेरे बाप से ज़ियादा मह़बूब थे और मैं रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की महब्बत को अपनी महब्बत पर तरजीह़ देता हूं।

ह़ज़रते अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه का इन्तिक़ाल हुवा तो बनू हाशिम ने अलग और ह़ज़रते उ़षमान رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه ने अलग अन्सार की तमाम आबादियों में इस का ए'लान करवा दिया। लोग इस कषरत से जम्अ़ हुवे कि कोई शख़्स ताबूत (जनाज़ए मुबारक) के पास नहीं जा सकता था, खुद बनू हाशिम के लोगों ने इस त़रह़ घेर लिया कि ह़ज़रते उ़षमान رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه ने सिपाहियों के ज़रीए़ से उन को हटाया। (الطبقات الکبری،تذکرۃ عباس بن عبدالمطلب،ج٤،ص٢٣)

अ़रब में जब क़ह़त़ पड़ता था तो ह़ज़रते उ़मर رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه इन के वसीले से बारिश की दुआ़ मांगते थे, और कहते थे कि खुदावन्दा! हम पहले अपने पैग़म्बर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को वसीला बनाते थे और तू पानी बरसाता था, और अब अपने पैग़म्बर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के चचा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه को वसीला बनाते हैं, हमारे लिये पानी बरसा।

(صحیح البخاری، کتاب فضائل اصحاب النبی ، باب ذکر العباس بن عبدالمطلب رضی اللہ عنہ، الحدیث:٣٧١٠،ج٢،ص٥٣٧)

एक बार ह़ज़रते उ़मर رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه ने शिफ़ा बिन्ते अ़ब्दुल्लाह अल अ़दविया को बुला भेजा, वोह आईं तो देखा कि आ़तिका बिन्ते उसैद पहले से मौजूद हैं, कुछ देर के बा'द ह़ज़रते उ़मर رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه ने दोनों को एक एक चादर दी, लेकिन शिफ़ा की चादर कम दरजे की थी, इस लिये उन्हों ने कहा कि मैं आ़तिका से ज़ियादा क़दीमुल इस्लाम और आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه की चचाज़ाद बहन हूं, आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه ने मुझे ख़ास इस ग़रज़ के लिये बुलाया था और

आतिका رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْهَا तो यूंही आ गई थीं। बोले : मैं ने येह चादर तुम्हें ही देने के लिये रखी थी, लेकिन जब आतिका आ गईं तो मुझे रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की क़राबत का लिहाज़ करना पड़ा।

(الاصابة فی تمییز الصحابة، کتاب النساء،تذکرة عاتکة بنت اسید، الحدیث: ۱۱۴۵۰،ج۸،ص۲۲۶۔۲۲۷)

हज़रते हिन्द बिन अबी हाला हज़रते ख़दीजा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْهَا के बेटे थे, सिर्फ़ इतने तअ़ल्लुक़ से कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इन की परवरिश फ़रमाई थी, जब उन के बेटे का बसरा में ब मरज़े ताऊ़न इन्तिक़ाल हुवा तो पहले उन का जनाज़ा निहायत कस्म पुरसी की ह़ालत में उठाया गया, लेकिन इस ह़ालत को देख कर एक औ़रत ने पुकारा :

واهند بن هنداه وابن ربيب رسول الله

(हाए हिन्द बिन हिन्द हाए परवर्दए रसूलिल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के फ़रज़न्द)

येह सुनना था कि लोग अपने मुर्दों की तज्हीज़ व तक्फ़ीन छोड़ कर उन के जनाज़े में शरीक हो गए।

(الاستیعاب فی معرفة الصحابة،باب هند، تذکرة هندبن هالة التمیمی، ج۴،ص۱۰۶)

क़बीला बनू ज़हरा में चूंकि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की नन्हाल थी, इस लिये ह़ज़रते आ़इशा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْهَا इस क़बीले के पासे ख़ातिर का निहायत लिहाज़ करती थीं, चुनान्चे वोह ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْهُمَا से ख़फ़ा हुईं तो उन्हों ने इसी क़बीले के चन्द बुज़ुर्गों को शफ़ीअ़ बनाया।

(صحیح البخاری،کتاب المناقب، باب مناقب قریش، الحدیث:۳۵۰۳، ج۲،ص۴۷۵)

रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की इ़ज़्ज़त व मह़ब्बत

रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم जिन लोगों से मह़ब्बत रखते थे सह़ाबए किराम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْهُم भी उन की निहायत तौक़ीर व इ़ज़्ज़त करते थे।

हज़रते उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने हज़रते उसामा बिन ज़ैद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का अ़तिय्या साढ़े तीन हज़ार और अपने बेटे हज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا का तीन हज़ार मुक़र्रर फ़रमाया, तो उन्हों ने ए'तिराज़ किया कि आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने उसामा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को मुझ पर क्यूं तरजीह़ दी, वोह तो किसी जंग में मुझ से आगे न रहे। बोले : उसामा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के बाप तुम्हारे बाप से ज़ियादा रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को मह़बूब थे और उसामा हुज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को तुम से ज़ियादा मह़बूब थे, इस लिये मैं ने अपने मह़बूब पर रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के मह़बूब को तरजीह़ दी।

(سنن الترمذی، کتاب المناقب، باب مناقب زید بن حارثۃ، الحدیث:۳۸۳۹،ج۵،ص۴۴۵)

एक बार हज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا ने देखा कि एक शख़्स मस्जिद के गोशे में दामन घसीटता हुवा फिर रहा है, बोले : येह कौन शख़्स है ? एक आदमी ने कहा : आप इन को नहीं पहचानते ? येह मुह़म्मद बिन उसामा हैं, हज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا ने येह सुन कर गरदन झुका ली, और ज़मीन पर हाथ मार कर कहा : अगर रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم इन को देखते तो इन से मह़ब्बत फ़रमाते।

(صحیح البخاری، کتاب فضائل اصحاب النبی صلی اللہ علیہ وسلم ، باب ذکر اسامۃ بن زید، الحدیث:۳۷۳۴،ج۲،ص۵۴۳)

सह़ाबए किराम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُم न सिर्फ़ आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के दोस्तों की इ़ज़्ज़त करते थे बल्कि आप ने जिन ग़ुलामों को आज़ाद कर के अपना मौला (आज़ाद कर्दा ग़ुलाम) बना लिया था उन के साथ भी निहायत लुत़्फ़ो मदारात के साथ पेश आते थे।

एक बार आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि जिन गुलामों के नाक कान काट लिये गए हैं या उन को जला दिया गया है, वोह आज़ाद हैं, और वोह **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ और उस के रसूल صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के मौला हैं। लोग येह सुन कर एक ख़्वाजा सरा को लाए जिस का नाम सन्दर था, आप ने उस को आज़ाद कर दिया, आप की वफ़ात के बा'द वोह ह़ज़रते अबू बक्र और ह़ज़रते उ़मर (رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُمَا) के ज़मानए ख़िलाफ़त में आता तो दोनों बुज़ुर्ग उस के साथ उ़म्दा सुलूक करते, उस ने एक बार मिस्र जाना चाहा तो ह़ज़रते उ़मर رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه ने ह़ज़रते अ़म्र बिन अल आ़स رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه को ख़त़ लिख दिया कि रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की वसिय्यत के मुवाफ़िक़ इस के साथ उ़म्दा सुलूक करना।

(المسند لامام احمد بن حنبل، حديث عبدالله بن عمرو بن العاص، الحديث : ٦٧٢٢، ج٢، ص٦٠٣)

दूसरी रिवायत में है कि ह़ज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه उस की और उस के अहलो इयाल की बैतुल माल से कफ़ालत करते थे, और ह़ज़रते उ़मर رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه ने गवर्नरे मिस्र को लिखा था कि इस को कुछ ज़मीन दे दी जाए। (المرجع السابق)

लेकिन इस रिवायत में उस के नाम की तस्रीह़ नहीं, मुमकिन है येह कोई दूसरा गुलाम हो।

शौके ज़ियारते रसूल صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

सह़ाबए किराम رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُم के दिल रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के शौके ज़ियारत से लबरेज़ थे। इस लिये जब ज़ियारत का वक़्त क़रीब आता तो येह जज़्बा और भी उभर जाता, और इस का इज़्हार मुक़द्दस नग़्मासन्जी की सूरत में होता।

हज़रते अबू मूसा अश्अ़री رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ जब अपने रुफ़क़ा के साथ मदीना पहुंचे तो सब के सब हम आहंग हो कर ज़बाने शौक़ से येह रज्ज़ पढ़ने लगे

غدا نلقی الاحبه محمدا و حزبه

हम कल अपने दोस्तों या'नी मुहम्मद صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم और उन के गुरौह से मिलेंगे।

मुसाफ़ह़ा की रस्म सब से पहले इन ही लोगों ने ईजाद की जो इज़्हारे शौक़े मह़ब्बत का एक लत़ीफ़ ज़रीआ़ है।

दरबारे नबुव्वत की ग़ैर ह़ाज़िरी सह़ाबा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُم के नज़्दीक बड़ा जुर्म था। एक दिन हुज़ैफ़ा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ की वालिदा ने पूछा कि "तुम ने कब से रसूलुल्लाह صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ज़ियारत नहीं की ?" बोले : "इतने दिनों से।" इस पर उन्हों ने उन को बुरा भला कहा तो बोले : छोड़ो, मैं हुज़ूर صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में जाता हूं, उन के साथ नमाज़े मग़रिब पढ़ूंगा और अपने और तुम्हारे लिये इस्तिग़फ़ार की दरख़्वास्त करूंगा।

(سنن الترمذی، کتاب المناقب، باب مناقب الحسن و الحسین رضی اللہ عنہما، الحدیث:٣٨٠٦،ج٥،ص٤٣١)

आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के विसाल के बा'द येही शौक़ था जो सह़ाबए किराम رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُم को आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के मज़ार की त़रफ़ खींच लाता था। एक बार ह़ज़रते अबू अय्यूब अन्सारी رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ आए और मज़ारे पाक पर अपने रुख़्सार रख दिये। मरवान ने देखा तो कहा : कुछ ख़बर है, येह क्या करते हो ? फ़रमाया : मैं ईंट पथ्थर के पास नहीं आया हूं, रसूलुल्लाह صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में आया हूं।

(المسند للامام احمد بن حنبل،مسند ابو ایوب انصاری، الحدیث:٢٣٦٤٦، ج٩، ص١٤٨)

शौके़ दीदारे रसूल صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيۡهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيۡهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का दीदार ईमान का बाइ़ष होता था इस बिना पर सह़ाबए किराम رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنۡهُم इस के निहायत मुश्ताक़ रहते थे। जब सरकार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيۡهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم हिजरत कर के मदीना तशरीफ़ लाए तो तिश्नगाने दीदार में जिन लोगों ने आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيۡهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को नहीं देखा था वोह आप को पहचान न सके लेकिन जब धूप आई और ह़ज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنۡه ने आप के ऊपर अपनी चादर का साया किया, तो सब ने उस साए में आफ़्ताबे नबुव्वत की दीद से अपना ईमान ताज़ा किया।

(صحیح البخاری، کتاب مناقب الأنصار، باب هجرة النبی صلی الله علیه وسلم واصحابه الی المدینة، الحدیث:۳۹۰۶،ج۲،ص۵۹۳)

हि़ज्जतुल वदाअ़ में मुश्ताक़ाने दीदार ने आफ़्ताबे नबुव्वत को हाले की त़रह़ अपने ह़ल्के़ में ले लिया, बद्दू आ कर शरबते दीदार से सैराब होते थे और कहते थे : "येह मुबारक चेहरा है।"

हु़ज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيۡهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने मरज़ुल मौत के ज़माने में जब हु़जरए मुबारका का पर्दा उठाया और सह़ाबए किराम رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنۡهُم को ह़ालते नमाज़ में मुलाह़ज़ा फ़रमा कर मुस्कुराए तो उस आख़िरी दीदार से सह़ाबए किराम رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنۡهُم पर मसर्रत की वोह कैफ़िय्यत त़ारी हुई कि सोचा नमाज़ ही तोड़ दें और इस जमाले बे मिषाल का आज जी भर कर नज़ारा कर लें। ह़ज़रते अनस رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنۡه फ़रमाते हैं :

کأن وجهه ورقة مصحف مارأینا منظرا کان اعجب الینا من وجه النبی صلی الله علیه وسلم حین وضح لنا

(صحیح البخاری، کتاب الاذان، باب اهل العلم والفضل احق بالامامة، الحدیث:۶۸۱،ج۱،ص۲۴۳)

आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का चेहरा कु़रआन के वरक़ की त़रह़ साफ़ था, हम ने कोई मन्ज़र ऐसा न देखा जो हमें रुख़े अन्वर के इस मन्ज़र से ज़ियादा ख़ुश गवार हो जब चेहरए मुबारक हम पर नुमूदार हुवा।

बा'ज़ सह़ाबा رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُم को आंखें सिर्फ़ इस लिये अ़ज़ीज़ थीं कि इन के ज़रीए़ रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का दीदार होता था। लेकिन जब ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ ने उन को इस शरफ़ से मह़रूम कर दिया तो, वोह आंखों से भी बे नियाज़ हो गए।

एक सह़ाबी رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ की आंखें जाती रहीं, लोग इ़यादत को आए तो उन्हों ने कहा कि इन से मक़्सूद तो सिर्फ़ रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का दीदार था। लेकिन जब आप का विसाल हो गया, तो अगर मेरे इ़वज़ तबाला की हिरनियां अन्धी हो जाएं और मेरी बीनाई लौट आए तब भी मुझे पसन्द नहीं।

(الادب المفرد، باب العيادة من الرمد،الحديث:٥٤٣،ص١٥٣)

शौक़े सोह़बते रसूल (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم)

रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़ैज़ एक ऐसी दौलते जाविदानी था जिस पर सह़ाबए किराम رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُم हर क़िस्म के दुन्यवी मालो मताअ़ को कु़रबान कर देते थे।

एक बार आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने ह़ज़रते अ़म्र बिन अल आ़स رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ से फ़रमाया कि मैं तुम्हें एक मुहिम पर भेजना चाहता हूं, ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ माले ग़नीमत देगा तो तुम को मो'तदिबा ह़िस्सा दूंगा। बोले : मैं माल के लिये मुसलमान नहीं हुवा सिर्फ़ इस लिये इस्लाम लाया हूं कि आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़ैज़े सोह़बत ह़ासिल हो।

(الادب المفرد، باب المال الصالح للمرء الصالح،الحديث:٣٠٢،ص٩٦)

जो सहाबा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡھُم दुन्यवी तअ़ल्लुक़ात से आज़ाद हो जाते थे वोह सिर्फ़ आस्तानए नबुव्वत से वाबस्तगी पैदा कर के आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की सोह़बत से फ़ैज़याब होते थे। ह़ज़रते क़ैलह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡھَا बेवा हो गईं तो बच्चों को उन के चचा ने ले लिया। अब वोह तमाम दुन्यवी झगड़ों से आज़ाद हो कर एक सहाबी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ के साथ ख़िदमते मुबारक में ह़ाज़िर हुईं और आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ता'लीमात व तल्क़ीनात से उ़म्र भर फ़ाइदा उठाती रहीं। (الطبقات الکبری،تذکرۃ قیلۃ بنت مخرمۃ،ج٨،ص٢٤٠)

ह़ज़रते उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ किसी क़दर दूर मक़ामे आ़लिया में रहते थे इस लिये रोज़ाना आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के फ़ैज़े सोह़बत से मुतमत्तेअ़ न हो सकते थे। ताहम येह मा'मूल कर लिया था कि एक रोज़ ख़ुद आते थे और दूसरे रोज़ अपने इस्लामी भाई ह़ज़रते उ़त्बान बिन मालिक رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ को भेजते थे कि आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ता'लीमात व इरशादात से मह़रूम न रहने पाएं। (صحیح البخاری،کتاب العلم، باب التناوب فی العلم، الحدیث:٨٩، ج١، ص٥٠)

दुन्या में आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़ैज़े सोह़बत उठाने के साथ बा'ज़ सहाबा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡھُم ने ख़्वाहिश की, कि आख़िरत में भी येह दौलते जाविदानी नसीब हो, ह़ज़रते रबीआ़ बिन का'ब और ह़ज़रते षौबान (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡھُمَا) ने येही तमन्ना ज़ाहिर की और मुज़दए जां फ़िज़ा से भी सरफ़राज़ हुवे।

रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की सोह़बत का अषर

सहाबए किराम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡھُم चूंकि निहायत ख़ुलूस व सफ़ाए क़ल्ब के साथ आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के इरशाद व हिदायत से फ़ैज़याब होने के लिये आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में

हाज़िर होते थे। इस लिये उन पर आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की सोहबत का अषर शिद्दत से पड़ता था, एक बार हज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه ने अ़र्ज़ किया कि "या रसूलल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم येह क्या बात है कि जब हम आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के पास होते हैं तो हमारे दिल नर्म हो जाते हैं, ज़ोहद व आख़िरत का ख़याल ग़ालिब हो जाता है, फिर जब आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के पास से चले जाते हैं अहलो इयाल से मिलते जुलते हैं और बच्चों के पास जाते हैं तो वोह बात बाक़ी नहीं रहती।" इरशाद हुवा कि अगर येही हालत क़ाइम रहती तो फ़िरिश्ते खुद तुम्हारे घरों में तुम्हारी ज़ियारत को आते।

(سنن الترمذی، کتاب صفة الجنة،باب ماجاء فی صفة الجنةونعیمها، الحدیث: ٢٥٣٤، ج٤،ص٢٣٦)

एक बार हज़रते हन्ज़ला उसैदी رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه हज़रते अबू बक्र رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه के पास से रोते हुवे गुज़रे, दरयाफ़्ते हाल पर बोले "हन्ज़ला मुनाफ़िक़ हो गया, हम रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के पास होते हैं और आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم जन्नत व दोज़ख़ का ज़िक्र फ़रमाते हैं तो हमारे सामने उन की तस्वीर खिंच जाती है। फिर घर में आ कर अहलो इयाल से मिलते हैं और खेती बाड़ी के काम में मस्रूफ़ होते हैं तो उस हालत को भूल जाते हैं।" हज़रते अबू बक्र رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه ने कहा : हमारा भी येही हाल होता है, चलो खुद हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के पास चलें, आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में हाज़िर हुवे और वाक़िआ़ बयान किया तो सरकार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : अगर वोह हालत क़ाइम रहती तो फ़िरिश्ते तुम्हारी मजलिसों में, तुम्हारे बिस्तरों पर और तुम्हारे रास्तों में आ कर तुम से मुसाफ़हा करते। इस हालत का हमेशा क़ाइम रहना ज़रूरी नहीं।

(سنن الترمذی، کتاب صفة الجنة،باب ١٢٤،الحدیث:٢٥٢٢،ج٤،ص٢٣٠)

इस्तिक़्बाले रसूल صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने हिजरत की तो आप के साथ त़बल व अ़लम, लाव लश्कर ख़ैमा व ख़रगाह कुछ न था, सिर्फ़ सुवारी की दो ऊंटनियां थीं, और साथ में एक जां निषार रफ़ीक़े सफ़र था लेकिन येह बे सरो सामान क़ाफ़िला जिस दिन मदीना पहुंचा, मदीना मसर्रत कदा बन गया। औ़रतों, बच्चों और लौंडियों की ज़बान पर येह फ़िक़रा था, रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم आए ! रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم आए ! हिजरत की ख़बर पहले से मदीने में पहुंच गई थी इस लिये तमाम मुसलमान सुब्ह़ तड़के घर से निकल कर मदीने के बाहर इस्तिक़्बाल के लिये जम्अ़ होते, दोपहर तक इन्तिज़ार कर के वापस चले जाते।

एक दिन ह़स्बे मा'मूल लोग इन्तिज़ार कर के चले गए तो एक यहूदी ने क़ल्ए़ से देख कर बा आवाज़े बुलन्द पुकारा कि अहले अ़रब ! लो तुम्हारे साहि़ब आ पहुंचे, तमाम सह़ाबा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُم दफ़्अ़तन उमंड पड़े और हथयारों से सज सज कर घरों से निकल आए। आप صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم क़ुबा में तशरीफ़ लाए और ख़ानदाने बनू अ़म्र बिन औ़फ़ के यहां उतरे तो तमाम ख़ानदान ने **अल्लाहु अक्बर** का ना'रा लगाया। अन्सार हर त़रफ़ से आते और जोशे अ़क़ीदत के साथ सलाम अ़र्ज़ करते।

(الطبقات الكبرى،تذكرة خروج رسول الله صلى الله عليه وسلم وابى بكر الى المدينة للهجرة ،ج١،ص١٨٠)

अन्सार में जिन लोगों ने रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को अब तक नहीं देखा था, वोह शौक़े दीदार में बेताब थे। लेकिन आप को पहचान नहीं सकते थे। ह़ज़रते अबू बक्र رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُ ने धूप से बचाने के लिये आप صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के सर पर चादर तानी, तो सब को उस के साए में आफ़्ताबे नबुव्वत नज़र आया।

आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم क़ुबा से मदीने की ख़ास आबादी की त़रफ़ चले तो जां निषारों का झूरमट साथ था। एक मक़ाम पर आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ठहर गए और अन्सार को त़लब फ़रमाया। सब लोग ह़ाज़िर हुवे, सलाम अ़र्ज़ किया, और कहा कि सुवार हों, कोई ख़त़रा नहीं। हम लोग फ़रमां बरदारी के लिये ह़ाज़िर हैं। आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم रवाना हुवे और अन्सार आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के गिर्दा गिर्द हथयार बांधे हुवे थे।

क़ुबा से मदीने तक दो रूया जां निषारों की सफ़ें थीं। राह में अन्सार के ख़ानदान आते तो हर क़बीला सामने आ कर अ़र्ज़ करता कि हुज़ूर येह घर है, येह माल है। कौकबे नबुव्वत शहर के मुत्तसिल पहुंचा तो एक आ़म गुल पड़ गया। लोग बालाख़ाने से झांक झांक कर देखते थे, और कहते थे : "रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم आए, रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم आए।"

(صحیح البخاری، کتاب مناقب الانصار، باب هجرة النبی واصحابه الی المدینة، الحدیث:۳۹۱۱،ج۲،ص۵۹۶)

पर्दा नशीन ख़्वातीन जोशे मसर्रत में येह तराना गाती थीं

طلع البدر علینا من ثنیات الوداع

وجب الشکرعلینا ما دعا لله داع

"कोहे वदाअ़ की घाटियों के बुर्ज से बद्रे कामिल तुलूअ़ हुवा है। जब तक दुआ़ करने वाले दुआ़ करें हम पर शुक्र वाजिब है।"

जब आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ऊंटनी ह़ज़रते अबू अय्यूब अन्सारी رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُ के दरवाज़े पर बैठ गई तो क़बीलए बनू नज्जार की बच्चियां दफ़ बजा बजा कर येह शे'र गाने लगीं :

نحن جوار من بنی النجار یا حبذا محمد من جار

"हम ख़ानदाने नज्जार की लड़कियां हैं, मुह़म्मद (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) कैसे अच्छे हमसाया हैं।"

(وفاء الوفا، الباب الثالث،الفصل الحادی عشر،ج ۱،ص ۲۶۲)

ज़ियाफ़ते रसूल صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم

अगर खुश क़िस्मती से कभी सहाबए किराम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُم को रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ज़ियाफ़त व मेज़बानी का शरफ़ ह़ासिल हो जाता तो वोह निहायत इ़ज़्ज़त व मह़ब्बत और अदबो एह़तिराम के साथ इस फ़र्ज़ को बजा लाते थे।

एक बार एक अन्सारी ने ख़िदमते मुबारक में गुज़ारिश की, कि निहायत लह़ीम शह़ीम आदमी हूं, आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के साथ नमाज़ में शरीक नहीं हो सकता, आप मेरे मकान पर तशरीफ़ ला कर नमाज़ अदा फ़रमाइये ताकि मैं इस त़रह़ नमाज़ पढ़ा करूं, उन्हों ने पहले खाना भी तय्यार कर रखा था, चुनान्चे आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم तशरीफ़ लाए, और दो रक्अ़त नमाज़ अदा फ़रमाई। (سنن ابی داود، الحدیث:۶۵۷، ج ۱، ص ۲۶۳)

एक रोज़ आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ह़ज़रते उ़मर और ह़ज़रते अबू बक्र (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُمَا) के साथ ह़ज़रते अबू हैषम बिन तैहान अल अन्सारी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के मकान पर तशरीफ़ ले गए, वोह बाहर गए हुवे थे। आए तो आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से लिपट गए और क़ुरबान होने लगे, फिर सब को बाग़ में ले गए, फ़र्श बिछाया, और खजूरें तोड़ कर आप के सामने रख दीं कि खुद दस्ते मुबारक से चुन चुन कर तनावुल फ़रमाएं, इस के बा'द उठे और बकरी ज़ब्ह़ की और सब ने खूब सैर हो कर खाना खाया।

(سنن الترمذی، کتاب الزھد،باب ماجاء فی معیشة اصحاب النبی صلی اللہ علیہ وسلم، الحدیث:۲۳۷۶،ج ۴،ص ۱۶۳)

एक रोज़ आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने ह़ज़रते जाबिर رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه के मकान पर तशरीफ़ ले जाने का वा'दा किया, उन्हों ने निहायत एहतिमाम से आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की दा'वत का सामान किया । और ज़ौजा से कहा, देखो रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم आने वाले हैं तुम्हारी सूरत नज़र न आए । आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को कोई तक्लीफ़ न देना, आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से बात चीत न करना । आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم तशरीफ़ लाए तो बिस्तर बिछाया, तकिया लगाया, आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم मस्रूफ़े ख़्वाबे इस्तिराह़त हुवे तो गुलाम से कहा कि आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के जागने से पेशतर बकरी के इस बच्चे को ज़ब्ह़ कर के पका लो, ऐसा न हो कि आप मुंह हाथ धोने के साथ ही रवाना हो जाएं ।

आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم बेदार हो कर मुंह हाथ धोने से फ़ारिग़ हुवे तो फ़ौरन दस्तर ख़्वान सामने आया, आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم खाना खाते थे और क़बीलए बनू सलमह के तमाम लोग दूर ही दूर से आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के दीदार से मुशर्रफ़ होते थे, कि क़रीब आते तो शायद आप को तक्लीफ़ होती, आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم खाने से फ़ारिग़ हो कर रवाना हुवे, तो उन की ज़ौजा ने पर्दे में से अ़र्ज़ किया : या रसूलल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم मुझ पर और मेरे शोहर पर नुज़ूले रह़मत की दुआ़ करते जाइये, आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ तुम पर और तुम्हारे शोहर पर रह़मत नाज़िल फ़रमाए ।

एक बार आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم हज़रते सा'द رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه के मकान पर तशरीफ़ ले गए। उन्हों ने आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को ग़ुस्ल कराया। नहाने के बा'द ज़ा'फ़रानी रंग की चादर उढ़ाई, फिर खाना खिलाया, आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم रुख़्सत हुवे तो सुवारी ह़ाज़िर की और अपने बेटे को साथ कर दिया कि घर तक पहुंचा आएं।

(سنن ابی داود، کتاب الادب، با ب کم مرة یسلم الرجل فی الاستیذان، الحدیث: ٥١٨٥،ج٤،ص٤٤٥)

कभी कभी आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ख़ुद किसी चीज़ की ख़्वाहिश ज़ाहिर फ़रमाते और सहाबए किराम رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهُم उस को तय्यार कर के पेश करते, एक बार आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : काश मेरे पास गेहूं की सफ़ेद रोटी घी और दूध में चिपड़ी हुई होती, एक सहाबी رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه फ़ौरन उठे और तय्यार करा के लाए।

(سنن ابی داود، کتاب الاطعمة ، باب فی الجمع بین لونین من الطعام،الحدیث: ٣٨١٨،ج٣،ص٥٠٣)

बा'ज़ सहाबिय्यात رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهُنَّ ख़ुद कोई नई चीज़ पका कर आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में पेश करती थीं। एक बार हज़रते उम्मे ऐमन رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهَا ने आटा छाना, और उस की चपातियां तय्यार कर के, आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में पेश कीं। आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : येह क्या है ? बोलीं हमारे मुल्क में इस का रवाज है मैं ने चाहा कि आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के लिये भी इस क़िस्म की चपातियां तय्यार करूं। लेकिन आप ने कमाले ज़ोहदो वरअ़ से फ़रमाया कि आटे में चोकर मिला लो फिर गूंधो। (سنن ابن ماجه، کتاب الاطعمة ، باب الحوّاری، الحدیث:٣٣٣٦،ج٤،ص٤٢)

ना'ते रसूल صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

कुरआने मजीद के मवाइज़ और रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के कलिमाते तृय्यिबा ने अगर्चे अ़हदे सह़ाबा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُم में शाइ़री के दफ़्तर पर पानी फेर दिया था। ताहम बुलबुलाने बाग़े कुद्स आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की मद्ह़ में कभी कभी ज़मज़मा ख़्वां हो जाते थे, और चूंकि येह अश्आ़र सच्चे दिल से निकलते थे, और सच्ची ता'रीफ़ पर मुश्तमिल होते थे, इस लिये दिलों पर अषर डालते थे। ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन रवाह़ा, ह़ज़रते का'ब बिन ज़ुबैर और ह़ज़रते ह़स्सान बिन षाबित رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُم का येह ख़ास मश्ग़ला था। ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन रवाह़ा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه के चन्द मदह़िया अश्आ़र बुख़ारी में मज़्कूर हैं।

وفينا رسول الله يتلو كتاب

اذا انشق معروف من الفجر ساطع

"या'नी हम में ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ का पैग़म्बर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم है जब सुब्ह़ नुमूदार होती है तो ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ की किताब की तिलावत करता है।"

ارانا الهدى بعد العمى فقلوبنا به موقنات ان ماقال واقع

"गुमराही के बा'द इस ने हम को राहे रास्त दिखाई, इस लिये हमारे दिलों को यक़ीन है कि जो कुछ इस ने फ़रमाया वोह ज़रूर हो कर रहेगा।"

يبيت يجافى جنبه عن فراشهاذا ستثقلت بالمشركين المضاجع

"वोह रातों को शब बेदारी करता है, ह़ालां कि उस वक़्त मुशरिकीन गहरी नींद सोते हैं।"

(صحيح البخارى، كتاب التهجد،باب فضل من تعارمن الليل فصلى،الحديث: ١١٥٥،ج١،ص٣٩١)

हज़रते का'ब बिन ज़ुबैर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ जब आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में हाज़िर हुवे और अपना मश्हूर क़सीदा "بانت سعاد" आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के सामने पढ़ा तो आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने उस को सुन कर सहाबा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُم से फ़रमाया कि : इस को सुनो !

ग़ज़्वए तबूक से वापसी पर हज़रते अ़ब्बास बिन अ़ब्दुल मुत्तलिब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا ने ना'त सुनाने की इजाज़त तलब की और उन्हों ने पेश की । इस तरह बहुत से सहाबए किराम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُم ने ना'ते रसूल صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم कही, जिन में से बहुत सी ना'तें "अल मदीहुन्नबवी" में मुन्दरिज हैं ।

रिज़ाए रसूल صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم

सहाबए किराम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُم रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की नाराज़ी से सख़्त घबराते थे और इस से पनाह मांगते थे ।

एक बार किसी ने हज़रते अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ के आबा व अजदाद में किसी को बुरा भला कहा, आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को ख़बर हुई तो फ़रमाया कि "अ़ब्बास मुझ से हैं और मैं अ़ब्बास से हूं, हमारे मुर्दों को बुरा भला न कहो जिस से हमारे ज़िन्दों के दिल दुखें ।" येह सुन कर सहाबा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُم ने कहा : हम आप की नाराज़ी से पनाह मांगते हैं, हमारे लिये इस्तिग़फ़ार कीजिये ।

(سنن النسائی، کتاب القسامۃ، باب القود من اللطمۃ، ج٤، الجزء الثامن، ص٣٣)

एक बार किसी ने आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से आप के रोज़े के मुतअ़ल्लिक़ पूछा, आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم पर ना गवार गुज़रा । हज़रते उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने येह हालत देखी तो कहा :

رضینا باللّٰہ ربا و بالاسلام دینا و بمحمد نبیا ، نعوذ باللّٰہ من غضب اللّٰہ و غضب رسولہ

तर्जमा : "हम ने ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ को अपना परवर दगार, इस्लाम को अपना दीन, और मुहम्मद صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को अपना पैग़म्बर माना है, और ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ और ख़ुदा के रसूल صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के ग़ज़ब से पनाह मांगते हैं।"

इस फ़िक़रे को बार बार दोहराते रहे यहां तक कि आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की नाराज़ी ख़त्म हो गई।

(سنن ابی داود، کتاب الصوم، باب فی صوم الدھر،الحدیث:۲۴۲۵، ج۲، ص۴۷۳)

इस लिये अगर आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم किसी ना गवार वाक़िए से कबीदा ख़ातिर हो जाते थे तो सहाबए किराम رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُم हर मुम्किन तदबीर से आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को राज़ी करना चाहते थे आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने अज़्वाजे मुत़ह्हरात رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُنَّ से ईला किया तो सहाबए किराम رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُم पर मुसीबत का पहाड़ टूट पड़ा। ह़ज़रते उ़मर رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه ने आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को राज़ी करना चाहा, और दरे दौलत पर तशरीफ़ ले गए। दरबान ने रोक लिया। समझे कि शायद हु़ज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को येह ख़याल है कि ह़फ़्सा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا की ख़ातिर आए हैं। इस लिये दरबान से कहा कि अगर सरकार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का येह ख़याल है तो कह दो कि ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! आप हुक्म दें तो ह़फ़्सा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا की गरदन उड़ा दूं।

ह़ज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه पहले आ चुके थे। ह़ज़रते उ़मर رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه आए तो ह़ज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه ने रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को हंसाने के लिये कहा अगर बिन्ते ख़ारिजा (ह़ज़रते अबू बक्र رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه की ज़ौजा) मुझ से नान व नफ़क़ा त़लब करतीं तो मैं उठ के उन की गरदन तोड़ देता, आप हंस पड़े। अज़्वाजे मुत़ह्हरात رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُنَّ की

त़रफ़ इशारा कर के फ़रमाया : येह लोग मुझ से नफ़क़ा ही तो मांग रही हैं । दोनों बुज़ुर्ग उठे और ह़ज़रते आ़इशा और ह़ज़रते ह़फ़्सा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُمَا की गरदन तोड़नी चाही और कहा रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से वोह चीज़ मांगती हो जो (इस वक़्त) आप के पास (मौजूद) नहीं है ।

(صحیح مسلم، کتاب الطلاق، باب بیان أن تخییر امرأته لایکون طلاقا الابالنية، الحدیث ۱۴۷۸، ص ۷۸۳)

ह़ज़रते का'ब बिन मालिक رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से जब आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने क़त़्ए़ कलाम कर लिया और तमाम सह़ाबा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُم को भी येही हुक्म दिया, तो उन को सब से ज़ियादा आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की रिज़ामन्दी की फ़िक्र थी । आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم नमाज़ के बा'द थोड़ी देर तक मस्जिद में बैठा करते थे, इस ह़ालत में वोह आते और सलाम करते और दिल में कहते कि लबहाए मुबारक को सलाम के जवाब में ह़रकत हुई या नहीं ? फिर आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ही के मुत्तसिल नमाज़ पढ़ते और कन अखियों से आप की त़रफ़ देखते जाते ।

(صحیح البخاری، کتاب المغازی، باب حدیث کعب بن مالک.....الخ، الحدیث: ۴۴۱۸، ج۳، ص۱۴۷)

आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ह़िज्जतुल वदाअ़ के लिये तशरीफ़ ले गए तो तमाम अज़्वाजे मुत़ह्हरात رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُنَّ साथ थीं, सूए इत्तिफ़ाक़ से रास्ते में ह़ज़रते सफ़िय्या رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا का ऊंट थक कर बैठ गया, वोह रोने लगीं, आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को ख़बर हुई तो ख़ुद तशरीफ़ लाए और दस्ते मुबारक से उन के आंसू पोंछे, आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم जिस क़दर उन को रोने से मन्अ़ फ़रमाते थे उस क़दर वोह और ज़ियादा रोती थीं । जब किसी त़रह़ चुप न हुईं तो उन को सरज़निश फ़रमाई, और तमाम लोगों को मन्ज़िल करने का हुक्म दिया, और ख़ुद भी

अपना ख़ैमा नस्ब करवाया। हज़रते सफ़िय्या को ख़याल हुवा कि आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم नाराज़ हो गए, इस लिये आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की रिज़ामन्दी की तदबीरें इख़्तियार कीं।

इस ग़रज़ से हज़रते आइशा رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهَا के पास गईं और कहा कि आप को मा'लूम है कि मैं अपनी बारी का दिन किसी चीज़ के मुआवज़े में नहीं दे सकती लेकिन अगर आप रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को मुझ से राज़ी कर दें तो मैं अपनी बारी आप को देती हूं। हज़रते आइशा رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهَا ने आमादगी ज़ाहिर की, और एक दूपट्टा ओढ़ा जो ज़ा'फ़रानी रंग में रंगा हुवा था, फिर उस पर पानी छिड़का कि ख़ुश्बू और फैले, इस के बा'द आप हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के पास गईं, और ख़ैमे का पर्दा उठाया, तो आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि आइशा رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهَا येह तुम्हारा दिन नहीं है। बोलीं : ذٰلِكَ فَضْلُ اللّٰهِ يُؤْتِيْهِ مَنْ يَّشَآءُ **तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** येह **अल्लाह** का फ़ज़्ल है जिसे चाहे दे। (پ٦،المائدة:٥٤)

(المسندلامام احمد بن حنبل،حديث صفية ام المؤمنين رضى الله عنها،الحديث: ٢٦٩٣٠،ج١٠،ص٢٥٣)

आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم अकषर अपनी नाराज़ी का इज़्हार अ़लानिया तौ़र पर नहीं फ़रमाते थे, लेकिन जब सहाबए किराम رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُم को आप के चश्मो अबरू से इस का एह़सास हो जाता था तो फ़ौरन आप को राज़ी करते थे। एक बार आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم एक रास्ते से गुज़रे, राह में एक बुलन्द कुब्बा नज़र से गुज़रा तो फ़रमाया : येह किस का है ? लोगों ने एक अन्सारी का नाम बताया, आप को येह शानो शोकत ना गवार हुई, मगर इस का इज़्हार नहीं फ़रमाया, कुछ देर के बा'द अन्सारी बुज़ुर्ग आए और सलाम किया, लेकिन आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने रुख़े अन्वर फेर लिया, बार बार येह वाक़िआ पेश आया तो उन्हों ने दूसरे

सह़ाबा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُم से हु़ज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की नाराज़ी का ज़िक्र किया, सबब मा'लूम हुवा तो उन्हों ने कुब्बे को गिरा कर ज़मीन के बराबर कर दिया।

(سنن ابی داود، کتاب الادب، باب ماجاء فی البناء، الحدیث:٥٢٣٧، ج٤، ص٤٦٠)

नाराज़ी के बा'द अगर हु़ज़ूरे अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ख़ुश हो जाते तो गोया सह़ाबए किराम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُم को दौलते जावेद मिल जाती, एक बार आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم सफ़र में थे, ह़ज़रते अबू रुहम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की ऊंटनी आप के नाक़ा के पहलू ब पहलू जा रही थी, ह़ज़रते अबू रुहम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के पाउं में सख़्त चमड़े के जूते थे, ऊंटनियों में मुज़ाह़मत हुई तो उन के जूते की नोक से सरकार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की साक़े मुबारक में ख़राश आ गई, हु़ज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने उन के पाउं में कोड़ा मार कर फ़रमाया : तुम ने मुझ को दुख दिया, पाउं हटाओ, वोह सख़्त घबराए कि कहीं मेरे बारे में कोई आयत नाज़िल न हो जाए।

मक़ामे जिइ़र्राना में पहुंचे तो गो कि उन की ऊंट चराने की बारी न थी, ताहम इस ख़ौफ़ से कि कहीं रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का क़ासिद मेरे बुलाने के लिये न आ जाए, सह़रा में ऊंट चराने के लिये निकल गए, शाम को पलटे तो मा'लूम हुवा कि आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने त़लब फ़रमाया था, मुज़्त़रिबाना ह़ाज़िरे ख़िदमत हुवे, आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया मुझे तुम ने अज़िय्यत पहुंचाई, और मैं ने भी तुम्हें कोड़ा मारा, जिस से तुम्हें अज़िय्यत पहुंची, इस के इ़वज़ में येह बकरियां लो, उन का बयान है कि आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की येह रिज़ामन्दी मेरे लिये दुन्या व मा फ़ीहा से ज़ियादा मह़बूब थी।

(الطبقات الکبری،تذکرۃ ابو رُھم الغفاری،ج٤،ص١٨٤)

ग़मे हिज्रे रसूल صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم

रसूलुल्लाह صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के साथ सह़ाबए किराम رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْھُم को जो मह़ब्बत थी, इस का अषर आप की ज़िन्दगी में जिन त़रीक़ों से ज़ाहिर होता था, इस का ह़ाल ऊपर गुज़र चुका, लेकिन आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की वफ़ात के बा'द, इस मह़ब्बत का इज़्हार सिर्फ़ गिर्या व बुका, आह व फ़रियाद और नाला व शैवन के ज़रीए़ से हो सकता था । और सह़ाबए किराम رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْھُم ने आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के ग़म में येह दर्द अंगेज़ सदाएं इस ज़ोर से बुलन्द की, कि मदीना बल्कि कुल अ़रब के दरो दीवार हिल गए, आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم पर मौत के आषार ब तदरीज त़ारी हुवे । जुमा'रात के दिन अ़लालत में इश्तिदाद पैदा हुवा, ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْھُمَا को जब येह दिन याद आता था तो कहते थे : जुमा'रात का दिन, हाए जुमा'रात का दिन, वोह जिस में आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की अ़लालत में शिद्दत आई, नज़्अ़ का वक़्त क़रीब आया तो ग़शी त़ारी हुई ।

(صحیح البخاری، کتاب المغازی، باب مرض النبی ووفاتہ، الحدیث: ٤٤٣١، ج٣، ص١٥٢)

ह़ज़रते फ़ात़िमा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْھَا ने येह ह़ालत देखी तो बे इख़्तियार पुकार उठीं "واکرباہ" । आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का विसाल हुवा तो येह अल्फ़ाज़ कह कर आप पर रोईं,

یاابتاہ! اجاب ربا دعاہ، یا ابتاہ! من جنۃ الفردوس ماواہ یا ابتاہ!

الیٰ جبرئیل علیہ السلام ننعاہ۔

"लोग आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की तदफ़ीन कर के आए तो उन्हों ने ह़ज़रते अनस رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ से निहायत दर्द अंगेज़

लहजे में पूछा, क्यूं अनस, कैसे रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को मिट्टी देना तुम्हें गवारा हुवा ?" (المرجع السابق،الحديث:٤٤٦٢،ص١٦٠)

हज़रते आइशा رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهَا फ़रमाती हैं कि रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की वफ़ात के बा'द मुझे किसी का मरज़ुल मौत नहीं खिलता। (المرجع السابق،الحديث:٤٤٤٦،ص١٥٦)

येह तो अहले बैत की हालत थी। अहले बैत के इलावा और तमाम सहाबा رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهُم ग़म व अलम की तस्वीर बने मस्जिदे नबवी على صاحِبِهَا الصَّلٰوةُ وَالسَّلام में गिर्या कुनां थे और हज़रते उमर رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه लोगों को यक़ीन दिला रहे थे कि अभी आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का विसाल नहीं हो सकता। हज़रते अबू बक्र رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه ने येह हालत आ कर देखी तो किसी से बात चीत नहीं की, सीधे आप के जसदे अतहर मुबारक तक चले गए, वज्हे अन्वर से कपड़ा हटा कर आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के चेहरए मुबारक को बोसा दिया और रोए। वहां से निकल कर लोगों को समझाया तो सब को आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की मौत का यक़ीन आया।

(المرجع السابق،الحديث:٤٤٥٣_٤٤٥٤،ج٣،ص١٥٨)

एक शख़्स सहाबा رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهُم के क़लक़ व इज़्तिराब का येह आलम देख कर मदीने से अम्मान आया तो लोगों को आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के विसाल की ख़बर दी और कहा कि मैं मदीने के लोगों को ऐसे हाल में छोड़ कर आया हूं कि उन के सीने देगची की तरह उबाल खा रहे हैं। हज़रते अब्दुल्लाह इब्ने अबी लैला अन्सारी رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه कहते हैं कि रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के विसाल के वक़्त मैं बच्चा था, लोग अपने सरों और कपड़ों पर ख़ाक डाल रहे थे। और मैं उन के गिर्या व बुका को देख कर रोता था। (اسدالغابة،تذكرة عبدالله بن ابى ليلى،ج٣،ص٣٨٣)

मदीने के बाहर जब येह ग़मनाक ख़बर पहुंची तो क़बीलए बाहिला के लोगों ने इस ग़म में अपने ख़ैमे गिरा दिये और मुत्तसिल सात रात तक उन को खड़ा नहीं किया। (الاصابة،تذکرة جهم بن کلدة الباهلی،ج١،ص٦٤٠)

تَفْوِيْض اِلَى الرَّسُوْلِ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہٖ وسلم

सहाबए किराम رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْھُم ने अपनी ज़ाती हैषिय्यत बिल्कुल फ़ना कर दी थी और अपनी ज़ात और अपनी आल अवलाद को रसूलुल्लाह صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के ह़वाले कर दिया था। ह़ज़रते फ़ाति़मा बिन्ते क़ैस رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْھَا एक सह़ाबिया थीं, इन से एक त़रफ़ तो ह़ज़रते अ़ब्दुर्रह़मान बिन औ़फ़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ जो निहायत दौलत मन्द सह़ाबी थे निकाह़ करना चाहते थे, दूसरी त़रफ़ आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने ह़ज़रते उसामा बिन ज़ैद رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ के मुतअ़ल्लिक़ इन से गुफ़्त्गू की थी, जिन की फ़ज़ीलत येह थी कि आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया था कि जो मुझे दोस्त रखता है चाहिये कि उसामा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ को भी दोस्त रखे। लेकिन ह़ज़रते फ़ाति़मा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْھَا ने आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को अपनी क़िस्मत का मालिक बना दिया और कहा मेरा मुआ़मला आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के हाथ में है जिस से चाहे निकाह़ कर दीजिये।

(سنن النسائی، کتاب النکاح،باب الخطبة فی النکاح،ج٦،ص٧٠-٧١)

ह़ज़रते अबू उमामा अस्अ़द बिन ज़ुरारह अन्सारी رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ अपनी तीन लड़कियों के निकाह़ के मुतअ़ल्लिक़ आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को वसिय्यत कर गए थे, जिन में आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने ह़ज़रते फ़रीआ़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْھَا का निकाह़ नबीत़ बिन जाबिर से कर दिया।

(اسدالغابة،تذکرة فریعة بنت ابی امامة، ج٧،ص٢٥٣)

अन्सार का येह मा'मूल था कि आं ह़ज़रत صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की रिज़ा मन्दी जाने बिग़ैर अपनी बेवाओं की शादी नहीं करते थे।

एक दिन आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने एक अन्सारी से फ़रमाया : तुम अपनी लड़की का निकाह़ कर दो, वोह तो मुन्तज़िर ही थे, बाग़ बाग़ हो गए लेकिन आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, मैं अपने लिये नहीं बल्कि जुलैबीब के लिये पैग़ाम देता हूं, जुलैबीब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ एक ज़रीफ़ुत्तब्अ़ सह़ाबी थे जो औ़रतों के साथ ज़राफ़त और मज़ाक़ की बातें किया करते थे, इस लिये सह़ाबा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُم इन को उ़मूमन ना पसन्द करते थे, उन्हों ने जुलैबीब का नाम सुना तो बोले : उस की मां से मश्वरा कर लूं, मां ने जुलैबीब का नाम सुना तो इन्कार कर दिया । लेकिन लड़की ने कहा : रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की बात ना मन्ज़ूर नहीं की जा सकती मुझे आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के ह़वाले कर दो, आप मुझे ज़ाएअ़ न करेंगे ।

(المسند لامام احمد بن حنبل،مسند البصریین، حدیث ابی برزة الاسلمی، الحدیث: ۱۹۸۰۵،ج۷،ص۱۸٤)

हैबते रसूल صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم

रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के वक़ार व अ़ज़मत की बिना पर सह़ाबए किराम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُم आप के सामने इस क़दर मरऊ़ब हो जाते थे कि जिस्म में रा'शा पड़ जाता था ।

एक बार एक सह़ाबी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने आप के साथ नमाज़ पढ़ी । लेकिन दो शख़्स जो मस्जिद के एक गोशे में थे, शरीके नमाज़ नहीं हुवे । आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने उन को बाज़पुर्स के लिये त़लब फ़रमाया तो वोह इस क़दर मरऊ़ब हुवे कि जिस्म में लरज़ा पड़ गया ।

(سنن ابی داود، کتاب الصلوة،باب فیمن صلی فی منزله....الخ،الحدیث: ۵۷۵، ج۱،ص۲۳۷)

एक सह़ाबी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में ह़ाज़िर हो कर आप से बात चीत की लेकिन उन पर इस क़दर रो'ब त़ारी हुवा कि जिस्म में रा'शा पड़ गया,

आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : घबराओ नहीं मैं तो उस औरत का लड़का हूं जो गोश्त के सूखे टुकड़े खाया करती थी।

एक बार एक सहाबिया رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهَا ने आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को मस्जिद में उकड़ूं बैठे हुवे देखा। उन पर आप के इस ख़ुशूअ़ व ख़ुज़ूअ़ की ह़ालत का येह अषर पड़ा कि कांप उठीं।

(سنن الترمذی، الشمائل، باب ماجاء فی جلسة رسول الله، الحدیث:۱۲۶، ج۵، ص۵۲۵)

इस रो'बो दाब का येह अषर था कि सहाबए किराम رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُم आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के सामने लब कुशाई की जुरअत न कर पाते थे। एक बार आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने अ़स्र या ज़ोहर की नमाज़ में सिर्फ़ दो रक्अ़तें अदा फ़रमाईं, बहुत से सहाबा رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُم मस्जिद से येह कहते हुवे निकल आए कि रक्आ़ते नमाज़ में कमी कर दी गई। जमाअ़त में ह़ज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه और उ़मर फ़ारूक़ رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه भी शरीक थे। लेकिन आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की हैबत से कुछ पूछ नहीं सकते थे। बिल आख़िर ह़ज़रते ज़ुल यदैन رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه ने आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से दरयाफ़्त किया कि आप भूल गए या नमाज़ में कमी हुई ? तमाम सहाबा رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُم ने उन की ताईद की लेकिन ज़बान न हिल सकी, बल्कि इशारों में ह़ज़रते ज़ुल यदैन رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه की तस्दीक़ की।

(سنن ابی داود، کتاب الصلوة،باب السھو فی السجدتین، الحدیث: ۱۰۰۸، ج۱، ص۳۷۷)

ह़ज़रते अ़म्र बिन अल आ़स رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه बड़े पाए के सहाबी थे। लेकिन उन का बयान है कि मैं आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का हुल्या नहीं बयान कर सकता। क्यूं कि मैं ने आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को कभी आंख भर कर देखने की जुरअत नहीं की। (صحیح مسلم، کتاب الایمان، باب کون الاسلام یھدم ماقبله.....الخ،الحدیث: ۱۲۱، ص۷۴)

सह़ाबए किराम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡھُمۡ के बच्चों तक के रगो रेशे में आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का रो'बो दाब सरायत कर गया था। एक बार ह़ज़रते अयाद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ बचपन में बाप के साथ हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में गए, आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का दीदार हुवा तो उन के बाप ने पूछा कि जानते हो कि कौन हैं? बोले : नहीं। कहा कि "रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم हैं।" येह सुनने के साथ ही उन के बदन के रोंगटे खड़े हो गए। उन का ख़याल था कि आप की शक्लो सूरत आदमियों से मुख़्तलिफ़ होगी, लेकिन आप को नज़र आया कि आप भी आदमी ही हैं, और आप के सर पर ज़ुल्फ़ें हैं।

(المسندلامام احمد بن حنبل،مسندابی رمثۃ،الحدیث ۷۱۳۱،ج۲،ص۶۹۸)

इत़ाअ़ते रसूल صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم

सह़ाबए किराम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡھُمۡ जिस त़ौअ़ व रिज़ा के साथ रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की इत़ाअ़त करते थे इस के मुतअ़ल्लिक़ अह़ादीष में निहायत कषरत से वाक़िआत मज़कूर हैं। ज़ैल के चन्द वाक़िआत से इस का अन्दाज़ा हो सकेगा।

एक बार ह़ज़रते ज़ैनब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡھَا अपने कपड़े रंगवा रही थीं, आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم घर में आए, तो उलटे पाउं वापस हो गए, आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने अगर्चे मुंह से कुछ नहीं फ़रमाया था, ताहम ह़ज़रते ज़ैनब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡھَا आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की निगाहे इताब को जान गईं और तमाम कपड़ों के रंग को धो डाला।

आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने एक सह़ाबी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को एक रंगीन चादर ओढ़े हुवे देखा तो फ़रमाया : येह क्या है? वोह

समझ गए कि आप ने येह ना पसन्द फ़रमाया। फ़ौरन घर में आए और उस को चूल्हे में डाल दिया।

(سنن ابی داود، کتاب اللباس، باب فی الحمرة، الحدیث:٤٠٧١، ج٤، ص٧٤)

हज़रते ख़ुरैम असदी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ एक सहाबी थे जो नीचा तहबन्द बांधते थे और लम्बे लम्बे बाल रखते थे, एक रोज़ सरकार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : ख़ुरैम असदी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ कितना अच्छा आदमी था अगर लम्बे बाल न रखता, और नीचा तहबन्द न बांधता। उन को मा'लूम हुवा तो फ़ौरन क़ैंची मंगाई, उस से बाल कतरे और तहबन्द ऊंचा कर लिया।

(سنن ابی داود، کتاب اللباس، باب ماجاء فی اسبال الازار، الحدیث:٤٠٨٩، ج٤، ص٨٠)

बीवी सब को अ़ज़ीज़ होती है लेकिन जब आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने तख़ल्लुफ़े ग़ज़वए तबूक की बिना पर तमाम मुसलमानों को ह़ज़रते का'ब बिन मालिक رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से क़त्ए तअ़ल्लुक़ करने का हुक्म दिया, और आख़िर में उन को ज़ौजा से अ़लाहि़दगी इख़्तियार करने की हिदायत फ़रमाई तो बोले : त़लाक़ दे दूं या और कुछ ? लेकिन आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के क़ासिद ने कहा सिर्फ़ अ़लाहि़दगी मक़्सूद है, चुनान्चे उन्हों ने फ़ौरन ज़ौजा को मैके में भेज दिया।

(صحیح البخاری، کتاب المغازی، باب حدیث کعب بن مالك.....الخ، الحدیث: ٤٤١٨، ج٣، ص١٤٨)

शादी का मुआ़मला निहायत नाज़ुक होता है, लेकिन सह़ाबए किराम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُم को इत़ाअ़ते रसूल صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इन मुआ़मलात में ग़ौरो फ़िक्र करने से बे नियाज़ बना दिया था, ह़ज़रते रबीआ़ अस्लमी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ एक निहायत मुफ़्लिस सह़ाबी थे। एक बार आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने उन को निकाह़ करने का मश्वरा दिया और फ़रमाया : जाओ अन्सार के फ़ुलां क़बीले में निकाह़ कर लो, वोह आए और कहा : रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم

ने मुझे तुम्हारे यहां फुलां लड़की से निकाह़ करने के लिये भेजा है, सब ने उन का ख़ैर मक़्दम किया और कहा कि रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का क़ासिद नाकाम नहीं जा सकता। चुनान्चे फ़ौरन उन्हों ने उन की शादी करवाई और तह़ाइफ़ भी दिये।

(المسند لامام احمد بن حنبل، حديث ربيعة بن كعب الاسلمى رضى الله عنه، حديث:١٦٥٧٧،ج٥،ص٥٦٩)

पाबन्दिये अह़कामे रसूल صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के जो अह़काम वक़्ती होते थे। सह़ाबए किराम رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُم फ़ौरन उन की ता'मील करते थे। और जो दाइमी होते हमेशा उस के पाबन्द रहते थे और उस के ख़िलाफ़ कभी उन से कोई ह़रकत सादिर नहीं होती थी। आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के ज़माने में औ़रतें भी शरीके जमाअ़त होती थीं। इस ह़ालत में इक्तिज़ाए कमाले इफ़्फ़त व इस्मत येह था कि उन के लिये मस्जिद का एक दरवाज़ा मख़्सूस कर दिया जाए। इस बिना पर आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने एक रोज़ इरशाद फ़रमाया :

لو تركنا هذا الباب للنسآء

"काश ! हम येह दरवाज़ा सिर्फ़ औ़रतों के लिये छोड़ देते।"

ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُمَا ने इस शिद्दत के साथ इस की पाबन्दी की, कि ता दमे मर्ग उस दरवाज़े से मस्जिद में दाख़िल ही नहीं हुवे।

(سنن ابى داود، كتاب الصلوة، باب التشديدفى ذالك،الحديث:٥٧١، ج١، ص٢٣٥)

एक बार आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : जिस शख़्स ने ग़ुस्ले जनाबत में एक बाल को भी ख़ुश्क छोड़ दिया उस पर दोज़ख़ में अ़ज़ाब होगा। ह़ज़रते अ़ली كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰى وَجْهَهُ الْكَرِيْم ने इस पर जिस शिद्दत से अ़मल किया इस को ख़ुद उन्हों ने बयान किया

है । فَمِنْ ثَمَّ عادَيتُ رَاُسی या'नी उस दिन से मैं ने अपने सर से दुश्मनी कर ली और बराबर बाल तरश्वाते रहे। ह़दीष में है कि येह फ़िक़रा उन्हों ने तीन बार फ़रमाया।

(سنن ابی داود، کتاب الطهارة، باب فی الغسل من الجنابة، الحديث:٢٤٩، ج١، ص١١٧)

रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने शोहर के इलावा दीगर अइ़ज़्ज़ा के सोग के लिये तीन दिन मुक़र्रर फ़रमाए थे, सह़ाबिय्यात رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُنَّ ने इस की इस शिद्दत से पाबन्दी की, कि जब ह़ज़रते ज़ैनब बिन्ते जह़्श رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهَا के भाई का इन्तिक़ाल हो गया तो ग़ालिबन चौथे दिन उन्हों ने ख़ुश्बू लगाई, और कहा कि "मुझ को ख़ुश्बू की ज़रूरत न थी लेकिन मैं ने आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से मिम्बर पर सुना है कि किसी मुसलमान औ़रत को शोहर के सिवा तीन दिन से ज़ियादा किसी का सोग जाइज़ नहीं, इस लिये येह उसी हुक्म की ता'मील थी।"

जब ह़ज़रते उम्मे ह़बीबा رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهَا के वालिद ने इन्तिक़ाल किया तो उन्हों ने तीन रोज़ के बा'द अपने रुख़्सारों पर ख़ुश्बू मली और कहा : मुझे इस की ज़रूरत न थी, सिर्फ़ इस हुक्म की ता'मील मक़्सूद थी। (سنن ابی داود، کتاب الطلاق،باب احدادالمتوفی عنهازوجها،الحديث:٢٢٩٩، ج٢،ص٤٢٢)

पहले येह दस्तूर था कि जब सह़ाबए किराम رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُم सफ़रे जिहाद में किसी मन्ज़िल पर क़ियाम फ़रमाते थे तो इधर उधर फैल जाते थे, एक बार आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि येह तफ़र्रुक़ व तशत्तुत शैत़ान का काम है। इस के बा'द सह़ाबए किराम رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُم ने इस की इस शिद्दत से पाबन्दी की, कि जब भी मन्ज़िल पर उतरते थे तो इस क़दर सिमट जाते थे कि अगर एक चादर तान ली जाती तो सब के सब उस के नीचे आ जाते। (سنن ابی داود، کتاب الجهاد، باب مايؤمرمن انضمام العسکر،الحديث:٢٦٢٨، ج٣،ص٥٨)

रसूलुल्लाह صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने तिजारत के मुतअ़ल्लिक़ जो अह़काम जारी फ़रमाए थे उन में एक येह था :

''لایبع حاضر لباد'' शहरी आदमी बदवियों का माल न बिकवाए (या'नी उस का दलाल न बने)

(سنن ابی داود، کتاب الاجارۃ، باب فی النھی ان یبیع حاضرلباد، الحدیث: ۳۴۴۲، ج ۳، ص ۳۷۱)

एक बार एक बदवी कुछ माल ले कर आया तो ह़ज़रते त़ल्ह़ा बिन उ़बैदुल्लाह رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ के यहां उतरा लेकिन उन्हों ने कहा कि मैं खुद तो तुम्हारा सौदा नहीं बिकवा सकता, अलबत्ता बाज़ार में जाओ, बाएअ़ की तलाश करो मैं सिर्फ़ मश्वरा दे दूंगा।

(سنن ابی داود، کتاب الاجارۃ، باب فی النھی أن یبیع حاضر لباد، الحدیث: ٣٤٤١، ج٣، ص ٣٧١)

ह़ज़रते हु़जै़फ़ा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ के सामने मदाइन के एक रईस ने चांदी के बरतन में पानी पेश किया, उन्हों ने उस को उठा कर फेंक दिया, और फ़रमाया कि मैं ने इस को मन्अ़ किया था, येह बाज़ न आया, रसूलुल्लाह صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इस की मुमानअ़त फ़रमाई है। (سنن ابی داود، کتاب الاشربۃ، باب فی الشرب فی آنیۃ الذھب والفضۃ، الحدیث: ٣٧٢٣، ج٣، ص ٤٧٣)

रसूलुल्लाह صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने पहले यमन की गवर्नरी पर ह़ज़रते अबू मूसा अश्अ़री رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ को रवाना फ़रमाया, उन के बा'द ह़ज़रते मुआ़ज़ बिन जबल رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ को भेजा, ह़ज़रते मुआ़ज़ बिन जबल رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ आए तो ह़ज़रते अबू मूसा अश्अ़री رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ के सामने एक मुजरिम को देखा, ह़ज़रते अबू मूसा अश्अ़री رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने सुवारी से उतरने के लिये कहा लेकिन उन्हों ने मुजरिम की त़रफ़ इशारा कर के पूछा : येह कौन है? बोले : यहूदी था इस्लाम लाया फिर मुरतद हो गया है, फ़रमाया : जब तक खुदा عَزَّوَجَلَّ और रसूल صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के हुक्म के मुत़ाबिक़ क़त्ल न कर दिया जाएगा, मैं न बैठूंगा। उन्हों ने बैठने पर इस्रार किया,

लेकिन उन का येही जवाब था, चुनान्चे जब वोह क़त्ल हो चुका तो सुवारी से उतरे। (سنن ابی داود، کتاب الحدود، باب الحکم فی من ارتد، الحدیث:٤٣٥٤، ج٤،ص١٦٩)

लेकिन इस के बा'द की रिवायत में है कि ह़ज़रते अबू मूसा अश्अ़री رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने उस को तक़रीबन बीस दिन तक समझाया, लेकिन जब वोह राहे रास्त पर न आया तो क़त्ल कर दिया।

(المرجع السابق،الحدیث:٤٣٥٦،ج٤،ص١٧٠)

एक बार ह़ज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ एक मजलिस में आए। एक शख़्स ने उठ कर उन के लिये अपनी जगह ख़ाली कर दी तो उन्हों ने उस की जगह बैठने से इन्कार किया और कहा कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने मन्अ़ फ़रमाया है।

(سنن ابی داود،کتاب الصلوۃ،باب فی الرجل یقوم للرجل من مجلسه،الحدیث:٤٨٢٧،ج٤،ص٣٣٩)

एक बार ह़ज़रते आ़इशा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہَا के पास एक साइल आया, उन्हों ने उस को रोटी का एक टुकड़ा दे दिया, फिर इस के बा'द एक खुश लिबास शख़्स आया तो उन्हों ने उस को बिठा कर खाना खिलाया। लोगों ने इस तफ़रीक़ पर ए'तिराज़ किया तो बोलीं रसूलुल्लाह صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया है :

"انزلوا الناس منازلهم" हर शख़्स से उस के दरजे के मुत़ाबिक़ बरताव करो।

(سنن ابی داود، کتاب الادب ،باب فی تنزیل الناس منازلهم، الحدیث:٤٨٤٢، ج٤، ص٣٤٣)

एक बार आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم मस्जिद से निकल रहे थे देखा कि रास्ते में मर्द औ़रतें मिल जुल कर चल रहें हैं। औ़रतों की त़रफ़ मुख़ात़िब हो कर फ़रमाया : पीछे रहो तुम वस्त़ राह से नहीं गुज़र सकतीं। इस के बा'द येह ह़ाल हो गया कि औ़रतें इस क़दर गली के किनारे से चलती थीं कि उन के कपड़े दीवारों से उलझ जाते थे। (المرجع السابق،باب فی مشی النساء مع الرجال فی الطریق، الحدیث:٥٢٧٢، ج٤،ص٤٧٠)

हज़रते मुहम्मद बिन अस्लम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ निहायत कबीरुस्सिन सहाबी थे। लेकिन जब बाज़ार से पलट कर घर आते और चादर उतारने के बा'द याद आता कि उन्हों ने मस्जिदे नबवी عَلٰی صَاحِبِھَا الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام में नमाज़ नहीं पढ़ी तो कहते कि ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! मैं ने मस्जिदे रसूल صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم में नमाज़ नहीं पढ़ी, हालां कि हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने हम से फ़रमाया था कि जो शख़्स मदीने में आए तो जब तक इस मस्जिद में दो रक्अ़त नमाज़ न पढ़ ले घर वापस न जाए, येह कह कर चादर उठाते और मस्जिदे नबवी عَلٰی صَاحِبِھَا الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام में दो रक्अ़त नमाज़ पढ़ के घर वापस आते।

(اسدالغابۃ،تذکرۃ محمد بن اسلم الانصاری،ج٥،ص ٨٠)

ग़ज़्वए अहज़ाब में सरकार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने हज़रते हुज़ैफ़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ को हुक्म दिया कि कुफ़्फ़ार की ख़बर लाएं, लेकिन उन से छेड़छाड़ न करें, वोह आए तो देखा कि अबू सुफ़्यान आग ताप रहे हैं, कमान में तीर जोड़ लिया और निशाना लगाना चाहा, लेकिन रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का हुक्म याद आ गया और रुक गए। (صحیح مسلم، کتاب الجھادو السیر،باب غزوۃ الأحزاب،الحدیث:١٧٨٨، ص٩٨٨)

जो सहाबा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُمْ अबू राफ़ेअ़ बिन अबिल हक़ीक़ को क़त्ल करने गए थे उन को रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने हुक्म दिया था कि उस के बच्चों और औ़रतों को न क़त्ल करें। उन लोगों ने इस शिद्दत के साथ इस हुक्म की पाबन्दी की, कि इब्ने अबिल हक़ीक़ की औ़रत ने बा वुजूद येह कि इस क़दर शोर किया कि क़रीब था उन का राज़ फ़ाश हो जाता, लेकिन उन लोगों ने सिर्फ़ आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के हुक्म की बिना पर उस पर हाथ उठाना पसन्द न किया।

(المؤطا للامام مالک، کتاب الجھاد، باب النھی عن قتل النساء، والولدان فی الغزو، الحدیث:١٠٠٢، ج٢،ص٨)

अदबे ह़रमे रसूल صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के तअ़ल्लुक़ से सह़ाबए किराम अज़्वाजे मुत़ह्हरात رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهُنَّ का इस क़दर अदब करते थे कि जब आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की एक ज़ौजए मोह़तरमा رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهَا ने इन्तिक़ाल किया तो ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهُمَا सज्दे में गिर पड़े, लोगों ने कहा आप इस वक़्त सज्दा करते हैं ? बोले : रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया है जब क़ियामत की कोई निशानी देखो तो सज्दा कर लिया करो, फिर अज़्वाजे मुत़ह्हरात رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهُنَّ की मौत से बढ़ कर क़ियामत की कौन सी निशानी होगी ।

(سنن ابی داود، کتاب صلاۃ الاستسقاء، بلب السجود عند الآیات، الحدیث:۱۱۹۷، ج۱، ص۴٤٠)

मक़ामे सरफ़ में ह़ज़रते मैमूना رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهَا का जनाज़ा उठाया गया तो ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهُمَا भी साथ थे । बोले कि "येह मैमूना رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهَا हैं इन का जनाज़ा उठाओ तो मुत्लक़ ह़रकत व जुम्बिश न दो ।"

(سنن النسائی، کتاب النکاح، باب ذکر امر رسول اللّٰہ صلی اللہ علیہ وسلم فی النکاح.....الخ، ج۳، الجزء السادس، ص۵۳)

बा'ज़ सह़ाबा رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهُم इ़ज़्ज़त व मह़ब्बत की वजह से अज़्वाजे मुत़ह्हरात رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهُنَّ पर अपनी जाएदादें वक़्फ़ करते थे । चुनान्चे ह़ज़रते अ़ब्दुर्रह़मान बिन औ़फ़ رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه ने अज़्वाजे मुत़ह्हरात رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهُنَّ को जाएदाद दी थी जो **40** हज़ार दीनार में फ़रोख़्त की गई और एक बाग़ भी वक़्फ़ किया था जो चार लाख दिरहम में फ़रोख़्त किया गया ।

(سنن الترمذی، کتاب المناقب، باب مناقب عبدالرحمن بن عوف.....الخ، الحدیث: ۳۷۷۰-۳۷۷۱، ج۵، ص۴۱۷)

खुलफ़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡھُم अज़्वाजे मुत़ह्हरात رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡھُنَّ के अदबो एह़तिराम का इस क़दर लिह़ाज़ रखते थे कि ह़ज़रते उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہ ने अपने ज़मानए ख़िलाफ़त में अज़्वाजे मुत़ह्हरात رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡھُنَّ की ता'दाद के लिह़ाज़ से नव पियाले तय्यार कराए थे, जब उन के पास मेवा या और कोई चीज़ आती तो उन पियालों में तमाम अज़्वाजे मुत़ह्हरात رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡھُنَّ की ख़िदमत में भेजते थे।

(المؤطاالامام مالك ، كتاب الزكوة، باب جذية اهل الكتاب والمجوس، الحديث:٦٣٠،ج١،ص٢٥٧)

सि. 23 हि. में जब ह़ज़रते उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہ ने ह़ज किया तो अज़्वाजे मुत़ह्हरात رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡھُنَّ को भी निहायत अदबो एह़तिराम के साथ हमराह ले गए, ह़ज़रते उ़षमान और ह़ज़रते अ़ब्दुर्रह़मान बिन औ़प رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡھُمَا को सुवारियों के साथ कर दिया था। येह लोग आगे आगे चलते थे और किसी को सुवारियों के क़रीब नहीं आने देते थे। अज़्वाजे मुत़ह्हरात رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡھُنَّ मन्ज़िल पर उतरती थीं, तो ख़ुद ह़ज़रते उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہ की निगरानी में क़ियाम करती थीं। ह़ज़रते उ़षमान और ह़ज़रते अ़ब्दुर्रह़मान बिन औ़फ़ (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡھُمَا) किसी को क़ियाम गाह के मुत्तसिल आने की इजाज़त नहीं देते थे।

(الطبقات الكبرى،تذكرة تولية عبدالرحمن الشورى والحج،ج٣،ص٩٩)

हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के विसाल का सहाबा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُم पर रद्दे अ़मल

ह़ालते तह़य्युर : मुसलमानों को जब आं ह़ज़रत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की रिह़लत की इत्तिलाअ़ मिली तो वोह शश्दर व साकित रह गए, इन में से ह़ज़रते उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का ख़याल था कि हु़ज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم फ़ौत नहीं हुवे, सिर्फ़ ह़ालते बेहोशी में हैं, चुनान्चे उन्हों ने मस्जिद में ख़िता़ब करते हुवे कहा :

बा'ज़ मुनाफ़िक़ीन येह ख़बर उड़ा रहे हैं कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم फ़ौत हो गए, लेकिन येह बात बिल्कुल ग़लत़ है। वोह ह़ज़रते मूसा बिन इमरान عَلَیْہِ السَّلَام की त़रह़ अपने रब عَزَّوَجَلَّ के पास गए हैं। ह़ज़रते मूसा عَلَیْہِ السَّلَام भी अपनी क़ौम में चालीस दिन मौजूद न रहे थे और उन की ग़ैर ह़ाज़िरी में लोगों ने कहना शुरूअ़ कर दिया था कि वोह फ़ौत हो गए, लेकिन जिस त़रह़ ह़ज़रते मूसा عَلَیْہِ السَّلَام वापस आ गए इसी त़रह़ मुह़म्मद रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم वापस आएंगे और वोह लोग जो आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की वफ़ात की ख़बर मशहूर कर रहे हैं उन के हाथ पाउं क़लम करेंगे।

इन्किशाफ़े ह़क़ीक़त : इतने में ह़ज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने लोगों को अपनी त़रफ़ मुतवज्जेह करने की कोशिश की और ह़ज़रते उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से कहा : ख़ामोश हो जाओ, लेकिन वोह अपनी तक़रीर में मुन्हमिक रहे। तब ह़ज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने लोगों से कहा : जो कुछ मैं कहता हूं उसे ग़ौर से सुनो ! सब लोग मुतवज्जेह हुवे, ह़ज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने इरशाद फ़रमाया :

"ऐ लोगो ! तुम में से जो शख़्स मुह़म्मद صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की परस्तिश करता था वोह सुन ले कि मुह़म्मद صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم तो फ़ौत हो गए लेकिन जो शख़्स **अल्लाह** तआ़ला की इबादत करता था तो यक़ीनन **अल्लाह** तआ़ला ज़िन्दा है उसे मौत नहीं। इस के बा'द सूरए आले इमरान की येह आयत तिलावत फ़रमाई :

وَمَا مُحَمَّدٌ اِلَّا رَسُوْلٌ ۚ قَدْ خَلَتْ مِنْ قَبْلِهِ الرُّسُلُ ؕ اَفَا۟ئِنْ مَّاتَ اَوْ قُتِلَ انْقَلَبْتُمْ عَلٰۤى اَعْقَابِكُمْ ؕ وَمَنْ يَّنْقَلِبْ عَلٰى عَقِبَيْهِ فَلَنْ يَّضُرَّ اللّٰهَ شَيْـًٔا ؕ وَ سَيَجْزِى اللّٰهُ الشّٰكِرِيْنَ ۝

(پ۴،اٰل عمران:۱۴۴)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *और मुह़म्मद तो एक रसूल हैं इन से पहले और रसूल हो चुके तो क्या अगर वोह इन्तिक़ाल फ़रमाएं या शहीद हों तो तुम उलटे पाउं फिर जाओगे और जो उलटे पाउं फिरेगा **अल्लाह** का कुछ नुक़्सान न करेगा और अ़न क़रीब **अल्लाह** शुक्र वालों को सिला देगा।*

अबू हुरैरा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه कहते हैं : अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه ने जब येह आयत पढ़ी तो लोग ऐसे हो गए कि गोया उन्हों ने कभी पहले येह आयत सुनी ही न थी। उस वक़्त लोगों ने ह़ज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه से इस आयत को सुन कर अपनी याद ताज़ा कर ली, और ह़ज़रते उ़मर رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه का अपना बयान है जिस वक़्त अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه की ज़बान से मैं ने येह आयत सुनी मुझ को ऐसा मा'लूम हुवा कि गोया मेरे पाउं कट गए, मैं खड़ा न रह सका, उसी वक़्त ज़मीन पर गिर पड़ा और मैं ने जाना हुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का विसाल हो गया। (مدارج النبوت،باب دوم،درذکر وقائع...الخ، ج۲،ص۴۳۳،۴۳۴)

ग़म व अलम के बादलों का छा जाना

﴾1﴿ आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की साहिब ज़ादी ह़ज़रते सय्यिदा फ़ातिमतुज़्ज़हरा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهَا ने इस ग़म व अलम के मौक़अ़ पर येह अल्फ़ाज़ इरशाद फ़रमाए : "मेरे प्यारे बाप ने दा'वते ह़क़ को क़बूल फ़रमाया और फ़िरदौसे बरीं में नुज़ूल फ़रमाया,

आह ! जिब्रईल عَلَيْهِ السَّلَام को आं हुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के इन्तिक़ाल की ख़बर कौन पहुंचाए ? इलाही عَزَّوَجَلَّ ! रूहे फ़ातिमा (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا) को रूहे मुहम्मद صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के पास पहुंचा दे। इलाही عَزَّوَجَلَّ मुझे दीदारे रसूल صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से मसरूर कर दे। इलाही عَزَّوَجَلَّ मुझे इस मुसीबत को झेलने के षवाब से बे नसीब न रखना और रोज़े महशर मुहम्मद صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की शफ़ाअ़त से महरूम न फ़रमाना।"

﴾2﴿ आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ज़ौजए मोहतरमा ह़ज़रते आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا ने इस सानिहए अ़ज़ीम पर अपने रन्जो ग़म का इज़्हार करते हुवे कहा : हाए अफ़्सोस ! वोह नबी صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم जिस ने फ़क़्र को ग़िना पर, और मिस्कीनी को दौलत मन्दी पर तरजीह़ दी, अफ़्सोस ! वोह मुअ़ल्लिमे दीन जो गुनाहगार उम्मत की फ़िक्र में कभी पूरी रात आराम से न सोया, हम से रुख़्सत हो गया। जिस ने हमेशा सब्रो षबात से अपने नफ़्स के साथ मुक़ाबला किया, जिस ने बुराइयों पर कभी तवज्जोह न की, जिस ने नेकी और एह़सान के दरवाज़े कभी ज़रूरत मन्दों पर बन्द न किये, जिस रोशन ज़मीर के दामन पर दुश्मनों की ईज़ा रसानी का गर्दो ग़ुबार कभी न बैठा।

﴾3﴿ ह़ज़रते अ़ली मुर्तज़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने आं हुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को आख़िरी ग़ुस्ल देते हुवे जो तारीख़ी अल्फ़ाज़ कहे वोह सारी उम्मत के जज़्बाते रन्जो ग़म के तर्जुमान हैं।

"मेरे मां बाप आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर निषार, आप की मौत से वोह चीज़ जाती रही जो किसी दूसरे की वफ़ात से न गई थी, या'नी ग़ैब की ख़बरों और वह़ूये आस्मानी का सिलसिला मुन्क़तेअ़ हो गया। आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की मौत सदमए अ़ज़ीम है। अगर आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने सब्र का हुक्म न दिया होता और आहो ज़ारी से मन्अ़ न किया होता तो हम आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर आंसू बहा देते फिर भी इस दर्द का इलाज और ज़ख़्म का इन्दिमाल न होता।" (السیرۃ النبویۃ لابن ھشام، باب جھاز رسول صلی اللہ علیہ وسلم و دفنہ، ج٤، ص٥٥٥)

﴾4﴿ हज़रते अनस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि जिस रोज़ हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم मदीने में तशरीफ़ लाए थे, इस की हर चीज़ रोशन हो गई थी और जिस रोज़ आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की वफ़ात हुई है, इस की हर चीज़ उदास हो गई है और बा'दे तदफ़ीन अभी मिट्टी से हाथ भी न झाड़े थे कि हम ने अपने कुलूब में तग़य्युर पाया। (क्यूं कि अब इन्हें मुर्शिदे कामिल की सोहबत के अन्वारे कामिला दिखाई न पड़ते थे) (شرح العلامة الزرقانی، الفصل الاول فی اتمامه تعالیٰ .....الخ،ج۱۲،ص۱۷۶)

﴾5﴿ दरबारे रसूल صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के शाइर हस्सान बिन षाबित رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने जो मरषिया लिखा, उस के चन्द पुरदर्द अश्आर का तर्जमा दर्जे ज़ैल है, जिस से उन के रन्जो ग़म के गहरे और सच्चे जज़्बात का अन्दाज़ा लगाया जा सकता है।

"तेरी नींद के उचाट होने का सबब उस अज़ीम इन्सान की जुदाई है जो हमारा हादी व रहनुमा है, सद अफ़्सोस ! कि वोह जो ज़मीन पर बेहतरीन हस्ती थी, आज ज़ेरे ज़मीन मदफ़ून है। ऐ मेरे प्यारे आक़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! काश ऐसा होता कि मैं आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से पहले बक़ीउल ग़रक़द में दफ़्न हो जाता। मेरे मां बाप उस नबिय्ये कामिल صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم पर फ़िदा हों जो पीर के रोज़ हमें दाग़े मुफ़ारक़त दे गया। मदीने की सर ज़मीन मुझे वीरान व सुनसान दिखाई देती है। काश ! मैं आज के दिन के लिये पैदा ही न हुवा होता। ऐ मेरे महबूब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! क्या मैं आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के बिग़ैर मदीने में रह सकता हूं ? आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का विसाल मेरे लिये जामे ज़हर से तल्ख़ तर है। मेरे आक़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! आप का पाक वुजूद ऐसा नूर था जिस ने तमाम रूए ज़मीन को रोशन कर रखा था। जिस ने भी इस नूर से फ़ैज़ पाया उस ने हिदायत पाई।"

"ऐ हमारे रब عَزَّوَجَلَّ ! हमें अपने प्यारे रसूल صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के साथ जन्नतुल फ़िरदौस में इकठ्ठा कर दे। खुदा عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! जब तक मैं ज़िन्दा रहूंगा अपने महबूब आक़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के लिये रोता और तड़पता रहूंगा।"

(السیرۃ النبویۃ،شعرحسان بن ثابت فی مرثیته،ج٤،ص٥٥٨-٥٦٢)

﴾7﴿ ह़ज़रते उम्मे ऐमन رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهَا एक दिन हुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को याद कर के रोने लगीं। ह़ज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ और ह़ज़रते उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا ने अ़र्ज़ किया : आप क्यूं रोती हैं ? क्या रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के लिये खुदा तआ़ला के पास (यहां से) बेहतर ने'मतें मौजूद नहीं ? उन्हों ने तस्दीक़ की, लेकिन अपने रोने का येह सबब बतलाया कि वह़ये आस्मानी का सिल्सिला मुन्क़तेअ़ हो गया है। इस पर अबू बक्र और उ़मर (رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا) भी शरीके गिर्या व ग़म हो गए।

(الوفا فی احوال المصطفی صلی اللہ علیہ وسلم(مترجم)باب وصال مصطفی اور کیفیت صحابہ،ص٨١٧)

अल ग़रज़ सह़ाबए किराम رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُم और उम्मते मुह़म्मदिय्या में से हर शख़्स आं ह़ज़रत صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की वफ़ात पर सोगवार था और यास व ह़िरमान की तस्वीर बना हुवा था।

फ़िराक़े रसूल صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर ह़ज़रते उ़मर رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُ के तअष्षुरात

ह़ज़रते सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُ का ख़िताब सुन कर जब फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُ को यक़ीन हो गया कि सरकार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का विसाल हो चुका तो एक वक़्त देखा गया कि ह़ज़रते उ़मर رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُ रो रहे हैं और येह कलिमात अ़र्ज़ कर रहे हैं :

السلام علیك یارسول الله بابی انت وامی لقد کنت تخطبنا علی جذع نخلة فلما کثر الناس اتخذت منبرًا لتسمعهم فحن الجذع لفراقك حتی جعلت یدك علیه فسکت فامتك اولی بالحنین الیك لما فارَقتها بابی انت و امی یارسول الله لقد بلغ من فضیلتك عنده ان جعل طَاعتك طَاعته فقال عزوجل: **مَنْ يُّطِعِ الرَّسُوْلَ فَقَدْ اَطَاعَ اللّٰهَ** ج (پ ٥،النساء: ٨٠)

بابی انت و امی یارسول الله لقد بلغ من فضیلتك عنده ان بعثك آخر الانبیاء و ذکرك فی اولهم فقال عز و جل: **وَاِذْ اَخَذْنَا مِنَ النَّبِيّٖنَ مِيْثَاقَهُمْ وَمِنْكَ وَ مِنْ نُّوْحٍ وَّاِبْرٰهِيْمَ وَ مُوْسٰى وَ عِيْسَى ابْنِ مَرْيَمَ** ص **وَاَخَذْنَا مِنْهُمْ مِّيْثَاقًا غَلِيْظًا**ۙ (پ ٢١،الاحزاب:٧)

بابی انت و امی یارسول الله لقد بلغ من فضیلتك عنده ان اهل النار یودون ان یکونوا قد اطاعوك و هم بین اطباقها یعذبون؛ **يَقُوْلُوْنَ يٰلَيْتَنَآ اَطَعْنَا اللّٰهَ وَاَطَعْنَا الرَّسُوْلَاۡ** ۝ (پ٢٢،الاحزاب:٦٦)

بابی انت و امی یارسول الله لئن کان موسی بن عمران اعطاه الله حجرا تفجر منه الانهار فلیس ذلك باعجب من اصابعك حین نبع منها الماء صلی الله علیك یاسیدی یارسول الله ـ

بابی انت و امی یارسول الله لئن کان عیسٰی بن مریم اعطاه الله احیاء الموتی فما هذا باعجب من الشاة المسمومة حین کلمتك و هی مشویة فقالت لك الذراع لا تاکلنی فانی مسمومةـ

بابی انت و امی یا رسول الله لقد دعا نوح علی قومه فقال: **رَبِّ لَا تَذَرْ عَلَى الْاَرْضِ مِنَ الْكٰفِرِيْنَ دَيَّارًا**۝ (پ٢٩،نوح:٢٦)

ولو دعوت علينا بمثلها لهلكنا كلنا فلقد وطئ ظهرك عقبة ابن ابى معيط و

انت تصلى و ادمى وجهك و كسرت رباعيتك يوم احد فابيت ان تقول ال

ا خيرا فقلت اللهم اغفر لقومى فانهم لايعلمون

بابى انت و امى يا رسول الله لقد بلغ من تواضعك انك جالستنا و

تزوجت منا و اكلت معنا ولبست الصوف وركبت الدواب واردفت خلفك

ووضعت طعامك على الارض تواضعا منك صلى الله عليك وسلم رضى الله

عنك يا عمر يا من احببت رسول الله واحبك الله ورسوله.

तर्जमा : या रसूलल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! आप पर सलाम हो। आप पर मेरे मां बाप कुरबान हों आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم खजूर के एक तने पर हमें ख़ुत्बा दिया करते थे, जब लोगों की कषरत हुई तो आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने एक मिम्बर बनवाया ताकि सब तक आवाज़ पहुंचा सकें। आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم मिम्बर पर रोनक़ अफ़रोज़ हुवे तो तना आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की जुदाई के सबब नाला कनां हुवा। आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने अपना दस्ते मुबारक रखा तो वोह सुकूं पज़ीर हुवा। जब खजूर के तने का येह ह़ाल है तो आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की उम्मत को आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के फ़िराक़ पर नालए शौक़ करने का ज़ियादा ह़क़ पहुंचता है। या रसूलल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर मेरे मां बाप कुरबान ! ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ के नज़्दीक आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की फ़ज़ीलत इस ह़द को पहुंची हुई है कि उस ने आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की इत़ाअ़त को अपनी इत़ाअ़त क़रार दिया। इरशादे बारी عَزَّوَجَلَّ हुवा :

مَنْ يُّطِعِ الرَّسُوْلَ فَقَدْ اَطَاعَ اللّٰهَ ج

(پ ٥، النسآء: ٨٠)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *जिस ने रसूल का हुक्म माना बेशक उस ने* ***अल्लाह*** *का हुक्म माना ।*

या रसूलल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर मेरे मां बाप कुरबान हों ! खुदा عَزَّوَجَلَّ के नज़्दीक आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की फ़ज़ीलत यहां तक पहुंची हुई है कि उस ने आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को आख़िरी नबी बना कर मबऊ़ष किया और ज़िक्र में आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को सब से अव्वल रखा कि इरशाद फ़रमाया :

وَاِذْ اَخَذْنَا مِنَ النَّبِيّٖنَ مِيْثَاقَهُمْ وَمِنْكَ وَمِنْ نُّوْحٍ وَّاِبْرٰهِيْمَ وَ مُوْسٰى وَ عِيْسَى ابْنِ مَرْيَمَ ص وَاَخَذْنَا مِنْهُمْ مِّيْثَاقًا غَلِيْظًا ○

(پ ٢١، الاحزاب: ٧)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *और ऐ महबूब याद करो जब हम ने नबियों से अ़हद लिया और तुम से और नूह़ और इब्राहीम और मूसा और ईसा बिन मरयम से, और हम ने उन से गाढ़ा अ़हद लिया ।*

या रसूलल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर मेरे मां बाप कुरबान हों ! खुदा عَزَّوَجَلَّ के यहां आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की येह फ़ज़ीलत भी है कि अहले दोज़ख़ जब त़बक़ाते जहन्नम में अ़ज़ाब दिये जाते होंगे उस वक़्त येह आरज़ू करेंगे कि काश उन्हों ने इत़ाअ़त की होती !

يَقُوْلُوْنَ يٰلَيْتَنَاۤ اَطَعْنَا اللّٰهَ وَاَطَعْنَا الرَّسُوْلَا ○ (پ ٢٢، الاحزاب: ٦٦)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *कहते होंगे हाए किसी त़रह़ हम ने* ***अल्लाह*** *का हुक्म माना होता और रसूल का हुक्म माना होता ।*

या रसूलल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर मेरे मां बाप कुरबान हों ! अगर ह़ज़रते मूसा बिन इमरान عَلَيْهِ السَّلَام को **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने ऐसा पथ्थर अ़त़ा किया जिस से

नहरें फूटतीं, तो येह आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की मुबारक उंगलियों से ज़ियादा अ़जीब नहीं जब कि उन से पानी का चश्मा रवां हुवा।

या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم पर मेरे मां बाप कुरबान हों ! अगर ह़ज़रते ईसा बिन मरयम عَلَیْہِ السَّلَام को **अल्लाह** तआ़ला ने मुर्दे जिलाने का ए'जाज़ बख़्शा था तो येह ज़ियादा अ़जीब नहीं उस ज़हर आलूद बकरी से, जिस ने भुनी हुई हो कर आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से कलाम किया, उस बकरी की दस्ती ने अ़र्ज़ किया : "मुझे न खाएं क्यूंकि मैं ज़हर आलूद हूं।"

या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم पर मेरे मां बाप फ़िदा ! बेशक ह़ज़रते नूह़ عَلَیْہِ السَّلَام ने अपनी क़ौम के ख़िलाफ़ दुआ़ फ़रमाई तो अ़र्ज़ किया :

رَبِّ لَا تَذَرْ عَلَی الْاَرْضِ مِنَ الْكٰفِرِیْنَ دَیَّارًا ۝ (پ۲۹،نوح:۲٦)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *ऐ मेरे रब ज़मीन पर काफ़िरों में से कोई बसने वाला न छोड़।*

अगर कहीं आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم भी हम पर ऐसी दुआ़ए ज़रर कर देते तो यक़ीनन हम सारे के सारे हलाक हो जाते। बेशक उ़क़्बा बिन अबी मुई़त़ ने आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की पुश्ते मुबारक पर बोझ डाला जब कि आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ह़ालते नमाज़ में थे। जंगे उहुद के दिन आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का चेहरए पाक ज़ख़्मी व ख़ूंरेज़ किया गया, आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के दन्दाने मुबारक शहीद किये गए फिर भी आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने ख़ैर के सिवा कुछ कहना गवारा न किया, आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने अ़र्ज़ किया : ख़ुदाया عَزَّوَجَلَّ ! मेरी क़ौम को मुआ़फ़ फ़रमा कि वोह मुझे जानती नहीं।

या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم पर मेरे मां बाप कुरबान ! आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का तवाज़ोअ़ व इन्किसार इस ह़द को पहुंचा हुवा था कि आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने

हमारी हम नशीनी इख़्तियार की, हम में निकाह़ किया, हमारे साथ खाना तनावुल फ़रमाया, भेड़ के बालों (ऊन) का कपड़ा पहना, जानवरों की सुवारी की, किसी को अपने पीछे भी सुवार करना पसन्द कर लिया और अपना खाना ज़मीन पर रखना गवारा किया, येह सब कुछ आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का तवाज़ोअ़ था, या रसूलल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم !

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ तुझ से राज़ी हो ऐ उ़मर ! ऐ वोह जिस ने अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के रसूल صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से मह़ब्बत की, और ऐ वोह ! जिस से ख़ुद अल्लाह عَزَّوَجَلَّ और उस के रसूल صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने मह़ब्बत रखी।

ग़मे हिज्र : ह़ज़रते बिलाल رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه को ह़ुज़ूरे अकरम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से बड़ी मह़ब्बत थी ह़ुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का जब विसाल हो गया तो आप رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه मदीने की गलियों में येह कहते फिरते थे कि लोगो ! तुम ने कहीं रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को देखा है तो मुझे भी दिखा दो या मुझे आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का पता बता दो। फिर आप رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه इस ग़मे हिज्र में मदीने को छोड़ कर मुल्के शाम के शहर ह़लब में चले गए। एक साल के बा'द आप رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه ने ह़ुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को ख़्वाब में देखा, ह़ुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने आप رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه से फ़रमाया कि ऐ बिलाल (رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه) ! तुम ने हम से मिलना क्यूं छोड़ा ? क्या तुम्हारा दिल हम से मिलने को नहीं चाहता ?

ह़ज़रते बिलाल رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه येह ख़्वाब देख कर, लब्बैक या सय्यिदी صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! ऐ आक़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! गुलाम ह़ाज़िर है, कहते हुवे उठे और उसी वक़्त रात ही को ऊंटनी पर सुवार हो कर मदीने को चल पड़े। रात दिन बराबर चल कर मदीनए मुनव्वरह में दाख़िल हुवे। ह़ज़रते बिलाल رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه

पहले सीधे मस्जिदे नबवी (علیٰ صاحبِہَا الصَّلٰوۃُ وَالسَّلام) पहुंचे और हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को ढूंडा, मगर हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को न देखा, फिर हुजरों में तलाश किया जब वहां भी न मिले तब मज़ारे अन्वर पर हाज़िर हुवे और रो कर अ़र्ज़ किया : या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! ह़लब से गुलाम को येह फ़रमा कर बुलाया कि हम से मिल जाओ और जब बिलाल ज़ियारत के लिये हाज़िर हुवा तब हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم पर्दे में छुप गए। येह कह कर आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ बेहोश हो कर क़ब्रे अन्वर के पास गिर गए, बहुत देर में जब आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को होश आया तो लोग क़ब्रे अन्वर से उठा कर बाहर लाए।

इस अ़र्से में ह़ज़रते बिलाल رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के आने का सारे मदीने में गुल हुवा कि आज रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के मुअज़्ज़िन बिलाल رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ आए हैं। सब ने मिल कर ह़ज़रते बिलाल رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से दरख़्वास्त की, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के लिये एक दफ़्आ़ वोह अज़ान सुना दो जो रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को सुनाते थे। बिलाल رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाने लगे, दोस्तो ! येह बात मेरी ताक़त से बाहर है क्यूं कि हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ह़याते ज़ाहिरी में अज़ान देता था तो जिस वक़्त اَشْهَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا رَّسُوْلُ اللّٰہِ कहता था तो रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को सामने आंखों से देख लेता था। अब बताओ कि किसे देखूंगा ? मुझे इस ख़िदमत से मुआ़फ़ रखो। हर चन्द लोगों ने इस्रार किया मगर ह़ज़रते बिलाल رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने इन्कार ही किया।

बा'ज़ सहाबा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُم की येह राए हुई कि बिलाल رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ किसी का कहना नहीं मानेंगे तुम किसी को भेज कर ह़ज़रते ह़सन व हुसैन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا को बुला लो, अगर वोह आ कर बिलाल رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से अज़ान की फ़रमाइश करेंगे तो बिलाल رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ज़रूर मान जाएंगे, क्यूं कि हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के

अहले बैत رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡھُم से बिलाल رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہ को इश्क़ है। येह सुन कर एक साहिब जा कर ह़ज़रते ह़सन और हुसैन (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡھُمَا) को बुला लाए। ह़ज़रते हुसैन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہ ने आ कर बिलाल رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہ का हाथ पकड़ कर फ़रमाया कि ऐ बिलाल رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہ ! आज हमें भी वोही अज़ान सुना दो जो हमारे नानाजान صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को सुनाया करते थे। ह़ज़रते बिलाल رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہ ने इमामे हुसैन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہ को गोद में उठा कर कहा : तुम मेरे मह़बूब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के जिगर पारा हो, नबी صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के बाग़ के फूल हो, जो कुछ तुम कहोगे मन्ज़ूर करूंगा, तुम्हें रन्जीदा न करूंगा कि इस त़रह़ हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को मज़ारे मुबारक में रन्ज पहुंचेगा और फिर फ़रमाया : हुसैन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہ मुझे ले चलो जहां कहोगे अज़ान कह दूंगा।

ह़ज़रते हुसैन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہ ने ह़ज़रते बिलाल رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہ का हाथ पकड़ कर आप को मस्जिद की छत पर खड़ा कर दिया। बिलाल رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہ ने अज़ान कहना शुरूअ़ की **अल्लाहु अक्बर** ! **अल्लाहु अक्बर** ! ! ! मदीनए मुनव्वरह में येह वक़्त अ़जब ग़म और सदमे का वक़्त था। आज महीनों के बा'द अज़ाने बिलाल رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہ की आवाज़ सुन कर हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की दुन्यवी ह़याते मुबारक का समां बंध गया। बिलाल رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہ की अज़ान सुन कर मदीनए मुनव्वरह के बाज़ार व गली कूचों से लोग आ कर मस्जिद में जम्अ़ हुवे, हर एक शख़्स घर से निकल आया। पर्दे वाली औ़रतें बाहर आ गईं अपने बच्चों को साथ लाईं। जिस वक़्त बिलाल رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہ ने اَشۡہَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا رَّسُوۡلُ اللّٰہِ मुंह से निकाला हज़ारहा चीख़ें एक दम निकलीं उस वक़्त रोने का कोई ठिकाना न था। औ़रतें रोती रहीं बच्चे अपनी माओं से पूछते थे कि तुम बताओ बिलाल رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہ मुअज़्ज़िने रसूलिल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم तो आ गए, मगर रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم मदीना कब तशरीफ़ लाएंगे ?

हज़रते बिलाल رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने जब اَشْھَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا رَّسُوْلُ اللّٰہِ मुंह से निकाला और हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को आंखों से न देखा तो ग़मे हिज्र में बेहोश हो कर गिर गए और बहुत देर के बा'द होश में आ कर उठे और रोते रहे। फिर मुल्के शाम चले गए।

(مدارج النبوت،باب دھم،درذکر مؤذنین...الخ،ج۲،ص۵۸۳)

रौज़ए रसूल صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم **पर :** हज़रते आइशा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا की ख़िदमत में एक औरत हाज़िर हुई और आ कर अ़र्ज़ किया कि मुझे हुज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की क़ब्रे मुबारक की ज़ियारत करा दो, हज़रते आइशा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا ने हुज्रए शरीफ़ा खोला, उन्हों ने ज़ियारत की और ज़ियारत कर के रोती रहीं और रोते रोते इन्तिक़ाल फ़रमा गई। رضی اللہ تعالیٰ عنہا وارضاھا عنا

(الشفاء للقاضی عیاض، کتاب فی لزوم محبتہ علیہ السلام، فصل فیماروی....الخ، ج۲،ص۴۴)

रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم सहाबए किराम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُم की नज़र में

रसूले ख़ुदा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم लोगों में सब से ज़ियादा बा वक़ार थे। आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की हर अदा पुर वक़ार थी।

(हज़रते ख़ारिजा बिन ज़ैद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ)

हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़ामोशी, हिल्म और क़ुव्वत, तफ़क्कुर और तदब्बुर की आईनादार थी।

(हज़रते इब्ने अबी हाला رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ)

रसूले ख़ुदा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के कलाम में तरतील व तरसील की सिफ़त थी या'नी ठहर ठहर कर गुफ़्तगू फ़रमाते थे।

(हज़रते जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ)

रसूले ख़ुदा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर्दा नशीन कंवारी लड़कियों से ज़ियादा बा ह़या थे, जब आं हु़ज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم किसी चीज़ से कराहत फ़रमाते तो हम आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के चेहरए अन्वर से पहचान लेते। (ह़ज़रते अबू सईद ख़ुदरी رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه)

हु़ज़ूरे अकरम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ह़या की वजह से किसी के चेहरे पर नज़रें जमा कर बात न करते थे। आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم मकरूह बातों का ज़िक्र इशारे किनाए में फ़रमा देते।

(ह़ज़रते अ़म्र बिन अल आ़स رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه)

नबिय्ये अकरम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم अपने सह़ाबा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُم से ख़ुश कलामी फ़रमाते, उन में मिल जुल कर बैठते, और उन के बच्चों को गोद में बिठाते और प्यार करते।

(ह़ज़रते जरीर बिन अ़ब्दुल्लाह رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه)

आं हु़ज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم अपने सह़ाबा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُم से मुसाफ़ह़ा फ़रमाते और जो कोई ह़ाज़िरे ख़िदमत होता उस की इ़ज़्ज़त करते। (ह़ज़रते अनस رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه)

सह़ाबा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُم आं हु़ज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में ह़ाजत मन्द बन कर ह़ाज़िर होते, शिकम सैर हो कर रुख़्सत होते, और फ़क़ीह बन कर निकलते। (ह़ज़रते अ़ली رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه)

ज़मानए जाहिलिय्यत में भी लोग आं हु़ज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के पास अपने मुक़द्दमात फ़ैसले के लिये ले जाते।

(ह़ज़रते रबीअ़ इब्ने ख़ुषैम رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه)

(نسیم الریاض،القسم الاول،فصل واما عدله،ج۲،ص۳۷۸)

आं ह़ज़रत صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने ऐसे ह़ाल में विसाल फ़रमाया कि आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने और आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के अहले ख़ाना رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُم ने कभी जव से पेट न भरा था। (ह़ज़रते अ़ब्दुर्रह़मान बिन औ़फ़ رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه)

हम आले मुह़म्मद رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْھُم का येह ह़ाल था कि एक एक महीना घर में आग तक रोशन न होती थी, सिर्फ़ खजूर और पानी पर गुज़ारा होता था। (ह़ज़रते आ़इशा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْھَا)

(شمائل الترمذی،باب ماجاء فی عیش النبی ،الحدیث:٣٧١، ج٥،ص٥٧٣)

रसूलुल्लाह صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم इतनी इ़बादत फ़रमाया करते थे कि आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के पाए मुबारक मुतवर्रिम हो जाते। (ह़ज़रते मुग़ीरा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ)

(صحیح البخاری، کتاب التہجد،باب قیام النبی حتی ترم قدماہ، الحدیث: ١١٣٠،ج١ص٣٨٤)

आं ह़ज़रत صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से अ़र्ज़ किया गया : आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم इतनी नमाज़ क्यूं पढ़ा करते हैं ? आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : क्या मैं **अल्लाह** तआ़ला का शुक्र गुज़ार बन्दा न बनूं ? (ह़ज़रते अबू सलमह رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ)

(المرجع السابق)

एक दफ़्आ़ मैं ह़ाज़िरे ख़िदमत हुवा। आं ह़ज़रत صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم नमाज़ पढ़ रहे थे और आप के सीनए मुबारक से ऐसी आवाज़ आ रही थी जैसे हंडिया पक रही हो।

(ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन शख़्ख़ीर رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ)

अल्लाह तआ़ला ने अपने बन्दों में से बेहतरीन शख़्स को मुन्तख़ब किया जो सब से ज़ियादा आ़ली नसब, रास्त गुफ़्तार और शरीफ़ुन्नफ़्स था और वोह तमाम आ़लम का इन्तिख़ाब था صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم। (ह़ज़रते षाबित बिन क़ैस رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ)

आं ह़ज़रत صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم न फ़ोह़्श गो थे, न ला'नत करने वाले थे और न गाली देने वाले थे। (ह़ज़रते अनस رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ)

आं हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم बीमार की इयादत करते, जनाज़े के साथ चलते, अगर कोई गुलाम दा'वत करता तो उसे क़बूल फ़रमाते। आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم सब लोगों से बेहतर, सब से ज़ियादा सख़ी और सब से ज़ियादा शुजाअ़ थे।

(ह़ज़रते अनस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ)

आं ह़ज़रत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की तवाज़ोअ़ व इन्किसारी देख कर मुझे यक़ीन हो गया कि आप पैग़म्बर हैं बादशाह नहीं।

(ह़ज़रते अ़दी बिन ह़ातिम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ)

रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم तमाम लोगों से ज़ियादा सख़ी और फ़य्याज़ थे और आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की सख़ावत का ज़ुहूर रमज़ानुल मुबारक में सब से ज़ियादा होता था।

(ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا)

रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने (रिह़लत के वक़्त) न कोई दीनार छोड़ा न कोई दिरहम, न बकरी न ऊंट।

(ह़ज़रते उम्मुल मुअमिनीन आ़इशा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا)

रसूले अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने तर्के में सिवाए हथयारों और एक ख़च्चर के कुछ न छोड़ा।

(ह़ज़रते उ़मर बिन ह़ारिष رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ)

मैं ने मुह़म्मद صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को एक ऐसा शख़्स पाया जो नेकियों के करने का और शर से बचने का हुक्म देता है।

(ह़ज़रते अनीस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ, बरादरे अबू ज़र गिफ़ारी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ)

जब घुमसान का रन पड़ता और लड़ने वालों की आंखों में ख़ून उतर आता, उस वक़्त हम नबिय्ये अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ओट लिया करते थे और आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم हम सब से आगे दुश्मन की जानिब हुवा करते थे। (ह़ज़रते अ़ली رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ)

(نسیم الریاض،القسم الاول،فصل واما الشجاعة...الخ،ج۲،ص۳۰۱)

जो आं हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को अव्वल नज़र देख लेता, मरऊ़ब हो जाता और जो आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की मजालिस में बैठता उस को आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से महब्बत हो जाती। अगर आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का मद्ह़ ख़्वां येह कह दे कि आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم जैसा न कभी पहले देखा और न आइन्दा देखने की उम्मीद है तो कुछ मुबालग़ा नहीं।

(ह़ज़रते अ़ली رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ)

अ़क्ल मन्दों पर वाज़ेह़ हो चुका है कि जनाबे मुह़म्मद صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم न शाइ़र हैं न जादूगर, इन का कलाम रब्बुल आ़लमीन عَزَّوَجَلَّ की वह़्य है और आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की इता़अ़त हर शख़्स पर वाजिब है।

(ह़ज़रते ख़ालिद बिन वलीद رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ)

वोह हर ख़ूबी से आरास्ता हैं, हर खुल्के़ करीम से मुम्ताज़ हैं, त़मानिय्यत उन का लिबास, नेकी उन का शिआ़र है। उन का ज़मीर तक़्वा है, उन का कलाम ह़िक्मत है, सिद्क़ो वफ़ा उन की फ़ित़रत है, अ़फ़्वो एह़सान उन की आ़दत है, अ़द्ल उन की सीरत है, सच्चाई उन की शरीअ़त है हिदायत उन की रहनुमा है, मज़हब उन का इस्लाम है और अह़मद उन का नाम है। صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم।

(सह़ाबिये रसूल رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ)

बारगाहे रिसालत में सहाबा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْھُم का ख़िराजे अक़ीदत

ह़ज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ

لما رأيت نبينا متجدلا — ضاقت على بعرضهن الدور

فارتاع قلبى عند ذاك لهلكه — و العظم منى ما حييت كسير

ياليتنى من قبل مهلك صا — غيبت فى جدث على صخور

(شرح العلامة الزرقانی،المقصد العاشر،الفصل الاول فی اتمامه...الخ،ج۱۲،ص۱۵۱)

तर्जमा :

﴾1﴿ जब मैं ने अपने नबी صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को वफ़ात याफ़्ता देखा तो मकानात अपनी वुस्अ़त के बा वुजूद मुझ पर तंग हो गए।

﴾2﴿ उस वक़्त आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की वफ़ात से मेरा दिल लरज़ उठा और ज़िन्दगी भर मेरी हड्डी शिकस्ता रहेगी।

﴾3﴿ काश ! मैं अपने आक़ा صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के इन्तिक़ाल से पहले क़ब्र में दफ़्न कर दिया गया होता और मुझ पर पथ्थर होते।

ह़ज़रते उ़मर बिन ख़त्ताब رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ

وقد بدأنا فكذ بنا فقال لنا — صدق الحديث نبى عنده الخبر

وقد ظلمت ابنة الخطاب ثم هدىٰ — ربى عشية قالوا قد صبا عمر

لما دعت ربها ذاالعرش جاهدة — والدمع من عينها عجلان يبتدر

فقلت اشهد ان الله خالقنا — وأن احمد فينا اليوم مشتهر

نبى صدق اتىٰ بالحجة من ثقة — وافى الاما نة مافى وعده خور

(سیرت ابن اسحاق، ج۲،ص۱۵۳)

तर्जमा :

﴾1﴿ और हम पर आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने आग़ाज़े तब्लीग़ की जिस की हम ने तक्ज़ीब की तो ख़बर रखने वाले नबी ने हम से सच्ची बात कही।

﴾2﴿ मैं ने बिन्ते ख़त्ताब पर ज़ियादती की फिर मेरे रब عَزَّوَجَلَّ ने उस शाम को मुझे हिदायत दी जब लोगों ने कहा कि उमर (رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه) आबाई दीन से निकल गया है।

﴾3﴿ और फिर जब उस ने दिलसोज़ी से अपने रब عَزَّوَجَلَّ को पुकारा और उस की आंखों से आंसू बड़ी तेज़ी से रवां थे।

﴾4﴿ तो मैं ने कहा कि मैं इस बात की गवाही देता हूं कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ हमारा ख़ालिक़ है और अह़मदे मुज्तबा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم आज हमारे दरमियान मश्हूर व मुतआरिफ़ हैं।

﴾5﴿ कि वोह सच्चे नबी صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم हैं जो मुस्तनद दलील व बुरहान लाए और वोह अमानत दार हैं उन के वा'दे कमज़ोर नहीं।

ह़ज़रते उ़षमान رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه

رسول عظیم الشان یتلو کتابه   له کل من یبغی التلاوة وامق

محب علیه کل یوم حلاوة   وان قال قولا فالذی قال صادق

(سیرت ابن اسحاق، ج۲، ص۱۵۹)

तर्जमा :

﴾1﴿ वोह अ़ज़ीमुल मर्तबत रसूल صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم अपनी उस किताब की तिलावत फ़रमाते हैं कि हर पढ़ने वाला उस का आ़शिक़ हो जाए।

﴾2﴿ वोह मह़बूब صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم हैं उन पर हर रोज़ ह़लावत व ताज़गी है और अगर कोई बात कहें तो यक़ीनन वोह सच्ची है।

ह़ज़रते अ़ली كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰی وَجْهَهُ الْكَرِيْم

فامسی رسول الله قد عز نصره   وکان رسول الله ارسل با لعدل

فجاء بفرقان من الله منزل   مبينة آيا ته لذوی العقل

فآ من اقوام بذاك ايقنوا   فامسوا بحمدالله مجتمعی الشمل

وانكر اقوام فزاغت قلوبهم   فز ادهم ذوالعرش خبلا علی خبل

(السيرة النبوية لابن هشام،ماقيل من الشعر فی يوم بدر،ج٣،ص١٢)

तर्जमा :

﴾1﴿ यौमे बद्र रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ख़ूब ताईद व नुस्रत हुई, और आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم अ़द्लो इन्साफ़ के साथ मबऊ़ष किये गए।

﴾2﴿ वोह **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की त़रफ़ से नाज़िल कर्दा फ़ुरक़ाने ह़मीद ले कर आए जिस की आयात अरबाबे दानिश के लिये रोशन व वाज़ेह़ हैं।

﴾3﴿ तो इस पर बहुत से लोग ईमान लाए और इस का यक़ीन किया जिस की वजह से वोह بحمدہ تعالیٰ मरबूत़ व मुनज़्ज़म हो गए।

﴾4﴿ और कुछ लोग इस से मुन्किर हुवे तो उन के दिलों में कजी आ गई और रब्बे अ़र्श عَزَّوَجَلَّ ने भी उन की तबाहियों में इज़ाफ़ा कर दिया।

ह़म्ज़ा बिन अ़ब्दुल मुत्तलिब رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه

حمدت الله حين هدیٰ فؤادی   الــی الا سـلام و الـديـن الحنيف

لـديـن جـاء مـن رب عزيز   خبيـر بـالـعبـاد بهم لطيف

اذا تـليـت رسـائـلـه علينا   تـحـدر دمع ذی اللب الحصيف

واحـمـد مصطفی فينا مطاع   فـلا تـغشـوه بـالـقـول الـعنيف

فـلا والـله نسلمه لقوم   ولـمـا نقض فيهم بالسيوف

(سيرت ابن اسحاق،ج٢،ص١٥٣)

तर्जमा :

﴾1﴿ मैं ने खुदा عَزَّوَجَلَّ की ह़म्द की जब उस ने इस्लाम और दीने ह़नीफ़ की राह दिखाई।

﴾2﴿ वोह दीन जो बन्दों पर लुत़्फ़ फ़रमाने वाले और उन की ख़बर रखने वाले रब्बे अ़ज़ीज़ का है।

﴾3﴿ जब उस के पैग़ाम हमें सुनाए गए तो दूर अन्देश व अ़क़्ल वालों के आंसू रवां हो गए।

﴾4﴿ अह़मदे मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم हमारे दरमियान फ़रमां रवा हैं तो उन के हुज़ूर सख़्त कलामी से न पेश आओ।

﴾5﴿ खुदा عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! हम उन्हें मुख़ालिफ़ीन के सिपुर्द नहीं करेंगे अभी तो हम ने उन के दरमियान तलवारों का फ़ैसला भी जारी न किया।

ह़स्सान बिन षाबित अन्सारी رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه

واحسن منك لم ترقط عینی   و اجمل منك لم تلد النساء

خلقت مبرأ من کل عیب   کانك قد خلقت کما تشاء

तर्जमा :

﴾1﴿ आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से ज़ियादा ह़सीन न कभी मेरी आंखों ने देखा और न ही आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से ज़ियादा खूब सूरत किसी मां ने जना।

﴾2﴿ आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم हर ऐ़ब से पाक पैदा फ़रमाए गए गोया आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की तख़्लीक़ आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ख़्वाहिश के मुत़ाबिक़ हुई।

وشق له من اسمه کی یجله   فذوالعرش محمود و هذا محمد

نبی اتا نا بعد یاس و فترة   من الرسل والا وثان فی الارض تعبد

فامسیٰ سراجاً مستنیراً وھادیا　　　يلوح كما لاح الصقيل المهند

وانذرنا نارا و بشر جنة　　　وعلمنا الاسلام فالله نحمد

तर्जमा :

﴾1﴿ उस ने आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के इज्लालो इक्राम के लिये अपने नाम से आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का नाम मुश्तक़ किया तो रब्बे अ़र्श عَزَّوَجَلَّ मह़मूद है और येह मुह़म्मद صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم हैं।

﴾2﴿ येह नबी صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم बड़ी ना उम्मीदी और रसूलों عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के एक त़वील वक़्फ़े के बा'द हमारे पास तशरीफ़ लाए जब कि ज़मीन पर बुतों की परस्तिश हो रही थी।

﴾3﴿ तो आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم रोशन चराग़ और हादी व रहबर बन कर इस त़रह़ चमके जैसे सैक़ल कर्दा हिन्दी तलवार चमकती है।

﴾4﴿ हमें जहन्नम का डर सुनाया और जन्नत की बिशारत दी और हमें इस्लाम की ता'लीम दी तो हम ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ ही की ह़म्द बयान करते हैं।

ھجوت محمدًا واجبت عنه　　　وعند الله فى ذاك الجزاء

اتھجوه ولست له بكفء　　　فشر كما لخير كما الفداء

ھجوت مباركا برا حنيفا　　　امين الله شيمته الوفاء

امن يھجو رسول الله منكم　　　و يمدحه و ينصره سواء

فان ابى و والده وعرضى　　　لعرض محمد منكم وقاء

(السيرة النبوية لابن ھشام،شعر حسان فى فتح مكة،ج٤،ص٣٥٩)

तर्जमा :

﴾1﴿ तूने मुह़म्मद صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की हिज्व की तो मैं ने उन की त़रफ़ से तुम्हें जवाब दिया और ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ के यहां इस में अज्रो षवाब है।

﴾2﴿ तू इन की हिजू करता है जब कि तू इन के बराबर नहीं। तुम में का बुरा (या'नी तू) भले पर (या'नी हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर) कुरबान हो।

﴾3﴿ तूने ऐसे को बुरा कहा जो मुबारक, पाक बाज़, ह़नीफ़, ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ के अमीन हैं जिन की ख़स्लत वफ़ादारी है।

﴾4﴿ क्या तुम में का जो रसूले ख़ुदा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की हिजू करे और जो इन की मद्ह़ो सिताइश और इन की ह़िमायत करे दोनों बराबर हैं ?

﴾5﴿ मेरे बाप दादा, मेरी इ़ज़्ज़त व आबरू मुह़म्मद صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की इ़ज़्ज़त व हुरमत के लिये ढाल है।

و هل عدلت يوما رزية هالك — رزية يوم مات فيه محمد

فبوركت يا قبر الرسول و بوركت — بلاد ثوى فيها الرشيد المسدد

وما فقد الماضون مثل محمد — ولا مثله حتى القيامة يفقد

وليس هوای نازعا عن ثنائه — لعلی به فی جنة الخلد اخلد

مع المصطفى ارجو بذاك جواره — وفی نيل ذاك اليوم اسعى و اجهد

(السيرة البنوية لابن هشام،شعرحسان بن ثابت فی مرثيته، ج٤، ص٥٥٩-٥٦١)

तर्जमा :

﴾1﴿ क्या किसी मरने वाले की मुसीबत का दिन उस दिन के बराबर है जिस में मुह़म्मद صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का इन्तिक़ाल हुवा।

﴾2﴿ तुझे मुबारक बाद है ऐ क़ब्रे रसूल صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! और उस शहर को भी जिस में हिदायत व दुरुस्ती वाले रसूल صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم आसूदा ख़ाक हैं।

《3》 न ज़मानए माज़ी वालों को मुह़म्मद صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم जैसे (अ़ज़ीम व जलील) की वफ़ात का सदमा हुवा न क़ियामत तक किसी को ऐसा सदमा होगा।

《4》 मेरा दिल उन की ना'त से बाज़ रहने वाला नहीं शायद इसी के सदके़ मुझे जन्नतुल ख़ुल्द में दवाम नसीब हो।

《5》 इसी के सबब तो मैं मुह़म्मद मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के कु़र्ब का उम्मीद वार हूं और वोही दिन पाने के लिये मैं कोशिश व मेह़नत कर रहा हूं।

ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन रवाह़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ

روحی الفداء لمن اخلاقه شهدت بانه خیر مولود من البشر

عمت فضائله کل العباد کما عم البریة ضوء الشمس و القمر

انی تفرست فیك الخیر اعرفه و الله یعلم عن ماخاننی البصر

انت النبی فمن یحرم شفاعته یوم الحساب فقد ازری به القدر

فثبت الله ماآتاك من حسن تثبیت موسیٰ و نصرا کالذی نصر

(وسیلة الاسلام، ج ۱، ص ۸۷_الطبقات الکبریٰ لابن سعد، ج ۳، ص ۴۰۰)

तर्जमा :

《1》 मेरी रूह़ उस पर कु़रबान जिस के अख़्लाक़ इस बात के गवाह हैं कि वोह ख़ैरुल बशर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم है।

《2》 आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के एह़सानात सारे बन्दों पर आ़म हैं जैसे आफ़्ताब व माहताब की रोशनी सारी मख़्लूक़ को आ़म है।

《3》 मैं ने ग़ौर कर के आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के अन्दर भलाई देख ली जिसे मैं पहचानता हूं और ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ जानता है कि मेरी आंखों ने मुझ से ख़ियानत नहीं की।

﴿4﴾ आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم नबी हैं जो शख़्स बरोज़े क़ियामत आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की शफ़ाअ़त से मह़रूम हुवा उसे क़िस्मत ने ज़लीलो रुस्वा कर दिया।

﴿5﴾ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को जो भलाई दी उसे क़ाइम रखे जैसे मूसा عَلَيْهِ السَّلَام के साथ हुवा और आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की मदद करे जैसे उन की मदद हुई।

ह़ज़रते का'ब बिन ज़ुहैर رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ

نبئت ان رسول الله اوعدنی　　　والعفو عند رسول الله مأمول

فقد اتيت رسول الله معتذرا　　　والعذر عند رسول الله مقبول

ان الرسول لنور يستضاء به　　　مهند من سيوف الله مسلول

(السيرة البنوية لابن هشام،امر كعب بن زهير،ج٤،ص٤٣٣،٤٣٥)

तर्जमा :

﴿1﴾ मुझे ख़बर दी गई कि रसूले ख़ुदा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने मेरे क़त्ल की वईद फ़रमाई है और रसूले ख़ुदा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के यहां तो (मुझे) अ़फ़्वो दर गुज़र की ही उम्मीद है।

﴿2﴾ तो मैं रसूले ख़ुदा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के यहां मा'ज़िरत के साथ ह़ाज़िर हो गया हूं और मा'ज़िरत रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की बारगाह में मक़्बूल है।

﴿3﴾ बेशक रसूल صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ऐसे नूर हैं जिस से रोशनी ह़ासिल की जाती है और वोह ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ की तलवारों में से एक बे नियाम हिन्दी तलवार हैं।

ह़ज़रते अ़ब्बास बिन मिरदास رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ

يا خاتم النبآء انك مرسل　　　بالحق كل هدى السبيل هدا كا

ان الاله بنى عليك محبة فى　　　خلقه و محمدا سما كا

(السيرة النبوية لابن هشام،غزوة حنين فى سنة ثمان بعد الفتح،شعر اخر لعباس بن مرداس،ج٤،ص٣٩٠)

तर्जमा :

《1》 ऐ ख़ातमुल अम्बिया صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم हक़ के साथ मब्ऊ़ष हुवे । राहे हक़ की हिदायत आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ही की हिदायत है ।

《2》 **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के ऊपर अपनी मख़्लूक़ में महृब्बत की बुन्याद रखी और आप का नाम मुहृम्मद (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) रखा ।

हज़रते मालिक बिन औफ़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ

ما ان رایت ولا سمعت بمثله   فی الناس کلهم بمثل محمد

اوفی و اعطی للجزیل اذا اجتدیٰ   ومتی تشاء یخبرك عما فی غد

(المقتفی فی سیرت المصطفی، ج۱، ص۲۱٤)

तर्जमा :

《1》 सारे इन्सानों में मुहृम्मद صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم जैसा किसी को न देखा और न सुना ।

《2》 जब उन से मांगा जाए तो ख़ूब देने वाले हैं और तुम जब चाहो वोह तुम्हें आइन्दा की ख़बर दे दें ।

हज़रते अबू सुफ्यान बिन हारिष رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ

لقد عظمت مصیبتنا و جلت   عشیة قیل قد قبض الرسول

فقد ناالوحی و التنزیل فینا   یروح به و یغدو جبرئیل

نبی کان یجلو الشك عنا   بما یوحی الیه وما یقول

و یهدینا فلانخشی ضلالاً   علینا و الرسول لنا دلیل

أ فاطم! ان جزعت فذاك عذر   وان لم تجزعی ذاك السبیل

فقبر ابیك سید کل قبر   وفیه سید الناس الرسول

(روض الانف مع سیرت ابن هشام(مترجم)، ج٤، ص٦٨١)

तर्जमा :

﴾1﴿ उस शाम हम पर बड़ी मुसीबत आई जब कहा गया कि रसूल صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم वफ़ात पा गए ।

﴾2﴿ वह्‌यो तन्ज़ील जिसे जिब्राईल عَلَيْهِ السَّلَام सुब्हो शाम लाते थे हम इस से महरूम हो गए ।

﴾3﴿ वोह नबी صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ की वह्‌य और अपने अक्वाल के ज़रीए हमारे शुकूक दूर फ़रमाते थे ।

﴾4﴿ और हमारी रहबरी करते थे तो हमें अपने ऊपर गुमराही का ख़ौफ़ न होता जब कि ख़ुद रसूल صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم हमारे रहबर व रहनुमा हैं ।

﴾5﴿ ऐ फ़ातिमा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا ! आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا रोएं तो मा'ज़ूर हैं और न रोएं तो येह भी बेहतर राह है ।

﴾6﴿ आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا के वालिदे गिरामी صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की क़ब्र हर क़ब्र की सरदार है और इस में तमाम लोगों के सरदार रसूले बा वक़ार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم आराम फ़रमा हैं ।

आ'राबी

يا خير من دفنت بالقاع اعظمه   فطاب من طيبهن القاع والاكم

نفسى الفداء بقبر انت ساكنه   فيه العفاف وفيه الجود والكرم

तर्जमा :

﴾1﴿ ऐ सब से बेहतर उन में जिन की हड्डियां ज़मीन में दफ़्न हुईं तो इन की ख़ुश्बू से चटियल मैदान और टीले ख़ुश्बूदार हो गए और महक उठे ।

﴾2﴿ मेरी जान क़ुरबान हो उस क़ब्र पर जिस में आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم आराम फ़रमा हैं कि उसी में इफ़्फ़त व पाक दामनी और जूदो करम है ।

ह़ज़रते आइशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡھَا

فلو سمعوا فی مصر اوصاف خده　　لما بذلوا فی سوم یوسف من نقد

لواحی زلیخا لورأین جبینه　　لاثرن بالقطع القلوب علی الایدی

(شرح العلامة الزرقانی،عائشةام المؤمنین،ج٤،ص٣٩٠)

तर्जमा :

﴾1﴿ अगर आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के रुख़्सारे मुबारक के औसाफ़ अहले मिस्र सुन पाते तो जनाबे यूसुफ़ عَلَیۡہِ السَّلَام की क़ीमत लगाने में सीमो ज़र न बहाते।

﴾2﴿ अगर ज़ुलैख़ा को मलामत करने वाली औ़रतें आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की जबीने अन्वर देख पातीं तो हाथों के बजाए अपने दिल काटने को तरजीह़ देतीं।

ह़ज़रते फ़ातिमा ज़हरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡھَا

ماذا علٰی من شم تربة احمد　　ان لایشم مدی الزمان غوالیا

صبت علی مصائب لو انّها　　صبت علی الایام صرن لیا لیاً

(الوفا باحوال المصطفی صلی اللہ تعالٰی علیه وآله وسلم(مترجم)،باب٤٠،بعدازوصال حضرت فاطمہ رضی اللہ عنہا کی کیفیت،ص٨٣١)

तर्जमा :

﴾1﴿ जिस ने क़ब्रे रसूल صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़ाक सूंघ ली अगर वोह ज़माने भर गिरां क़ीमत इ़त्रों और ख़ुश्बूओं को न सूंघे तो कोई नुक़्सान की बात नहीं (या'नी उसे वोही ख़ुश्बू काफ़ी है और किसी ख़ुश्बू की अब उसे कोई ज़रूरत नहीं।)

﴾2﴿ मुझ पर ऐसे मसाइब टूटे कि अगर वोह दिनों पर टूटते तो वोह रातें बन जाते।

ह़ज़रते सफ़िय्या बिन्ते अ़ब्दुल मुत्त़लिब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا

الا یارسول الله کنت رجاء نا — و کنت بنا براً ولم تك جافیا

و کنت رحیما ھادیا و معلما — لیبك علیك الیوم من کان باکیا

فدی لرسول الله امی و خالتی — وعمی وآبائی ونفسی ومالیاً

(حجۃالله علی العلمین، قسم الرابع،الباب الاول،ص٥١٠)

तर्जमा :

﴾1﴿ या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم हमारी उम्मीद और हमारे साथ अच्छा सुलूक करने वाले थे बद सुलूकी वाले न थे।

﴾2﴿ आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم मेहरबान, राहनुमा, और मुअ़ल्लिम थे, रोने वाले को चाहिये कि आज आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم पर रोए।

﴾3﴿ मेरी मां, मेरी ख़ाला, मेरे चचा, मेरे आबाओ अज्दाद, मेरी जानो माल सब कुछ रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم पर कुरबान हों।

बनाते मदीना رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُنَّ

طلع البدر علینا — من ثنیات الوداع

وجب الشکر علینا — ما دعا لله داع

ایھا المبعوث فینا — جِئت بالامر المُطاع

(الوفاء الوفا،الفصل الحادی عشر،ج١،ص٢٦٢)

तर्जमा :

﴾1﴿ वदाअ़ की घाटियों से बद्रे कामिल صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم तुलूअ़ हुवा।

﴾2﴿ हम पर शुक्र बजा लाना वाजिब हुवा जब तक खुदा عَزَّوَجَلَّ के लिये कोई दा'वत देने वाला दा'वत देता रहे।

﴾3﴿ ऐ हमारे दरमियान मबऊ़ष होने वाले आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم वोह हुक्म ले कर तशरीफ़ लाए जिस की इत़ाअ़त की जाए।

ماخذومراجع

مطبوعہ	نام کتاب	نمبرشمار
داراحیاء التراث العربی بیروت	التفسیر الکبیر	۱
دارالفکربیروت	الدرالمنثور	۲
دارالکتب العلمیة بیروت	صحیح البخاری	۳
دارابن حزم بیروت	صحیح مسلم	۴
داراحیاء التراث العربی بیروت	سنن ابی داود	۵
دارالفکربیروت	سنن الترمذی	۶
دارالجیل بیروت	سنن النسائی	۷
دارالمعرفة بیروت	سنن ابن ماجه	۸
دارالفکر بیروت	المسند للامام احمد بن حنبل	۹
دارالمعرفة بیروت	المؤطا للامام مالک	۱۰
دارالفکر بیروت	مشکاة المصابیح	۱۱
دارالکتب العلمیة بیروت	حلیة الاولیاء	۱۲
دارالکتب العلمیة بیروت	فتح الباری شرح صحیح البخاری	۱۳
المکتبة الرشیدیة کوئٹہ	اشعة اللمعات شرح مشکاة المصابیح	۱۴
دارالکتب العلمیة بیروت	شرح العلامة الزرقانی علی المواهب	۱۵
حامد اینڈ کمپنی لاهور	الوفا باحوال المصطفٰی	۱۶
مکتبة الحقیقة ترکی	شواهد النبوة (فارسی)	۱۷

۱۸	السیرۃ النبویۃ لابن ھشام	دارالمعرفۃ بیروت
۱۹	الطبقات الکبری لابن سعد	دارالکتب العلمیۃ بیروت
۲۰	الاستیعاب فی معرفۃ الاصحاب	دارالکتب العلمیۃ بیروت
۲۱	الاصابۃ فی تمییز الصحابۃ	دارالکتب العلمیۃ بیروت
۲۲	اسد الغابۃ	داراحیاء التراث العربی بیروت
۲۳	الخصائص الکبری	دارالکتب العلمیۃ بیروت
۲۴	وفاء الوفا باخبار دار المصطفی	داراحیاء التراث العربی بیروت
۲۵	مدارج النبوۃ	دارالکتب العلمیۃ بیروت
۲۶	روض الانف (مترجم)	ضیاء القرآن لاھور
۲۷	المواھب اللدنیۃ للقسطلانی	مرکز اھلسنت برکات رضا
۲۸	دلائل النبوۃ لابی نعیم (مترجم)	ضیاء القرآن لاھور
۲۹	الادب المفرد	دارالحدیث ملتان
۳۰	شرح الشفاء مع شرحہ للملاعلی القاری	دارالکتب العلمیۃ بیروت
۳۱	المقتفی فی سیرۃ المصطفی	دار الحدیث قاھرہ
۳۲	سیرت ابن اسحاق	معھد الدراسات والابحاث للتعریب بیروت
۳۳	وسیلۃ الاسلام	دارالعرب اسلامی بیروت

फ़ैज़ाने सहाबा (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُم)

जारी रहेगा... (اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ)

अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या शो'बए इस्लाही कुतुब की त़रफ़ से पेश कर्दा 33 कुतुबो रसाइल

01...... गौषे पाक رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ के ह़ालात (कुल सफ़ह़ात : 106)	02...... तकब्बुर (कुल सफ़ह़ात : 97)
03...... फ़रामीने मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم (कुल सफ़ह़ात : 87)	04...... बद गुमानी (कुल सफ़ह़ात : 57)
05...... तंग दस्ती के अस्बाब (कुल सफ़ह़ात : 33)	06...... नूर का खिलौना (कुल सफ़ह़ात : 32)
07...... आ'ला ह़ज़रत की इन्फ़िरादी कोशिश (कुल सफ़ह़ात : 49)	08...... फ़िक्रे मदीना (कुल सफ़ह़ात : 164)
09...... इम्तिह़ान की तय्यारी कैसे करें ? (कुल सफ़ह़ात :32)	10......रियाकारी (कुल सफ़ह़ात : 170)
11...... क़ौमे जिन्नात और अमीरे अहले सुन्नत (कुल सफ़ह़ात : 262)	12...... उ़श्र के अह़काम (कुल सफ़ह़ात : 48)
13...... तौबा की रिवायात व ह़िकायात (कुल सफ़ह़ात : 124)	14...... फ़ैज़ाने ज़कात (कुल सफ़ह़ात : 150)
15...... अह़ादीषे मुबारका के अन्वार (कुल सफ़ह़ात : 66)	16...... तरबिय्यते अवलाद (कुल सफ़ह़ात : 187)
17...... काम्याब त़ालिबे इ़ल्म कौन ? (कुल सफ़ह़ात : 63)	18...... टीवी और मूवी (कुल सफ़ह़ात : 32)
19...... त़लाक़ के आसान मसाइल (कुल सफ़ह़ात : 30)	20...... मुफ़्तिये दा'वते इस्लामी (कुल सफ़ह़ात : 96)
21...... फ़ैज़ाने चहल अह़ादीष (कुल सफ़ह़ात : 120)	22...... शर्ह़ शजरए क़ादिरिय्या (कुल सफ़ह़ात : 215)
23...... नमाज़ में लुक़्मा देने के मसाइल (कुल सफ़ह़ात : 39)	24...... ख़ौफ़े ख़ुदा عَزَّ وَجَلَّ (कुल सफ़ह़ात : 160)
25...... तआरुफ़े अमीरे अहले सुन्नत (कुल सफ़ह़ात : 100)	26...... इन्फ़िरादी कोशिश (कुल सफ़ह़ात : 200)
27...... आयाते क़ुरआनी के अन्वार (कुल सफ़ह़ात : 62)	28...... क़ब्र में आने वाला दोस्त (कुल सफ़ह़ात : 115)
29...... फ़ैज़ाने इह़याउल उ़लूम (कुल सफ़ह़ात : 325)	30...... ज़ियाए सदक़ात (कुल सफ़ह़ात : 408)
31...... जन्नत की दो चाबियां (कुल सफ़ह़ात : 152)	32...... काम्याब उस्ताज़ कौन ? (कुल सफ़ह़ात : 43)
33...... आदाबे मुर्शिदे कामिल (कुल सफ़ह़ात : 275)	

याद दाश्त

दौराने मुत़ालआ़ ज़रूरतन अन्डर लाइन कीजिये, इशारात लिख कर सफ़ह़ा नम्बर नोट फ़रमा लीजिये। اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ इ़ल्म में तरक़्क़ी होगी।

उ़नवान	सफ़ह़ा	उ़नवान	सफ़ह़ा

www.dawateislami.net
I.T. Majlis of Dawateislami

याद दाश्त

दौराने मुत़ालआ़ ज़रूरतन अन्डर लाइन कीजिये, इशारात लिख कर सफ़्ह़ा नम्बर नोट फ़रमा लीजिये। اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ इल्म में तरक़्क़ी होगी।

उ़नवान	सफ़्ह़ा	उ़नवान	सफ़्ह़ा

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

सुन्नत की बहारें

اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ तब्लीगे़ कुरआनो सुन्नत की आलमगीर गै़र सियासी तहरीक दा'वते इस्लामी के महके महके मदनी माहोल में ब कषरत सुन्नतें सीखी और सिखाई जाती हैं, हर जुमा'रात इशा की नमाज़ के बा'द आप के शहर में होने वाले दा'वते इस्लामी के हफ़्तावार सुन्नतों भरे इजतिमाअ़ में रिज़ाए इलाही के लिये अच्छी अच्छी निय्यतों के साथ सारी रात गुज़ारने की मदनी इल्तिजा है, आ़शिक़ाने रसूल के मदनी क़ाफ़िलों में ब निय्यते षवाब सुन्नतों की तर्बिय्यत के लिये सफ़र और रोज़ाना ''फ़िक्रे मदीना'' के ज़रीए मदनी इन्आ़मात का रिसाला पुर कर के हर मदनी माह के इबतिदाई दस दिन के अन्दर अन्दर अपने यहां के ज़िम्मेदार को जम्अ़ करवाने का मा'मूल बना लीजिये, اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ इस की बरकत से पाबन्दे सुन्नत बनने, गुनाहों से नफ़रत करने और ईमान की हि़फ़ाज़त के लिये कुढ़ने का ज़ेहन बनेगा।

हर इस्लामी भाई अपना येह ज़ेहन बनाए कि ''मुझे अपनी और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश करनी है।'' اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ अपनी इस्लाह़ की कोशिश के लिये ''मदनी इन्आ़मात'' पर अ़मल और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश के लिये ''मदनी क़ाफ़िलों'' में सफ़र करना है। اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ

MAKTABATUL MADINA

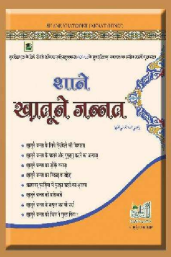

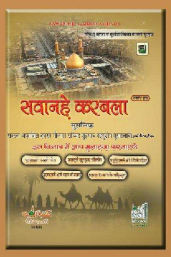

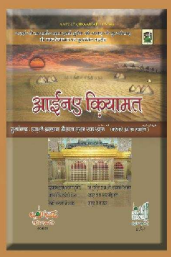

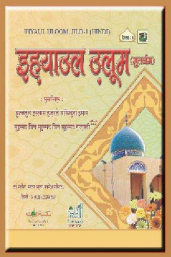

421, URDU MARKET, MATYA MAHAL, JAMA MASJID

DELHI - 110006, PH : 011-23284560

email : maktabadelhi@gmail.com

web : www.dawateislami.net

MC 1286